प्रकाशक

श्री जैन धर्म प्रसारक संस्था,
सदर बाजार, नागपूर.

मुद्रक,

रा. त्रिं. देशमुख, बी. एजी.
सरस्वती प्रेस, नागपूर.

सुवर्ण नामावळी.

स्तंभ–मुनि श्री आनंद ऋषिजी महाराज.

संरक्षक–श्री नेमीचंदजी सरदारमलजी पुगलिया,
इतवारी नागपूर.

आजीवन सदस्य. (Life Members)

१ श्री हीरचंदजी नानुलालजी पारख, सदर नागपूर.

२ ,, मानकचंदजी सेरमलजी सुराना, सदर नागपूर.

३ ,, केसरीमलजी रीखबचंदजी, धामक.

आश्रयदाते.

१ श्री नंदरामजी चांदमलजी बोहरा, पीपला.

२ ,, लालचंदजी रतनचंदजी भटेवडा, राहू.

३ ,, फतेराजजी धनराजजी सिंगी, सिंधी.

४ ,, हीरालालजी ताराचंदजी गुगलिया, बाबुलगांव.

५ ,, सकल जैन संघ वनोसा (दर्यापूर)

६ ,, जैन संघ चांदूर बाजार, जि. उमरावती.

७ ,, हीरचंदजी नानुलालजी पारख, सदर नागपूर.

प्रथमावृत्तिकी प्रस्तावना

(१) इण जगतमांहे प्राणीमात्रने धर्ममार्गमांहे अवश्य प्रवर्त्तन हुवो चाहिजे. कारण इण दुःखमय संसारसमुद्रमांहे नरकादिक चारु गतिमांहे जीव, ज्ञानावरणीयादिक अष्टकर्मना योगें मोहादिक शत्रुका वश हुयने संसारिक धन कुटुंबादिकना अल्पपौद्गलिक सुखामांहे राच्यां थकां जन्म, जरा, मरणादिक अनेक प्रकारका दुःख सहन करी परिभ्रमण करतां अनंता पुद्गल परावर्तन काल व्यतीत हुइ गयो ! परंतु सर्वोत्कृष्ट अनंत सुखमय एहवो अनादि श्रीवीतराग प्रणीत दयामय जैनधर्म केवारें पण जीव पामी शक्यो नहीं. ते श्रीजैनधर्म केहवो छे ? के जेम आंधला पुरुपने मार्गे चालतां ज्येष्ठिका (लाकडी) आधारभूत होय छे, तेम जीवने मोक्षका अनुपम सुखांकी प्राप्ति होवण वास्ते श्रीजैनधर्म निश्चयें आधारभूत छे. अनादि मिथ्यात्वना योगें काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सरादिकना धारण करणारा जीवांने ज्ञानावरणीयादिक कर्मांथकी मुक्त करीने पोताना स्वस्वभावमांहे रमण करणार ते एक उक्त धर्मनुं सेवन छे. ए धर्मने यथार्थ शुद्ध श्रद्धा पूर्वक आराधवाथी जीव, चतुर्गति रूप संसारको अंत करीनें जिहां जन्म नहीं, जरा नहीं, मरण नहीं, रोग नहीं, दुःख नहीं, एहवा अकलंक, अक्रिय, अकर्मी, अक्षय, अवेदी, अणाहारी, अबंधक, अभोगी आदिक अनंत सुखमय सिद्धरूप स्थानक प्रत्यें पामे छे.

(२) हवे ते सिद्ध स्थानक पामवाने योग्य तो मात्र मनुष्य गतिमांज रहेला जीव छे; कारण के नरक तिर्यंचादिक गतिमांहेला जीवांने सिद्धपणुं पामवानो अभाव छे. ते मनुष्यपणुं पण जीव, अनंतीवार पाम्यो, पण अनार्य देशमांहे उत्पन्न होवणासुं अथवा आर्यकुलमांहे उत्पन्न हुवो तो आभिग्रहिकादिक मिथ्यात्वना प्रसंगथी शुद्ध स्याद्वादरूप श्रीजैनधर्म पामी शक्यो नहीं, तेथी ते सर्व भव व्यर्थ गया हवे इण समय शुभ कर्मोदयें करी मोटी पुण्याइसुं मनुष्य गति, आर्यदेश, उत्तम कुल, संपत्ति, नीरोगी शरीर, दीर्घायु सुगुरुनो संयोग, इत्यादि शुभ सामग्री मिली छे, तेम छतां जो विषय कषायादिकमांहे तल्लीन हुइने समकित दर्शनरूप धर्मनी प्राप्ति करणमांहे प्रमाद करोला, तो प्राप्त हुवेला इष्ट संजोगको विनाश हुयने फेर घणा कालतांई संसारचक्रमांहे परिभ्रमण करणो पडसे. एहवो अवसर तथा सर्व प्रकारनो संयोग वारंवार मिलणो घणो मुष्कील छे ज्ञानसंपादन करने आत्माको कल्याण करण वास्ते, पूर्वकृत दुष्कर्मनो बदलो देदण वास्ते, तथा सर्व साधर्मीभायामांहे ज्ञानको प्रसार जो (पंडित पुरुषांपासें सूत्रको व्याख्यान श्रवण करणासुं तथा ग्रंथ प्रसिद्ध करणासुं हुवे छे) ये होवण वास्ते धर्मकीज पूर्ण आवश्यकता छे; धर्म सरीखी प्रिय अने श्रेष्ठ वस्तु इण जगत्मांहे दुसरी कोई पण नहीं छे सांसारिक संतति अने संपत्ति केवल अनित्य छे. जिहां सुधी शुभ कर्मांको उदय रेवे छे, तिहां सुधी सर्व इष्टवस्तुको संयोग आय मिले छे; जद अशुभ कर्मांको उदय होवे, ते वखतें सर्व इष्ट

वस्तुको वियोग हुयने अनिष्ट संयोगकी प्राप्ति हुवे छे. संसारमांहे विवाह आदि आरंभिक कार्य प्रयोजनमांहे हजारां रुपिया मोठा उच्छरंगसुं खर्च कर देवांछां, सु वो तो फक्त सांसारिक इणहीज भवकी यश:कीर्त्तिको कारण छे, अने धर्मनिमित्तें जो द्रव्य खर्च होवे तो इण भवना तथा परभवना सुखको तथा मोक्षना सुखनो पिण कारण छे, इण वास्ते समस्त जैन बंधुका अंत:करणमांहे धर्मकी जागृत प्रेरणा निरंतर रेवण वास्ते तथा धर्मको उद्योत करण वास्ते प्रयत्न करने धर्मनिमित्त यथाशक्ति द्रव्य अवश्य खर्च होवणो चाहीजे. इतरीज हमारी सर्व जैन बंधुने विनंति छे.

(३) ओ पुस्तक छपायने प्रसिद्ध करतां वाचणारा सज्जनलोकांप्रतें इण पुस्तकमांहे दाखल करेला ग्रंथाकी हमें किंचित् सूचना करा छां.

(४) इण पुस्तककी आदिमें श्रावकांने नित्य उभयकाल करवा योग्य छे आवश्यककी करणीरूप प्रतिक्रमणसूत्र छे, तिको अर्थ सहित दाखल कीनो छे. कारण श्रावकने कोइ पण शास्त्र वाचणा भणाजिणा, तिके सर्व अर्थ सहित भणीजणां चाहिजें. कारण यथार्थ अर्थ धारणामें होवे तोहिज वो ग्रंथ अनुभव सहित भणीयां कहेवाय, नहीं जरां सुवाका पाठ प्रमाणें समजवो. उणमांहे पण पडिक्कमणादिक छे आवश्यक तो नित्य सांझ सवार क्रिया करती वेलां काम आवे छे. इण वास्ते उणका अर्थ तो अवश्य धारणाइज चाहिजें, जिणसूं, मात्र मूलपाठ जाणनारा लोकांने जे कांइ क्रिया करणको अनुभव होवे, वां लोकांसुं. अर्थ सहित जाणनारा मांहे कितराक दरजे अनुभवकी वृध्दि होवे छे, अने उणका फल पण उतराज दरजे जादा होवे छे. इण प्रमाणें सिध्दांतमांहि भगवंत फुरमायो छे.

(५) और, क्रिया करणार पुरुषकां आत्माका अध्यवसाय आश्रयी पिण फलकी आधिक न्यूनता कही छे. तथापि अर्थ धारणार अने अर्थ न धारणार यां दोनुं जिणांका आत्माका अध्यवसाय (प्रणामकी धारा) सरीखा होय, तो पण अवश्य अर्थ न धारणारासुं अर्थ धारणाराने अत्यंत अधिक फल प्राप्त होवे छे. इण वास्ते अर्थकी धारणा करणी आवश्यक छे; इण हेतुसूं आवश्यक सूत्र तथा अन्यग्रंथ उपरसुं सामयिकादि सूत्रकी पाटीयां सार्थे पाठका अर्थ पण दाखल कराया छे. ए सर्व हमारा साधर्मी भाई अर्थसाहित भणजिणको उद्यम करेल इणतरे हमे पूर्ण आशा राखा छां.

(६) श्रीजैनधर्ममांहे महान् विद्वान् परम **पंडित पूज्यश्री श्री १००८ श्रीकानजी रिखजी महाराज नी** संप्रदायना **स्वामीजी श्री १००८ श्री अयवंता रिखजी महाराज** तस शिष्य **स्वामीजी श्री १००८ श्री तिलोकरिखजी महाराज** महाप्राभाविक हुवा. माहाराजसाहेबको जन्म संवत् १९०४ की चैत्र वदि ३ के दिन हुवो. संवत् १९१४ का माहावदि १ गुरुवारके दिन माहाराजसाहेब **स्वामीजी श्री अयवंतारिखजी माहाराज** पासें वैराग्य भाव पामीने मोठा उत्साहसूं **दीक्षा ग्रहण** कीनी. संवत् १९३६ को चोमासो दक्षिण देश घोडनदीमांहे करीने अहमदनगर, आंबोरी, हिवरो, पूना, सतारा औरंगाबाद, धुलिया वगैरे अनेक ठिकाणे विचरतां भव्यजीवाने सम्यक्त्व प्रतिलाभी संसारसुं तारिया छे. संवत् १९४० को चोमासो करणवास्ते आषाढशुद्ध ९ के दिन अहमदनग

शहेरमांहे पधारिया, उणाहिज दिन तप चढने सावणवदि २ रविवारके दिन माहाराजसाहेब देवलोक हुवा. ऐसा उत्तम पुरुषांको वियोग घणा भायाने दु:सह हुयने श्री जैनधर्मका महा पंडित पुरुष रन्नमांहेला एक अमुल्यरत्नकी खामी पड गई.

(७) **स्वामीजी श्रीतिलोकरिखजी माहाराज** अल्प आयुष्य मांहे, जेम पृथ्वी मंडलमांहे सूर्य प्रकाश करी अंधःकारनो नाश करे छे, एम मिथ्यात्वरूप अंधःकारनो नाश करीने भव्य जीवरूप कमलने विकस्वर करण वास्ते, सिद्धांतानुसारें मोठा मोठा ग्रंथांकी रचना करी घणा भव्यजीवाने प्रतिबोधी परोपकार करणमांहे मोठो श्रेय लीनो छे. माहाराजसाहेबको स्वभाव चंद्रनी परें शीतल, समुद्रनी परे गंभीर, मिष्टवचनी, वालब्रह्मचारी करुणाका सागर, इत्यादिक गुणे करी सहित हुयने वां पुरुषांमाहे कवित्वशक्ति, वाक्चातुर्य, समयसूचकता श्रीजिनसिद्धांत तथा षट्शास्त्रना पारंगामी वगैरे अनेक गुण प्रशंसनीय हुता. माहाराज साहिबका गुणाकी स्तुतिकरां जितरी थोडीज छे.

(८) माहाराजसाहेब निरंतर साधु संबधी पाडिलेहण, प्रमार्जन त्रिकाल काउस्सग्ग ध्यान, तथा धर्मसंबंधि व्याख्यानादिक कार्य करीने परिवारिया पछे शेष रहेला वखतमांहे किंचित् मात्र पण प्रमाद सेवन करता नही था, पण जैन सिद्धांतमांहेसुं आनंद श्रावकादिक महापुरुषांका चरित्रानुसारें चौढालिया, छे ढालिया वगैरेकी रचना करता हुता, तथा वैराग्य भावने दर्शावणारी अनेक लावणीया, पद, सवैया तथा श्रीजिनेश्वरस्तुतिरूप घणा स्तवन, सझाय, छंद, श्रीचंद्रकेवली, श्रेणिकादिकना चरित्र, रास प्रमुख अनेक छोटा मोटा ग्रंथाकी रचना कीनी छे, अने वे इतरा तो रमणीय छे, के जे ग्रंथ बांचणासुं जेहवो भावार्थ वां ग्रंथामें दरसायो छे, तेवाज भावार्थ की हुबेहुब असर बाचणवालाका मनमांहे ठसिया विना रेवेज नहीं, ऐसी खुबी माहाराजसाहेबकी कविता मांहे वापरी छे. थोडाकालमांहे माहाराज साहेब इणतरे प्राकृत भाषामें कवितारूपें साठ शीत्तरहजार ग्रंथकी जोड करी जिनधर्मने दीपायो छे.

(९) उपर लिख्या मुजब माहाराज साहेबका रचेला ग्रंथ प्रत्येक जैनधर्मी श्रावकने बांचवा भणवा योग्य जाणीने उणमांहेला केइ केइ ग्रंथ इण पुस्तकमांहे दाखल करिया छे, जिणने सर्व साधर्मि भाई बाचने भणीजने जरूर धारणा करेला, इणतरेकी हमारी अभिलाषा पूर्ण करणमांहे हमारा साधर्मी भाई पछात पडसी नही. जो जो ग्रंथ इण पुस्तकमांहे दाखल करिया छे, तिके सर्व हमारा साधर्मी भायाने घणाज उपयोगी छे, और दुसरा श्रावक लोकां पासें माहाराज साहेबकी जोडको ग्रंथ घणो शिल्लकमांहे पडियो छे, पण हाल वे प्रसिद्ध हुवा नही सु मोटी दिलगीरी मालम पडे छे; कारण प्रस्तुतसमयमां विद्वान पुरूष थोडा लाधे छे, जिणवास्ते पडित पुरूषांका रचेला ग्रंथ जो प्रसिद्ध नही होसी तो ज्ञानकी वृद्धि किण तरे होसी ? इण वास्ते ज्यां श्रावक लोकांपासे माहाराजसाहेबका रचेला ग्रंथ होसी वे प्रसिद्ध करणमांहे प्रमाद करेला नही, ऐसो हमांने भरोसो छे.

(१०) ओ पुस्तक श्रीजैन धर्मको उद्योत हुयने ज्ञानको प्रसार होवण वास्ते, तथा भव्यजनांकी समकित दृढतर होवण वास्ते, तथा श्री तिलोकरिखजी माहाराजका गुण

प्रगटकरण वास्ते श्रीदेव गुरु धर्म प्रसादे छपायने हमारा प्रिय सकल जैन बंधु आगल सादर करियो छे.

(११) इण प्रतिक्रमण सत्यबोधका पुस्तकने महाराजसाहेबका अतिशयका कारणसूं नीचे लिख्या मुजब ज्यां सज्जनलोकां उदारमने करी श्रीजैनधर्मको उद्योत हुवणवास्ते आगाउ मदत दीनी छे, तीके बोहोत प्रशंसनीय छे. जेम हंस पक्षीकी चंचूमांहे एहवाज कोई जातना पुद्गल रह्या छे, के तेहथी तेहनी चंचू सदाकाल दुग्धनेज ग्रहण करणका स्वभाववाली होय छे. तेम सद्‌गुणीजनाका अंत.करणना परिणामनें विषे एहवाज कोई उत्तमजातिना पुद्गल रहेला छे, के ते थकी तेहनी बुद्धि सदाकाल सत्कार्य करवाना विषेज प्रवर्तमानथकी रहे छे इण प्रमाणेज सर्व जैन बंधु आगासूं धर्मको उद्योत करणवास्ते हरएक प्रकारकी मदत करणकी उमेद जादा राखेला, इसी हमे पूर्ण आशा राखांछां.

नांव.			रूपिया.
मुता नवलमलजी किसनदास, अहमदनगर.	...	....	२२५
सांड बिरदीचंदजी चुनीलाल, राहाता.	...	...	२२१
मुता मोकमदासजी हाजारीमल, सातारा.	...	....	२२१
गुगलिया हुकमचंदजी नेमीदास, अहमदनगर.	...	...	११५
ओस्तवाल पेमराजजी पन्नालाल, अहमदनगर.	...	....	१०१
गुंदेचा माइदासजी छोगमल, अहमदनगर.	...	....	६१
गुंदेचा मोतीचंदजी रतनचंद, अहमदनगर.	...	....	६१
मुणोत पनराजजी शिवदास, अहमदनगर.	....	...	६१
मुता हजारीमलजी आगरचंद, अहमदनगर.	...	...	६१
सींगी बनेचंदजी दोलतराम, अहमदनगर.	..	....	६१
गांधी गुलाबचंदजी रतनचंद, आंबोरी.	...	...	५१
कोटेचा तिलोकचंदजी आसकरण, धुलिया.	...	....	५१
मुता खुबचंदजी लुणकरण, हिवडा खानरा.	...	...	५१
गांधी हिंमतमलजी हामीरमल, माहादपटलेकी चिचोंडी.		....	५१
गांधी बछराजजी राजमल, महादपटलेकी चिचोंडी.		...	४१
भंडारी माणकचंदजी मोतीचंद, अहमदनगर.	....	...	४१
गांधी तेजमलजी राजमल, अहमदनगर.	....	....	३१
नाहाटा नंदरामजी बालाराम, धुलिया.	....	...	२५
गांधी किस्तूरचंदजी भिकनदास, माहादपटेलकी चिचोंडी		....	२५
मुता नेमीदासजी श्रेमल, गुलेजगट.	....	....	२५
मुणोत हुकुमचंद जवानमल, हिवडा खानरा.	....	..	२५
गुंदेचा जिनमलजी किसनदास, नांदूरबारागांव.....		....	२५

क्षमापना.

(१२) इण ग्रंथमाहे कितराक शब्द हामे शास्त्रका बराबर जाण न होवणासुं वे सुधारणवास्ते असमर्थ हुया छां. पण सुज्ञविद्वान लोकां इण पुस्तकमांहेला सामायिक, प्रतिक्रमण, तथा पच्चक्खाण वगैरेका पाठ अने अर्थमांहे तथा और कोइ ठेकाणे चुकां होइ होसी तो वे सर्व हमाने अज्ञ जाणी हमारा उपर दोष न राखनां आप बाचने सुधारने हमाने लिखेला, एहवो सुज्ञ लोकामांहे एक प्रकारको स्वाभाविक गुणज होय छे: वास्ते इण बदल जादा लिखणको कांइज कारण नहीं छे; पिण भुल बदल मिच्छामि दुक्कडं देने हमाने आलोयणा कीवी चाहिजे. इण ग्रंथमांहेला मूल पाठको अगर अर्थको तथा स्तवन सज्झायादिक बाकी विषयको कोइ एक शब्द अगर अक्षर न्यून, अधिक अशुद्ध रीतें, आघो पाछो जाणतां, अजाणतां वगैरे कोई प्रकारें भूलथी लिखिज गयो होसी तथा ग्रंथ छपावणमांहे कोइ प्रकारको दोष लाग्यो होसी तथा ग्रंथको अविनय अशातना जाणतां अजाणतां हमारी तरफसुं होइ होसी, तो ते सर्व मन वचन कायायें करी श्रीअरिहंत सिद्ध केवली भगवंतनी साखें सर्व दोषप्रत्यें हमानें मिच्छामि दुक्कडं होजो. अपराधकी क्षमा होजो.

(१३) ओ पुस्तक छपावणका काममांहे तथा शुद्ध करणका काममांहे हमारा प्रिय जैन बंधु भाई भीमसिंहमाणके घणी तसदी लीनी छे, जिण बदल उणारो आभार माना छां. श्रीजिनधर्मका उद्योत करणको उद्यम करने हमारा बंधु निरंतर श्रेय लेसी, इसी हामे चाहना राखा छां. किं बहु विलेखनेन शुभं भवतु.

विज्ञप्ति.

[१] इण पुस्तकका ५७ पानमे पडिक्कमणाकी विधीमांहे संलेहणा आठारे पाप स्थानक कहीने इच्छामि ठामि कहिजे इणतरे लिख्यो सु केइ श्रावक इण मुजबज केवे छे ने केई संलेहणा आठारे पाप स्थानक कहीने दश प्रकारको मिथ्यात्व तथा केइ श्रावक २५ प्रकारको मिथ्यात्व तथा चौदे स्थानाकिया जीवांरी आलोयणा करीने पछी इच्छामिठामिनी पाटी कहे छे सु आप आपकी गुरु आमना तथा परंपरा प्रमाणे कहीजें.

[२] तथा सामायिक पारवानी विधिमांहे काउस्सगमांहे इरियावहीकी पाटी चिंतववी लिख्यो छे परंतु केइक श्रावक लोगस्सकी पाटी चिंतवे छे वास्ते आप आपकी गुरु आमना प्रमाणे करवो इण पुस्तकका दुजा पानमें तिक्खुत्ताकी पाटी मांहे " पयाहिणं करेमि वंदामि " लिख्यो छे सु केइ भाया इणतरे केवे छे तथा केइ भाया " पयाहिणं वंदामि " केवे छे, सु आप आपकी गुरु आमना तथा परंपरा प्रमाणे केवणो.

श्री:

॥ द्वितीयावृत्ति तथा जीवनचरित्रकी प्रस्तावना ॥

धर्म-कर्म-गुण-राशि-दर्शकम्
मान-मोह-मद-मार-मर्दकम्
अज्ञ-जीव-तिमिरापहारकम्,
"सत्यबोध" कथनं यथार्थकम् ॥ १॥

प्रियवाचकवृंद ! प्रात:स्मरणीय, **पूज्यपाद महात्मा श्री तिलोक ऋषिजी महाराज** विरचित प्रतिक्रमण सत्यबोधकी उपयोगिता, लोकप्रियता, समाजके किसी भी तत्त्वज्ञ पुरुषसे छिपी नहीं है, आज उसके द्वितीय संस्करणके अवलोकनका लाभ जो समाजको मिल रहा है इसका श्रेय प्रथम तो अहमदनगर निवासी श्रीसंघ तथा तत्प्रांतवर्ती श्रीसंघको है। कारण जिस समय पूज्यपादका शरीरावसान अहमदनगरमें हुवा. उस समय वहांके विज्ञ श्रावकवर्गने अर्थात् जिनकी सुवर्ण नामावली प्रथमावृत्तिके प्रस्तावनामें दी है उन लोगोंने महाराजश्रीके विरचित उपलब्ध स्फुट कविताओंका संग्रह करके पुस्तकाकारमें मुद्रित कराया. जिसके अवलोकनका सौभाग्य आजभी समाजको प्राप्त हो रहा है। परंच वह पुस्तक इतनी पर्याप्त संख्यामें प्रकाशित नहीं हुई थी. कि समस्त अभिलाषी जनोंकी इच्छापूर्ति हो सके. इस लिए स्थान स्थान पर पुन. उसकी संस्करणसूचक शब्द स्वर्गीय गुरुवर्य **श्री रत्नऋषिजी महाराज** तथा पंडितरत्न मुनि **श्री आनंदऋषिजी महाराजके** श्रवणरंध्रपर पडते थे.

गुरुवर्य **श्री रत्नऋषिजी महाराजका** वियोग विक्रमाद्व १९८४ मिति ज्येष्ट कृष्णा ७ सप्तमी सोमवारके दिन हिंगणघाटके नजदीक **अल्लीपुर** में हुवा. उस वर्षमे मुनि **श्री आनंदऋषिजी महाराज** ठाणे २ का चातुर्मास **हिंगणघाट में** हुवा. चातुर्मास समाप्त होनेपर वहांसे विहार करके मांडोरी, वरोरा, चांदा, वणी, पांढरकवडा, वेला, सिंधी वगैरह क्षेत्रोंको स्पर्शते हुए नागपुर सदरबाजारमें पधारना हुवा. विक्रमाद्व १९८५ के ज्येष्ट कृष्णा सप्तमीके रोज गुरुवर्य **श्रीरत्नऋषिजी महाराजका** जीवनचरित्र मुनि **श्री आनंद-ऋषिजी महाराजने** श्रावकोंको सुनाया, और उसके साथ यह भी सुनाया कि महाराज श्री के हृदयमें साधुधर्म पालते हुए समाजसेवा, विद्याप्रेम, एकता वगैरह सद्गुण विद्यमान थे; अत: उनके स्मारक स्वरूप कोई ज्ञानप्रचारक संस्था यहां स्थापित होवे तो ठीक है, ऐसा उपदेश होनेपर वहांकी जनताने उत्सुक होनेपर "**श्री जैनधर्म प्रसारक संस्था**" स्थापित की. जिसके द्वारा छोटे २ ट्रेक्ट प्रकाशित होकर अपना नाम वह सार्थक कर रही है.

विक्रमाद्व १९८५ में मुनि **श्री आनंद ऋषिजी** महाराज का चातुर्मास **सदर बाजार नागपूर में** हुवा. उस समय पारस्विनी निवासी **श्री तिलोक चंदजी सेठिया** और श्रावक संघ महाराज श्री के दर्शनार्थ आया था. उन्होंने वार्तालाप करते हुए यह प्रस्ताव उपस्थित किया के **श्री तिलोक ऋषिजी** महाराज विरचित प्रतिक्रमण सत्यबोध नामक

जो पुस्तक है, उसीके पठनसे हमारे क्षेत्रमें धर्मजागृति हुई है, अब वह पुस्तक अलभ्य है. यदि उसका दूसरा संस्करण होता हो तो ५०० पांचसो रूपिया उसके लिए देता हूं. तदनंतर यादगिरिनिवासी सुज्ञ श्रावक **श्रीमान् नवलमलजी सुरजमलजी धोका** तथा घ्रसा (अहमदनगर) निवासी **श्रीमान् रतन चंदजी जसराजजी छाजेड** और कई एक उपस्थित धर्म प्रेमी लोगोंने प्रतिज्ञाही नहीं बल्कि रूपियोंकी हुंडी कर दी. जिनकी सुवर्ण नामावली इस आवृत्तिके आश्रयदाताओंकी श्रेणिमें दी गई है। और उन्हीं लोगोंके उत्साहसे अहमदनगरवाले **श्रीमान् नवलमलजी किसनदासजी मुथाकी** अनुमति मंगाकर पुनरावृत्ति का कार्य प्रारंभ हुवा. अतः इस श्रेयका भागी आश्रयदाता वर्ग तथा **श्री जैन धर्म प्रसारक संस्था** सदर बाजार नागपूर का कार्यकर्ता मंडल है.

इस पुस्तकके पुनरावृत्ति के साथही आज ४९ वर्ष के बाद पूज्यपाद **श्री तिलोक-ऋषिजी महाराज का** जीवन चरित्र भी आप लोगों के सन्मुख रखने का सौभाग्य प्राप्त हुवा है, कारण कि जिस समय पूज्यपाद स्वर्गारूढ हुए उस समय **गुरुवर्य श्री रत्न-ऋषिजी महाराज श्री** की छोटी अवस्था थी. जीवनचरित्र संकलन करनेकी शक्ति तथा सामग्री उनके पास नहीं थी. जब आप विद्याभ्यास करने के लिए मालवामें पधारे, उस समय से पूज्यपादके जीवन चरित्र का शोध करने लगे. विद्याभ्यास करके तथा मालवा, मेवाड, बागड, गुजरात आदि देशोंमें विचरकर तेरह वर्ष के बाद दक्षिण देशमें पधारे और अपने रचना किए हुए **तिलोक चंद्रिका** नामक पुस्तकमें पूज्यपाद के चरित्र विषयक कुछ सारांश बातें लिख दी. परंच वह लेख पर्याप्त नहीं हुवा, जनताकी प्रेरणा बराबर होती रही.

अवसर पाकर गुरुवर्य **श्री रत्न ऋषिजी महाराज** अपने शिष्य मुनि **श्री आनंद-ऋषिजी** महाराजसे भी फरमाया करते थे कि " हे आनंद ! पूज्यपाद महाराज श्री का जीवन चरित्र पूर्ण नहीं हुवा. गुरुवर्य के उद्गारको श्रवण करके मुनि **श्री आनंद ऋषिजी** महाराज पूज्यपाद के जीवन चरित्र का संकलन करने लगे. अधिकांश बातों का संग्रह तो गुरुवर्यसेंही हुवा था. फिर मालव देशसे कविवर्य, महामना, पंडित रत्न मुनि **श्री अमी-ऋषिजी** महाराज का दक्षिण देशमें पदार्पण हुवा. उनके पाससे पूज्यपाद चरित्र नायक के हाथ का लिखा हुवा सूक्ष्माक्षरवाला एक पत्र प्राप्त हुवा. जिसमें जन्म कुंडली, तथा जीवन पर्यंतकी दिन चर्या विशद रूपसे लिखी थी. महासतीजी **श्री नंदूजी** महाराज आठ वर्ष तक मालव देशमें विचरे थे. उनके द्वारा तथा दक्षिण देशमें विराजती हुइ पुज्यपाद की अग्रशिष्या सती शिरोमणि **श्रीरामकुवरजी** महाराज और पूज्यपाद के दर्शन किए हुए वृद्धों के द्वारा तलाश करके अवशिष्ट चरित का अतिसंक्षिप्त संग्रह किया था.

विक्रमाब्द १९८८ के चातुर्मासमें बोदवड (खानदेश) निवासी श्रावकोंका अत्यंत आग्रह हुवा कि **पूज्यपाद श्री तिलोकऋषिजी महाराजका** जीवनचरित्र प्रकाशित

किया जाय. तब जीवन चरित्रके रचनाका भार व्याकरणाचार्य, साहित्य शास्त्री, विद्यावारिधि, विद्वद्रत्न, पं. राजधारी त्रिपाठीजी मु. खैराटी, पोष्ट सीधेगौर, (गोरखपुर) ने सहर्ष स्वीकार किया.

जीवनचरित्र तैयार हो जानेके बाद मुनि **श्री आनंदऋषिजी महाराज** और त्रिपाठी शास्त्रीजीका यह विचार हुवा कि अपना विहार दक्षिण देशके तरफ हो रहा है, वहाके शास्त्रज्ञ, सुश्रावक **श्री किसनदासजी मुथा** वगैरहकी सम्मति लेनेके बाद यह जीवनचरित्र प्रगट किया जाय. अहमदनगर पहुंचनेपर जीवनचरित्र प्रकाशित करनेके विषयमें चर्चा छिडी. साधु संयमहितैषी मुथाजीने कहा कि आजकल जितने जीवनचरित्र छपते हैं, वे प्राय: (अतिशयोक्तिसे परिपूर्ण रहते हैं) " एक हाथकी कांकडी नौ हाथका बीज " इस कहावतके अनुसार है. जिनका आद्योपांत अवलोकन तथा चरित्रसे मननीय अनुकरणीय विषयोंका सारांश समझना भी कठिन हो जाता है. फिर **श्री पुनमचंदजी** भंडारीजीने कहा कि ठीक है, आप लोग पहले इसका अवलोकन करें, पीछे न्यूनाधिक, अस्ति नास्तिका अनुकूल उत्तर दें.

तदनंतर दुपहरमे बारह बजेके बाद **श्रीमान् किसनदासजी मुथा, श्रीमान् कुंदनमलजी फिरोदिया वकील, श्रीमान् मगनमलजी गांधी, श्रीमान् हीरालालजी गांधी (टिळक), श्रीमान् उत्तमचंदजी बोगावत वकील, श्रीमान् धोंडीरामजी मुथा, श्रीमान् पुनमचंदजी भंडारी** वगैरह सुश्रावक एकत्रित हुए. सबकी सम्मतिसे पंडित रत्नमुनि **श्री आनंद ऋषिजी महाराज** जीवनचरित्र सुनाने लगे. जिस समय चित्रालंकार काव्य, और ज्ञानकुंजरका वर्णन आया, उस समय उन हस्तलिखित पन्नोंको देखनेकी मुथाजी वगैरा श्रावकोंकी अभिलाषा हुई उन सब प्रमाणभूत दर्शनीय अद्भुत लेखोंको देखकर सब श्रावकोंका अंत:करण आल्हादित हुवा.

फिरोदिया वकील साहबने फरमाया कि जिस महापुरुष **श्रीतिलोक ऋषिजी महाराजके** द्वारा दक्षिण देशमे जैनधर्मका पुनरुद्धार हुवा ऐसा कहा जाता है और जनताको चमत्कृत करनेवाले उनके हस्तलिखित ऐसे २ लेख विद्यमान है, उनका जीवनचरित्र क्यों न प्रकाशित किया जाय ? मेरी तो यह राय है कि जिस तरीकेसे वे ग्रामानुग्राम विचरे हैं, उसी तरीकेसे विशदरूपसे प्रकाशित किया जाय, तथा सब चित्रोंका फोटो दिया जाय. यदि इन चित्रोंका फोटो नहीं दिया जायगा तो इन अद्भुत कृतियोंके विषयमें जनताको संशय होगा.

इसपर उपस्थित सज्जनोंका एकमत होनेपर जीवन चरित्र प्रकाशित करानेका पूर्ण निश्चय हुवा. परंच फिरोदियाजीके कथनानुकूल सब चित्रोंके छपानेमें बहुत द्रव्यका व्यय था, इसलिए यह कार्य पूरा न हो सका. इस जीवन चरित्रके अवलोकनका लाभ जो आज समाजको मिल रहा है, इसका पूर्ण श्रेय श्रीमान् **रतनलालजी** कोटेचा, श्रीमान् **कन्हैयालालजी** कोटेचा, बोदवड तथा वहांके श्रीसंघको है, क्योंकि उन्हीं लोगोंके अत्यंत आग्रहसे यह कार्य प्रारंभ हुवा

दक्षिण प्रांतवर्ती पीपला [अहमदनगर] निवासी श्रीमान् **चांदमलजी सोभाचंदजी बोरा** तथा श्रीमान् **तेजमलजी नंदरामजी बोराजीने** चित्रालंकार काव्य, शील-रथ, और ज्ञानकुंजरके पत्रोंको प्रकाशित करके संस्थाको अर्पण किया उसीसे जीवन चरित्रकी विशेष शोभा हुई है, उस श्रेयके भागी पीपलानिवासी श्रावक हैं.

इसके पश्चात् सकल श्रमणसंघसे सादर निवेदन है कि पूज्यपाद विरचित ग्रंथोंका अबतकभी बराबर पता लगता जाता है. अद्यावधि जितने ग्रंथोंका पता लगा है, उनका नाम तो प्रायः जीवनचरित्रमे दिया गया है. अब यदि किसीभी व्यक्तिके पास कोई ग्रंथ होवे तो कृपाकर सिर्फ उस ग्रंथका नाम, रचनाका देश काल, सूचित करें, ताके उसको दूसरे संस्करणमें संकलित किया जायगा, और आप लोगोंका उस बाबतमें आभार माना जायगा.

इस पुस्तकके अंदर लेखक तथा मुद्रकके असावधानतासे तथा दृष्टिदोषसे बहुतसी अशुद्धियां रहनेकी संभावना है, उसको सुधारकर बांचे.

गच्छतः स्खलनं क्वापि, भवत्येव प्रमादतः
हसंति दुर्जनास्तत्र, समादधति सज्जनाः ।

इत्यलम्

निवेदक.

गुलाबचंद पारख. भैरूदान बद्धाणी.
मंत्री. उपमंत्री.

श्री जैनधर्म प्रसारक संस्था,
सदर बाजार, नागपूर.

आभारदर्शन.

इस बडी पुस्तकको प्रकट करनेमें ज्ञान प्रेमिओंने निम्न प्रकार आर्थिक सहायता देकर संस्थाके उत्साहको बढाया है। अतः साभार धन्यवाद दिया जाता है।

७०० रु. श्रीमान् हीरचंदजी नानुलालजी पारख सदर बाजार नागपूर.

५०० ,, ,, नवलमलजी सुरजमलजी धोका, यादगिरी.

१०१ ,, ,, आसकरनजी रतनचंदजी बैद, मुंगेली.

१०० ,, ,, स्वर्गवासी राजमलजी बोरूंदिया गनोरी निवासी की धर्मपत्नी श्रीमती जडाव बाई.

५१ ,, ,, मयाशंकर चतुरभुज, उमरावती.

५१ ,, श्री जैनसंघ, चांदूर बाजार, (उमरावती)

५१ ,, ,, मूलचंदजी केसरीचंदजी कोचर, एलीचपूर.

५१ ,, ,, मगनीरामजी आंचलिया की धर्मपत्नी श्रीमती लछमीबाई पींपळखुटा.

२०॥ ,, श्रीमती केसरबाई, बोरीनिवासी मारफत श्री लालचंदजी रघुनाथदासजी, बोदवड.

३०० ,, श्रीमान् रतनचंदजी जसराजजी छाजेड, घ्रसा, (अहमदनगर) पहिलेसे १५० पुस्तकके ग्राहक बने।

२५० ,, दानवीर श्रीमान् शेठ नेमीचंदजी सरदारमलजी पूगालिया, इतवारी नागपूरवाले १२५ पुस्तकके ग्राहक बने.

१०१ ,, रायबहादुर श्रीमान् शेठ फूलचंदजी चांदमलजी नाहार, बरेलीवाले ५० पुस्तकके ग्राहक बने.

२ ,, श्रीमान् घेवरचंदजी केसरीचंदजी बोथरा, पोहना, (हिंगणघाट)

श्री नवलमलजी किसनदासजी मुथा अहमदनगरवालोंने इस पुस्तकके द्वितीय संस्करण की आज्ञा दी इस लिये, भुसावलनिवासी श्री सागरमलजी ओस्तवाळ, नागपूर सदर बाजार निवासी, श्री भैरुदानजी चद्वाणी, आदिने प्रुफसंशोधनका काम किया है इसलिये तथा प्रेस मेनेजरने कई प्रकार की सुविधा कर दी इसलिये, इन सब सज्जनोंका आभार मानते हैं.

प्रकाशक.

विषयानुक्रमणिका.

श्री तिलोक ऋषिजी महाराज का
जीवन चरित्र

॥ ओ३म् ॥

लेखकके दो शब्द.

संसारसागरस्यान्तं, गन्तुमीहास्ति चेद्यदि ।
चरित्रं महतां पोतं, कृत्वा गच्छन्तु भावुकाः ॥ १ ॥

हे भव्यपुरुषो ! इस संसाररूपी समुद्रसे पार होनेकी इच्छा यदि आप लोगोंकी है, तो महान् पुरुषोंके चरित्ररूपी नौकापर आरूढ होकर सुखसे जाइये, अर्थात् यदि आप दुःखमय जगतमें सुखसे जीवन व्यतीत कर परलोकको सुधारना चाहते हैं तो, सब उपायोंको छोडकर सिर्फ उत्कृष्ट चरित्र संपन्न महात्माओंका चरित्र पढिये और तदनुसार अनुकरण कीजिए। इस समय भाषा साहित्यके अंदर इतनी अधिक संख्यामें नूतन पुस्तकें निकल रही है कि जिनका नामोल्लेख करना अशक्य है; परंतु इन पुस्तकोंके अवलोकनसे " विनायकं प्रकुर्वाणो रचयामास वानरम् " इस लोकोक्तिके अनुसार फलस्वरूप उन्नतिके स्थानमें अवनति ही दृष्टिगोचर हो रही है, अर्थात् समाज प्रतिक्षण चारित्र शिथिल व अनुत्साही हो रहा है। आज यदि इन पुस्तकोंके चतुर्थांशमें **स्वर्गीय स्वामी अजरामरजी महाराज,** तथा चरित्रनायक पंडितवर्य **श्रीतिलोक ऋषिजी महाराज,** वर्तमान शतावधानी पंडित **रत्नचंद्रजी स्वामीजी महाराज,** आदिकी जीवनी तथा उनके साहित्यके समान पुस्तकें प्रकाशित होती तो आज समाज उन्नतिके शिखरपर अवश्य पहुंच गया होता। क्योंकि—

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥ १ ॥

अर्थात् जिस रास्तेसे श्रेष्ठ पुरुष गमन करते हैं, उसीको अनुकरण करके तदनुयायी समाज भी चलता है, इस लिये आध्यात्मिक तथा पारमार्थिक लाभको सेवन करनेवाले महान् पुरुषोंका जीवनचरित्र यदि जनताके सामने रक्खा जाय तो चरित्र नायकके प्रारंभिक कर्तव्य तथा उनके गुणोंके साथ अपने कर्तव्य तथा गुणोंकी तुलना करके " हेयोपादेय " अर्थात् बुरेका त्याग और अच्छेका ग्रहण करके समाज मनुष्यजीवनका लाभ ले सकता है.

पूर्वकालमें जो प्रसिद्ध महात्मा और विद्वान् हो गये हैं, व अपने शारीरिक आध्यात्मिक कर्तव्यको करते हुए आत्मिक, मानसिक, सामाजिक उन्नतिके लिए तीर्थंकर, गणधर, साधु, श्रावक तथा अन्य सच्चरित्र पुरुषोंके चरित्रावलोकन तथा लेखनमें ही समय व्यतीत करते थे। देखिये जैनशास्त्रोंमें—चरितानुयोग, कथानुयोग—प्रभावक चरित, नेमि निर्वाण, वगैरह तथा वैदिक मतोंमें रामायण, महाभारतादि ग्रंथ, कि इनके रचयिता सत्पुरुषोंने संसारमें प्रसिद्ध भव्य पुरुषोंके चरित्रलेखन द्वारा अपने साहित्यमें कितना उच्चपद प्राप्त किया है ? साथ ही साथ इसके श्रवण करनेसे पुण्य होता है, दुरित विध्वंस होता है, इत्यादिक तात्विक

प्रलोभन देकर अपने भावी संतानोंका चित्त आकर्षित कर समाज व धर्मको भी उन्नतिके उच्च शिखरपर पहुंचाया है।

जीवनचरित्र वह वस्तु है कि जिसका अवलंबन करके संकटरूपी संसार सागरमें पडकर भी मनुष्य जीवनरूपी नौकाको पार कर सकता है, परंतु जीवनचरित्रके नायक सब कालमें सब जगह प्रायः कम मिला करते हैं, कहा भी है—

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे।
साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ॥ १ ॥

अर्थात् हर एक पर्वत में माणिक्य पैदा नहीं होता है, प्रत्येक हाथी के मस्तकमें मुक्ता उत्पन्न नहीं होती है, संसारमें सब जगह साधु पुरुष नहीं मिलते हैं, न तो हर एक वनमें चंदन उत्पन्न होता है. सारांश यह कि जगतमें स्थल स्थलपर ऐसे महापुरुष प्रगट नहीं होते हैं कि जिनका जीवनचरित्र लिखा जाय। जीवनचरित्र सच्चरित्र साधु पुरुषोंका लिखा जाता है, साधु वे हैं, यथा—

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णाः,
त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं,
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः ॥ १ ॥

अर्थात् जिनके मन वचन कायमें पुण्यरूपी अमृत भरा हो, त्रिविध पापसे एकान्त निवृत्त हो, उपकारके कतारोंसे संसारको तृप्त कर दिया हो, अपने गुणोंका प्रशंसावाद छोडकर परमाणु मात्र भी परगुणको पर्वतके समान दरशाया हो, और जिनका हृदय प्रफुल्लित हो, ऐसे संत दुनियामें कितनेक होते हैं? अर्थात् बहोत थोडे, परंच इस पृथ्वीका नाम वसुंधरा है, कहीं न कहीं ऐसे नररत्न पैदा होही जाते हैं श्रीमहावीरप्रभु ऐसे तीर्थंकर, गौतम–सुधर्मा स्वामी ऐसे गणधर, श्रीरामचंद्र ऐसे बलदेव, श्रीकृष्ण सरीखे वासुदेव और श्रीनेमिनाथ भीष्म समान ब्रह्मचारी, इसी वसुंधराके गोदमें पैदा हुये थे गांधी ऐसे वीर पुरुष विद्यमान हैं और होते जायंगे।

उसी रत्नगर्भा वसुंधरापर पवित्र मालव देशमें **चरित्रनायक पूज्यपाद महात्मा श्रीतिलोक ऋषिजी महाराज** भी विक्रमीय २० वीं शताद्बिके प्रारंभ कालमें **श्री स्थानकवासी जैन** सम्प्रदायमें पैदा हुये थे, जिनका आबाल जीवन वृत्तांत जाननेके लिये जैन समाज तथा अन्य समाजके लोग भी लालायित हो रहे थे, अच्छे २ उच्च आदर्श पुरुषोंने जिनका जीवन चरित्र प्रकाशित करनेके लिये अपना अपना अभिप्राय प्रगट किया था.

सन् १९२७ इसवीमें कच्छमें **श्री १००८ श्री नागचन्द्रजी स्वामीने, पूज्यपाद श्रीतिलोक ऋषिजी महाराज** के सुशिष्य रत्नत्रयाराधक **बाल ब्रह्मचारी श्री रत्न ऋषिजी**

महाराजका स्वर्गवास हो जानेपर, उनके सच्छिष्य **पंडितवर्य श्री आनंद ऋषिजी महाराज**के पास एक पत्र निम्न आशयका भेजे. वह पत्र इस प्रकार है.

कच्छ भुजपुर–जैन स्थानक

ता. ८-९-२७

परम पुनीत पूज्यार्ह, मुनिकुलमंडन, शास्त्रज्ञाने गरिष्ठ मुनि महोदय, श्रीमान् मुनीजी **श्री आनंद ऋषिजी** की सुयोग्य भावनामा चातुर्मासिक स्थान–

हिंगणघाट

आप महोदयनो पत्र ता. १८-८-२७ नो लखेल मळ्यो. वांची प्रमोदानुभव थयो. घणे वखते तमारा समाचार मळवाथी संयमरागवृद्धी थई. हे संयते! गुरुरूप वृक्षपर शिष्यरूप लता संजीवनी रहे छे. संसारसंबंधी मोह रागोत्पन्न छे. गुरु संबंध वीतराग भाव–पोपक बल अर्पे छे. तस्मात् कारणे गुरुवियोगे हृदय व्याकुलता उपजे, ए संभव छे; परंतु वियोग विरह ए पण एक स्थितिदायक छे. किं ? जे गुरुनी हयाती सुधी जेटला प्रमाणमां जे गुरुदेवने ओलखवानी जरूर, सेवानी उपासनानी, लाभ लेवानी, तरवानी ज्ञान पिपासा तृप्त करवानी, हृदय अंतःकरण अने मगज अने जीवनने संस्कारी बनावी समर्थ बनाववानी असाधारण अगत्य होय, तथापि गुरूनी हाजरी हयाति दरमियान न थवा पाम्युं होय, ते गुरुदेवना वियोगरूपी अग्नीथी सदाकाल अथवा केटलेक काल दाह अने भानकारक थाय छे. आप मुनि **गुरुस्मरण,** ध्यानादिवडे गुरु अने प्रभु शासन दीपावाने समर्थ बनो, एज अमारी प्रबल पण समर्थ भावना छे, के जे आपने प्राप्त हो.

आप महोदय! आपना सद्गत गुरुदेवनुं स्मारक कोई पण रीते करवा इच्छो छो? स्मारक कोइ पण संस्था द्वारा साध्य थाय. विद्या, आश्रय, अने स्थान द्वारा थई शके; परंतु आपनी शक्ति संयोग साधन अने परिस्थितिपर आधार राखे छे. अने कशुं पण न थइ शके तेवा संयोगो होय तो आप श्रीमानना संप्रदायमां भूतपूर्व मुनिराजोनी काव्यकृति, लेखकृति, अने ग्रंथकृति विगेरे जे होय तेने सुविहित रीते गोठवी छपावी प्रगट करवानो उपदेश, प्रबंध अने व्यवस्था करावावानी जरूर अमोने समजाय छे. छेवट **श्रीमान् रत्नऋषिजी महाराज** अने **श्रीमान् तिलोक ऋषिजी महाराज** ना जीवनचरित्र छपावी प्रगट कराववानी अने ते जोवानी अभिलाषा छे. आपनाथी बनी शके तेम होय तो प्रयास सेवशो. हाल एज संयमानुराग राखजो. इत्योम् वीरम्

भवदीय

मुनि नागचंद्रजी अने मुनि मंडलनी यथायोग्य वंदना, शांतिः।

एवम् और भी अच्छे २ संत व आर्याजी तथा सुश्रावकोंकी भावना तथा अभिलाषा महाराजश्रीका जीवनचरित्र प्रकाशित होनेकी उत्पन्न हुई; परंच **श्री आनंद ऋषिजी** इस विषयमें तटस्थ रहे. कारण कि अल्पावस्थामें आपको छोडकर आपके गुरुवर्य **श्रीरत्न ऋषिजी** महाराज स्वर्गारूढ हुए, अतः समाजका सब भार आपके आश्रित हुवा. नित्य नैमित्तिक व्याख्या-

नादिक कार्योंके पश्चात् आए हुए जिज्ञासु वर्गोंके साथ प्रश्नोत्तर वगैरहमें सब काल व्यतीत हो जानेसे समयका अभाव था.

सं. १९८८ के चातुर्मासमें वोदवडमें **श्रीउत्तम ऋषिजी** के अध्यापनार्थ मैं आया. उस समय **श्रीआनन्द ऋषिजी** ने इस विषयकी चर्चा मेरे सामने रक्खी कि " मेरे अध्ययनकालमें पूनासे अहमदनगर तक जितने स्थानोंमें पूज्यपाद **श्री तिलोक ऋषिजी महाराजका** पदार्पण हुवा था, प्राय: सब आप देख चुके हैं. उस कालमें वृद्धोंद्वारा तत्तत्स्थानोंमें महाराजश्रीके विषयमें बातें सुन चुके हैं और महाराज श्री के हाथका लिखा हुवा दिनचर्यापत्रका उतारा बहुत कुछ मेरे पास है, यदि आपकी इच्छा होवे तो पूज्यपाद महाराजश्री का जीवनचरित्र अवलोकन करनेका लाभ सबको दीजिये; परंच इस जीवन-चरित्रमें सिर्फ जितनी बातें वृद्धोंके द्वारा आपके श्रवणपथमें आई है, जो महाराज श्री के हस्तलिखित प्रमाणभूत हैं, वेही बातें सूक्ष्मरूपसे दर्शाई जाय "

इस बातको स्वीकार कर आज विशिष्टगुणसंपन्न, जैनागमकेसरी, कवींद्र, प्रात:-स्मरणीय, पूज्यपाद **श्री १००८ श्री तिलोक ऋषिजी महाराजका** संक्षिप्त जीवनचरित्र समाजके सामने उपस्थित करनेमें मुझको अत्यंत आल्हाद पैदा होता है; परंच उसके साथ ही साथ खेद यह उत्पन्न होता है कि जिस महान् पुरुषका यश मालवा, मेवाड, मारवाड, पंजाब, कच्छ, गुजरात, महाराष्ट्र, वरार, निजाम स्टेट आदि देशोंके कोने २ में आज भी सब मनुष्योंके श्रवणरंध्रमें भ्रमरवत् गुंजारव कर रहा है, तथा जिनके पंच परमेष्ठीके कविताको आबाल वृद्ध श्रावक श्राविकागण प्रतिक्रमणमे अहर्निश प्रेमपूर्वक गान करते है, उस जग-द्विख्यात आदर्श महात्माका चरित्र मेरे ऐसे साधारण व्यक्तीमें लिखनेका साहस करना मानो सूर्यको देखनेके लिए दीपक जलाना है । तथापि—

सोई भरोस मेरे मन आवा, कोन सुसंग बडाई पावा ।
धूमौ तजे सहज करुआई, अगर प्रसंग सुगंध बसाई ॥ १ ॥

परम वैष्णव रामचंद्रचरणानुरागी गोस्वामी तुलसीदासजीके इस उक्तिके अनुसार यथामति लिखनेके लिए लेखनी उठा रहा हूं. क्योंकि जिस महात्माके अलौकिक कर्त-व्योंको श्रवण तथा अवलोकन कर श्रोतागण वंशीके शब्दपर मोहित हुये नागके समान डोलने लगते है, उसी परम शत्रुविजयी महान् पुरुषका परम पावन यश मेरे आत्मा तथा बुद्धीको अवश्य पवित्र करेगा.

अद्वितीय वादिगजकेसरी इस चरित्रनायकका परिमितकालीन अद्भुत कर्तव्योंका यदि मैं अपने अल्पबुद्धिसे वर्णन करूं तो भी वह एक बृहत् पुस्तक हो सकता है. इस भयसे सुक्ष्मरूपमें यह चरित्र दिया जाता है कि जिसका आद्योपान्त वाचन श्रवण मनन कर जिज्ञासुगण परम लाभ उठावेंगे और यदि इस लेख मे व्यवहारिक तथा साहित्य सम्बन्धि लेखोंकी अधिकता या न्यूनता दृष्टि गोचर होवे तो लेखक को क्षमाप्रदान करेंगे.

प० राजधारी त्रिपाठी, गोरखपुरीय।

संस्कृते पूज्य पादस्य गुरुपरम्परासहित जीवनचरित्रम्

नत्वाऽथ शासनपति मर्हत्सु वीरम्,
स्तुत्वा गिरं निखिलजन्मिगुरोश्च तस्य ॥
जिज्ञासुवर्गप्रमुदे ऋषिपुङ्गवानाम्,
पाटावलिं वितनुते स्वश्रुतक्रमेण ॥ १ ॥

आदित्यवंशप्रभवाः खलु कोशलेन्द्राः,
काले गतेऽथ विदिता रघुवंशनाम्ना ॥
एवं हि संयतिसमाजमहर्षिवर्गाः,
जाताः 'कहान्' जि ऋषिगच्छप्रसिद्धिभाजः ॥ २ ॥

श्रीमत्सुपूज्यपदवीं ऋषिपुंगवानाम्,
रूढः 'कहान्' जी ऋषिरद्य न भूतलेऽस्ति ॥
जागर्ति तद्गुणगणप्रखरस्तथापि,
एतावता स विदितो विदितप्रभावः ॥ ३ ॥

तत्पाटवर्तिरभवदृषिवर्गमुख्यः,
ताराऋषिस्सकलशास्त्रविचारदक्षः ॥
कालाऋषिस्तदनु पूज्यपदेऽधिरूढः,
एवंक्रमेण बखसू (बक्षू) ऋषिपूज्यपादः ॥ ४ ॥

पूज्योऽथधन्य (धनजी) ऋषिरग्रसरो मुनीना,
मयवंतशिष्यप्रवरः खलु तस्य जातः ॥
तच्छिष्यलोकविदितः प्रथितप्रभावो,
जातस्त्रिलोक इति लोकललामभूतः ॥ ५ ॥

नादिक कार्योंके पश्चात् आए हुए जिज्ञासु वर्गोंके साथ प्रश्नोत्तर वगैरहमें सब काल व्यतीत हो जानेसे समयका अभाव था.

सं. १९८८ के चातुर्मासमें वोदवडमें **श्रीउत्तम ऋषिजी** के अध्यापनार्थ मैं आया. उस समय **श्रीआनन्द ऋषिजी** ने इस विषयकी चर्चा मेरे सामने रक्खी कि " मेरे अध्ययनकालमें पूनासे अहमदनगर तक जितने स्थानोंमें पूज्यपाद **श्री तिलोक ऋषिजी महाराजका** पदार्पण हुवा था, प्रायः सब आप देख चुके हैं. उस कालमें वृद्धोंद्वारा तत्तत्स्थानोंमें महाराजश्रीके विषयमें बातें सुन चुके है और महाराज श्री के हाथका लिखा हुवा दिनचर्यापत्रका उतारा बहुत कुछ मेरे पास है, यदि आपकी इच्छा होवे तो पूज्यपाद महाराजश्री का जीवनचरित्र अवलोकन करनेका लाभ संघको दीजिये, परंच इस जीवन-चरित्रमें सिर्फ जितनी बातें वृद्धोंके द्वारा आपके श्रवणपथमें आई है, जो महाराज श्री के हस्तलिखित प्रमाणभूत हैं, वेही बाते सूक्ष्मरूपसे दर्शाई जाय. "

इस बातको स्वीकार कर आज विशिष्टगुणसंपन्न, जैनागमकेसरी, कवींद्र, प्रातः-स्मरणीय, पूज्यपाद **श्री १००८ श्री तिलोक ऋषिजी महाराजका** संक्षिप्त जीवनचरित्र समाजके सामने उपस्थित करनेमें मुझको अत्यंत आल्हाद पैदा होता है; परंच उसके साथ ही साथ खेद यह उत्पन्न होता है कि जिस महान् पुरुषका यश मालवा, मेवाड, मारवाड, पंजाब, कच्छ, गुजरात, महाराष्ट्र, वरार, निजाम स्टेट आदि देशोंके कोने २ में आज भी सब मनुष्योंके श्रवणरंध्रमे भ्रमरवत् गुंजारव कर रहा है, तथा जिनके पंच परमेष्टीके कविताको आबाल वृद्ध श्रावक श्राविकागण प्रतिक्रमणमे अहर्निश प्रेमपूर्वक गान करते हैं, उस जग-द्विख्यात आदर्श महात्माका चरित्र मेरे ऐसे साधारण व्यक्तीसे लिखनेका साहस करना मानो सूर्यको देखनेके लिए दीपक जलाना है. । तथापि–

सोई भरोस मेरे मन आवा, कोन सुसंग बडाई पावा ।
धूमौ तजे सहज करुआई, अगर प्रसंग सुगंध बसाई ॥ १ ॥

परम वैष्णव रामचंद्रचरणानुरागी गोस्वामी तुलसीदासजीके इस उक्तिके अनुसार यथामति लिखनेके लिए लेखनी उठा रहा हूं. क्योंकि जिस महात्माके अलौकिक कर्त-व्योंको श्रवण तथा अवलोकन कर श्रोतागण वेणीके शद्वपर मोहित हुये नागके समान डोलने लगते हैं, उसी परम शत्रुविजयी महान् पुरुषका परम पावन यश मेरे आत्मा तथा बुद्धीको अवश्य पवित्र करेगा.

अद्वितीय वादिगजकेसरी इस चरित्रनायकका परिमितकालीन अद्भुत कर्तव्योंका यदि मैं अपने अल्पबुद्धिसे वर्णन करूं तो भी वह एक बृहत पुस्तक हो सकता है. इस भयसे सूक्ष्मरूपमें यह चरित्र दिया जाता है कि जिसका आद्योपान्त वाचन श्रवण मनन कर जिज्ञासुगण परम लाभ उठावेंगे और यदि इस लेख में व्यवहारिक तथा साहित्य सम्बन्धि लेखोंकी अधिकता या न्यूनता दृष्टि गोचर होवे तो लेखक को क्षमाप्रदान करेंगे.

प० राजधारी त्रिपाठी, गोरखपुरीय ।

संस्कृते पूज्य पादस्य गुरुपरम्परासहित जीवनचरित्रम्

नत्वाऽथ शासनपति मर्हत्सु वीरम्,
स्तुत्वा गिरं निखिलजन्मिगुरोश्च तस्य ॥
जिज्ञासुवर्गप्रमुदे ऋषिपुङ्गवानाम्.
पाटावलिं वितनुते स्वश्रुतक्रमेण ॥ १ ॥

आदित्यवंशप्रभवाः खलु कोशलेन्द्राः,
काले गतेऽथ विदिता रघुवंशनाम्ना ॥
एवं हि संथतिसमाजमहर्षिवर्गाः,
जाताः 'कहान्' जि ऋषिगच्छप्रसिद्धिभाजः ॥ २ ॥

श्रीमत्सुपूज्यपदवीं ऋषिपुंगवानाम्,
रूढः 'कहान्' जी ऋषिरद्य न भूतलेऽस्ति ॥
जागर्ति तद्गुणगणप्रखरस्तथापि,
एतावता स विदितो विदितप्रभावः ॥ ३ ॥

तत्पाटयार्तिरभवद्दृषिवर्गमुख्यः,
ताराऋषिस्सकलशास्त्रविचारदक्षः ॥
कालाऋषिस्तदनु पूज्यपदेऽधिरूढः,
एवंक्रमेण बखसू (बक्षू) ऋषिपूज्यपादः ॥ ४ ॥

पूज्योऽथधन्य (धनजी) ऋषिरग्रसरो मुनीना,
मयवंतशिष्यप्रवरः खलु तस्य जातः ॥
तच्छिष्यलोकविदितः प्रथितप्रभावो,
जातस्त्रिलोक इति लोकललामभूतः ॥ ५ ॥

अस्त्येकं रतलाम नाम नगरं शोभाशिरोभूषणं,
यस्मिन्श्रीदुलिचन्द नाम विदितः श्रीमानभूच्छीलवान्
नानू नाम विभूषिता गुणवती साक्षात्क्षमारूपिणी,
भार्याजीजनदस्य धन्यदिवसे सन्तानरत्नत्रयीम् ॥ ६ ॥

वेदाकाशनिधीश्वराख्यगणिते चैत्रे शुभे हायने,
पक्षे कृष्णतमे तृतीयदिवसे विष्णुर्दिवेशेष्विव '
नक्षत्रेषु यथा हिमांशुरभवत्पुत्रः " सुराणा " मणिः,
गोत्रोद्धारणकारणः स विबुधैर्नाम्ना तिलोकः कृतः ॥ ७ ॥

धन्येऽब्दे नगरञ्च पण्डितमणिः प्राप्तोऽयवन्तामुनिः,
सार्धं धर्मपरैरपारमतिभिः शिष्यैस्तथा साधुभिः ।
तस्योपाधिपराङमुखैः सुवचनैः प्राप्ता विरागं सती,
श्रीनानू शरणं गता मुनिपतेः सन्तानरत्नैः सह ॥ ८ ॥

वेदैकग्रहरात्रिभूषणमिते माघे च पक्षे सिते,
सौम्यर्क्षे प्रतिपत्तिथौ निजवयोद्विःपञ्चके हायने ।
पूर्णः सर्वकलाभिरङ्कविकलश्चन्द्रो यथा स्वं गुरुं,
स्वीकृत्य प्रवरं मुनिं जिनमुनिर्जातस्तिलोकः प्रभुः ॥९॥

काले स्वल्पतमे तपोभिरमलं संप्राप्य ज्ञानामृतं,
निर्माय स्वयशःशरीरममरं पूर्वार्जितैः कर्मभि : ।
कायोत्सर्गपरायणेन मनसा ध्यायन्प्रभुं शाश्वतं,
मोहग्राहभयावहं जगदुदन्वन्तं तरीतुं सदा ॥ १०॥

शास्त्राणां समुपेत्य सप्तदशकं वृक्षं यथा पक्षिणां,
नित्यं पोषणतत्परं मुनिवरं शान्तं नितान्तं रतम् ।
तद्व्युक्तिरसानुभावभरिता पीयूषसंवर्षिणी,
ध्यानज्योतिरपारतकिल्बिषमिमं प्राप्ता काचिच्चप्रभा ॥११॥

एषा षष्ठिसहस्रपद्यरचना रम्या मुनेर्भारती,
गायन्ती स्तुतियोग्यदिव्यपुरुषान्सीताचरित्रादिषु ।
लोकानुग्रहहेतवे सुविदुषां चेतःप्रसादाय च,
पूर्णा शान्तरसेन जन्हुतनया गङ्गेव विभ्राजति ॥ १२ ॥

हंसा वै सरसीमिव प्रतिदिनं फुल्लैःसरोजैर्युतां,
नानाभावविभाविता समभजन्वाणीं गुणग्राहिणः ।
विद्वान्सो मुनयः प्रसिद्धयतयो वार्ताप्रसङ्गादिषु,
प्राशंसन्नतिहर्षिता मुनिपतेरष्टावधानां[1] प्रभाम् ॥ १३ ॥

गोकर्णप्रमिते द्वितीयमलिखद्यो मूलसूत्रन्दले,
शब्दैः स्पष्टविभासितैः सुविमलं शास्त्रं सपुच्छीसुणम् ।
लोकास्तस्य प्रशस्तलेखनकलानैपुण्यवारांनिधे-
र्गाम्भीर्यप्रतिमापनेऽप्यविभवो मुग्धा इवाश्चर्यतः ॥ १४ ॥

चित्रं वर्णमयं मुनेर्भगवतीशास्त्रानुसारं चितं,
श्रीसिद्धासनहस्तिपालसहितो विज्ञायते कुञ्जरः ।
मन्ये तद्व्यरचि प्रवीणमुनिनाऽगाधामपारामपि,
एनां चित्रकलानदीमतिबलामालोढितुं यत्नतः ॥१५॥

एवञ्चाश्वयुतःसुवर्णरचनादेदीप्यमानो रथः
शीलाङ्गैःसुविराजितो विरचितःसम्मोहनश्चेतसाम् ।
अन्तं याति विषादकण्टकयुता या मोहभूमेरिमान्,
शीलादीन्परिशीलयन्नसुमनसः स्वान्तं समारुह्य यत् ॥१६॥

पूर्णा जैनमतानुयायिभिरहो मार्गस्य काठिन्यतः,
आसीद्धैमवदीप्तदक्षिणदिशा शून्या मुनीनां गणैः ।
आत्मानं परितोष्य बोधपयसा जित्वा पिपासामपि,
धर्मोद्धारणकारणेन मुनिना सेयं सनाथीकृता ॥ १७ ॥

नोट—१ आठ प्रश्नोंका उत्तर देना यह अष्टावधान नहीं किंतु एकसाथ-लिखना-पढाना-पासमें बेठे हुए लोगों के भाषण का अनुगम करना ऐसे आठ अवधान करते थे.

प्राप्तो " घोडनदे"ऽत्र रत्नमिव तं श्रीरत्ननामा मुनिः,
प्राप्त्या यस्य सुचण्डमार्गजलधेर्मन्थः कृतार्थोऽभवत्
आषाढे नवमीदिने सितदले प्राप्तः स दीक्षाव्रती ,
शिष्यत्वं रसपावकग्रहहिमज्योतिर्मिते हायने ॥ १८ ॥

शिष्यैरस्तसमस्तदोषनिचयैः संसेवितः श्रीमुनिः,
ग्रामंग्राममुपेत्य शास्त्रकथितं धर्मं समादिष्टवान् ।
यं श्रुत्वा बहुलाप्यजैनजनता जैनं मतं शाश्वतं,
संसारोदधिपोतरूपिणमिमं संश्रित्य शोभायते ॥ १९ ॥

एवं वर्षचतुष्टयं मुनिवरैः स्वीयैः प्रयासाम्बुभिः,
सिक्तो धर्मतरुः सुगंधसुमनोभिः सेवितः स्थापितः ।
संसारीयविपाकमोहमदिरोन्मादेन मत्तो जन.-
श्छायां यस्य समेत्य सौख्यजननीं प्राप्नोति शान्ति शुभाम्॥ २० ॥

संप्राप्तः स मुनीश्वरोऽथ नगरं प्रावड्ऋतुं यापितुं,
तत्राकस्मिकरोगरुग्णवदनो ज्योतिः परं चिन्तयन् ।
आकाशश्रुतिरत्नचन्द्रगणिते वर्षे सिते श्रावणे,
प्राप्तो दिव्यदशां द्वितीयदिवसे वैमानिकैः सत्कृतः ॥ २१ ॥

आयातः स्मृतिमार्गमप्यविरतं दत्ते वियोगो मुनेः
शल्यानीव मनःसुखी ततमसां सान्द्रं मुनीनामपि ।
किन्त्वेनं सुविचार्य शास्त्रवचनं शाम्यन्ति तेषां व्यथाः ,
कालेस्मिन्नवसर्पिणीति गदिते को वामरत्वं गतः ॥ २२ ॥

संप्राप्य मानपदवीं निखिलोर्ध्वपुंसां.
लोके परत्र च चिरं खलु मोदते यः ।
श्रीपूज्यपादकमलस्य गुरोश्च तस्य,
शृण्वन् स्तुवन् गुणगणान् मुदमाप्नुवन्तु ॥२३॥

॥ पूज्यपाद श्री तिलोकऋषिजी महाराजका जीवन वृत्तान्त ॥

महाराज श्री की गुरुपरम्परा.

विक्रमसंवत्सरके पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ कालमें सूरत निवासी वीरजी वोराकी पुत्री फूलाबाई के कुक्षिसें **लवजी** नाम के पुत्र उत्पन्न हुए. वे अनेक शास्त्रोंका अभ्यास कर माता पिताकी आज्ञानुसार **लोंकागच्छ** में दीक्षा धारण कर शुद्धाचार पालन करते हुए शास्त्रानुसार शुद्ध सद्बोध तथा जैन साधुओं के शुद्धाचारकी खूबी जनताके हृदयमें भरते हुए ग्रामानुग्राम विचरने लगे। उनके पश्चात् **श्री सोमजी ऋषिजी** पाटपर विराजमान हुए, तत्पश्चात् **पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी** महाराज पाटपर सुशोभित हुए, और वहीं से उनके नाम से सम्प्रदाय की स्थापना हुई, पूज्यश्री को ४०००० चालिश हजार गाथाएँ कंठस्थ थी, यह परम्परा द्वारा सुना जाता है. यद्यपि ऋषिसम्प्रदाय सर्वसम्प्रदायोंसे प्राथमिक तथा प्रवर्तक कही जाती है तथापि जैसे सूर्यवंशीय राजगण प्रबलप्रतापी राजा रघुके कालसें रघुवंशी कहलाये, वैसेही **पूज्यश्री कहानजी ऋषिजी** के नामसे यह **ऋषि सम्प्रदाय** विख्यात हुवा। पूज्यश्रीके बाद क्रमसे **पूज्यश्री तारा ऋषिजी, पूज्यश्री काला ऋषिजी, पूज्यश्री बक्षु-ऋषिजी** आचार्य पदपर आरूढ हुए. पूज्यश्रीके छठवें पीढीमें तपस्वीराज **श्री देवजी-ऋषिजी** महाराज विराजमान हैं। **पूज्य श्री बक्षूऋषिजी** महाराजके पाटपर **पूज्यश्री धनजी ऋषिजी** विराजमान हुए, उनके प्रथम शिष्य **श्रीअयवंता ऋषिजी** द्वितीय **श्रीखूबाऋषिजी** महाराज हुए. **श्री अयवंता ऋषिजी** के पाटवी शिष्य चरित्र नायक **श्री तिलोक ऋषिजी** महाराज हैं जिनका सूक्ष्म जीवनचरित्र आपके करमें सुशोभित है. आपके पाटवी शिष्य **श्री रत्नऋषिजी** महाराज हुए. प्राशिष्य **श्री आनन्द ऋषिजी** महाराज विद्यमान हैं. महाराज श्री के शिष्य प्रशिष्य परम्परा सविस्तर परिशिष्ट में दिए हैं. और महाराज **श्री खूबा-ऋषिजी के** प्रशिष्य **पूज्यश्री अमोलक ऋषिजी** महाराज विद्यमान हैं, जो कि जैन-शास्त्रोंका भाषान्तर तथा ग्रंथ निर्माण कर समाज में सुशोभित हैं। **श्री अयवंता ऋषिजी** महाराजके द्वितीय शिष्य **श्री लालजी ऋषिजी** महाराज थे आपके शिष्य विद्वद् रत्न मुनि **श्री दौलत ऋषिजी** महाराज थे जिनके पाटवी शिष्य मुनि **श्री मोहन ऋषिजी** महाराज विद्यमान हैं।

॥ अध्याय ॥ १ ॥

महाराजश्रीकी जन्मभूमि तथा पूर्वचरित.

मालवदेशमें बहुत प्राचीन कालसे बसा हुवा **रतलाम** नामका शहर है, वहांपर ओसवाल जातिकें सुराणा गोत्रमें उत्पन्न हुए समृद्धिसंपन्न प्रतिष्ठित **श्रेष्ठी " दुलीचंदजी "** नामक श्रावक रहते थे। पर्याप्त संपत्ति इहलौकिक सुखसाधनका कारण होनेपर भी आप उससे " **पद्मपत्रमिवांभसा** " अर्थात् जलमें कमलदलके समान निर्लेप रहते थे. किसीनें ठीक कहा है:—

प्राप्तो " घोडनदे"ऽत्र रत्नमिव तं श्रीरत्ननामा मुनिः,
प्राप्त्या यस्य सुचण्डमार्गजलधेर्मन्थः कृतार्थोऽभवत्
आषाढे नवमीदिने सितदले प्राप्तः स दीक्षाव्रती ,
शिष्यत्वं रसपावकग्रहहिमज्योतिर्मिते हायने ॥ १८ ॥

शिष्यैरस्तसमस्तदोषनिचयैः संसेवितः श्रीमुनिः,
ग्रामंग्राममुपेत्य शास्त्रकथितं धर्मं समादिष्टवान् ।
यं श्रुत्वा बहुलाप्यजैनजनता जैनं मतं शाश्वतं,
संसारोदधिपोतरूपिणमिमं संश्रित्य शोभायते ॥ १९ ॥

एवं वर्षचतुष्टयं मुनिवरैः स्वीयैः प्रयासाम्बुभिः,
सिक्तो धर्मतरुः सुगंधसुमनोभिः सेवितः स्थापितः ।
संसारीयविपाक्तमोहमदिरोन्मादेन मत्तो जन,-
श्छायां यस्य समेत्य सौख्यजननीं प्राप्नोति शान्ति शुभाम्॥ २० ॥

संप्राप्तः स मुनीश्वरोऽथ नगरं प्रावडृतुं यापितुं,
तत्राकास्मिकरोगरुग्णवदनो ज्योतिः परं चिन्तयन् ।
आकाशश्रुतिरत्नचन्द्रगणिते वर्षे सिते श्रावणे,
प्राप्तो दिव्यदशां द्वितीयदिवसे वैमानिकैः सत्कृतः ॥ २१ ॥

आयातः स्मृतिमार्गमप्यविरतं दत्ते वियोगो मुनेः
शल्यानीव मनःसुवी ततमसां सान्द्रं मुनीनामपि ।
किन्त्वेनं सुविचार्य शास्त्रवचनं शाम्यन्ति तेषां व्यथाः ,
कालेस्मिन्नवसर्पिणीति गदिते को वामरत्वं गतः ॥ २२ ॥

संप्राप्य मानपदवीं निखिलोर्ध्वपुंसां,
लोके परत्र च चिरं खलु मोदते यः ।
श्रीपूज्यपादकमलस्य गुरोश्च तस्य,
शृण्वन् स्तुवन् गुणगणान् मुदमाप्नुवन्तु ॥२३॥

हुये । अपने पुत्रों और पुत्रीको साथ लेकर त्रिलोकचंद्रजीकी माता नानूबाई भी समाजमें बैठी थीं । उस रोज महाराजश्रीका व्याख्यान "न वैराग्यात्परो बन्धुर्न संसारात् परो रिपुः" अर्थात् वैराग्यसे बढकर कोई अपना बंधु नहीं है, और सांसारिक विषयोंसे बढकर कोई शत्रु नहीं है; इस विषयपर अत्यंत प्रभावशाली व्याख्यान हुवा । व्याख्यान श्रवण करते ही पतिवियोग दुःखिता नानूबाईको शुद्ध वैराग्य उत्पन्न हुआ और पितृहीन अपने चारों संतानोंको छोडकर दीक्षा लेनेके लिये अपना दृढ निश्चय कर लिया.

माताकी यह दशा देखकर **हीराबाई** जिसकी सगाई आंबावाले श्रीलछमनदासजी नवयुवकके साथ हो चुकी थी, वह भी माताकी अनुगामिनी होनेके लिये तयार होगई. परिवारके तथा इतर संबंधी लोगोंने सांसारिक बातोंसे बहुत कुछ प्रलोभन दिया. परंच वह बाई अपनी कुमारी अवस्थामें भी अपने ध्येयसे तनिक भी चलायमान नहीं हुई, वैराग्यपर कायम रही.

उस समय तिलोकचंद्रजीकी अवस्था ९ नव वर्ष आठ माहकी थी. परंच प्रतिष्ठित समृद्धिसंपन्न गृहमें जन्म लेनेसे सैलानेवाले चुन्नीबाईकी कन्या गुलाबकंवरके साथ सगाई हो चुकी थी. उपदेश श्रवण करनेसे तथा माता और अग्रजा भगिनी दशाको देखकर उनका भी आत्मा मोहनिद्रासे जागृत हुवा. उन्हें वैराग्य स्फुरित हुआ. संसारकी अनित्यताका प्रत्यक्ष होने लगा. शाश्वत सुखके तरफ मन दौडा और अपनी माता तथा बहनसे पहलेही संयम लेनेके लिये उत्सुक हो गये. और उनके साथ साथ मध्यम भ्राता **कुअरमलजी** भी उनके सहगामी बननेको कटिबद्ध होगये.

वसिष्ठजीने रामचंद्रजीसे कहा है—

ते महान्तो महाप्राज्ञाः निमित्तेन विनैव हि ।
वैराग्यं जायते येषां तेषां ह्यमलमानसाम् ॥१॥

अर्थात्- वे महाबुद्धिमान महात्मागण वास्तविक धन्य है कि जिनके निर्मल मनमें विनाकारण वैराग्य उत्पन्न होता है । यथार्थ इस बातको तिलोकचन्दजीने सिद्धकर दिखादिया. पूर्वका संस्कार उदय हुआ. अपूर्ण १० दश वर्षकीही अवस्थामें ऐसा कठिन क्षुरधारासम संयम व्रतपर स्वतः वैराग्यपूर्वक चढनेको तैयार हो गये । पुण्यात्मा पुरुषको उच्चपदपर जानेके लिये अतिकठिन भी मार्ग अत्यन्त सुगम हो जाता है. आपके वैराग्यको माताजी अपने प्रेमभावसें कुछ अन्तराय उपस्थित कर सकती, परंच पुत्रसें प्रथम वैराग्यारूढ होनेसे पुत्रको समझानेके लिये किंचित्मात्र साधन उनके पास न रहा.

॥ अध्याय ॥३॥

संवत १९१४ माघ कृष्ण प्रतिपद् गुरुवारको दीक्षा काल.

शहरमें चारोंतर्फ इस बातकी सनसनी फैल गई, दीक्षाकाल नियत होगया, पंडितवर्य **श्री अयवंता ऋषिजी** महाराज वहां विराजमानही थे. आसपासके औरभी साधु तथा आर्याजीका शुभागमन हुआ. संवत १९१४ माघ कृष्ण प्रतिपद् गुरुवारको चतुर्विध संघके समक्ष बडे समारोहके साथ दीक्षा महोत्सव हुआ, उस समय रतलाममें एकत्रित भया हुवा

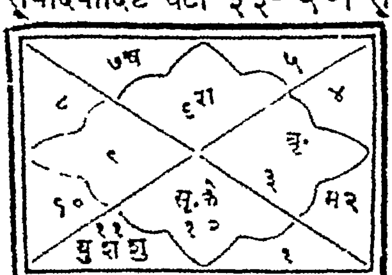
वसन् विषयमध्येऽपि न वसत्येव बुद्धिमान् ।
संवसत्येव दुर्बुद्धिरसत्सु विषयेष्वपि ॥ १ ॥

अर्थात् बुद्धिमान पुरुष सांसारिक विषय वासनाके बीचमें रहकर भी उससे उदासीन रहते हैं, दुर्बुद्धि लोग अनित्य विषयोंमें सांसारिक साधन नहीं होनेपर भी सदा उसीमें लीन रहते हैं। शेठजी बाह्यदृष्टीसे व्यवहारिक व्यापारादिक कार्योंको करते हुए बहुधा अपने समयको संत–मुनिराजोंकी संगति तथा शास्त्रके अभ्यास–श्रवण मननमें बिताते थे। अपने तन धनको धर्मके लिये न्योछावर करनेको सदा कटिबद्ध थे.

दुलीचंदजी शेठ की धर्मपत्नीका नाम **नानूबाई** था. यह बाई पवित्रता पतिव्रता आचार विचारकी लावण्यमयी मूर्ति थी. दोनो संध्यामें सामायिक, प्रतिक्रमण तथा भगवद्भजन, सत्पात्रदान इत्यादि सत्कर्मोंमें प्रवृत्त रहती थी। बाईजीका जितना धार्मिक ज्ञान तथा चरित्र ऊंचा था, उतनाही सांसारिक व्यवहारमें पतिके साथ अपना अनुपम प्रेमभाव प्रगट करके वास्तविक अर्द्धांगिनी शद्बको सिद्ध कर दिखाया था।

इस प्रकारसे सांसारिक सुखका अनुभव करते हुए रत्नगर्भा बाईजीके कुक्षीसे प्रथम धनराजजी दुसरे कुंवरमलजी ये दो पुत्र और हीराबाई एक पुत्री उत्पन्न होनेके बाद विक्रम संवत् १९०४ के चैत्र कृष्ण तृतीया बुधवार को एक ऐसे पवित्रात्मा प्रगट हुए कि उस भव्यात्माका शरीर संस्थान कमलनेत्र सुवर्णवत् मनोहर भव्याकृतिको देखकर प्राणीमात्रके हृदयमें अपूर्व आल्हाद पैदा होता था, अत एव यथार्थ तिलोकचन्द्र नामसे वह लोकमें विख्यात हुए. उनका हस्तलिखित जन्मपत्र इस प्रकार है–

विक्रम शुभ संवत् १९०४ शके १७६९ उत्तरायणे रवौ वसंततौं चैत्रमासे कृष्णपक्षे तृतीयायां तिथौ घट्यः ६०।० चित्रानक्षत्रे घट्यादयः १०–२७ व्याघातयोगे ३९–० सूर्योदयादिष्ट घटी ३३–५०। सूर्य मीन संक्रातेर्गतांशाः १२ समये जन्म।



जन्मांग चक्रम्

तिलोकचंद्रजी जब कुमारावस्थामें थे, उसी समयसे व्यवहारिक लिपिज्ञानके साथ माताके द्वारा धार्मिक शिक्षा भी बहुत कुछ प्राप्त कर लिये थे और तभीसे साधु तथा आर्याजीके विषयमें अप्रतिम भाव था। आपके जन्मके ४ चार माह पहले ही आपके पिताजीका जीवन प्रदीप निर्वाण हो चुका था, अतः पितृसुखसे आप एकांत वंचित रहे।

॥ अध्याय ॥ २ ॥

वैराग्य.

विक्रम संवत् १९१४ में श्रीमज्जैनाचार्य परम पुज्य श्री श्री १००८ श्री **कहानजी ऋषिजी** महाराजके संप्रदायके बालब्रह्मचारी पंडितवर्य **श्री श्री अयवंता ऋषिजी** महाराज अपने शिष्य वर्गके साथ रतलाम पधारे, आपके व्याख्यानमें बहुत नरनारी एकत्रित

हुये। अपने पुत्रों और पुत्रीको साथ लेकर त्रिलोकचंद्रजीकी माता नानूबाई भी समाजमें बैठी थीं। उस रोज महाराजश्रीका व्याख्यान "न वैराग्यात्परो बन्धुर्न संसारात् परो रिपुः" **अर्थात्** वैराग्यसे बढकर कोई अपना बंधु **नहीं है,** और सांसारिक विषयोंसे बढकर कोई **शत्रु नहीं है;** इस विषयपर अत्यंत प्रभावशाली व्याख्यान हुवा। व्याख्यान श्रवण करते ही पतिवियोग दुःखिता नानूबाईको शुद्ध वैराग्य उत्पन्न हुआ और पितृहीन अपने चारों संतानोंको छोडकर दीक्षा लेनेके लिये अपना दृढ निश्चय कर लिया.

माताकी यह दशा देखकर **हीराबाई** जिसकी सगाई आंबावाले श्रीलछमनदासजी नवयुवकके साथ हो चुकी थी, वह भी माताकी अनुगामिनी होनेके लिये तयार होगई. परिवारके तथा इतर संबंधी लोगोंने सांसारिक बातोंसे बहुत कुछ प्रलोभन दिया. परंच वह बाई अपनी कुमारी अवस्थामे भी अपने ध्येयसे तनिक भी चलायमान नहीं हुई, वैराग्यपर कायम रही.

उस समय तिलोकचंद्रजीकी अवस्था ९ नव वर्ष आठ माहकी थी. परंच प्रतिष्ठित समृद्धिसंपन्न गृहमें जन्म लेनेसे सैलानेवाले चुन्नीबाईकी कन्या गुलाबकंवरके साथ सगाई हो चुकी थी. उपदेश श्रवण करनेसे तथा माता और अग्रजा भगिनी दशाको देखकर उनका भी आत्मा मोहनिद्रासे जागृत हुवा. उन्हें वैराग्य स्फुरित हुआ. संसारकी अनित्यताका प्रत्यक्ष होने लगा. शाश्वत सुखके तरफ मन दौडा और अपनी माता तथा बहनसे पहलेही संयम लेनेके लिये उत्सुक हो गये. और उनके साथ साथ मध्यम भ्राता **कुअरमलजी** भी उनके सहगामी बननेको कटिबद्ध होगये.

वसिष्ठजीने रामचंद्रजीसे कहा है—

ते महान्तो महाप्राज्ञाः निमित्तेन विनैव हि।
वैराग्यं जायते येषां तेषां त्ह्यमलमानसाम् ॥१॥

अर्थात्- वे महाबुद्धिमान महात्मागण वास्तविक धन्य है कि जिनके निर्मल मनमें विनाकारण वैराग्य उत्पन्न होता है। यथार्थ इस बातको तिलोकचन्दजीने सिद्धकर दिखादिया. पूर्वका संस्कार उदय हुआ. अपूर्ण १० दश वर्षकीही अवस्थामें ऐसा कठिन क्षुरधारासम संयम व्रतपर स्वतः वैराग्यपूर्वक चढनेको तैयार हो गये। पुण्यात्मा पुरुषको उच्चपदपर जानेके लिये अतिकठिन भी मार्ग अत्यन्त सुगम हो जाता है. आपके वैराग्यको माताजी अपने प्रेमभावसें कुछ अन्तराय उपस्थित कर सकती, परंच पुत्रसें प्रथम वैराग्यारूढ होनेसे पुत्रको समझानेके लिये किंचित्मात्र साधन उनके पास न रहा.

॥ अध्याय ॥३॥

संवत १९१४ माघ कृष्ण प्रतिपद् गुरुवारको दीक्षा काल.

शहरमें चारोंतर्फ इस बातकी सनसनी फैल गई, दीक्षाकाल नियत होगया, पंडितवर्य **श्री अयवंता ऋषिजी** महाराज वहां विराजमानही थे. आसपासके औरभी साधु तथा आर्याजीका शुभागमन हुआ. संवत १९१४ माघ कृष्ण प्रतिपद् गुरुवारको चतुर्विध संघ के समक्ष बडे समारोहके साथ दीक्षा महोत्सव हुआ, उस समय रतलाममें एकत्रित भया हुवा

जैनसंघ दर्शनीय था ऐसी परंपरागत वार्ते सुननेमें आती है. **कुंअरमलजी** व **तिलोकचन्दजी** विद्वद्शिरोमणी **श्री अयवंता ऋषिजी** महाराज के शिष्य हुए। और **नानूबाई** तथा **हीराबाई** सतीशिरोमणी **दयाजी सिरदारांजी** की शिष्या हुई. इसप्रकार एकही रोज एक घरकी चार दीक्षाएँ हुई.अब केवल धनराजजी अपने पैतृक सम्पत्तिपर रह गये, **श्री कुंअर ऋषिजी** महाराज आजीवन एकान्तर उपवास करते रहे और १ चौलपटा तथा १ चादर के ऊपर अपना निर्वाह करते थे, उन्हीं महात्माने भोपालमें जाकर अनेक मन्दिर मार्गियोंको अपने प्रामाणिक सदुपदेशसे साधुमार्गी बनाये, उन्हीं के सदुपदेशसे शास्त्रोद्धारक पण्डितवर्य **पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी** महाराज तथा उनके पिताजी **श्री केवल ऋषिजी** महाराज मन्दिर मार्गको छोडकर साधुव्रतको धारण किये. दीक्षाकालमें महाराज **श्री तिलोक ऋषिजी** की उम्र ९ वर्ष १० मासकी थी. इससे पाठकवृन्द अनुभव कर सकते हैं कि मनुष्यका क्या कर्तव्य है ? उसके जीवनका क्या उद्देश है ?

सारांश यहकि—मनुष्ययोनिमें जन्म पाना यह साधारण बात नहीं है. इस योनिमें जन्म लेनेके लिये देवतालोग भी लालायित रहते हैं, इसी योनिमें सारासार धर्माधर्मादिक तत्त्वोंका विचार करके समस्त बन्धनोंसे निर्मुक्त होकर शाश्वत शांतिको प्राप्त कर सकता है। इसलिये ऐसा अनुपम अमुल्य मनुष्य जीवनरूपी चिंतामणि रत्नको पाकर इसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिये, ऐसाभी कभी दिलमें न लाना चाहिये की मेरे लिये अभी समय बहुत है, क्योंकि कालरूपी शत्रु अपना केश पकडकर बैठा है न मालुम किस समय खींच लेवे। परंच यह संसार मोहरूपी जालसे चौतर्फ घिरा हुआ है, अज्ञानरूपी अन्धकारसे ढका हुआ है, अतएव ऐसेही पथप्रदर्शक पुण्यात्माओंका चरित्र अवलम्बनकर चलना, अपार संसारसे पार होनेका सर्वोच्च साधन है.

॥ अध्याय ॥४॥

शास्त्राभ्यास.

श्री तिलोक ऋषिजी महाराजने गुरुजीके सेवा शुश्रूषाके साथ शास्त्राभ्यास प्रारंभ किया. जिस शास्त्रको आप हाथमें लेते थे मानो वह उनके हृदयकमलपर पहलेहीसे निवास कर चुका था। ठीकही है—**"बहुनां जन्मनामन्ते विवेकी जायते पुमान्"** अनेक जन्मोंके अभ्याससे पुरुष विद्वान् होता है। स्वल्पकालमेंही आपने "श्री दशवैकालिक सुत्र, उत्तराध्ययनसूत्र, सूत्रकृतांगजी, अनुत्तरोपपातिक, निरियावलिकादी पंच सूत्र, अंतगड सूत्र वगैरह १७ शास्त्र कंठस्थ कर लिये थे, शास्त्रस्वाध्यायमें अविरल प्रेम था. बहुतसे संत तथा आर्याजीने आपके द्वारा शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त किया था, सतारावाले सुश्रावक बालमुकुन्दजी मुथा को शास्त्रकी प्रारम्भिक शिक्षा आपहीके द्वारा हुई थी, वे कालांतरमें अच्छे शास्त्रज्ञ बने थे. मुथाजी जीवनपर्यंत हमेशा पूज्यपाद महाराजश्रीका गुणानुवाद करतेथे। महाराजश्री त्रिकालमें प्रतिदिवस एक घंटा ध्यानमें निमग्न होकर उत्तराध्ययनजी वगैरह शास्त्रोंका स्वाध्याय करते थे उस समय आपके कनिष्ट गुरुभ्राता **श्री विजयऋषिजी महाराज**

आपको मशक आदि जीवोंके परीपहसे बचानेके लिये प्रमार्जन करतेथे यह बात वृद्ध परम्परासे सुनी जाती है।

॥ अध्याय ॥५॥

कवित्वशक्ति.

महाराजश्री क्षणमात्र समयका दुरुपयोग नहीं करतेथे, आलस्यका लेशमात्र भी आपके पास नहीं था. आलस्यको परम शत्रु समझते थे. अतः उसका फल स्वरूप आपने थोडेही कालमें कवित्वशक्ति द्वारा गागरमें सागर भर दिया है. किसीने ठीक कहा है.

आलस्यं यदि न भवेज्जगत्यनर्थः,
को न स्याद्बहु धनको बहुश्रुतश्च ।
आलस्यादियमवनिः ससागरान्ता,
संपूर्णा नरपशुभिश्च निर्धनैश्च ॥१॥

अर्थात्— अनर्थकारी आलस्य यदि इस संसारमें नहीं होता तो अति धनाढ्य और प्रखर विद्वान् कौन नहीं होता? परंच आलस्यके वजहसे समुद्रपर्यन्त यह पृथ्वी पशुतुल्य मनुष्योंसे और निर्धनोंसे भर गइ है. संवत १९२१ का चातुर्मास भी परम उपकारी **श्री अयवंता ऋषिजी** महाराजका सुजालपूरमें हुआ था. चातुर्मासके बाद क्रमशः विहार करके संवत १९२२ के आपाढमें मेसरोज पहुंचे वहींपर आपाढ शुद्ध ९ नवमी रविवारको सुगृहीतनामधेय **श्री अयवंताऋषिजी** महाराज अपना आयुष्य पूर्ण कर देवलोकारूढ हुए! उस समय **श्री तिलोकऋषिजी** महाराजकी अवस्था १७ वर्ष ३ माहकी थी. गुरुवियोगसे आपके हृदयकमलपर अति कठिन आघात पहुंचा. परंच अपने आत्मज्ञान द्वारा संसरणशील संसारकी प्रगतिपर ध्यान देकर **"काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमतां"** इस तर्फ अपने चित्तवृत्तिको लगाये. नित्य नैमित्तिक कर्मोंसे कुछभी समय यदि आपको मिल जाताथा तो उसको काव्य रचनासे सफलतामें लातेथे!

महाराज श्रीके बनाये हुए काव्योंका ऋषि संप्रदाय तथा अन्य संप्रदायके बहुतसे साधु तथा आर्याजीके पास पता चलता है, परंच वे सब ग्रन्थ मुझको उपलब्ध नहीं हुए अतः उनकी नामावली नहीं दी है। सिर्फ आपके प्रशिष्य **श्री आनन्द ऋषिजी** के पास अप्रकाशित जितने ग्रन्थ हैं उनके नाम अंकित करते हैं. १ श्री श्रेणिक चरित्र ढाल ८४ गाथा गणना ३२५०, २ श्री चंद्रकेवली चरित्र, ३ श्री समरादित्यकेवली चरित्र, ४ श्री सीता चरित्र, ५ धर्मबुद्धिपापबुद्धि चरित्र, ६ हंसकेशव चरित्र, ७ अर्जुनमाली चरित्र, ८ धन्नाशालिभद्र चरित्र, ९ भृगुपुरोहित चरित्र, १० हरिवंशकाव्य, ११ पंचवादी काव्य, १२ तिलोकबावनी प्रथम, १३ तिलोकबावनी द्वितीय, १४ तिलोकबावनी तृतीय अपूर्ण, १५ गजसुकुमारचरित्र १६, अमरकुमार चरित्र,१७नन्दमणिहार,चरित्र,१८वीररसप्रधान महावीर स्वामीचरित्र. ये सब ग्रंथ इस प्रकारके हैं की जिनको श्रवण करते हुए श्रोतागण आनन्द समुद्रमें मग्न हो जाते हैं. जिस व्यक्तिनें कभी एकबारभी इन चरित्रोंको पढा या सुना है

वही इसका अनुभव कर सकता है. ये ग्रंथ प्रायः शास्त्रोंकेही आधारसे रचे गये हैं, ऐसा मेरा अनुभव है परन्तु उन ग्रन्थोंकी अनुपम अपूर्व रचना शैलीपर किसीभी समाजका सहृदय मनुष्य मुक्तकंठसे प्रशंसा किये बिना रह नहीं सकता है. माघ काव्यमें लिखा है कि:--

वर्णैः कतिपयैरेव ग्रथितस्य स्वरैरिव ।
अनन्ता वाङ्मयस्याहो गेयस्यैव विचित्रता ॥ १ ॥

अर्थात्– वर्ण क ख ग वगैरह उतनेही रहते हैं. षडज ऋषभ गान्धार आदिक स्वर सातही रहते हैं, परंच गानेवालोंके गानेमें फरक पड जाताहै यह गानेवालोंकी विचित्रता है. इन ग्रंथोंके वा १प्रतिक्रमण सत्यार्थ व २ज्ञानप्रदीपक छपा हुवा है जो दक्षिण, खानदेश, वराड, निजामस्टेट वगैरह देशोंमें बहुतसे श्रावकोंके पास उपलब्ध है. जिसकी द्वितीयावृत्ति फिर नागपूर सी०पी० में महाराज श्री तिलोक ऋषिजी के पाटवी शिष्य श्री रत्नऋषिजी महाराज के स्मारक स्वरूप "श्री जैनधर्म प्रसारक" संस्थामें प्रकाशित हो रही है. इस ग्रंथमेंभी महाराज श्री के बनाये हुए जो अनेक रत्न हैं वे भी दर्शनीय है. कुलग्रंथ आपका बनाया हुआ प्रकाशित या अप्रकाशित आज करीब गाथा संख्या ७५ पचहत्तर हजारके उपलब्ध है, सोभी वे ग्रंथ विक्रम संवत १९२७ के बाद जो रचे गये है वेही है, उसके पूर्वका पत्ता नही चलता है. आप विहार करते हुए जिस वर्ष तथा जिस स्थानपर जो ग्रंथ या कविता निर्माण किये है, वे सब सूक्ष्मरूपमें अध्याय ९ वेमें दर्शाये जायेंगे.

॥ अध्याय ॥८॥

लेखनकला.

महाराजश्रीका लेखनकलामेंभी उत्युत्कृष्ट प्रेमथा. इसकलामेंभी आप उच्च शिखरपर आरूढ थे. यह कहनेमें तनिकभी अत्युक्ति न होगी पूज्यपाद महाराजश्रीके हाथका लिखा हुवा एक पत्र आपके प्रशिष्य अर्थात् स्वर्गीय श्री रत्न ऋषिजी महाराजके सुशिष्य श्री आनन्द-ऋषिजी के पास मौजूद है जो९इंच लम्बा५इंच चौडाईके विस्तारमें है उसके तीन अंशमें श्री दशवैकालिक सूत्र सम्पूर्ण लिखा हुवा है. चौथे अंशमे पुच्छीसुणं मूल अर्थात श्री सुयगडांगसूत्र के प्रथम श्रुतस्कंधका छठवां अध्ययन जिसमें श्री महावीर स्वामी की स्तुति की है वह और २५६ दगलाका थोकडा लिखा हुआ है यह दृश्य जिनलोगोंने प्रत्यक्ष नहीं किया होगा, उनको लेखककी असत्यता प्रतीत होनेकी सम्भावना है. परंच ऐसे ५-६ पत्र महाराजश्रीके हाथके लिखे हुए अच्छे २ मुनिराजोंके पास सुरक्षित हैं. संवत १९८१ में कच्छ (कपाया) मे श्री नागचंद्रजी स्वामी ने श्री रत्न ऋषिजी महाराज के पाससे मंगाकर उसका फोटो लेकर फोटोकी कई प्रतियोंके साथ उसको वापस कर दिये. पूज्यपाद महाराज श्री दोनों हाथ तथा दोनों पैरसे लिख सकते थे और एक समयमें आठ अवधान आप कर सकते थे ये सब बातोंके प्रमाण सुन अभी दक्षिण अहमदनगर तथा पूना जिलेमें दो चार वृद्ध विद्यमान हैं.

॥ अध्याय ॥ ७ ॥

चित्रकला.

पूज्यपाद महाराज श्री चित्रकलामें भी अत्यन्त प्रवीण थे. उन्होंने भगवतीजी शास्त्रानुसार कवितामय तथा गद्यमय **ज्ञानकुंजर** तैयार किये हैं. जिसमे अम्बारी सवारसहित एक बृहत् हाथीका आकार है. सूंढसे प्रारम्भकर पढते जाइये क्रमशः हाथीका सब अवयव तैयार होता जायगा और **बृहत्** हस्तीके आकृतिके अन्दर एक चवन्नीभर जगहमें सब अवयव सहित ६५ हाथीके आकार है, इसकाभी फोटो **श्री नागचन्द्रजी** स्वामीके पास मौजूद है. एवं चित्रमय **शीलरथ** तथा १॥ इंचके दीर्घ विस्तारमें सम्पूर्ण आनुपूर्वी इत्यादिक आपके चित्रकलाविषयक दर्शनीय अपूर्व चीजें **श्री आनन्द ऋषिजी** के पास मौजूद हैं, विशेष उल्लेखनीय आपका बनाया हुआ एक **विचित्रालंकार** नामका काव्य है, जिसमे २४ चोवीस तीर्थंकरोंकी स्तुति दोहाछंदमें की गई है. उसहीके अन्दर छत्रबन्ध, दुर्गबन्ध, नमस्कार मंत्र वगैरह अनेक चीजें निकलती हैं, जिसको देखकर बडे २ कविलोग और विद्वानलोग भी आश्चर्य चकित हो जाते हैं। उस चित्रालंकारकाव्यका परिचय निम्न लिखित प्रकारसे है।

इसीके चारों तरफसे गोमूत्रिकाबंधमें तीन तरहके **नमोकार** मंत्रके अक्षर आए हुए हैं (१) णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं, एसोपंच नमोक्कारो सव्वपावप्पणासणो॥ मंगलाणंच सव्वेसिं, पढमं हवइमंगलम्॥ यह प्रसिद्ध नमोक्कार मंत्र है. (२) **श्रीचंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र** के अन्दर दी हुई गाथामेंभी नमोकार है, वह इस प्रकारहै "नमिऊण असुरसुरगुरुलभुयंगपरिवंदिए गयकिलेसे। अरिहे सिद्धायरिये उवज्झाए सव्वसाहूए" इसमेभी पांच पद आए है (३) " सिद्धाणं नमो किच्चा-संजयाणंच भावओ,। इसमेंभी नमोक्कार मंत्र संक्षिप्तस्वरूपमें आया है. अर्थात् सिद्ध और साधु ऐसे दो पदोंको **श्री उत्तराध्यनसूत्रके** वीसवे अध्ययनमें यह प्रथम गाथाके पूर्वार्द्धमे लिया हैं,। सारांश– अरिहंत और सिद्ध इन दो पदोंका सिद्ध इस पदमें समावेश होता है, और आचार्य, उपाध्याय और साधु ऐसे तीन पदोंका साधु शद्बमें समावेश होता है, क्योंकि साधु बननेके बादही आचार्य, उपाध्याय पदवियां योग्यता होनेपर प्राप्त होती हैं।। और इस चित्रालंकार काव्यमेंही दो चौकडियां है (१) एकमें **दान, शील, तप, भाव** यह अक्षर आए है और (२) में **नाण, दंसण, चारित्र** ऐसे अक्षर आए है.इस काव्यमें श्रीमान-**तुंगाचार्य** प्रणीत **श्री भक्तामर स्तोत्र** का २६ वां श्लोक है, वह यह "तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ" वगैरह पूर्ण श्लोक है। और उसके आगे श्री दशवैकालिक सूत्रके प्रथम **अध्ययन**की पहली गाथा है वह इस प्रकार है "धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो॥ देवावि तं णमसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥ इति॥ इसके आगे काव्यालंकारके बीचमें ॐ नमः **सिद्धं** ॥ ऐसे अक्षर निकलते है और चित्रालंकारके नीचे दोनो बाजूसे दो छत्रबन्ध है, इनमें पूज्यपाद महाराजश्रीनें संवत मिति देते हुए अपना नामभी उन अक्षरोंमें सम्मिलित किया

है, वह ऐसा "संवत उगनीसे अठावीस जाण, निश्चल केवली वेण प्रमाण ॥ ऋपिपंचमी विचितरि अलंकार, तिलोकरिख कहे गुरु उपकार ॥ यह चौपाई छंद है. इन सब चीजोंका फोटो लेकर जीवन चरित्रमें सम्मिलित करने के लिये मैंने श्री आनन्दऋपिजी महाराजसे अनुरोध किया था, परंच चित्रोंके फोटो टाईप करानेमें विशेप व्यय है, इस वजहसे सब चित्र प्रकाशित न हुए परंच जहांपर आपका पदार्पण हो, वहाके व्यक्तियोंने इन सब चीजोंका अवलोकन अवश्य करना चाहिये. इनके देखनेसे प्रत्यक्ष मालूम होता है की जैन समाजमें कैसे कैसे विद्वान् महात्मा गुणीपुरुप उत्पन्न हो गये हैं. अपनाभी क्या कर्तव्य है- गृहस्थ अथवा संयमदशामें रहकर किस तरह अमूल्य मनुष्यजीवनका सदुपयोग करना चाहिये.

॥ अध्याय ॥ ८ ॥

संत समागम तथा गुणग्राहकता.

पुज्यपाद महाराज श्रीके समकालीन जो अच्छे अच्छे प्रसिद्ध विद्वान् थे, उनसे वे मिलाप करते थे. उन महात्माओंके पास जो कुछ ग्रहण करने योग्य विपय होता था, उसको उत्कंठापूर्वक ग्रहण करते थे, इस विपयमें आप संतोप नहीं रखते थे.

वशिष्ठजीनें रामचंद्रजीसे कहा है- हे रामचंद्र !

येपां गुणेप्वसंतोपो, येपां रागःश्रुतं प्रति,
सत्यव्यसनिनो ये च, ते नराः पशवोऽपरे ॥ १ ॥

अर्थात्—जो गुण ग्रहणके विपयमें असंतोप रखते हैं और शास्त्रके विपयमें प्रेम रखते है, सत्य बोलना यही व्यसन जिनके पास है वेही मनुष्य है, और सब पशु है. वास्तविक ये तीनों वातें महाराजश्रीमें मौजूद थीं. आप पूज्य श्री रखराजजी महाराज तथा पूज्य श्री धर्मदासजी महाराजके सम्प्रदायके ज्ञानचन्द्रजी तथा मोघजी स्वामी और कोटा सम्प्रदायके सुप्रसिद्ध विद्वान छगनलालजी महाराज, पंडितवर्य श्री फकीरचन्दजी महाराज, पूज्य श्री उदयसागरजी महाराज वगैरह मुनिराजोंमें मिलाप करके उन लोगोंके प्रेम पात्र बने थे, और भी प्रसिद्ध मुनिराजोंका मिलाप हुआ था. परंच कब किस स्थानपर मिलाप हुआ इस विपयमें महाराज श्री का हस्त लिखित कोई प्रमाण नहीं मिलनेसे देनेमें नहीं आया.

॥ अध्याय ॥ ९ ॥

चातुर्मास.

अध्याय ५ में हम लिख आये हैं कि अपूर्ण १८ वर्पकी अवस्थामे श्री तिलोकऋपिजी महाराज श्री के गुरुमहाराजका वियोग हुआ. उसी समयसे आप गुरुजीका सब तरहका भार संभालने लगे. सुजालपुरमें पूज्यपाद श्री अयवंताऋपिजी महाराज विक्रम संवत्

१९२१ का चातुर्मास कर चुकेथे. पवित्र पुरुष अपने पद पंकज द्वारा जिस स्थानको पावन करते हैं, वही तीर्थस्थान है, अतः पूज्य श्रीने संवत् १९२२ में प्रथम चातुर्मास **सुजालपुरमें** किया. इस प्राथमिक चातुर्मासमें बडाही उत्साह हुआ. अनेक श्रावक तथा श्राविकाओंने द्वादश व्रतका प्रत्याख्यान वगैरह लिया. दूर दूर से बहुत लोग दर्शनार्थ आए थे. व्याख्यान श्रवण कर संतुष्ट हुए. वहींसे आपकी कीर्तिरूपी भेरीका नाद दिशाओंमें प्रतिध्वनि करने लगा. चारोंतर्फ ज्ञानरूपी पद्म परिमलका सुगंध प्रसृत हुआ, व्याख्यानमें **अंतगढजी** सूत्रका उपदेश होता रहा. महाराज श्रीका गुरुवियोगके बाद यह प्रथमही चातुर्मास है। चातुर्मासके बाद विहारकर **उज्जैन, खाचरोद, रतलाम** वगैरह १५ क्षेत्रोंको पावनकर **संवत १९२३ का चातुर्मास आपने मंदसोर** में किया. व्याख्यानमें **पन्नवणा** और **समवायाङ्ग,ज्ञाताजी** तथा **उत्तराध्ययन**६अध्ययन हुवा. अनेक प्रकारके व्रत प्रत्याख्यानादिक भी हुए. मंदसौरमें अच्छे अच्छे शास्त्रज्ञ श्रावक थे. आपका व्याख्यान श्रवण कर उनके दिलमें संतोष पैदा हुआ कि आपके द्वारा समाजका कुछ उद्धार अवश्य होगा परंच महाराजश्रीके अपूर्व उपदेशरूपी अमृतके पान करने की इच्छा अभी शांत नहीं हुई अतः चातुर्मासके विहारके बाद फिरभी मंदसोरमेंही चातुर्मास करनेके लिये श्रावक समुदायने अत्यन्त आग्रह किया अतः **संवत् १९२४ का चातुर्मासभी आपने ठाणा ३ से मंदसोर जीवा**ं‌जं में किया।

मंदसौरसे विहारकर अनुक्रमसे रतलाम, सलाने, चितौड, अजमेर वगैरह २१ क्षेत्रोंको पावन कर केकडी पधारे। कई स्थानोंकी चातुर्मासकी प्रार्थना चल रही थी आखिर बहुमतसे कोटाकी प्रार्थना स्वीकृत हुई. **संवत् १९२५ का चातुर्मास कोटा रामपुरा** में मनोहरदासजीके नोहरेमें हुआ. व्याख्यानमें **आचारङ्गजी का** वाचन हुवा। आपके वक्तृत्व शक्तिपर मोहित होकर श्रोतागण कमलपर भ्रमरके समान लीन रहते थे. बडेही उत्साहके साथ वहांका चातुर्मास संपन्न हुआ.

कोटासे विहार कर क्रमशः झालरापाटन, अमरकोट, सारंगपुर होते हुए फाल्गुनमें सुजालपुर पधारे. उस समय वहांके विज्ञ श्रावकोंकी हर्षकी सीमा न रही. हाथमें आये हुए चिंतामणिको हाथसे बाहर नहीं जाने देना चाहिये. ऐसा विचार कर चातुर्मासकी प्रार्थना श्रावकोंने शुरू कर दिया. यहाके श्रावकोंका धर्मानुराग प्रेम भाव पहलेहि से था, फिरभी अत्यन्त उत्कृष्ट प्रेम देखकर प्रार्थना स्वीकृत हुई **संवत १९२६ का चातुर्मास सुजालपूरमें** बडे उत्साहके साथ हुआ धर्मोन्नतीभी अधिक हुई। व्याख्यानमें **श्री अनुत्तरोववाई, श्री सुयगडांगजी** फर्माये गये। सुजालपुरसे विहारकर क्रमशः ३७ क्षेत्रोंको पावनकर जन्म स्थान **रतलाममें** पहुंचे वहाके संघका विशेषतः आग्रह हुआ कि यह क्षेत्र अपने नामसे तथा चौतर्फका मुख्य केन्द्र होनेसे हरदम मुनिराजोंके आवागमनसे बहुत कुछ प्रतिष्ठा प्राप्त कर लिया है और आप ऐसे नररत्नको पैदा कर अपना नामभी यथार्थ स्पष्टीकरण कर चुका है परंच उस रत्नसे लाभ उठाने का यथेष्ठ अवसर यहाके निवासियोंको न मिला, अतः हम लोगोंकी प्रार्थना है कि इस वर्षके चातुर्मास की प्रार्थना स्वीकारकर श्रीसंघको अनुगृहित कीजिये

महाराजश्रीनें प्रार्थनास्वीकार कर लिया. **संवत १९२७ का चातुर्मास बडे समारोहके साथ रतलाम** माणिकचौकमें ठाणा पांचके साथ समाप्त हुआ, व्याख्यानमें **श्री-भगवतीजी** तथा **श्री अंतगढजीका** वाचन हुआ.।

रतलामसे विहार कर अनुक्रमतः छोटी सादडी, बडी सादडी, वगैरह २७ क्षेत्रोंको पावनकर माघ शुद्ध ९नवमी रविवारको उदैपुर प्राप्त हुए, वहापर आपके पधारनेसे बडाही उत्साह और धर्मका प्रकाश हुआ. यहांपर २०वीश रात्र निवासकर विहार करते हुए निमच, नारायणगढ, अमरावद वगैरह ३५क्षेत्रोंको पवित्र कर विक्रम संवत् १९२८ के वैशाखमें रतलाम पधारे, उसी जगह "**इन्द्र विजय छन्दोवद्ध तिलोक बावनी**" वैशाख शुक्ल नवमी शनिवारको पूर्ण किये। रतलामसे विहार कर १०दश क्षेत्रोंको पवित्रकर साजापुरमें पहुंचे. **संवत १९२८का चातुर्मास ठाणा ३ से साजापुर** अच्छे उत्साह पूर्वक समाप्त हुआ, उसी जगह भाद्रपद शुक्ल ५ पंचमीको **विचित्रालंकारकी** रचना समाप्त हुई है. विचित्रालंकारका पूर्ण परिचय अध्याय ७ में हम लिख चुके हैं. चातुर्मासके व्याख्यानमें **श्री भगवतीजी** तथा **श्री उववाईका** उपदेश होता रहा. साजापुरसे विहार-कर क्रमशः देवास, इन्दौर, धार वगैरह ३८ क्षेत्रोंको पावनकर **संवत् १९२९ का चातुर्मास धरियावदमें** ठाणा ४से किया। व्याख्यानमें **स्थानाङ्ग उपासकदशाङ्ग** का उपदेश होता रहा। इस वर्षका रचा हुआ **सुदर्शन सेठका चौढालिया** श्रावणकृष्ण तृतीयाके रोज समाप्त किया हुवा **मुनि श्री माणक ऋषिजी महाराज के** पास उपलब्ध है। तथा "**अर्जुन माली मुनिका**" चौढालिया मुनि **श्री आनन्द ऋषिजी के** पास उपलब्ध है परंच कब और कहांपर इनको बनाया यह उल्लेख नहीं मिलता है; अनुमानतः चातुर्मासमें बना होगा ऐसी कल्पना कर सकते हैं.

धरियावदसे विहारकर अनुक्रमसे १७ क्षेत्रों को पावनकर वि० संवत् १९३० के वैशाख कृष्ण प्रतिपदको मंदसौर पधारे, वहांके विज्ञ श्रावक वर्ग पूज्यपाद महाराजश्रीके समागमने पहले दो वर्षोंमें लाभ उठा चुके थे इस लिये फिर चातुर्मासकी प्रार्थना की. प्रार्थना स्वीकृत होनेके बाद महाराजश्री अन्यत्र विहार न करने पाये। अतः **सं० १९३० का चातुर्मास मंदसोर** में हुआ. मंदसौरमें वैशाख कृष्ण १० दशमी सोमवारको "**पंचवादी-काव्य**" बनाये, जिसकी रचना विद्वानोंके देखने योग्य है. ज्येष्ट कृष्ण ६ षष्ठी रविवारको "**साधुस्तोत्र**" की रचना किये. आषाढ शुक्ल तृतीया शुक्रवार के रोज मंदसौरमें रचा हुवा **धर्मजयकुमारकी** चौपाई महासतीजी **श्री रतनकुंवरजी** के पास उपलब्ध है. आशाढ शुक्ल तेरस भोमवारको "**रिखभदेवजिनस्तवन**" की पूर्ति किये. इसके बाद संवत १९३० के रचे हुए (१) "**अरिहंताजिन स्तवन छंद**" (२) "**अतीत अनागत वर्तमान चौविश जिन स्तवन**" ये दो स्तोत्र प्रकाशित उपलब्ध है. परंच इनके रचनेका स्थान और कालका उल्लेख नहीं है, साहचर्यसे येभी मंदसौरमें रचे गये होंगे ऐसा हो सकता है।

संवत १९३१ तथा १९३२ का चातुर्मास साजापुरमें हुवा ऐसा महाराज-

श्रीके लेखसे प्रमाण मिलता है परंच इन दो वर्षोंमें कितने क्षेत्रोमे आपने विहार किया और किस किस शास्त्रोंका उपदेश हुआ इसका कुछ उल्लेख नहीं मिलता है नतो संवत् १९३१ के रचित ग्रन्थोंका पता है. सिर्फ संवत् १९३२ के ज्येष्ट कृष्ण द्वितीया शनिवार सिद्धियोगमें **"भय भंजन अरिहंत स्तवन"** साजापुरमें रचित उपलब्ध है। भाद्रपद शुक्ल तेरस सोमवार के रोज **नेमिचरित्रकी** रचना समाप्त किए. तथा (२) **"भ्रमभंजनकुमति चपेटिका"** (**उपनाम प्रश्नोत्तरयुक्त चर्चामाला**) यह ग्रंथभी प्रकाशित है परंच स्थान समयका उल्लेख नहीं है.

संवत १९३२ के चातुर्मासके बाद साजापुरसे विहार कर इन्दौर, उज्जैन वगैरह ८ क्षेत्रोंमें भ्रमणकर संवत १९३३ का चातुर्मास सुजालपुरमें किये, उस वर्षमें भी कोई विशेष उल्लेख नहीं मिलता है. सिर्फ श्रावण शुक्ल १४ शुक्रवार श्रवण नक्षत्र प्रीतियोग ववकरण मकरचंद्रमें स्थान मालवा सुजालपुरमें **'सीता चरित्र'** को किया. यह ग्रंथ अप्रकाशित उपलब्ध है.

चातुर्मासके अनन्तर सुजालपुरसे विहारकर देवास इन्दौर होते हुए मार्गशीर्षमें रतलाम पधारे वहां मार्गशीर्ष वदि १० दशमीको **श्री भवानीऋषिजीकी** दीक्षा हुई ७ वें रोज बडी दीक्षा हुई. वहांसें विहारकर फाल्गुनी पूर्णिमा जावरामें किये. तत्पश्चात् १० दश क्षेत्रोंको पवित्रकर **संवत १९३४ का चातुर्मास रतलाममें** किये. व्याख्यानमें **जम्बूद्वीप पनन्ती, श्रीअंतगढ, निरियावलीका** उपदेश होता रहा. इस वर्षका रचित **'आचार्य स्तोत्र'** उपलब्ध है, जो वैशाख शुक्ल पूर्णिमा सोमवार को बनाया उसमें स्थानका उल्लेख नहीं है.

रतलामसे विहारकर ३१ क्षेत्रोंको पावन कर फाल्गुन कृष्ण २ को प्रतापगढ पधारे १० दश रात्र निवासकर तदनंतर मम्मटखेडामे पधारे, वहां चैत्र शुक्ल १२ रविवार को **श्री प्याराऋषिजी की** दीक्षा हुई, वहींसे जावरावाले श्रावकोंकी चातुर्मासकी प्रार्थना शुरू हुई व प्रार्थना स्वीकृत हुई. वहांसे विहार कर २२ क्षेत्रोंको पावन किए और ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया रविवार के दिन **" कृष्णजी को ब्यावलो "** नामक ग्रंथ की रचना किए, बाद चातुर्मासके लिए जावरे पधारे.

संवत १९३५ का चातुर्मास बडे उत्साहपूर्वक जावरेमें समाप्त हुआ. उसी समय देश दक्षिण ग्राम घोडनदी जिल्हा पूनासे सुश्रावक गंभीरमलजी लोढा मालवामे मुनिराजोंके दर्शनार्थ पधारेथे, उस समय दक्षिण देशमें मुनिराजोंका संचार बहुतही कम था. अर्थात् प्रायः मुनिराजोंसे एकान्त शून्य था. अंतः गंभीरमलजी लोढाने कोटा सम्प्रदायके सुप्रसिद्ध विद्वान् **श्री छगनलालजी महाराजसे** दक्षिण देशमे विहार करनेकी प्रार्थना की परंच आपने स्वीकार नहीं किया. फिर वहांसे जावरा **पुज्यपाद श्री तिलोकऋषिजी महाराज** के चरणोमें अपनी अर्ज सुनाए. विशेष उपकार समझकर **महाराजश्रीने** प्रार्थनास्वीकार कर लिया. चातुर्मास खतम होतेही आपने **श्री प्यारा ऋषिजी** तथा **श्रीकंचन ऋषिजी** ठाणे ३से दाक्षिणके तर्फ पदार्पण किया. मार्गशीर्ष १५ को धारमें पधारे. वहां ८दिवस निवासकर विहार करते हुए इन्दोर, खंडवा, होते हुए बऱ्हानपुर पधारे. वहां

आसपासके ग्रामोंमें दिगम्बर सम्प्रदाय के अन्तर्गत तारण स्वामीका एक मत चलता है उसको माननेवाले एक जातिके वणिक है. ये केवल शास्त्रोंको मानते है और पूजते हैं. उपदेश देकर इनमेंसे बहुत लोगों को साधुमार्गी बनाये. वहांसे आगे चलकर फैजपुर पधारे वहां आर्याजी श्रीभूराजीकी दिक्षा हुई, उनको सती शिरोमणी श्रीहीराजीके निश्रायमें देकर वहासे भुसावल, जलगांव होते हुए संवत् १०३५ चैत्र वदि नवमी को घोडनदीको अपने चरण रजोंसे पवित्र किया.

संवत् १९३६ की दिनचर्या.

दक्षिण देशमें उस समय हर्षकी सीमा न रही उस समयके ४-५ चार पांच वृद्धोंसे मेरी मुलाखात हुई है. उनके मुखसे उस समयका उत्साह सुननेहो योग्य है. बहुत दूर दूरके श्रावक घोडनदीमे महाराज श्रीके दर्शनार्थ आए, और सबलोग अपने तर्फ विहार करानेके कोशीसमें लगे, परंच अहमदनगरके श्रावकोंने अपने कार्यमें सफलता दिखाई १८ अठारह रात्र घोडनदीमें रहकर बाद अहमदनगरके तर्फ विहार किया अहमदनगरमें उस समय समाज विख्यात दृढधर्मी रंभाबाई विराजमान थी. श्री तिलोक ऋषिजी महाराज नगरमें पधार गये, यह शब्द जिस व्यक्तिने प्रथम सुनाया उसको बधाईमें सुवर्णका कंकण बाईजीने प्रदान किया, यह बात वहाके वृद्धोंद्वारा सुनी गई है. अहमदनगरमें बडाही उत्साह मनाया गया. २१ एकविंश रात्र महाराज वहां विराजमान थे चातुर्मासकी प्रार्थना सरु हुई. परंच घोट-नदी वाले सुश्रावक गंभीरमलजी लोडाजीकी बातें सुनाकर अग्रिम वर्षके लिये कुछ छाया देकर विहार कर गये. नगरसे विहार करनेके बाद ३६ क्षेत्रोंको पावनकर आषाढ वदि १४ को घोडनदीमें पधारे.

उसके पश्चात संसार पक्षकी महाराज श्री की जेठी वहिन सती शिरोमणी श्री हीराजी ने मालवासे विहार करते हुए ठाणा ३ से घोडनदीमें पधारे, उस समय आप-लोगोंके उपदेशसे दक्षिण देशका पुनरुद्धार हुआ, ऐसा सुना जाताहै. बहुतसे पुण्यात्मा व्यक्ति-ओंने अपने मनुष्य जीवनकी सफलता प्राप्त कर ली आषाढ शुक्र ९ नवमी शनिवारको एक समयमें चार दीक्षा हुई, पिता और पुत्र श्रीस्वरूपऋषिजी तथा श्रीरत्नऋषिजी महा-राज ये दोनों व्यक्ति श्री तिलोकऋषिजी महाराजके शिष्य हुए इन लोगोंके वैराग्य का कारण तथा कर्तव्य श्री रत्न ऋषिजी महाराजके जविन चरित्रमें वर्णित हैं. एवं माता पुत्री श्री चंपाजी तथा श्री रामकुंवरजी सती शिरोमणी आर्याजी श्री हीराजीकी शिष्या हुई इस तरह ठाणा ७ का चातुर्मास संवत १९३६ का बडे आनन्द पूर्वक घोडनदी मे समाप्त हुआ. वहींपर चातुर्मासमें "११ ग्यारह गणधरकी प्रथम स्वाध्याय" नामकी कवितार्की रचना की. व्याख्यानमें समवायाङ्गजीका उपदेश होता रहा. चातुर्मासके बाद मार्गशीर्ष कृष्ण१३गुरुवारको आर्याजी श्रीरम्भाजीकी दीक्षा हुई. मार्गशीर्ष शुक्र५पंचमी शुक्रवारको विहारकर स्थान परिवर्तन किये. फिर पौष शुक्र६षष्टी शनिवारको श्रीगोकुलजीकी दीक्षा हुई, पौष शुक्र १२ द्वादशीको विहार किये. विहार करते हुए आबोरी पधारे, वहां

माघ वदि १ प्रतिपद बुधवारको **श्रीछोटाजीकी** दीक्षा हुई. वहांसे विहार करके सोनई पधारे वहां " **एषणासमिति** " नामक ग्रन्थकी समाप्ति किये—यद्यपि उस ग्रंथमें तिथिका उल्लेख नहीं है तथापि विहारक्रमसे पता चलता है कि माघ कृष्ण ५ पंचमी शनिवारको समाप्ति की गई है. वहासे विहारकर फाल्गुन कृष्ण में सांईखेडा पधारे वहीं फाल्गुन कृष्ण १० दशमी शनिवारमें " **भोलपछत्तिशी** " नामक ग्रन्थ बनाया. वहासे विहारकर १५ क्षेत्रोंको पावनकर नाशिक, गंगानदी त्र्यम्बकदरवाजा सरावगीके उपासरेमे ३ तीन रात्र रहकर वसंत—पिपलगाव पधारे, वहा फाल्गुन शुक्ल चतुर्थीको " **अमरकुमार चरित्र** नामका काव्य समाप्त किया. वहांसे विहारकर सवत् १९३६ के चैत्र वदि ३ को फिर सांइखेडा पधारे. संवत् १९३६ का रचा हुआ ग्रंथ " **गजसुकुमारकी लावनी** नामका उपलब्ध है, परंच उसके रचनामे तिथी और स्थानका उल्लेख नहीं है.

संवत १९३७ की दिन चर्या और चातुर्मास.

चैत्रवदि ३ तृतियाको साइखेडा पधारे, चैत्रवदि १३ बुधवारको आर्याजी **श्री नन्दूजीकी** दीक्षा हुई. वैशाख वदि १ प्रतिपदको वहांसे विहारकर २१ क्षेत्रोंको पावनकर खानके हिंवडा पधारे, वहां ६ छे रात्र विराजमान थे, वहांपर वैशाख कृष्ण १३ तेरसको **'विनय आराधनाका चौढालिया'** तयार किया और वैशाख शुक्ल ३ तृतियाको **"उपदेशी लावनी"** की रचना की, वहासे विहार कर वैशाख शुक्ल ८ मी को अहमदनगर पधारे, वहाके सुश्रावक वर्ग महाराज श्रीके दक्षिण देशमें आगमन कालसेही चातुर्मासके लिये लालायित थे. संवत १९३७ का चातुर्मास बडे समारोहके साथ अहमदनगरमें समाप्त हुआ. बहुत दूर २ से श्रावक वर्ग महाराज श्रीके व्याख्यान तथा दर्शनका लाभ लेने आएथे व्याख्यान में **श्री आचारंगजी, सूयगडांगजी** का उपदेश होता रहा, चातुर्मासमें आपने भाद्रपद कृष्ण १४ चतुर्दशी शुक्रवार शिवयोगमें **"वर्द्धमान दशौटन"** नामक काव्य बनाया है. आश्विन कृष्ण चतुर्थी बुधवार भरणी नक्षत्र हर्षण योग नवी पेठ धर्म स्थानकमें **'श्रीचन्द्रकेवली चरित्र'** की रचना समाप्त की है, ढाल ६७ गाथा संख्या ४५०० में यह ग्रंथ है. और आश्विन कृष्ण १४ चतुर्दशी बुधवारको **"द्वितीय चौविश जिन स्तवन"** की रचना समाप्त हुई है. आश्विन शुक्ल द्वितिया बुधवारको " **वीश विहरमानोंकेस्तवन** ' अलग अलग बनाये हैं, आश्विन शुक्ल १० विजय दशमीके रोज **"पंच परमेष्ठी स्तवन"** को तथा **"वीररस प्रधान श्री महावीर स्वामीका पंचढालिया"** की रचना हुई है, कार्तिक कृष्ण ३० दीपमालिकाके रोज **"वर्ध्दमान स्वामीका चौढालिया "** की रचना हुई है, तदनंतर मार्गशीर्ष कृष्ण २ गुरुवारको विहारकर अहमदनगर धर्मशालामें रात्रभर विराजमानथे, वहांसे विहारकर पारनेर अलकुटी वगैरेह २३ क्षेत्रोंको पावनकर घोडनदी पधारे वहा मार्गशीर्ष शुक्ल ११ को **"ज्ञानकुंजर** तैयार किये जिसका वर्णन अध्याय ७ में कर आये हैं, वहांसे विहारकर पौष शुक्लमें श्रीगोंदा जिल्हा अहमदनगरमें पदार्पण किये, वहां पौष शुक्ल अष्टमी शुक्रवारको " **जीव**

रक्षा उपदेश लावणी " तथा "**श्रावक उपर लावणी**" ये दोनो पद्योंको बनाया, वहांसे विहारकर चिचोंडी पधारे, वहां माघ वदि अष्टमी को "**मुनि गुण मंगल माला**" की रचना किये और वहां १४ रात्र विराजमानये, वहांसे विहारकर माघ शुक्लमें करमाला पधारे वहां माघ शुक्ल दसमी भौमवारको "**श्रावक छात्तिशी**" की रचना की और माघ शुक्ल तेरसको "**नरक दुःख वर्णन**" की रचना किये, वहां ६छे रात्र निवासकरके मिरजगांव पधारे, वहां फाल्गुन कृष्ण २द्वितीया बुधवारको "**अध्यातमफाग स्वाध्याय**" तैयार किये. वहांसे विहारकर कडा पधारे, वहांपर फाल्गुण कृष्ण एकादशीको "**सोलह स्वप्नकी लावणी** की रचना किये । वहांसे विहारकर फाल्गुण शुक्ल ७मी को नगरमें पधारे, फाल्गुनी पूर्णिमा को ४७ वां लोच अहमदनगरमें हुआ. संवत १९३७ के सालमे बने हुए "**पुण्य आश्रयी लावणी**" तथा "**धन आश्रयी पद**" भी उपलब्ध हैं, परंच स्थान और तिथी का पता नहीं है.

संवत १९३८ की दिनचर्या और चातुर्मास.

अहमदनगरमे विराजते हुए चैत्र कृष्ण ७ सप्तमी को '**शील सप्तमी स्वाध्याय**' की रचना किये, तदनंतर चैत्र शुक्ल पंचमी रविवारको नगर स्थानकसे विहारकर सिद्धेश्वर (सिद्धि) बागमे रात्रनिवास किये. उसी रोज "**अध्यात्मबाग स्वाध्याय**" की रचना किये. वहांसे विहारकर आंबोरी पधारे. वहां दश रात्र निवास किये. चैत्र शुक्ल ११ सोमवारको "**कालकी लावणी**" की रचना की.चैत्र शुद्ध पूर्णिमाको '**सातवार अध्यात्म स्वाध्याय' [२] पन्द्रहातिथी अध्यात्म स्वाध्याय" [३] बारहमास अध्यात्म स्वाध्याय" [४] " अध्यात्म गिनगौर** " इतने काव्य आंबोरीमें बनाये हैं. आंबोरीसे विहारकर मिरी पधारे. वहां वैशाख शुक्ल तृतीयाको" **अक्षयतृतीया अध्यात्म स्वाध्याय**" की रचना किये. वैशाख शुक्ल ६को "**करमपच्चीशी**" की लावणी रचे. और वैशाख शुक्ल १२ बुधवारको " **कक्का-बत्तीशी लावणी** " की रचना किये. वहांसे विहारकर देवटाकली पधारे. वहां ज्येष्ट कृष्ण तृतीया सोमवारको (१) " **पंच आराकी लावणी** " (२) " **कालकी लावनी** " ये दो काव्योंकी रचना किये. वहांसे विहारकर क्रमशः क्षेत्रोंको पावन करते हुए रस्तापूर पधारे. वहां " **उपदेश आश्रयी पदकी** " रचना ज्येष्ट शुक्ल ६ षष्ठी को हुई है. वहांसे खरुंडी पधारे वहां जेष्ट शुक्ल ७ सप्तमी को "**उपदेश छत्तीशीकी पूर्ति किये.** इस तरह विहार क्रमसे ६९ ग्रामोंको पवित्रकर ज्येष्ट शुक्ल ११ को अहमदनगरमें पदार्पण किये. वहां आषाढ कृष्ण १प्रतिपदाको **श्री लक्ष्मीजी [लछमाजी]** की दीक्षा हुई. ७ वें रोज बडी दीक्षा हुई. आषाढ शुक्ल नवमीको विहारकर ठाणा ४ से आंबोरी चातुर्मासके लिये पधारे. ठाणा १० दससे **श्री आर्याजी श्री हीराजीका आगमन हुआ.** इसतरह ठाणा १४ चवदाका चातुर्मास **संवत १९३८ का आंबोरीमें** संपन्न हुआ. वहां पर्युषण पर्वमें "**पर्युषणपर्व अध्यात्म स्वाध्याय**" की रचना किये. और भाद्रपद शुद्ध ११ को **शीलाङ्गरथ** " की रचना किये, जिसका वर्णन अध्याय ७ में दिया है. चातु-

मासमें आश्विन शुक्ल १० विजय दशमी के रोज [१] "**चौविश जिनस्तवन**"[२] **अध्यात्म दशहरापर्व स्वाध्याय**" ऐसे ऐसे काव्योंकी रचना समाप्त किये, कार्तिक कृष्ण तेरस को '**१ धन तेरस अध्यात्म स्वाध्याय**' १४ चतुर्दशीको २'**रूपचतुर्दशी अध्यात्म स्वाध्याय**"अमावस्याको ३ "**दीपमालिका अध्यात्म स्वाध्याय**" की रचना हुई. आंबोरीमें रचा हुआ चार प्रकारका "**११ गणधरका स्वाध्याय**" मिलता है, परंच तिथिका उल्लेख नहीं है. अनुमानतः चातुर्मासमें बने होंगे. चातुर्मासके बाद मार्गशीर्ष वदि २ द्वितीयाको विहार कर बीचमें डुंगरगण, पिपलगावमें दो रात्र बिताकर अहमदनगर पधारे. वहां १५ पन्द्रह रात्र विराजमान थे. वहांसे विहारकर मार्गशीर्ष शुक्ल ४ चतुर्थी शुक्रवारको केडगाव पधारे. मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमीको श्री '**गौतम स्वामीके रास**' को बनाया. विहारक्रमसे कामलगाव मे बना होगा. तदनन्तर अनुक्रमशः विहारकर आवलकुटीमें पधारे, वहां पौष शुक्ल १२ द्वादशीको **श्री झमकूजी आर्याजीकी** दीक्षा हुई. ७ वें रोज वडी दीक्षा हुई. वहां १६ रात्र विराजमान थे. उन दिनोंमें माघ कृष्ण ३ तृतीया शनिवारको "२८ प्रकारके **चौविश जिन स्तवन**" की रचना की, ४ चतुर्थी रविवारको "**तीन प्रकारका उपदेशी फटका**"" **आठ प्रकारका चौविश जिन स्तवन** " की समाप्ति किये. माघवदि ५ को आंवलकुटी से विहार करते हुए अहमदनगर पधारे. २० वीस रात्र विराजमान थे वहां माघ शुक्ल पंचमीको "**वसंत पञ्चमी अध्यात्म स्वाध्याय**" की रचना किये. फाल्गुन कृष्ण ७ सप्तमीको नगर से विहारकर प्रवरासंगम, जालना, औरङ्गाबाद वगैरह ३२ क्षेत्रोंको पावनकर संवत १९३८ चैत्र शुक्ल १० को आंबोरी पधारे. एकादशी सोमवारको आबोरीमे "**धन्नाजीकी लावणी**" की रचना किये. वहांसे विहारकर चैत्र शुक्ल १२ द्वादशी शुक्रवारको फिर अहमदनगर पधारे.

संवत १९३९ की दिनचर्या और चातुर्मास.

नगरमें ४४ चौवालिस दिन विराजमान थे, वहां वैशाख शुक्ल १४ चतुर्दशी मंगलवारको '**हंस केशव**' चरित्रकी रचना किये. और ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी रविवारको '**धर्मबुद्धि पापबुद्धि**' चरित्र की रचना समाप्त किये. तत्पश्चात् जेष्ठ वदी ९ नवमी गुरुवारको '**हरियाजी** और **अमृताजी**' की दीक्षा हुई. ज्येष्ठ वदी १२ रविवारको नगरसे विहार कर गये. कई क्षेत्रोंको पवित्रकर घोडनदी पधारे जेष्ठ शुक्ल २ द्वितीयाको '**खंदकमुनिका चौढालिया**' समाप्त किये. वहांसे विहारकर कई क्षेत्रोंको पावनकर पूना पधारे. वहां ७ रोज विराजमान थे. वहींपर नानापेठमे आषाढ कृष्ण १ प्रतिपद को '**मेतारजमुनिका चौढालिया**, तैयार किये. और आषाढ कृष्ण ४ चतुर्थीको '**तेरहकाठियाकी स्वाध्याय**' की रचना किये, पूनासे विहारकर १७ग्रामोंमें विचरकर आषाढ शुक्ल ११एकादशी को घोडनदीमें पधारे. शिष्याओंके साथ सती शिरोमणी **श्री हीराजी** का भी शुभागमन हुआ, ठाणा १८ से संवत १९३९ का चातुर्मास घोडनदीमें बडेही उत्साहपूर्वक समाप्त हुआ. व्याख्यानमें **श्रीसूयगडांग सूत्र,श्रीचंद्रकेवलीका रास** का उपदेश होता रहा,भाद्रपद शुक्ल १०को आर्याजी **श्रीलछमाजी** का संथारा ४॥पहरका हुआ, और वहीं आश्विन शुक्ल प्रतिपद शुक्रवार

अमृत वेला तुला लग्नमें "श्री श्रेणिक चरित्र" की समाप्ति किये. मार्गशीर्ष वदि ५ पञ्चमी बुधवार को रंगुजीकी दीक्षा हुई. षष्ठीको घोडनदीसे विहारकर रात्रभर मन्दिरमे निवास किया, वहांसे विहारकर कइएक क्षेत्रोंको पावनकर सतारा शहरमे पदार्पण किये, वहां भवानी पेठमें १३ रात्र निवास किये, वहींपर मार्गशीर्ष शुक्ल ८ अष्टमी सोमवारको २ प्रकारका "उपदेश स्तवन पद" और मार्गशीर्ष शुक्ल ११ एकादशीको "उपदेश फटका" की रचना किये. तथा पौष कृष्ण तृतीया बुधवारको "आनन्द श्रावक का चौढालिया" और चतुर्थी गुरुवारको "कामदेव श्रावकका चौढालिया" की रचना समाप्त किये और पौष शुक्ल ५ पञ्चमी शनिवारको "भृगुपुरोहितका पंचढालिया" तैयार किये. वहांसे विहारकर ७ क्षेत्रोंको पवित्रकर पूना पधारे, वहां पौष शुक्ल पञ्चमीको "दीप मालिका ... अध्यात्म स्वाध्याय" की रचना किये. दश रात्र पूनामें विराजमान होकर पिपलगांव पधारे. वहां पौष शुद्ध अष्टमीको 'श्री सुधर्मा स्वामीकी स्वाध्याय' क... किये, १३ रात्र वहां विराजमान थे. वहां श्री कंचन ऋषिजी की दीक्षा माघ शुक्ल प... हुई. वहांसे विहारकर क्रमशः क्षेत्रोंको पावन करते हुए मंचरमें पधारे. वहां माघ ... तेरसको 'कर्म विपाक मालाकी' रचना किये. मंचरसे विहारकर फाल्गुन ... अहमदनगरमे पधारे. उसी रोज 'चौदह नियम स्वाध्याय' की रचना...

संवत् १९४० की दिन चर्या और चा...

							ा	य
							ठा	ण
						शे	जा	ण
					ब	ल	हं	त
				ह	ण	त	कू	प
			ल्म	ज्ञा	न	श्रो	ध	र्म
ती	लो	क	न	मे	क	र	जो	र

सर्व हक स्वाधीन हे

अहमदनगरमे विराजते हुए चैत्र शुक्ल २ द्वितीया ... दशे अध्ययन का कवितामय भाषांतर तथा तृ... सम्पूर्ण किये । अप्रकाशित 'समरादित्य के... प्रतिपदसे प्रारम्भकर आषाढ शुक्ल पञ्चमी... वेलामे आम्बोरीमें समाप्त हुआ निलहये, देवगुरु में इन समयपर पूज्यपादका विरा...ण्य एक, दशवै- है कि उनका अन्तिम काव्य ' पक्ष तिथि सेती

हुए ग्रंथ मिलते हैं वादय १००८ श्रीरत्नऋषिजी महाराज के शिष्य श्री आनंदऋषिजी महाराज से प्राप्त और मुखारविंदसे ऐसा श्रवण प्रकाशित करके श्री जैनधर्म प्रसारक संस्था सदर बाजार नागपुर को अर्पण किया है."

लिए आंबोरीसे विहार

स्वप्न देखा की मैं प...

ध्यान स्वाध्याय, प्रतिक्रमण पूर्ण किये. विहार करनेके लिये जमर बांध स्थानकसे बाहर हुए, उस समय कोलकी टोपली दिखपटी आगे चलनेपर मनुष्य महिष आ रहा है. ये सब अपशकुनको देखकर महाराजश्रीने नजदीक ही एक बगीचेमें रात्रभर निवास किया. पञ्चमीको ठाणा पांचसे डोंगरगण पधारे, षष्ठीको पिंपलगांव पधारे, वहां एक वृक्षके नीचे ध्यान

करनेके लिये खडे हुए. उसी समय शिरोवेदना प्रारम्भ हुई. अहमदनगरके श्रावक वर्ग महाराजश्री के अगवानीमें आ पहुंचे थे, औषधोपचार होने लगा परन्च तीव्र वेदना और अधिक होती गई. यह सनसनी फैलतेही आसपासके बहुतसे श्रावक वर्ग इकट्ठा हो गये, फिर रात्रिमें ८ बजेके बाद भयंकर ज्वरने पूज्यपाद महाराजश्री के शरीरपर अपनी सत्ता जमाई. तीन दिन पिंपलगांवमें महाराजश्री के साथ सब श्रावक वर्ग उपस्थित थे. ज्वरका प्रकोप उत्तरोतर बढताही गया, अब ऐसे समयमें इस स्थानपर अस्वास्थ्य होकर पूज्यपाद श्रीका रहना श्रावक वर्गके हृदयमें अत्यंत दुःखकर था. परन्च कि कर्तव्यतामें विमूढ थे. अहमदनगरमें महाराजश्री के प्राप्त होनेका उपाय उन लोगोंको कुछ सूझता नहीं था. समय सूचक पूज्यपाद महाराजश्रीनें अपने श्रावकोंकी इस प्रकार व्याकुलता देखकर मानासिक बलसे साहस कर आषाढ शुक्ल ९ नवमीके दिन अहमदनगरमें पधार गये.

अनेकों वैद्य डाक्टरोंका औषधोपचार निरवच्छिन्न होने लगा लेकिन सब विफल हुआ. ज्वरका प्रकोप और शिरोरोग तो पहलेहीसे प्रबल था, विहार करनेसे औरभी उनको सहायता मिल गई.

सूर्य अस्त हुआ.

आखिर श्रावण वदि २ रविवार को अहमदनगरमें **महाराज श्री तिलोक ऋषिजी** रुपी जैन समाजका सूर्य अस्त हो गया, इस नश्वर शरीरको छोडकर **महाराज श्री का आत्मा स्वर्गारूढ हुआ.** यह समाचार मालवा वगैरह सब देशोंमें तुरन्त फैल गये. जिस समय महाराज श्री के देहातके समाचार रतलाम में पंहुचे, उस समय **रतलाममें श्रीमज्जैनाचार्य १००८ श्री हुकमीचंदजी महाराज** के संप्रदायके **पूज्य श्री १००८ श्री उदयसागरजी महाराज** विराजमान थें, उन्होंने रतलाम संघ के सामने **हमारे जैन संप्रदायका एक सूर्य अस्त हो गया** ऐसा फरमाया.

उस समय महाराज श्री का शरीरही नहीं किंतु जैन समाजही निर्जीव होगया जैन भारती निरास्पद हो गई. संपूर्ण जैन समाजमें भादोंकी अंधेरी छा गई. सुनते हैं कि उस समय **वज्रहृदय भी** मनुष्य आपके इस चिरकालीन विरह दुःखसे दहला उठा. यह लिखनेकी नहीं प्रत्युत अनुभव करनेके योग्य बात है कि—

जिस **अमर आत्मा** का यह शरीर आजभी मौजूद है उनके पाञ्चभौतिक शरीरके वियोग कालमें सहृदय समाजकी कौनसी दशा हुई होगी ?

मै अनुमान करता हूं की उस कालमें ऐसा कोई **चेतन प्राणी** समाजमें न होगा कि जिसका हृदय पूज्यपाद महाराज श्री के वियोगसे पिघलकर अश्रुपात न किया हो. परन्च अब इस अश्रुपातसे होनाही क्या है ? उस पवित्रात्मा की मूर्ति अदृश्य हो गई, इस संसार में उनका पाञ्चभौतिक शरीर आज न रहा, संसारकी घटना अद्भुत है. सुख, दुःख, हर्ष,

शोक क्षण २ पर बदलते रहते हैं; दाक्षिण देशके श्रावकोंका दिव्य नेत्रपटल खुलगया, वे लोग शाश्वत यशः शरीरके दर्शनार्थ उठ खडे हुये, सब लोग यह विमर्ष किये कि जब पूज्यपाद विराजमान थे, उस समय अपने २ पुण्य के अनुसार हम लोग लाभ ले चुके, अब उनका यशःशरीर विद्यमान है, अति बल पूर्वक उसकी रक्षा करना समाजका कर्तव्य है। ऐसा विचारकर पूज्यपादके रचे हुए कविताओं का संग्रह करने लगे, जहांतक उन लोगों को उपलब्ध हुआ उसको प्रकाशित किये और उसके प्रस्तावना में जाहिर किये कि अभी बहुत से भाइयोंके पास महाराज श्री के रचेहुए विषयोंका पता चलता है, वे भाई कृपाकर उन विषयोंको हमारे पास भेजदेवें ताकी सर्व साधारण उसका लाभ ले सके, परञ्च कौन सुनता है. जो जिसके पास रहा वह वहीं गुप्त रहगया. **श्रेणिक चरित्र वगैरह १९ ग्रंथ तो मुनि श्री आनंद ऋषिजी** के पास है, जिनको प्रकाशित करने के लिये आजतक विमर्श दोलारूढ है। पूज्यपादके विषयमें यह खास जानने योग्य बात है कि, दाक्षिण देशमें आपने फिरसे **स्थानकवासी जैन संप्रदाय** की स्थापना की. यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा, कि यदि महाराज श्री का पदार्पण न हुआ होता तो कितनेक जगह श्रावकोंको आज **मुखवस्त्रिका** बांधना भूल गया होता.।

उपसंहार.

प्रियसज्जन पाठकवृन्द! प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद **श्री तिलोक ऋषिजी महाराज** की अलौकिक उपरोक्त गुण सम्पत्ति यथामति यथाशक्ति तथा जितने प्रमाण उपलब्ध हुए तदनुसार लिखा गया है. नहीं तो समाज विख्यात ऐसे प्रधान पुरुषके गुणोंका वर्णन कवीश्वरों द्वारा जितना कियाजाय उतना थोडाही है। अब उपसंहार रूपमें महाराज श्री के गुणसमुद्रसे सार खींचकर आपलोगों के सामने उपस्थित करता हूं।

सदगुणगणालंकृत **श्री तिलोक ऋषिजी महाराज** ३६ वर्ष २९ दिनके अवस्थामें इस पाञ्चभौतिक शरीरका त्याग किये, जिसमें २५ वर्ष ६ माह १ दिनका संयम पालन कर इस अल्प कालमेंही चन्द्रवत् मिथ्यात्वरूपी अन्धकार का नाशकर जैन दर्शनाभिलाषी भव्य पुरुषों को कुमुदवत् विकास करने के लिये शास्त्रानुसार साठ सत्तर हजार गाथाकी संख्यामें बडे बडे ग्रंथों को रचकर जैन समाजके ऊपर उपकारोंका कतार बांध दिया है।

स्वभाव.

महाराज साहब का स्वभाव चन्द्रमा समान शीतल, समुद्र समान गम्भीरता, आबालब्रह्मचर्य, मितमित भाषण, अपूर्व कवित्वशक्ति, वाकचातुर्य समयसूचक था. जैन शास्त्र तथा पर शास्त्र गामित वगैरह अनेकगुण आपमें अधिक प्रशंसनीय थे।

चारित्रशुद्धि.

महाराज श्री का चारित्र इतना शुद्ध था कि उसका वर्णन उस तत्व के वेत्ताही पुरुष कर सक्ते हैं. परपक्षीय लोगभी आजतक मुक्त कंठसे उनकी प्रशंसा करते हैं, यह उनके चारित्र शुद्धिका ही सबूत है, क्योंकि चारित्रहीन पुरुषका गुण समूह धूलिमें मिल जाता है, प्राणीमात्र में विशेषत: साधु पुरुषोंका चारित्र ही एक अमूल्य रत्न है उसीके रक्षासे वह विश्वपर अपनी सत्ता जमा सकता है।

वाग्मिता.

पूज्यपादकी वाणी जो निकलती थी, वह अक्षरश: सनातन जैन धर्मके अनुकूलही निकलती थी, आपके प्राय: हर एक वाक्यमें हित शिक्षा का भाव पूर्ण भरा हुआ निकलता था, यहांतककी दाक्षिण देशके कुछ गावोंका नाम एक सवैयामें आपने लिखाहै उसमें व्यवहारिक तथा अध्यात्मिक उपदेश इतना उच्च कोटिका भरा हुआ है कि शायद कहीं दुसरे कवियोंके मुखसे ये भाव निकले हों, और जिन्होंने ऐसे उत्कृष्ट कवियों के काव्योंका परिशीलन किया होगा वेही इसके अन्तरङ्ग भावको पा सकते हैं. देखिये पूज्यपाद महाराज विरचित सत्यबोध नामक बडी पुस्तक के पृष्ठ २२३ में अमदानगर पाइ इत्यादि।

निर्ममत्व.

महाराज श्री इतने बड़े प्रधान पुरुष होकर भी ऐसे विनम्र भावसे रहते थे कि जिसकी हद है, अहंकार उनके पास स्थानही नहीं पाया, ऐसे उच्च आदर्श कवि होते हुए भी अपने काव्योंमें "मिच्छामि दुक्कडं" शब्द देते गये हैं।

ज्ञानबल तथा शास्त्रज्ञान.

पूज्यपादका ज्ञानबल भी बहुत प्रबलथा वृद्ध लोग कहते हैं कि यदि महाराज श्री के सामने कोई किसी प्रकारका प्रश्न करताथा तो उनका उत्तर अनेक शास्त्रोंके प्रमाण द्वारा प्रश्नकर्ताके हृदयको आल्हादित कर देते थे। बहुतसे व्यक्तियो में यह देखा जाता है कि पृच्छक के प्रश्नों को सुनकर आवेश में आजाते हैं परन्च पूज्यपाद के सामने जिज्ञासु या श्रुतश्रौत वा परीक्षक तथा अन्य किसी प्रकार से जो प्रश्न करते थे, उन सब लोगोंको प्रेम भावसे उत्तर देते थे, प्राणी मात्रसे यह गुण अनुकरणीय है। बस पूज्यपाद के चरित्र विषयिणी लेखनी को यहीं विश्राम देताहूं, कारण कि पूज्यपाद के काव्यों द्वारा तथा तत्कालीन वृद्धों द्वारा उनके जीवनमें पद पद पर रहस्य प्रगट होता है उन सब बातोंको लिखनेके लिये मेरी शक्ति नहीं है, दुसरा यह कि जो विशेषज्ञ हैं, उनसे कोई बात छिपी नहीं है और जो उनसे अपरिचित हैं वे लेखक के साथ साथ पूज्यपाद के विषयमें भी सन्देह करेंगे, अत: प्रेम भावसे प्रार्थना है कि गुण ग्राही सज्जन आदर पूर्वक इसको पठन तथा पूज्यपाद के गुणोंका अनुकरण कर इस परिश्रमका सदुपयोग करेंगे।

ॐ शांति: ! शांति: !! शांति: !!!

शोक क्षण २ पर बदलते रहते हैं; दाक्षिण देशके श्रावकोंका दिव्य नेत्रपटल खुलगया,
लोग शाश्वत यशः शरीरके दर्शनार्थ उठ खड़े हुये, सब लोग यह विमर्ष किये कि जब पूज्य
पाद विराजमान थे, उस समय अपने २ पुण्य के अनुसार हम लोग लाभ ले चुके, अब
उनका यशःशरीर विद्यमान है, अति बल पूर्वक उसकी रक्षा करना [illegible] कर्तव्य है।

चारित्रशुद्धि.

महाराज श्री का चारित्र इतना शुद्ध था कि उसका वर्णन उस तत्व के वेत्ताही पुरुष कर सक्ते हैं. परपक्षीय लोगभी आजतक मुक्त कंठसे उनकी प्रशंसा करते हैं, यह उनके चारित्र शुद्धिका ही सबूत है, क्योंकि चारित्रहीन पुरुषका गुण समूह धूलिमें मिल जाता है, प्राणीमात्र में विशेषत: साधु पुरुषोंका चारित्र ही एक अमूल्य रत्न है उसीके रक्षासे वह विश्वपर अपनी सत्ता जमा सकता है।

वाग्मिता.

पूज्यपादकी वाणी जो निकलती थी, वह अक्षरश: सनातन जैन धर्मके अनुकूलही निकलती थी, आपके प्राय: हर एक वाक्यमें हित शिक्षा का भाव पूर्ण भरा हुआ निकलता था, यहांतककी दक्षिण देशके कुछ गावोंका नाम एक सवैयामें आपने लिखाहै उसमें व्यवहारिक तथा अध्यात्मिक उपदेश इतना उच्च कोटिका भरा हुआ है कि शायद कहीं दुसरे कवियोंके मुखसे ये भाव निकले हों, और जिन्होंने ऐसे उत्कृष्ट कवियों के काव्योंका परिशीलन किया होगा वेही इसके अन्तरङ्ग भावको पा सकते हैं. देखिये पूज्यपाद महाराज विरचित सत्यबोध नामक वडी पुस्तक के पृष्ठ २२३ में अमदानगर पाइ इत्यादि।

निर्ममत्व.

महाराज श्री इतने वड़े प्रधान पुरुष होकर भी ऐसे विनम्र भावसे रहते थे कि जिसकी हद है, अहंकार उनके पास स्थानही नहीं पाया, ऐसे उच्च आदर्श कवि होते हुए भी अपने काव्योंमें "मिच्छामि दुक्कडं" शब्द देते गये हैं।

ज्ञानबल तथा शास्त्रज्ञान.

पूज्यपादका ज्ञानबल भी बहुत प्रबलथा वृद्ध लोग कहते हैं कि यदि महाराज श्री के सामने कोई किसी प्रकारका प्रश्न करताथा तो उनका उत्तर अनेक शास्त्रोंके प्रमाण द्वारा प्रश्नकर्ताके हृदयको आल्हादित कर देते थे। बहुतसे व्यक्तियों में यह देखा जाता है कि पृच्छक के प्रश्नों को सुनकर आवेश में आजाते हैं परन्च पूज्यपाद के सामने जिज्ञासु या भुतश्रोत वा परीक्षक तथा अन्य किसी प्रकार से जो प्रश्न करते थे, उन सब लोगोंको प्रेम भावसे उत्तर देते थे, प्राणी मात्रसे यह गुण अनुकरणीय है। बस पूज्यपाद के चरित्र विषयिणी लेखनी को यहीं विश्राम देताहूं, कारण कि पूज्यपाद के काव्यों द्वारा तथा तत्कालीन वृद्धों द्वारा उनके जीवनमें पद पद पर रहस्य प्रगट होता है उन सब बातोंको लिखनेके लिये मेरी शक्ति नहीं है, दुसरा यह कि जो विशेषज्ञ हैं, उनसे कोई बात छिपी नहीं है और जो उनसे अपरिचित हैं वे लेखक के साथ साथ पूज्यपाद के विषयमें भी सन्देह करेंगे, अत: प्रेम भावसे प्रार्थना है कि गुण ग्राही सज्जन आदर पूर्वक इसको पठन तथा पूज्यपाद के गुणोंका अनुकरण कर इस परिश्रमका सदुपयोग करेंगे।

ॐ शांति: ! शांति: !! शांति: !!!

अथ श्री तिलोकाष्टकम्.

सवित्री नानू माँ जननवसती रत्ननगरी,
दुलीचन्दस्तातः प्रवरगुणवान्यस्य विदितः ॥
कलेनश्रीयुक्तो व्रतनियमनिर्वासितमलो,
गुणैः शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवरः ॥१॥

भावार्थ—रतलाम नगरी मे माता **नानू बाई** प्रसिद्ध गुणवान् पिता **दुलीचन्दजी सुराणा** के यहां उत्पन्न होकर श्रेष्ठ कलावोसे युक्त तथा व्रत नियमोंसे मलों को हटानेवाले उज्वल गुणों से युक्त प्रवित्रात्मा श्री **तिलोक ऋषिजी महाराज** अपने यशःशरीरसे सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥ १ ॥

महद्दिव्यं ज्ञानं समधिगतमेतेनतपसा,
कथं स्वल्पे काले तदिह विदुषां मोहजननम् ॥
परं यद् ग्रन्थौघं विरचयति तान्मोहविगतान्,
गुणैः शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवरः ॥ २ ॥

भावार्थ— तपोबल से थोडेही काल में जो आपने दिव्यज्ञान उपार्जन कर लिया क्या यह विद्वानों को भी आश्चर्यकारी नहीं है ? उससे भी अधिक आश्चर्यकारी मोहको हटानेवाले आपसे रचे गये ग्रंथ समूह हैं. उज्वल गुणोंसे युक्त ऐसे पवित्रात्मा **श्री तिलोक-ऋषिजी महाराज** अपने यशःशरीर मे सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥ २ ॥

यशःपुञ्जं यस्य चरितसमरादित्यप्रभृतौ,
सुपद्यैर्विस्तीर्णैरयुतरससंख्यैः सुविमलम् ॥
जनान्मार्गध्वस्तान्प्रतिदिशति निःश्रेयसपदम्,
गुणैः शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवरः ॥ ३ ॥

भावार्थ— साठ हजार गाथा संख्यासे रचे गये हुए **समरादित्यकेवली चरित्रा**दिकों में जिनका निर्मल यशःपुञ्ज विस्तीर्णता को प्राप्त होकर मार्गसे बिछुडे हुए प्राणियोंको कल्याणमार्गका उपदेश कर रहा है. उज्वल गुणों से युक्त प्रवित्रात्मा **श्री तिलोक-ऋषिजी महाराज** अपने यशःशरीर मे सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥ ३ ॥

बृहच्छास्त्रं पुच्छीसुणमिह लिखित्वैकदलके,
परांकाष्ठां नीतां विशदप्रवरां लेखनकलाम् ॥
विजेतुं स्पर्द्धन्ती जगति रमते चित्रणकला,
गुणैः शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवरः ॥ ४ ॥

भावार्थ— एक पत्र के उपर **दशवैकालिक सूत्र** संपूर्ण तथा **पुच्छीसुणं** लिखकर अति निर्मल उच्चकोटी का जो लेखनकला प्राप्त किये उसको भी जीतने के लिये जिनकी चित्रकला स्पर्द्धा (इच्छा) कर रही है. ऐसे उज्वल गुणों से युक्त पवित्रात्मा **श्री तिलोक-ऋषिजी महाराज** अपने यशःशरीर से सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥ ४ ॥

महाराष्ट्रे देशे यदपि बहुला जैनजनता,
न गम्यः किंत्वासीदतिगहनमार्गो हि मुनिना ॥
सहन्नानाकष्टं तदपि विधियोगादुपगतो,
गुणैः शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवरः ॥ ५ ॥

भावार्थ– यद्यपि दक्षिण देशमें जैन जन समूह अधिक है, तथापि अति कठिन मार्ग होनेसे मुनिराजों का संचार कम था. परन्च आप अनेक कष्टों को सहन करते हुए कर्तव्यबलसे वहां आकर प्राप्त हो गये, ऐसे उज्वल गुणों से युक्त पवित्रात्मा **श्री तिलोक-ऋषिजी महाराज** अपने यशःशरीर से सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥ ५ ॥

प्रभुर्यः श्रीरत्न प्रभृति निजशिष्यैः परिवृतः,
चतुर्थे विश्रामेऽहमदनगरे पूज्यचरणः ॥
गतः कायोत्सर्गं सुरपुरमगात्कीर्तिविशदो,
गुणैः शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवरः ॥ ६ ॥

भावार्थ– दक्षिण देशमें चौथे चातुर्मास के लिये महाराज **श्री रत्न ऋषिजी** वगैरह शिष्यों के साथ अहमदनगर में पधारे. वहां इस नश्वर शरीर को छोडकर विमल कीर्ति के साथ सुरपुर सिधारे, ऐसे उज्वल गुणो से युक्त पवित्रात्मा **श्री तिलोक ऋषिजी महाराज** अपने यशः शरीर से सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥

समुद्योगाद्यस्य धनदवसतिर्वै यमदिशा,
शरण्यं शान्ताढ्यं शरणमुपयाता जिनमतम् ॥
मुनीनां जैनानां निवसतिरियं सौख्यजननी,
गुणैः शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवरः ॥ ७ ॥

भावार्थ- [जिस महात्माके समुचित उद्योगसे यमदिशा= दाक्षिणदिशा धनदवसतिः= कुबेर के नगर समान हो गई –] अर्थात् जिस दक्षिण देशमें मुनि लोग आने में संकोच रखते थे, उस देश को आपने माळवा मारवाड सदृश मुनिराजों का सुखकर निवासस्थान बना दिया–और शरणको चाहनेवाला जिनमत शांति स्थल पा गया. ऐसे उज्वल गुणों से युक्त पवित्रात्मा **श्री तिलोक ऋषिजी महाराज** अपने यशःशरीर से सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥ ७ ॥

प्रसादाद्यस्येमं हरितभरितं धर्मविटपं,
मुनीशः श्रीरत्नः प्रखरविदुपानन्दमुनिना ॥
सुशिष्येणोपेतो वचनपयसा सिञ्चतितराम् ,
गुणैः शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवरः ॥ ८ ॥

भावार्थ– जिस महात्मा के प्रसाद मे यह जैन धर्मरूपी हरा भरा वृक्ष दिख रहा है, और उस वृक्ष को आपके पाटवी शिष्य **श्री रत्न ऋषिजी माहाराज ने** अपने सुशिष्य प्रखर विद्वान् **श्री आनन्द ऋषिजी** के साथ वचनरूपी जलसे सिञ्चन किया,

ऐसे उज्वल गुणों से युक्त पवित्रात्मा श्री तिलोक ऋषिजी महाराज अपने यशःशरीर से सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥ ८ ॥

शास्त्रविशारद पंडितवर्य श्री अमीऋषिजी महाराज प्रणीत

॥ श्री तिलोकाष्टक ॥

॥ १ ॥ सवैया ॥

उत्तम व्रत धारे, दूर पातिक हरनहारे,
विपति विदारे आप अमृतके क्यारे थे ।
ज्ञान संयम मतवारे, दान करुणा सतवारे,
चित उज्वल हितवारे, पंक दूषणतें न्यारे थे ।
तत्त्व मारग उच्चारे, किए कुपातिसे किनारे,
होन शिवके दुलारे सुमतिके प्राण प्यारे थे ।
वचन अमृत उच्चारे अमर धामको पधारे,
वे तिलोकरिख स्वामी जगजीव रखवारे थे ॥

॥ २ ॥

मात नानूके नाने नहिं रहे जग छाने
विश्वमांहि प्रगटाने जास महिमा वखाने हैं ।
सुधा वचन सुन काने घने जीव हरखाने
दया भाव उर आने जैन तत्त्वको पिछाने हैं ।
क्रिया दान देत दाने मोक्ष मारग वताने
जिनराज गुण गाने नहिं नेक अरसाने हैं ।
आज अमृत गुण जाने वे तिलोकरिख दाने
हाय ! छिनमें विलाने मेघ इंद्र ज्यों छिपाने हैं ॥

॥ ३ ॥

मनमें वैराग्य धार त्यागके संसार शिव–
मार्ग चित्त लाग सब पातकतें न्यारे थे ।
उदे वडभागे जैनागम अनुरागे सागे

आपके प्रताप आगे मिथ्यामति हारे थे ।
बडे बडे पंडितके खंडित किए हैं मान
अमृत बखाने धर्म-दीपक उजारे थे ।
महा गुणवारे ज्ञान क्रिया धनवारे
थे तिलोकरिख स्वामी जग जीव रखवारे थे ॥

॥ ४ ॥

सकल संसार सुख जानके अनित्य चित्त
त्याग भाव धारी हितकारी शुभ संत है ।
आश्रव प्रमाद टार रागद्वेषादि विदार
विषय कषाय लाय ठारि उवसंत है ।
धारे जिनवेन मोक्षपंथ सुख देन ऐन
देखत दीदार भव्य हिय हुलसंत है ।
अमीरिख कहे पाल संजम विशुध्द चित्त
स्वामीजी तिलोक सुरधाममें वसंत हैं ॥

॥ ५ ॥

व्हे गयो जगत जाल पातकतें दूर शूर,
धर्म दया मूल भेद रसनातें के गयो ।
के गयो अनेक मत आगमके भेद भार
अमृत जिनवेन चंद आननतें चे गयो ।
चे गयो अमर धाम आतम आराम काम
घने भव्य जीवनको ज्ञान दान दे गयो ।
दे गयो सुमत चित अमृत अखंड सो
तिलोकरिख स्वामी गुण नामी एक व्हे गयो ॥

॥ ६ ॥ गीता छंद ॥

कुमति तिमिर दल दलन स्वामी
धर्म दीपक सम हुए ।

शुद्ध जैन आगम भेद अमृत
सार रसनातें चये ।
भवि जीवको दरसाय शिवमग
जैन मत धारी किये ।
उपकारि धन्य तिलोकरिख गुरु
आप सुरवासी भये ॥

॥ ७ ॥

दयाके निधान भव्यजीवनके प्राण औ
सुजान ज्ञान ध्यानमें विमग्न गुणधामी थे ।
बालब्रह्मचारी महा दुक्कर आचारी सार-
काव्य कलाधारी हितकारी विसरामी थे ।
सुधा सम वाणी मृदु सबनके शाता दानी
देय उपदेश जीव तारवेके कामी थे ।
अमृत रटत नाम लेतही कटत पाप
ऐसेही प्रतापी श्री तिलोकरिख स्वामी थे ॥

॥ ८ ॥ सवैया २३ सा. ॥

तिलोकके नाथकी आन गहे उर
संजम ले चित्त होय विशोक ।
विशोक हिये तप चारित पालत
टालत पाप अनत्थ विलोक ।
विलोक लिये जिनवेण भलीविध
वंदत भव्य सदा देइ धोक ।
धोक पियूष दिए तिहुं काल कृपाल
कृपा कर स्वामि तिलोक ॥

॥ श्री सूर्यमुनि महाराजसे प्राप्त ॥

परिशिष्ट भाग.

पूज्य पाद महाराजश्री का शुभागमन दक्षिण देशमें हो जाने से जैन धर्म का कितना विकास हुआ यह तो वाचक वृन्द स्वयं अनुभव कर सकते हैं, परञ्च सारांश रूपसे यहभी प्रकाशित कर देना चाहता हूं कि महाराजश्री के सदुपदेशसे ४ वर्षके अन्दर दक्षिण देशमें कितने व्यक्ति त्यागी संयमी बने और पूज्यपादके यशःशरीर को पालन करते हुए किस तरह समाजको दिपा रहे हैं।

परिच्छेद चातुर्मास में हम लिख आये हैं कि घोडनदी के सुश्रावक **गम्भीरमलजी लोढा** के प्रार्थना से महाराजश्री का दाक्षिण देशमें पधारना हुआ और प्रथम घोडनदी में पिता पुत्र महाराज **श्रीस्वरूप ऋपिजी** तथा महाराज **श्री रत्नऋषिजी** की दीक्षा हुई, एवं माता पुत्री सतीजी **श्री चम्पाजी** तथा **श्रीरामकुंअरजी महाराज** की दीक्षा हुई, तदनन्तर **महासती श्रीरंगूजी, लछमाजी, हारियाजी, अमृताजी, सोनाजी वगैरह** सती शिरोमणी आर्याजी **श्री हीराजी** के निश्रायमें बहुतसी शिष्यायें हुई। शिष्योमें पाटवी शिष्य **श्री रत्न ऋपिजी महाराज** हुए, आपके दीक्षा काल से चौथे वर्षमें गुरु वियोग हुआ, उस समय आपकी बाल्यावस्था थी. शास्त्रकी शिक्षा गुरु मुखसे आपको विशेष न हो सकी, अतः आपने उसी अवस्थामें अनेक परीषहों को सहन करते हुए सतीजी **श्री हीराजी महाराज** की सहायतासे मालवा पधारे, वहां अच्छे मुनिराजों के द्वारा शास्त्रका परमोच्च ज्ञान सम्पादन कर मालवा मेवाड़ गुजरात वगैरह प्रदेशों में अपनी प्रखर वक्तृता के प्रभावसे स्वर्गस्थ पूज्यपाद महात्मा **श्री तिलोक ऋपिजी** के नाम को चिरस्थायी कर तेरह वर्ष के बाद महाराज **श्री अमोलक ऋपिजी** को साथ लेकर दक्षिणदेश में पधारे, मालवा में भी आपके प्रथम शिष्य **श्री वृद्धिऋपिजी** महाराज हुए, उनके शिष्य **श्री वेलजी ऋषिजी** महाराज हुए जो कि निरंतर चौदह वर्षतक एकधार गृहीत तक्र के आधार पर अपना निर्वाह किये थे. और दाक्षिण देशमें आपके प्रथम शिष्य**श्री दगडू ऋषिजी** हुए दुसरे **श्री सुलतान ऋषिजी महाराज** हुए परञ्च अपनी स्वच्छंदतासे थोडेही समय में वे आपसे पृथक हो गये, बाद संवत १९७० मार्गशीर्ष शुक्ल ९ नवमी रविवार के दिन मिरी में **श्री आनंद ऋपिजी** की दीक्षा हुई, उस वख्त में आपकी उम्र तो सिर्फ १३ वर्ष की थी, परन्तु **“ होन हार विरवानके होत चीकने पात”** इस कहावतके अनुसार आपने शास्त्र मर्यादा के अनुकूल इतनी विनीतता के साथ अपनी शिष्यवृत्ति दर्शाई कि **श्री आनन्द ऋपिजी** से १ क्षणभर भी पृथक रहना वे असह्य समझते थे, अति कठिण परिश्रम द्वारा जैनागमका स्वयं अभ्यास कराकर तथा दूर २ से संस्कृतके विद्वानो को बुलाकर व्याकरण तर्क काव्य अलंकार चम्पू वगैरह ग्रंथोंका अध्ययन कराया और सं. १९७९ के ज्येष्ट शुक्ल २ रविवार को नांदुर में **श्री उत्तम ऋपिजी** को दिक्षित कर १ पूर्ण सहायक स्थापित कर गये. जिनको साथमें लेकर मुनि

श्री आनन्द ऋषिजी दक्षिण, खानदेश, वरार, सी. पी. नागपूर वगैरह प्रान्तोंमें विहार करके **पूज्यश्री १००८ श्री कहानजी ऋषिजी** महाराज के सम्प्रदाय के चन्द्र **श्री तिलोक ऋषिजी** महाराज तथा गुरुवर्य **श्री रत्न ऋषिजी** महाराज के यश दुंदुभी का आवाज चौतर्फ जैन जैनेतर के श्रवण रन्ध्र में भर रहे हैं;

सती शिरोमणी **श्री हीराजी महाराज** के निश्राय में जितनी शिष्यायें हुई उनमें विदुषी सतीजी **श्री रामकुंअरजी महाराजने** पूज्यपाद **श्री तिलोक ऋषिजी** महाराज तथा सतीजी से शास्त्र का उच्च ज्ञान प्राप्त कर लिये, और उस ज्ञानको वटवीजाङ्कुरवत् कालान्तर में उच्चतर कोटि में प्राप्त कर लिया, उनके पाण्डित्य मधुरवाग्मिता सौम्यमूर्ति की अद्वितीयताका अनुभव, जिन व्यक्तियोंने उनके दर्शनका लाभ लिया है वेही कर सकते हैं. इस महासतीजी के द्वारा दक्षिण देशमें वहुतही जैनधर्म का प्रकाश हुआ, अनेकों दीक्षाये हुई आपके शिष्याओं में अग्रशिष्या स्वर्गीया **श्री सुन्दरजी महाराज** थे उनको प्रधानजी तथा नवा महाराज के नाम से लोग आव्हान करते थे, उनके प्राभाविक मूर्ति तथा गुणों की प्रशंसा आजतक जनता मुक्त कंठसे करती है, संप्राति महासतीजी की अग्र शिष्या विदुषी सतीजी **श्री शांति कुंअरजी** वगैरह ठाणा १२ से विराजमान है।

फैजपुरमें महासतीजी **श्री भूराजी महाराज** की दीक्षा हुई थी उनकी शिष्या सतीजी **श्री प्रेम कुंअरजी** तथा विदुषी सतीजी **श्री राज कुंअरजी** ठाणा ९ से सम्प्रति विराजमान है।

महासतीजी **श्री नन्दूजी महाराज** की दीक्षा सांईखेडा में हुई थी, आपने सती शिरोमणी **श्री हीराजी** के साथ ८ वर्ष मालवा मे विचर कर शास्त्र ज्ञान सम्पादन कर दक्षिण में पधारे,आपके द्वारा पूज्यपाद के जीवन चरित्र के विषयमे वहुतसी वातों का पता चला है. आपकी अग्र शिष्या सतीजी **श्री कुंवरजी** आदि ठाणा ६ विराजमान है.

ॐ शुभं भूयात्

श्री सत्यबोध

[illegible]

[illegible]

[illegible]

॥ श्री महावीराय नमः ॥

कविकुलभूषण, शास्त्रविशारद, स्वामीजी श्री श्री १००८ श्री तिलोक ऋषिजी महाराज विरचित सत्य बोध प्रारभ्यते.

छंद संग्रह.

॥ चोवीस जिनछंद ॥

॥ छंद त्रिभंगी ॥

श्री आदि जिनंदं, समरस कंदं, अजित दिनंदं, भज प्राणी॥ संभव जगत्राता, शिवमगराता, द्यो सुखशाता, हित आणी ॥ अभिनंदन देवा, सुमति सुसेवा, करो नित सेवा, रिपुघाता ॥ चोविस जिनराया, मन वच काया, प्रणमुं पाया, द्यो साता ॥ १ ॥ टेक ॥ श्रीपद्म सुपासं, ससिगुणरासं, सुविधि सुवासं, हितकारी ॥ श्री शीतल स्वामी, अंतरजामी, शिवगत गामी, उपकारी ॥ श्रेयांस दयाला, परम कृपाला, भवजलवाला, जगदाता ॥ चो० ॥ २ ॥ वासुपूज्य सुकंतं, विमल अनंतं, धर्म श्रीसंतं, संतकारी ॥ कुंथु अरनाथं, तज जग साथं, मल्लि सुआथं, संग धारी ॥ मुनिसुव्रत मुनमि, आत्माने दमी, दुर्मतिने वमी, तपराता ॥ चो० ॥ ३ ॥ रिष्टनेमि बढाइ, नार न व्याही, तोरण जाइ छटकाई ॥ नाग नागण ताइ, दिया बचाइ, पारस साइ, सुखदाई ॥ जय जय वर्द्धमानं, गुणनिधि खानं, त्रिजग भानं, शुद्ध आता ॥ चो० ॥ ४ ॥ संसारका फंदा, दूर निकंदा, धर्मका छंदा, जिन लीना ॥ प्रभु केवल पाया, धर्म सुनाया, भव समजाया, मुनि कीना ॥ कहे रिख तिलोकं, सदा तस धोकं, द्यो सुख थोकं, चित चाता ॥ चो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री पंच परमेष्ठी छंद ॥

॥ नाराच छंद ॥

तिलोक संत श्रेष्ठिकं, नमामि पारमेष्ठिकं ॥ भजे भजे उंद्-गलं, भवामि सदा मंगलं ॥ १ ॥ सर्वांग अंग सुंदरं, मारंत मार

दुर्धरं ॥ सहस्र अष्ट लंछनं, समस्त शुद्ध स्वच्छनं ॥ २ ॥ तितिक्ष जे चतुष्टकं, हणंत कर्म दुष्टकं ॥ तपश्चर्या सपुष्टकं, धरंत ध्यान सुष्ठुकं ॥ ३ ॥ सुज्ञान पूर्ण धारकं, अज्ञान मर्म वारकं ॥ सुअष्ट प्रातिहारकं, सुभव्य जीव तारकं ॥ ४ ॥ प्रमाद वाद खंडितं, अनंत गुण मंडितं ॥ अशुभ योग दंडितं, नमामि परम पंडितं ॥५॥ सुभानु कोटि भास्करं, भवाब्धि तारकं परं ॥ विकारदृष्टि मोचनं, नमामि शांतिलोचनं ॥ ६ ॥ सर्वल पाप खंडनं, सुजैनधर्म मंडनं ॥ अनंत सुखदायकं, नमामि संघनायकं ॥ ७ ॥ विशिष्ट गुण अष्टकं, समस्त शत्रु नष्टकं ॥ अरूप रूप रासकं, सदैव स्थीर वासकं ॥ ८ ॥ अनंत सुख सुस्थितं, रहंत सद्म निर्मितं ॥ भवौघ सर्व वारकं, नमामि निर्विकारकं ॥ ९ ॥ छत्रीश गुण शोभितं, कषाय चउ अक्षोभितं ॥ सुसंपदाष्ट माचकं, नमामि नित्य वाचकं ॥ १० ॥ प्रमाण नय संश्रुतं, पच्चीश गुण संयुतं ॥ सुज्ञान अन्य दायणं, नमामि उपाध्यायणं ॥ ११ ॥ तर्जंत जगत जालकं, परप्राण रक्षपालकं ॥ वर्जंत पापकारणं, गर्जंत धर्मधारणं ॥ १२ ॥ तर्जंत काम क्रोधकं, लर्जंत सो विरोधकं ॥ वितराग आण शोधकं, नमामि संत जोधकं ॥ ३ ॥ अज्ञानता प्रहारणं, अखील सुख कारणं ॥ हणंत मोह फेणतं, नमामि जिनवेणतं ॥ १४ ॥ मिथ्यांधकार भंजनं, ददाति ज्ञान अंजनं ॥ प्रमाद दुःख चूरणं, नमामि सत्य गुरुणं ॥ १५ ॥ तिलोकरिख संस्तवे, शरणुं सदा भवोभवे ॥ कृपार्णव मया करी, सदैव द्यो हिरी सिरि ॥ १६ ॥ कलश ॥ दोहा ॥ जय जय श्रीपरमेष्टिने, जय जय श्री जिनवेण ॥ जय जय श्री गुरुकी रहो, दियो सुमारग जैन ॥ १ ॥ इति

॥ परमेष्ठी परमानंद छंद ॥

॥ दोहा ॥

ओं नमो अरिहंताणं, इम पांचु पद माय ॥
ओं ऱ्हाँ ऱ्हीं श्रीं ऱ्हौं स्वाहा, जपता ऱ्हीं श्रीं थाय ॥ १०८ ॥ १ ॥

अ० सि० आ० उ० सा० ।

॥ छंद त्रिभंगी ॥

प्रणमुं सरसती, होय वरसती, चित्त हुलसे अति, गुण थुणवा ॥ शुद्ध भावे ध्यावे, सो सुख पावे, एक चित्त चावे, यश सुणवा ॥ जय जय परमेष्ठी, जगमें श्रेष्ठी, दे पद ज्येष्ठी, जगधारं ॥ त्रिजगमझारं, नाम उदारं, जय सुखकारं, नवकारं ॥ १ ॥ टेक ॥ बारे गुणवंता, श्री अरिहंता, लोग महंता, गुण गहेरा ॥ घन घातिक कर्मं, मिथ्या भर्मं, त्याग अधर्मं, विष लहेरा ॥ शुक्ल मन ध्याया, केवल पाया, इंदर आया, तिणवारं ॥ त्रि० ॥ २॥ वर परिषद् बारे, हर्ष अपारे, सुणि अवधारे, जिनवाणी ॥ अमृतसुं प्यारी, जग हितकारी, सुर नरनारी, पहेचाणी ॥ केइ संजम धारे, केइ व्रत बारे, कर्म विदारे, शिव त्यारं ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ द्वितीय पद ध्यावो, सिद्ध गुण गावो, फिर नहीं आवो, जिहां जाइ. ॥ जे अलख निरंजन, भविमन रंजन, कर्मके भंजन, शिव सांइ ॥ पुदगलदा फंदा, दूर निकंदा परमानंदा, अविकारं ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ अठ गुणके धारे, जगत निहारे, काल न मारे, उन तांइ ॥ जिहां सुख अनंता, केवलवंता, गुण उच्चरंता, छे नाहीं ॥ निज वास बताइ, द्यो मुझ तांइ, तुमसा नाहीं दातारं ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ गणिवर पद त्रीजे, नित्य नमीजे, सेवा कीजे, हर्ष धरी ॥ पंच महाव्रत पाले, दूषण टाले, गज जिम माले, शूर हरी ॥ पांचुं वश करते, पंच उच्चरते, पांचुही हरते, दुःखकारं ॥ त्रि० ॥ ६ ॥ शीतल जिम चंदा, अचल गिरिंदा, गणपति इंदा, शिरदारं ॥ सागर जिम गहेरा, ज्ञान लहेरा, मिथ्या

अंधेरा, परिहारं ॥ संपद बसु पावे, न्याय बतावे, पाले पलावे, आचारं ॥ त्रि० ॥ ७ ॥ गुरु सेवा साधी, विनय आराधी, चित्त समाधी, ज्ञान भणे ॥ बारे अंग जाणी, पंचीसजाणी, पूरव नाणी, संशे हणे ॥ निरवद्य सत्य भाखे, शास्त्र साखे, गुण अभिलाखे, निज सारं ॥ त्रि. ॥ ८ ॥ उवज्झाया स्वामी, अंतरजामी, शिवगति गामी, हितकारी ॥ शीखणने आवे, ज्ञान शिखावे, न्याय बतावे, उपकारी ॥ दुर्गतिमां पडतो. कादव गडतो, चित्त करे चडतो, तिण वारं ॥ त्रि० ॥ ९ ॥ कंचुक अहि त्यागे, दूरे भागे. तिम वैरागे, पाप हरे ॥ झूटा परछंदा, मोहनी फंदा, प्रभुका वंदा, जोग धरे ॥ सब माल खजाना. त्यागन कीना. महाव्रत लीना, अणगारं ॥ त्रि० ॥ १० ॥ पाले शुद्ध करणी, भवजल तरणी. आपद हरणी, दृष्टि रखे ॥ बोले सत्य वाणी, शांति ठाणी, जगका प्राणी, सम लखे ॥ शिव मारग ध्यावे, पाप हटावे, धर्म बतावे, सत्य सारं ॥ त्रि० ॥ ११ ॥ ए प्रणमे भावे, विघ्न हटावे, अरि हारि जावे, दूर सही ॥ जे तप तेजारी, दुःख विमारी, रोग न्यवारी, आत नहीं ॥ ग्रहपीडा भागे, दृष्टि न लागे. शत्रु न जागे, लीगारं ॥ त्रि० ॥ १२ ॥ ए मंतर नीको, तारक जीको. त्रिजग टीको, सुखदाता ॥ ए मंत्र करारी, महिमा भारी, लहे नर नारी. सुखसाता ॥ सरजीवन बेली. दे धन ठेली, भव भव केली, यह सारं ॥ त्रि० ॥ १३ ॥ पद्मासन वाली, रंग निहाली. आरत टाली. ध्यान धरे ॥ तिलोक पयंपे, भावसु जंपे, ऋद्ध सिद्ध संपे. जह घरे ॥ यह छंद त्रिभंगी, गावे उमंगी. भव भव संगी, जयकारं ॥ त्रि० १४ ॥ इति ॥

॥ श्री महावीर जिनस्तवन छंद ॥

॥ त्रिभंगी छंद ॥

जिन शासन स्वामी. अंतर जामी. शिवगति गामी, सुखकारी ॥ जगमें जयवंता. श्री भगवंता. सुगुण अनंता, उपकारी

सिध्दार्थकुल आया, जगतं सुहाया, शुभ पल जाया, गुण धारी ॥ धन त्रिसलानंदन, कुलध्वज स्यंदन, जिन चरणनकी, बलिहारी ॥ १ ॥ आसन कंपाया, सुरपति आया, शीस नवाया, शुभ भावे ॥ वैक्रियभा पासे, मोलि हुलासे, ले जिन तासे, गिरि आवे ॥ तीहां प्रभुजीनो, महोत्सव कीनो, फिर सुक दीनो, ज्यां महतारी ॥ धन० ॥ २ ॥ युग वंदना करके, निद्रा हरके, स्तवन उच्चरके, घर जावे ॥ भइ रवि उगाइ, भूधव ताइ, दासी बधाइ, दरसावे ॥ नृप महोत्सव कीयो, दान जु दीयो, हर्षित हीयो, निहारी ॥ धन० ॥ ३ ॥ योवन वय माही, नारी व्याही, अवसर पाइ, जोग ग्रहे ॥ तपस्या तन तावे, शम दम भावे, ध्यान सुध्यावे, कष्ट सहे ॥ प्रभु क्षमा सागर, ज्ञान उजागर, गुण रत्नाकर, अघवारी ॥ धन० ॥ ४ ॥ शुध्द संयम पाले, दूषण टाले, शिवमग चाले, जगत्राता ॥ क्रोध मालने माया, लोभ हटाया, मोह भगाया, अरिघाता ॥ शूकल मन ध्याया, कर्म खपाया, केवल पाया, जिणवारी ॥ धन० ॥ ५ ॥ मुणि नाथ वडाई मन अकडाइ, आया चलाइ, प्रभु पासे ॥ विस्मय अति पाया, चित्त लजाया, गर्व गमाया, वीमासे ॥ प्रभु भर्म मिटाया, जिनमग आया, संजम ठाया, तिण सारी ॥ धन० ॥ ६ ॥ परथम इंद्रभूति, पूर्वधर श्रुति, त्रिपदी संयुति, फरमाया ॥ गणधरपद लीना, परम प्रवीना, शम दम भीना, तन ताया ॥ चुमालीसे लारा, गणधर ग्यारा, भए अनगारा, व्रत धारी ॥ धन० ॥ ७ ॥ चार तीरथ थाप्या, पाप उथाप्या, सुव्रत आप्या, नरनारी ॥ केइ स्वर्ग सिधाया, केइ शिव पाया, श्रीजिनराया हितकारी ॥ शैलेशी भावे, प्रभु शिव पावे जगमें नावे अविकारी ॥ धन० ॥ ८ ॥ प्रभु अलख निरंजन, भव. दुःख भंजन, भविजन रंजन, कृपाला ॥ जे शुद्ध मन ध्यावे, दुःख पलावे, सुख उपावे, प्रतिपाला ॥ कहे रीख तिलोकं, निरंतर धोकं,

दीजो शिव थांकूं, भवपारी ॥ धन० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ श्री अरिहंत छंद ॥

॥ मोतीदाम छंद ॥

सदा जगनायक स्हायक हंस, सुकायक वायक लायक वंस ॥ सुश्रेष्ठ विशेष्ट सुज्येष्ठ कहंत, अहो अरिहंत करो सुख संत ॥ १ ॥ सुतात सुमात सुभ्रात सुजात, सुगात सुवात सुपात सुआत ॥ सुलंछन अष्ट सहस्र कहंत ॥ अहो. ॥ २ ॥ विशाल सुभाल सुवाल अवाल, दयाल मयाल अजाल कृपाल ॥ सुमाल सुलाल भवीक इच्छंत ॥ अहो. ॥ ३ ॥ अखंड अडंड अचंड अतंड, अगंड अवंड, असंड सुसंड ॥ अफंडण छंड भये गुणवंत ॥ अहो. ॥ ४ ॥ महावीर गंभीर ध्यान सुस्थीर, अचीर विचीर अगीर सुगीर ॥ अपीर सुपीर सुवोध कहंत ॥ अहो. ॥ ५ ॥ अरीश विरीश शत्रुदल पीस, जगीश सगीश गुणीश वरीश ॥ अखेह अछेह अभेह रहंत ॥ अहो. ॥ ६ ॥ उत्थापक पाप तीर्थंकर आप, जपंत जिनंद वधंत प्रताप ॥ अनंत गुणातम श्रीभगवंत ॥ अहो. ॥ ७ ॥ अनेह विनेह अगेह सुगेह, असेह विसेह अदेह विदेह ॥ अलेप सुलेप सदा दरसंत ॥ अहो. ॥ ८ ॥ न कर्म न भर्म न गर्म उछाह, अक्रोध असान असाग अदाह ॥ अरोग असोग अभोग तरंत ॥ अहो. ॥ ९ ॥ सुज्ञान अराध ससाधि प्रणाम, विहार करंत भवी हित काम ॥ भजंत सुरासुर स्वामि सहंत ॥ अहो. ॥ १० ॥ कहंत सदा उपदेश रसाल, हणंत मिथ्यातम बंधन जाल ॥ आराधक होय तिरंत अनंत ॥ अहो. ॥ ११ ॥ रटंत कटंत दुर्गत समस्त, लहंत सुखामृत वांछित वस्त ॥ उद्धारक वृन्द सहित हितवंत ॥ अहो. ॥ १२ ॥ त्रिजोग निवार रहे शिवलोक, चरणांबुज धोक, ते रिख तिलोक ॥ त्रिलोक सुदेव जपो जग कंत ॥ अहो. ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ श्री सिद्धाष्टक छंद ॥

॥ नाराच छंद ॥

प्रसिद्ध सिद्ध शिव कंत, संत श्रेष्ठ देव हो ॥ झटक दी सकल पाप, खेव नीरलेव हो ॥ कलंक बंक डंक अंक, रंच त्वं न डंबरं ॥ कृपा करो दयानिधी, ऋद्धि वृद्धी सिद्धी करं ॥ १ ॥ टेक ॥ अरूप रूप स्व-अनूप, भूपधू अखंड हो ॥ अफंड मंड डंड गंड, छंडके प्रचंड हो ॥ अनंत ज्ञानरूप तोय, पाप मेल संहरं ॥ कृपा. ॥ २ ॥ प्रमाद क्रोध मान माय, लोभ लेश सो नहीं ॥ अनंत काल स्थीत है, अनंत सुख रासही ॥ अष्ट महा गुण मूल, त्वं सदा सुसंवरं ॥ कृपा. ॥ ३ ॥ विकार खार दूर टाल, राग द्वेष संहर्‍या ॥ अगाध जो भवोधि सो, धर्मपोतथी तर्‍या ॥ प्रत्येक एकमेक आप, व्याप हो गुणागरं ॥ कृपा. ॥ ४ ॥ अलेख रेख रूप नाहीं, पापफंद बंध सो ॥ आहार भार हास्य त्रास, नाश काम धंधसो ॥ अभंग ज्ञान संग चंग, गुप्त ना उजागरं ॥ कृपा. ॥ ५ ॥ अलोक लोक द्रव्य क्षेत्र, काल भाव जाण हो ॥ त्रिलोकनाथ त्रात भ्रात, मंद्र चंद्र भाण हो ॥ विनाश किया रोग सोग, भोग भाव भंगुरं ॥ कृपा. ॥ ६ ॥ जपंत जाप आग नाग, सिंह चोर सो हटे ॥ कटंत बंध द्रव्य भाव, रोग दुःख जे मिटे ॥ विषय कषाय लाय जाय, आय सुख सागरं ॥ कृपा. ॥ ७ ॥ तिलोकरिख हस्त जोड, करत नित्य वंदना ॥ निरोग बोध लाभ चहाय, कर्मकी निकंदना ॥ नहीं जगत-माही ओर, आपसो विश्वंभरं ॥ कृपा. ॥ ८ ॥ नित्य ए सिद्धाष्टकं, पठंति जे मनोहरं ॥ विज्ञान मुक्ति सुख द्रव्य, भाव होत नागरं ॥ नान्यत्र देवलोक माही, सिद्धस्थान उपरं ॥ कृपा. ॥ ९ ॥ दोहा ॥ अ-जर अमर अविकार हो, सिद्ध निरंजन देव ॥ किंकर पर करुणा करो दीजो अविचल सेव ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री आचार्य छंद ॥

॥ मरहट्टा छंद ॥

जे ज्ञान महंता, समकितवंता, चारित्र तप धार ॥ उत्कृष्टी करणी, भवजल तरणी, पंचस वीर्य आचार ॥ स्वयं पाले पलावे, पाप हटावे, उपदेशे नर नार ॥ गणिवर पद त्रीजे, नित्य नमीजे, कीजे सफल जमार ॥ १ ॥ टेक ॥ सव हिंसा टाले, दया सो पाले, निरवद्य बोले विचार ॥ दत्त व्रत ब्रह्मधारी, परिग्रह टारी, पंच जाम शुद्ध धार ॥ सुरत चक्खु नासा, रसना फासा, इंद्रिय जीतनहार ॥ गणि. ॥ २ ॥ पशु पंडग नारी, थानक टारी, नारिकथा परिहार ॥ अंग निरखवा वारे, आसन टारे, सुणे न शब्द विकार ॥ क्रीडा न संभारे, सरस रस टारे, करे न अधिको आहार ॥ गणि. ॥ ३ ॥ अंग शोभा टाले, वाड ए पाले, क्रोध न करे लगार ॥ अभिमान तजंता, कपट तजंता, ममता दी सव मार ॥ कषाय एह चारी, महा दुःखकारी, भरमावे संसार ॥ गणि. ॥ ४ ॥ कर्मनका फंदा, दूर, निकंदा, चाले ईर्या विहार ॥ निरवद्य मुख वाणी, ले शुद्ध अन्न पाणी, दोष वयालिस टार ॥ जयणा करि लेव, विधिसु परठेवे, समिति ए सुखकार ॥ गणि. ॥ ५ ॥ मन वचन काया, गुप्ति त्रिहुं डाया, गुण छत्तीस उदार ॥ शुद्ध किरियाधारी, ज्ञान भंडारी, करता पर उपकार ॥ उपदेश सुनावे, भर्म उडावे, तार भवि नर नार ॥ गणि. ॥ ६ ॥ वर रूप दीपंता, महाबलवंता, वाणी अमृत धार ॥ अक्षर शुद्ध बोले, सात नय खोले, डोले नहीं लगार ॥ विद्या निधाना, युगप्रधाना, गुणगण रत्नाकार ॥ गणि. ॥ ७ ॥ कुपक्ष नहीं ताणे, सव मत जाणे, अन्यमतको परिहार ॥ शीतल शशि जीपे, रवि जिम दीपे, साथे बहु अनगार ॥ पाखंड हटावे, जैन दिपावे, पाले संजम भार ॥ गणि. ८ ॥ आचारज नाणी, गुणनिधि खाणी, आचारज सुखकार, ॥ समरण सुखकारी, महिमा भारी, अरि करी भय परिहार ॥ दुःख जावे दूर, संकट चूरे, पूरण रहे भंडार ॥

गणि. ॥ ९ ॥ आचारज स्वामी, अंतरजामी, सिद्ध पदके दातार ॥ गुणिवर गुण गावे, पार न पावे, रसना रचे हजार ॥ अलप गुण गाया, मन समझाया, तिलोक करे नमस्कार ॥ गणि. ॥ १० ॥ संवत उगणीसे, वर्ष चोतीसे, वैशाख पूनम शशिवार ॥ जो जपशे भावे, सोही सुख पावे, छंद मरहठा धार ॥ प्रातें उठ वंदे, दुरित निकंदे, रिद्ध सिद्ध जय जयकार ॥ गणि. ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ श्री उपाध्याय छंद ॥

॥ हाटकी छंद ॥

संसार सागर, दुःख आगर, जाणे नागर, धीर ए ॥ ततकाल त्यागे, दूर भागे, शूर सागे वीर ए ॥ मुनिराज पासे, ग्रहे दीक्षा, ज्ञान शिक्षा, आप ए ॥ चउथे पद उवज्झाय सुखकर, कीजे नित्य प्रति जाप ए ॥ १ ॥ टेक ॥ आचारंग चंग, अंग सुयगड, ठाणायंग सुखकार ए ॥ चउथो समवायांग नीको, भगवइ ज्ञाता सार ए ॥ उपासक अंतगड, अंग अष्टम, अनुत्तरोववाइ थाप ए ॥ चउथे. ॥ २ ॥ प्रश्न व्याकरण, भण्या पूरण, अंग विपाक, रसाल ए ॥ गुरुदेव पासे, अर्थ धार्या, चउदे दूषण टाल ए ॥ ग्यारा अंग, संगो–पांग, शीख्या अति, चित्त चाल ए ॥ चउ. ॥ ३ ॥ उत्पात अग्नी, वीर्य तृतीय, अस्ति ज्ञान सत्त जाणीए ॥ आतम प्रवाद, अरु कर्म पूरव, प्रत्याख्यान वखाणीए ॥ विद्या अबंध, प्रवाद पूरव, धारंत तोहि न धाप ए ॥ चउ. ॥४॥ प्राण क्रिया, विशालपूरव लोकाबिंदु, सार ए ॥ चतुर्दश पूरव, अंग ग्यारा, पाठ अर्थ, सुधार ए ॥ अभिमान तज कहे, वेण चारु, नाहिं करत कूडी थाप ए ॥ चउ. ॥ ५ ॥ भविकजन जो, प्रश्न पूछे, नव पदारथ, भाव ए ॥ सूक्ष्म बादर, द्रव्य खटनो, पूछे कोई, प्रस्ताव ए ॥ तव देत उत्तर, शोध सुत्तर, दे जिनागम, छाप ए ॥ चउ.॥ ६ ॥ ज्ञानदाता, धर्म-

राता, बोले निरवद्य, वेण ए ॥ मिथ्यात खंडण, जैन मंडण, पाले जिनवर, केण ए ॥ गणिपदले, जोग सोहे, नासकर्म, आताप ए ॥ चउ. ॥ ७ ॥ महाव्रत पाले, दोष टाले, चाल इरजा, शोध ए ॥ कर्मरूपी शत्रुघातक, परम शूरा, जोध ए ॥ मन वचन काया, करण तीनुं, करत नहीं, सो पाप ए ॥ चउ. ॥ ८ ॥ उपाध्याय भक्ति, करत जुक्ति, ज्ञानगर, जीवंत ए ॥ मिथ्यात जावे, बोध आवे, थावे शिवपुर, कंत ए ॥ जैनमारग, तरण तारण, अवर सव कलाप ए ॥ चउ. ॥ ९ ॥ जिन नहीं, जिनराज सरखा, वेण सत, सुखकार ए ॥ देश जिनपद, मांहि विचरे, करता पर, उपकार ए ॥ मिथ्यात्व अंधा, कर्म फंदा, ज्ञान आसि कर, काप ए ॥ चउ. ॥१०॥ भवप्राणी तारे, संशे टारे, बहु सूत्र विस्तार ए ॥ उत्तराध्ययन, इगियारसांने, कह्यो वर्णव, जहार ए ॥ तिलोक रिख, कर जोडि वंदे, सदा पुण्य प्रताप ए ॥ चउ० ॥११॥ इति ॥

—:(❀):—

॥ श्री साधु छंद ॥

॥ कामनी मोहनानी देशी ॥

साधु निर्ग्रंथने वंदना कीजिए, मानवको भव सफल करीजीए ॥ धन्य जे संत गुणवंत सोभागिया, भोग किंपाकसा जाणके त्यागीया ॥१॥ पंच महाव्रत समकित पालता, चार कषाय दावानल टालता ॥ भाव सच्चे मुनि वंदूं मैं नित्त ए, कर्ण सच्चे जोग सच्चे सुकित्तए ॥२॥ धन्य जे क्षमा वैरागमें राचिया, द्रव्य छ नव पदारथ जाचिया ॥ मन वचन काया सम धारता, ज्ञान दर्शन चरण शुद्ध सारता ॥३॥ समभावे करी वेदनी खमता, मरण आया थकी जे करे समता ॥ गुण सत्तावीस संजम जे धरे, राग अने द्वेष जे किंचित नहिं करे ॥४॥ तीन ही शल्य सो मूल निकंदिया, मोहनी कर्मसूं ते नहीं फंदिया ॥ नहीं करे विकथा धर्म सुध्यावता, शुक्लध्यान

धर कर्म खपावता ॥५॥ दया छकायकी पालता जे मुनि, क्रिया भेद मद नहीं करे महागुणी ॥ नव वाड मुनिधर्म पाले अखंड ए, सकल मिथ्यातको छंड्यो अफंड ए ॥६॥ बावीस परिसह जीतिया ते सही, बावन प्राणरक्षक विचरे मही ॥ बावन अनाचीरण टालता, चोराशी उपमायुक्त वे चालता ॥७॥ एक एक चउथादि षष्ठमासी करे, एकावली रतनावली आदरे ॥ गुण रतन संवच्छर धारता, प्रतिमादिक संलेखना जहारता ॥८॥ तप ऊणोदरी छे अति मोटको, भिक्षाचरी रसत्याग नहीं छोटको ॥ काय किलेसने पडिसंलीनता, षष्ठ तप धारके तन करे क्षीणता ॥९॥ प्रायाश्चित्त विनय वैयावच्च जे करे, सज्झाय ध्यान काउसग्ग आदरे॥ प्रच्छन्न खट तप साधे अणगार ए, टाले सही जिके कर्मको खार ए ॥१०॥ चंद्र ज्यूं सोमदृष्टि करी दीपता, तपतेजें रविकिरणने जीपता॥सागर जेम गंभीर कहीजीए, कुंजर जेम धीरजता लीजीए॥११॥ लब्धि पाया भली प्रगट तपस्या फली, खेलोसही जलोसही प्रसिद्ध प्रगटी भली॥ वप्पोसही केइ आसोसही पत्तिया, सव्वोसही कोठबुद्धि केइ मात्तिया ॥१२॥ बीजबुद्धी वली पदानुसारिया, एकेक मुनिवर वैक्रिय धारिया ॥ चारणा विज्जहरा मुनिराजिया, ऋजु विपुलमति संशय भांजिया ॥१३॥ एकेक मति श्रुति अवधि धणी, मनःपर्यव केवल शोभा घणी ॥ केवली दोय क्रोडी सुखकार ए, नवकोडी उत्कृष्ट विचार ए ॥१४॥जघन्य दोय सहस्र कोडी जती, सहस्र प्रत्येक उत्कृष्ट पदें संजती॥ आज्ञा जिनंदकी पालता जे सदा, धन्य जे जगतमें सकल छोडे अदा ॥१५॥ दुरित टले मुनि भावसूं जंपता, तम दालित होवे जिम रवि तपता ॥ कर्म शत्रु जीके करत निकंदना, रिख तिलोकजी करे तस वंदना ॥१६॥ संवत उगणीशे तीस मझारए, ज्येष्ट आदि छट सूरज वारए॥ कामनी मोहना छंदमें जाणीए, सु..वेली जले पुष्कर मानीए ॥१७॥ कलश॥ इम ऋद्धि वृद्धि समृध्दि कारण, जपो मुनिवर भावसुं ॥ धर्मदेव महन्त प्रणसुं, थूण्या सुगुरु पसावसुं ॥ एम जाणी सेवो प्राणी,

सुसाधु मन खंत ए ॥ ते लहे शिवपद रूप निश्चे, निर्भय शिवसुख संत ए ॥ १ ॥ इति ॥

—:(❀):—

॥ अथ चतुर्विंशति जिन नाम नमोत्थुणं युक्त छंद ॥

जय जय आदीश्वरजी अजित भणी, संभव अभिनंदन मोक्ष धणी ॥ सुमति पद्म सुपास मणी, चंद्रप्रभुकी जग महिमा घणी ॥१॥ पुष्पदंत शीतल हण्या कर्म अरी, श्रेयांस वासुपूज्य आर्ति हरी ॥ श्रीविमल अनंत धर्म जीत करी. शांतिनाथ प्रभु हन्यो रोग मरी ॥२॥ कुंथु अर मल्लि जिन सुखदाता, मुनिसुव्रत नमीश्वर जगताता ॥ रिष्टनेमि करुणारस माता, पारस पारस सम विख्याता ॥ ॥३॥ वर्द्धमान जिनंद शासनराया, अति क्षमा करी केवल पाया ॥ चोवीश जिनेश्वर मन भाया, प्रणमुं वंदुं मन वच काया ॥४॥ अरिहंत धर्म आदि तीर्थंकर, स्वयमेव बोध शुध्द ध्यान धरे ॥ पुरुषोत्तम हरि जिम नाहीं डरे पुरुषोत्तम पुंडरीक पंक सिरे ॥५॥ पुरुषोत्तम प्रभु गंधहस्ति भले. जिन विचरे जहां पाखंडी गले ॥ लोकोत्तम नाथ हितकार फले, दीपक ज्यों मिथ्या तम सर्व दले ॥६॥ उद्योत करे सविलोक हिये, अभयज्ञान रूपी प्रभु नेत्र दिये ॥ शुद्ध मारग भूले जग जे प्राणी. मोक्ष पंथ वतावे सुखदाणी ॥७॥ कर्म शत्रुसु त्रास्या भवि आवे, तिनकु जिन शरणागत थावे ॥ संयम जीतव दायक स्वामी. बोध बीज दाता नमुं शिर नामी ॥८॥ धर्मदायक देशक नायगाणं, धम्म सारही जिन चक्कवर्ती जाणं ॥ अरिहंत अपाडिहय वरनाणं, दंसणधरा वियट्ट छउमाणं ॥ ९ ॥ रागद्वेष जिन्नाणं जावयाणं, भव ओघ तिन्नाणं तारयाणं ॥ भव जिन वुद्धाणं बोधयाणं, अष्टकर्म मुत्ताणं मोयगाणं ॥१०॥ सव नाण दंसण शिव अचल थया, आरोग अणंत अक्खय अवाध रह्या ॥ आवे नहीं फिर

इण जगमांई, सिद्धगति नामधेयं कहाई ॥११॥ जिण थानक प्रभु संप्राप्त थया, निज गुण संपूरण आठ कया ॥ असुर सुर गरुड भुयंग देवा, इंद्र चंद्र करे प्रभुकी सेवा ॥१२॥ कल्पवृक्ष चिंतामणिथी भारी, जिनवर महिमा अपरंपारी ॥ नरक निगोद गतिका ताला, जिन नाम थकी मंगलमाला ॥१३॥ करि केसारि सावज दुष्ट जिके, वली उदक अगनि भय दुःख तिके ॥ दुर्जन छल बल नहीं चालि सके, जो प्रभु समरण करे भाव पके ॥१४॥ वध बंधन परवश दुःख कटे, वली चोर चरड भय दूर हटे ॥ गड गुंबड ज्वरादिक रोग मिटे, जो एक चित्त जिन नाम रटे ॥१५॥ ऋद्धि सिद्धि परिवार भंडार अति, तस आदर दे सुरराज पति ॥ जिन समरण थी प्रशस्त मति, दिन दिन बधे महिमा पुण्यरती ॥१६॥ आभ कागद लेखिणी मेरु तणी, उदधि जल जेति मसी आणी ॥ सुरगुरु गुण गावे प्रेम भणी, अनंत गुणातम त्रिजग धणी ॥१७॥ तिलोक रिख कहे शिर नामी, मुझ दरसण द्यो अंतरजामी ॥ भव भव शरणुं आप तणुं, जब लग नहिं द्यो मुझ सिद्ध पणुं ॥१८॥ संवत् उगणीसे वर्ष त्रिशे, जिनस्तवन किया चित्त जगीशे ॥ पढे सुणे जो नरनारी, तस घर वरते मंगल चारी ॥१९॥ इति ॥

॥ आनंदमंदिर नाम मंगल छंद. ॥

सफल ससार अवतार ए हुं गणुं ॥ ए देशी ॥

ॐ ऱ्हीं श्रीं नमो श्री अरिहंत ए, टालो संकट सहु शत्रु दुर्दंत ए ॥ घन घातिक चउ कर्म किया अंत ए, ध्याइयो शुकल ध्यान महमंत ए ॥ १ ॥ पाया प्रभु विमल ज्ञान केवल सही, द्वादश पर्षदा वंदवा आवही ॥ करुणाके सिंधु उपदेश फरमावही, सुणत भवि प्राणी मन तन हुलसावही ॥२॥ अथिर जग जाणके संजम आदरे, केइ बारा व्रत निर्मल उच्चरे ॥ केइ विशुद्ध समकीत समाचरे, तिण दिने चतुर्विध संघ

स्थापन करे ॥३॥ विचरे भूमंडले भविकजन तारवा, जन्म जरा मरणना संकट वारवा ॥ प्रथम मंगल इम नित प्रते वंदिये, सब भव दुष्कृत दूर निकंदिये ॥४॥ ओं न्हीं श्रीं नमो सिद्ध उर्ध्व राजके, सिद्ध करो सब मनो वंछित काजके ॥ अजर अमर अविनाशी अविकार ए, सुख अनंत अनंत गुण धार ए ॥५॥ राग रंगित नही कर्म संगत नही, निर्भय स्थान अवगाहन अटल लही ॥ अखंड अडंड प्रभु जगत शिरोमणि, अडग धर्म झुंडमे वंदुं त्रिजग धणी ॥६॥ ओं न्हीं श्रीं सब साधु उमायके, तार भव प्राणी उपदेश वतायके ॥ भोग किंपाकसा जाणके त्यागिया, धन्य जे संत गुणवंत सोभागिया ॥७॥ ओं नमो जिन अवधि परमावधि, ओं नमो केवली उग्र तपस्यानिधि ॥ ओं नमो कोठ नमो बीजबुद्धिया भणी, पदानुसारि संभिन्नसोया मुनि ॥८॥ वंदुं रिज्जुमति विपुलमात्तिके, पूर्वदश चतुर्दश अष्ट नैमित्तिके ॥ वैक्रिय लब्धि धरा जंघा विद्याचरा, प्रश्न श्रमण वली गगन गामी धरा ॥९॥ उग्र तप घोर तप दीप्त-तपस्या धरा, घोर पराक्रमी शीलवंता खरा ॥ रीश आणे नहीं करत कोइ निंदना, हरख आणे नहीं जो करे वंदना ॥१०॥ अनशन तप कोइ करत ऊणोदरी, वृत्तिसंक्षेप रसत्याग भिक्षाचरी ॥ काय किलेश संलीनता आदरे, प्रायश्चित विनय वेयावच मनशुं करे ॥११॥ सज्झाय ध्यान काउसग्ग ठावही, कंचन कंकर एकसम भावही ॥ जघन्य पृथकूत्व शथ सहस्र कोडी जती, उत्कृष्ट पदे रिख वंदू में शुभमति ॥१२॥ ओं नमो धर्म श्री जैन जिन साखियो, दुर्गति पडत भव भव थिर राखियो ॥ दया भगवती नव शास्त्रमें वर्णवी, हिरदे अनुकंपा सो दाख्यो जिनजी भवी ॥१३॥ निज आतम सम जाण सब प्राणीने, पालो दया अनुकंपा चित्त आणीने ॥ जीव अनंत तर्या इण प्रभावथी, जेम उदधिनणो पार लहे नावथी ॥१४॥ हिंसामय धर्म सो दूर निवारजो, चोथुं मंगल एह धरमनुं धारजो ॥ तन धन जोवन अ-

थिर करि जाणजो, चारूंही मंगल उत्तम मानजो ॥१५॥ चारनुं शरण नित्य लीजो थे पलपले, एह परभावथी सर्व संकट टले ॥ दुशमन चोर धूरत कोइ नहि छले, सिंह सर्पादिक देखि दूरा टले ॥१६॥ गड गुंबड रोग महाकष्ठ असाध्य सो, एह सरणाथकी लहे समाध सो ॥ ताव तेजारी त्रूटे इण ध्यावता, विघ्न व्यापे नहीं पंथमें जावता ॥१७॥ भूत झोटिंग अरु डंकणी शंकणी, विघन करे नहीं देवी विहंकणी ॥ नरेंद्र सुरेंद्र फणींद्रादिक देवता, सकल वश थाये चउ शरण शुद्ध लेवता ॥१८॥ अहि जिम गरुडना शद्बथी थरहरे, तेम चउ शरणथी पाप आघो डरे ॥ ईणमांही शंका रति मत आणजो सद्गुरु कहेण प्रमाण पीछाणजो ॥१९॥ रिख तिलोक दे धोक चउ शरणने, आरोग्य समकित अरु भवजल तरणने ॥ भणशे गुणशे एह स्तवन भावे करी, सोही भविजीव लहेशे अविचल सिरी ॥२०॥ कलश ॥ अरिहंत सिद्ध महाराज साधु, धरम केवलि जाणिये ॥ ए चारु मंगल चारु उत्तम चारु शरणा मानिये ॥ इहलोक संपत्ति सुख बहुला, आगे सुख श्रीकार है ॥ तिलोकरिख कहे सुणे सरधे, होय सदा जयकार है ॥२१॥ इति ॥

॥ मंगल छंद ॥

॥ मंगलकी देशी ॥

ढाल ॥ जय जय अरिहंत जिनंदा, मुख पूनम पूरण चंदा ॥ सेवे सुर असुर नरिंदा, प्रभु भविजनके सुखकंदा ॥१॥ त्रूटक ॥ हरिगीत छंद ॥ सुखकंद साहेब भए सबके, तप महा दुष्कर किया ॥ घन घातिके सब कर्म हणकर, ज्ञान केवल पाइया ॥ चोतीस अतिशय प्रगट दीसे, अमृत वाणी उच्चरे ॥ प्रातिहार अष्ट विशेष जिनके, संघ चउ स्थापन करे ॥२॥ ढाल ॥ जगगुरु जगनायक स्वामी, जगतारक अंतरजामी ॥ प्रभु मुक्ति जावणके कामी, नित नित प्रणमुं

शिर नामी ॥३॥ त्रूटक ॥ शिर नामि प्रणमुं करुणासिंधु, जवन वीस जिनेश्वरु ॥ उत्कृष्ट एक शत सित्तर जास, होय तस वंदन करु ॥ उपकारी इण सम नहीं जगमें, मन वचन तन ध्याइये ॥ होय संपत्ति विपत नासे, प्रथम मंगल गाइये ॥ नित्य० ॥४॥ ढाल ॥ जय जय सिध्द सदा सुखकारी, अष्ट कर्म किया सब छारी ॥ प्रभु तीनुही जोग निवारी, पाये शिवपुरके सुख भारी ॥५॥ त्रूटक ॥ सुख भारी जिनके है अनूपम, आतमिक अविचल सदा ॥ निरंजन निराकार जिनके, दुःख नही व्यापे कदा ॥ अजर अमर अविकार ईश्वर, अटल अवगाहन धणी ॥ अविकार करुणावंत वंदूं, सकल लोक शिरोमणि ॥६॥ ॥ ढाल ॥ त्रस नालीके उपर जाणो, जहां मुक्तिशिला सुवखाणो ॥ चेतुं छत्र शशिने संठाणो, पेतालिसं लक्ष योजन परमाणो ॥७॥ त्रूटक ॥ परमाण दलमे अष्ट योजन, अधिक पतली अंत सो ॥ तिण उपरे पंचदश भेदे, सीधा सिध्द अनंत सो ॥ सकल कारज सिध्द जिनके, भाव भक्ति सराइये ॥ पाइये सिध्द पद जिणसुं, सिध्द मंगल गाइये ॥ नित्य० ॥८॥ ढाल ॥ जय जय सब साधु सोभागी, आरंभ परिग्रहके त्यागी ॥ तप जप किरिया अनुरागी, उनकी सुरता मुगतिसु लागी ॥९॥ त्रूटक ॥ लागि सुरता शिवपुरशुं, असंजम सेवे नहीं ॥ महाव्रत पाले इंद्री जीते, कषाय चारु हठावही ॥ वैराग भावे अधिक क्षमा, जोग तीनुं सम करे ॥ ज्ञान दरसण चरण पूरण, रोग मरणसु नहीं डरे ॥ मुनि० ॥१०॥ ढाल ॥ केइ चउदे पूर्वके धारी, केइ द्वादश अंग भंडारी ॥ केइ अवधि मनःपर्यव ज्ञानी, तेजोलश्या लब्धि करी छानी ॥११॥ त्रूटक ॥ करि छानि लब्धि वैक्रिय आहारक, ध्यान शुक्ल ध्याइया ॥ घनघातिक केइ कर्म काटी, ज्ञान केवल पाइया ॥ पृथक् कोडी सहस्र मुनिवर, उत्कृष्ट जघन्य मनाइये ॥ वंदिये शुद्ध भाव भविका, साधु मंगल गाइये ॥ १२॥ ढाल ॥ जय जय जैन धर्म जयकारी, केवलि प्ररूपित हितकारी ॥ इणमें

जीवदया अगवानी, या तो सर्व सिद्धांते बखानी ॥१३॥ त्रूटक ॥ बखाणी सर्व सिद्धांत मांही, शंका नहीं इणमें रति ॥ निज प्राण सम सब प्राणी जाणो, सोचो इम निर्मल मति ॥ शाश्वतो त्रिहुं काल मांही, सकल जिन दाख्यो सही ॥ ए शुद्ध सरधा धारिया विण, करणी लेखामें नहीं ॥१४॥ ढाल ॥ जाके जीवदया रुचि जागी, सो जाणो हलुकर्मी सोभागी ॥ निरवद्य शुद्ध करणी धारी, इणसु तरिया अनंत संसारी ॥१५॥ त्रूटक ॥ संसारी तरिया अनंत इणसु, आदरो इम जाणिने ॥ लही अविचल सुख संपत, दुःख द्यो मत प्राणिने ॥ ज्ञान दर्शन चरण माही, धर्म हिरदे लाइये ॥ सर्व आगम सार चउथो, धर्म मंगल गाइये ॥ नित्य ध० ॥१६॥ ढाल ॥ अरिहंत सिध्द साधु धर्म ए चारी, लोकोत्तम एह विचारी ॥ शरणागत ए चउ मानो, इणमें शंका मत आणो ॥१७॥ त्रूटक ॥ मत आणो शंका शरण लेता, दुःख नहीं व्यापे कदा ॥ चोर दुष्मन रोग नासे, लहो अविचल संपदा ॥ कहे रिख तिलोक मुझने, शरण होजो सवेही ॥ सुणे सरधे तेहि जनने, होशे सुख साता सही ॥ सदा हो० ॥१८॥ इति ॥

॥ भयभंजन अरिहंतजीको छंद. ॥

चोपाइ छंद

जय जय विश्वनाथ जसवंत, प्रणमु श्री अरिहंत महंत ॥ कुशल वेलि जल पुष्कर धार, दुरित तिमिर भानु संसार ॥१॥ चित्रवेल चिंतामणि पास, कल्पवृक्ष जिम पूरण आस ॥ आरत हरण करण सुख संत, चरण सरण धारो मन खंत ॥२॥ क्रोध मान छल लोभ निवार, भए केवल पद तुम संसार ॥ इंद्र नरिंद्र सुरासुर देव, मन वच काय करे तुम सेव ॥३॥ लिपटे सर्प चंदन तरु भाल, गरुडशद्ब सुणि नासत व्याल ॥ जंतु वृक्ष कर्म अहि जाण, तुम समरणते होत प्रयाण ॥४॥

कोटि वृंद नारी जणे पुत. तुमसो अवर न प्रसवे सुत ॥ उगे नक्षत्र चउदिशि साय. दिनकर पूरव दिशि प्रगटाय ॥५॥ तुम निर्मल गुण आगर देव. क्षमासागर आप अछेव ॥ धर्म धुरंधर सारथवाह, धर्मचक्री प्रभु त्रिजग नाह ॥६॥ अविनाशी अविकारी अरूप, निर्भय करण परम सुख भूप ॥ जगगुरु जगबंधव जगईश, त्रिकरण शुद्ध नमावुं शीश ॥७॥ जनम जरा मरण दुःख सोग, एह अनादि लग्यो भवरोग ॥ तुम समरण ओषध जो लेत. भव भव व्याधि रंच न रेत ॥८॥ तुम जगवच्छल करुणावंत शांतिकारक श्रीभगवंत ॥ मैं मतिहीण अलप मोय बोध, तुम गुण कैसे वरणवुं शोध ॥९॥ केइक हरिहर जपत महेश, केइक सरस्वति गौरी गणेश ॥ केइक रवि शशि नवग्रह देव, केइक जल थल अगनी सेव ॥१०॥ केइक ईसा पेगंवर पीर. केइक देवी भैरव वीर ॥ मैं मन निश्चे कियो निरधार, तुम सम और न को संसार ॥११॥ किहां सरशव किहां मेरु उत्तंग, किहा केशरी बलवंत कुरंग ॥ राधामणि वेडूर्य फेर, जैसे अमृत अंतर जहेर ॥१२॥ जैसे वस्तर कंबल हीर, निशि दिन अंतर कायर वीर ॥ आकदूध किहां धेनु खीर, खीरसागर किहां खारुं नीर ॥१३॥ पुण्य पाप फल रंक ने राय. परगट द्रव्य सुपनको माय ॥ सत्य झूठ तस्कर साहुकार. आगिया तेज रवि झलकार ॥१४॥ जैसे कर्म घाति कर्मवंत. प्रत्यक्ष अंतर भासे अनंत ॥ विश्वविख्यात सदा सुखकार, ज्युं उदधिमें द्वीप आधार ॥१५॥ भूख्या भोजन प्यासा नीर, रोगी ओषधथी मन धीर ॥ पंखी नभ नट वंश विचार, तिम तुम नाम तणो आधार ॥१६॥ बालक जननी गउ वच्छ हेत, हंस सरोवर आसेर रेत ॥ ज्यों हस्ती कज्जलवन प्रीत. अंब कोयल चकवी आदीत ॥१७॥ सति भरतार पपैया मेह. मधुकर मालती अधिक सनेह ॥ लोभी मनमें धनको जाप. त्यें हुं ध्याउं प्रभु आप ॥१८॥ हिंसा झूठ चोरी उन्माद, रेहणो परिग्रह क्रोध अनाद ॥ मान माया त्रसना अति कीध, राग द्वेष ने क्लेश प्रसिद्ध ॥१९॥ आल दिया करि चाडी कूड, पर अपवाद किया

भरपूर ॥ विषय कषाय रतारत आण, बांध्या निकाचित कर्म अजाण ॥ २०॥ कपट सहित कही मृषावाद, मिथ्यामत करणी आल्हाद ॥ करण करावण करी में मोद, पाप अढारा धर्मविरोध ॥२१॥ इण विधि करिया करम करूर, पहुंतो नरक सह्या दुःख पूर ॥ परमाधामी दीनी त्रास, नही मानी किंचित अरदास ॥२२॥ तिरियंच वेदन सागर रूप, जंगम थावर पडियो कूप ॥ छेदन भेदन कष्ट महंत, जनम मरण दुःख सह्या अनंत ॥२३॥ नरभव नीच जाति कुल कीन, दुःखी दरिद्री भयो अति दीन ॥ जन जन आगे जोड्या हात, पूरण नहि मिलियो जल भात॥ २४ ॥ पाप उदय नाटकियो देव, भयो में करी सुरनी सेव ॥ पाड्या नाटक तोडी तान, करम उदे में भयो हैरान ॥२५॥ चउगति भ्रमण महा दुःख लीन, तुम शरणा विन भव भव दीन ॥ कीधा में अपराध अपार, भारियो हुं अवगुण भंडार ॥२६॥ खोय दियो में निरर्थक काल, मोहनी कर्म भर्म जंजाल ॥ सर्प अंधारे जेवडी जेम, छीप खंड रूपुं ग्रहे तेम ॥२७॥ मृग मरीचिका जाणत तोय, प्यास बुझावण हिरणा सोय ॥ धावत धावत छोडे प्राण, तैमे में भमियो अन्नाण ॥२८॥ जैसे ज्वर तन प्रबलता होय, अन्नरुचि नहीं व्यापे सोय ॥ तैसे कुकर्म उदयगत जीव, धर्मरुचि नाहि आवत ईव ॥२९॥ जब तन ज्वरको मिटत विकार, तव सोइ वांछा करत आहार ॥ अशुभ कर्म जब होत प्रयाण, तब तुम शरण ग्रहे भावियाण ॥३०॥ जाणी में आगम अनुसार, किंचित तुम मारगकी कार ॥ ज्ञान दर्शन पूरण चारित्र, पले नहीं मुझ शुद्ध पवित्र ॥३१॥ पण एक चरण शरणकी आस, धारी में अब हिये विमास ॥ आश निराश करण नहीं रीत, तुमसुं लागी पूरण प्रीत ॥३२॥ तुम सम ओर न कोइ कृपाल, अधम उद्धारण दीन दयाल ॥ तुम विन कोन मो होत सहाय, तुम विन कोन भविक सुखदाय ॥३३॥ गज मदवंत महा बिकराल, सन्मुख आवे न नरकूं भाल ॥ मारण आवे भरतो

फाल, तुम जपतां हरि होवे शियाल ॥३४॥ कलपंत काल समीर अदंड, जले दावानल धूम्र प्रचंड ॥ ऐसे कष्ट भजे जन कोय, तुम कीरत जल शीतल सोय ॥३५॥ श्याम रंग दृग लाल कराल, क्रोध उद्धत ध्यावे विकराल ॥ नागदमन तुम नाम विशाल, रटतां विघन करे नहीं व्याल ॥३६॥ भूपसुं भूप करे संग्राम, रक्त खाल वहे तिण ठाम ॥ ऐसे संकट ध्यावे आप, लहे रण विजय टले संताप ॥३७॥ अथाग जल वहे वाय कुवाय, उठे किल्लोल वाहन कंपाय ॥ ऐसी विपत ध्यान करनार, सो सहि पावे सागर पार॥ ३८ ॥ सास खास ज्वर गुंवड दाह, कुष्ट भगंदर रोग अगाह ॥ जो तुम प्रणमें भाव निःशंक, ततक्षण प्रलय होत आतंक ॥३९॥ पावन बेडी हथकडी हात, रोके भाखसी रुंधे भात ॥ ऐसी आपदा समरे आप, वंधण छूट टले संताप ॥४०॥ तुम रणमोचन गरिवनिवाज, वंधन छोडे श्रीजिनराज ॥ तुम त्रिहुं लोकमें तिलक समान, तुम नामे दिन दिन कल्यान ॥४१॥ ओं ऱ्हीं श्रीं नमो नमो अरिहंत, ऋद्धि सिद्धि वृद्धि सुख संत ॥ देजो दीन दयानिधी मोय, भव भव सरणो वांछुं तोय ॥४२॥ हय गय रथ दल प्रवलता पूर, वैरी दुश्मन नासे दूर ॥ पूत सपूत कलत्र गुणवंत, मिले संजोग रहे सुख जंत ॥४३॥ दुश्मन वल नहिं लागे दाव, वैर मिटी होय सज्जन भाव ॥ जहां जावे तिहां आदर होय, मोहनी मंत्र नाम तुम जोय ॥४४॥ जड मूरख नर जे मतिहीन, पण तुम समरणमें रहे लीन ॥ वुद्धि प्रवल सो पंडित थाय, जगमें पूजा होत सवाय ॥ ४५॥ आभको कागद मशी सव नीर. लखणी लेवे सुदर्शन गीर ॥ जो लिखे सरस्वति गुण विस्तार, सागर कोडी लहे नहिं पार ॥४६॥ अल्पमति हुं प्रमादी जीव, कैसे तुम गुण कहुं अतिव ॥ तुम वाल्लेश्वर जीवन प्राण, राज राजेश्वर गुणनिधी खाण ॥४७॥ तिलोकरिख करे अरदास, अंतरजामी तुम गुण रास ॥ आपके पास न

मांगु लेश, मोय बतावो निज प्रदेश ॥४८॥ एतिक अरजी लीजो मान, कबहुं न भूलूं तुम एसान ॥ नीठ नीठ जाणया तुम देव, भव भव दीजो थाहरी सेव ॥४९॥ संवत उगणीसे बत्तिस मान, ज्येष्ठ कृष्ण तिथी दूज प्रमान ॥ वार शनी सिद्धि जोग विचार, भय भंजन स्तव कियो उच्चार ॥५०॥ शहर शाहजापुर मालव देश, सुखशाता चउ तीर्थ हमेश ॥ भणे गणे सुणे जे नर नार, तस घर वर्ते मंगल चार ॥५१॥ इति ॥

॥ अतीत अनागत वर्तमान चतुर्विंशति जिन छंद. ॥

॥ चोपाइ छंद ॥

प्रणमुं परमेष्ठी गौतमस्वाम, जिनवाणी सरस्वती सुखधाम ॥ गुरु चरणांबुज प्रणमुं भाव, कहुं त्रिहुं काल चोवीशी नाव ॥ १ ॥ अतीत चोवीशी भई हे अनंत, ते वंदूं में शिवपुरकंत ॥ पण एक वर्तमानथी अतीत, नाम कहुं तस मन धारि प्रीत ॥ २ ॥ प्रथम केवलज्ञानी जिनराज, निर्वाणी सागर तारणी जाज ॥ महाजस विमल जिनंद सुखकार, सर्वानुभूति श्रीधर उध्दार ॥ ३ ॥ दत्त दामोदर, जपु जिनदेव, सुतेजस्वामी हारि कर्मखेव ॥ मुनिसुव्रत सुमति जिन ईश, शिवगति स्वामी नमु निश दीस ॥ ४ ॥ अस्तंगजी नमीश्वर जाण, अनल नम्या होवे जन्म प्रमाण ॥ जसोधर कृतारथ दोइ जिनराज, जनेश्वरजी छो गरिब निवाज ॥ ५ ॥ शुध्दमतिजी शिवकर नमुं, भव भव संचित पातक गमुं ॥ स्यंदन चंदन जेम सुभाव, संप्रतिजी प्रणमुं चित्त चाव ॥ ६ ॥ अतीत चोवीशी नाम ए जान, प्रातें नित जपजो भवियाण ॥ अब कहुं वर्तमान जिन नाम, इनहिज भरतक्षेत्र भये स्वाम ॥ ७ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंद, सुमति कुमति करि दूर निकंद ॥ पद्म सुपारस जिन सुखकंद, चंद्रप्रभु पर-

तिम्ब जिम चंद ॥ ८ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस सुधीर, वासुपूज्य विमल जगधीर ॥ अनंत धरम शांति कुंथु दयाल, अर मल्लि मुनिसुव्रत कृपाल ॥ ९ ॥ एकविशमा नमिनाथ उदार, रिष्टनेमि तजि राजुल नार ॥ पार्श्वप्रभु वंदूं वर्द्धमान, ए वर्तमान चोविशी जाण ॥१०॥ कर्म हणी केवल पद पाय, चोविश जिन्द पहुंता शिव माय ॥ मेहर करो मुझ पर अरिहंत, रवि शशि सागर उपमावंत ॥ ११ ॥ तुम दरशणकी मुझ चित्त चाय, पल पल वंदूं शीश नमाय ॥ अनागत चोविशी भरत मझार, तेहना नाम सुणो नरनार ॥ १२ ॥ पदमनाभ सुरदेव सुपास, स्वयप्रभु शिव करशे वास ॥ सर्वानुभृति देवश्रुत जिनेश, उदय करस नहीं राखशे रेस ॥ १३ ॥ पढाल पोटिल सत्यकीरति जाण, सुव्रत अमम होशे जग भाण ॥ तेरमा निःकषाय खुलास, चउदमा जिनवर तो निष्पुलाक ॥ १४ ॥ निर्मम चित्रगुप्त समाध, तरशे भवजल जेह अगाध ॥ संवर जिनेश अढारम जोय, यशोधर विजय मल्लि जिन होय ॥ १५ ॥ देव जिन अनंतवीर्य सुचग, भद्रकृत द्रव्य भाव उत्तंग ॥ अनागत होशे दीनदयाल, दया धरम उपदेश रसाल ॥ १६ ॥ ते पण थापशे तीरथ चार, तरशेकई भविवण नरनार ॥ अतीत अनागत ने वर्तमान, वहोतेर तीर्थंकर प्रमाण ॥ १७ ॥ आगम ग्रंथ तणे अनुसार, संवत उगणीस तीस मझार ॥ भणतां गुणतां सुख सुविशाल, तिलोकरिख कहे मंगल माल ॥ १८ ॥ इति ॥

—:(❀):—

॥ अरिहंत जिन छंद ॥

प्रणमुं जे सुर्नीद्र जिनेंद्र भणी, जस सेव नरेंद्र सुरेंद्र फणी ॥ कीर्ति अनंत संत स्वामी तणी, त्रिहुं लोकमें साहेब आप धणी ॥१॥ गृहवास तजी प्रभु सुमति करी, तपरूप हुताशनि कर्म घरी ॥ सुद्ध

भाव धमन करि मेल हरी, प्रभु केवल कमला वेग वरी ॥१॥ जेह दीप अतिशय चोतीस करी, नैरोग्य महा दिव्य देह धरी ॥ संघन संठाण प्रथम पावे, जल मेल कलंक जो नहिं थावे ॥ २ ॥ निर्लेप निर्दोष शरीर रहे, तनु कांति उद्योत प्रकाश पहे ॥ शिर अगर कुंट आकार दिसे, निध कज्जल कुंचिय केश शिशे ॥४॥ दाडिम फूल तव-णिज केशभूमी, संचित पुण्य पूरण नाही कूमी ॥ निलाड दीपे अधचंद्र टीका, उडुपति पूरण सो मुख नीका ॥ ५ ॥ परमाणुपेत श्रवण सोहे, भमुह तणु निद्धे मन मोहे ॥ नयनांबुज विकस्वर श्वेत भला, उत्तंग दीरघ नासा सरला ॥ ६ ॥ अधरारुण विद्रुम रंग दीपे, दंत श्रणी धवळ शशि तेज जीपे॥ रसनारत अमृत जल वरसे, दाडी मुछ सुंदर केश दरसे ॥ ७ ॥ गिरुवा खंध भुज जस पुष्ट बली, फ-णी जिम प्रभु बाहा दीसे भली ॥ अछिद्र सकोमल शुभ पाणी, पुष्टांगालि ताम्र रंग नख जाणी ॥ ८ ॥ रवि शशिदिक रेखा करमां-हीं, सब एक सहस्र अष्ट दरसाई ॥ उतरता पासां उस उदरी, गं-गावृत विकस्वर नाभि खरी ॥ ९ ॥ सिंहकटि वृत्ताकार सही, शुंडा-दंड उरुपिंडी शोभ रही ॥ कूरम सम पृष्ठ चरण दोई, अंगुली नखसें कुछ खोड नहीं ॥ १० ॥ पगथलीमें पद्म कमल सोहे, प्रभु निरखत सुर नर मन मोहे ॥ प्रभु आगे तेज मंद दिनकरका, मर्यादित केश नख जिनवरका ॥ ११ ॥ लोहि मांस उजल गउ खीर करी, केतकी जिम स्वासा सुगंध भरी ॥ आहार निहार अदृष्ट सदा, नहीं देख सके चर्मदृष्टि कदा ॥ १२ ॥ धर्मचक्र त्रिहुं छत्र आकाश चले, दि-व्यशक्ति खग श्वेत चमर ढले ॥ पादपीठिका सिंहासन नभमांही, सो रतन फिटक वर छवि छाइ ॥ १३ ॥ सहस्र ध्वजा परिवार करी, सो इंद्रध्वजा लहकंत खरी ॥ छय ऋतु अशोक तरु सम वरने, अंधकार भामंडल नीवरते ॥ १४ ॥ सम भूम हुवे प्रभु जिहां वि-चरे, कंटकंकी आणिया उलट करे ॥ जोजन लग छ ऋतु सुखकारी,

निख जिम चंद ॥ ८ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस सुधीर, वासुपूज्य विमल जगधीर ॥ अनंत धरम शांति कुंथु दयाल, अर मल्लि मुनिसुव्रत कृपाल ॥ ९ ॥ एकविशमा नमिनाथ उदार, रिष्टनेमि तजि राजुल नार ॥ पार्श्वप्रभु वंदूं वर्द्धमान, ए वर्तमान चोविशी जाण ॥ १० ॥ कर्म हणी केवल पद पाय, चोविश जिन पहुंता शिव माय ॥ मेहर करो मुझ पर अरिहंत, रवि शशि सागर उपमावंत ॥ ११ ॥ तुम दरशणकी मुझ चित्त चाय, पल पल वंदूं शीश नमाय ॥ अनागत चोविशी भरत मझार, तेहना नाम सुणो नरनार ॥ १२ ॥ पदमनाभ सुरदेव सुपास, स्वयंप्रभु शिव करशे वास ॥ सर्वानुभूति देवश्रुत जिनेश, उदय करम नहीं राखशे रेस ॥ १३ ॥ पेढाल पोटिल सत्यकीराति जाण, सुव्रत अमम होशे जग भाण ॥ तेरमा निःकषाय खुलास, चउदमा जिनवर तो निष्पुलाक ॥ १४ ॥ निर्मम चित्रगुप्त समाध, तरशे भवजल जेह अगाध ॥ संवर जिनेश अढारम जोय, यशोधर विजय मल्लि जिन होय ॥ १५ ॥ देव जिन अनंतवीर्य सुचंग, भद्रकृत द्रव्य भाव उत्तंग ॥ अनागत होशे दीनदयाल, दया धरम उपदेश रसाल ॥ १६ ॥ ते पण थापशे तीरथ चार, तरशे केई भविचण नरनार ॥ अतीत अनागत ने वर्तमान, बहोतेर तीर्थंकर प्रमाण ॥ १७ ॥ आगम ग्रंथ तणे अनुसार, संवत उगणीस तीस मझार ॥ भणतां गुणतां सुख सुविशाल, तिलोकरिख कहे मंगल माल ॥ १८ ॥ इति ॥

—:(※):—

॥ अरिहंत जिन छंद ॥

प्रणमुं जे सुरींद्र जिनेंद्र भणी, जस सेव नरेंद्र सुरेंद्र फणी ॥ कीरति अनंत संत स्वामी तणी, त्रिहुं लोकमें साहेब आप धणी ॥ १ ॥ गृहवास तजी प्रभु सुमति करी, तपरूप हुताशनि कर्म धरी ॥ सुध

भाव धमन करि मेल हरी, प्रभु केवल कमला वेग वरी ॥२॥ जेह दीप अतिशय चौतीस करी, नैरोग्य महा दिव्य देह धरी ॥ सघन संठाण प्रथम पावे, जल मेल कलंक जो नहिं थावे ॥ ३ ॥ निर्लेप निर्दोष शरीर रहे, तनु कांति उद्योत प्रकाश पहे ॥ शिर अगर कुंट आकार दिसे, निध कज्जल कुंचिय केश शिशे ॥४॥ दाडिम फूल तवणिज केशभूमी, संचित पुण्य पूरण नाही कूमी ॥ निलाड दीपे अधचंद्र टीका, उडुपति पूरण सो मुख नीका ॥ ५ ॥ परमाणुपेत श्रवण सोहे, भमुह तणु निद्ध मन मोहे ॥ नयनांबुज विकस्वर श्वेत भला, उत्तंग दीरघ नासा सरला ॥ ६ ॥ अधरारुण विद्रुम रंग दीपे, दंत श्रणी धवल शशि तेज जीपे॥ रसनारत अमृत जल वरसे, दाडी मुछ सुंदर केश दरसे ॥ ७ ॥ गिरुवा खंध भुज जस पुष्ट बली, फणो जिम प्रभु बाहा दीसे भली ॥ अछिद्र सकोमल शुभ पाणी, पुष्टांगलि ताम्र रंग नख जाणी ॥ ८ ॥ रवि शशिदिक रेखा करमांही, सब एक सहस्र अष्ट दरसाई ॥ उतरता पासां उस उदरी, गंगावृत विकस्वर नाभि खरी ॥ ९ ॥ सिंहकटि वृत्ताकार सही, शुंडादंड उरुपिंडी शोभ रही ॥ कूरम सम पृष्ठ चरण दोई, अंगुली नखमें कुछ खोड नहीं ॥ १० ॥ पगथलीमें पद्म कमल सोहे, प्रभु निरखत सुर नर मन मोहे ॥ प्रभु आगे तेज मंद दिनकरका, मर्यादित केश नख जिनवरका ॥ ११ ॥ लोहि मांस उजल गउ खीर करी, केतकी जिम स्वासा सुगंध भरी ॥ आहार निहार अदृष्ट सदा, नहीं देख सके चर्मदृष्टि कदा ॥ १२ ॥ धर्मचक्र त्रिहुं छत्र आकाश चले, दिव्यशक्ति खग श्वेत चमर ढले ॥ पादपीठिका सिंहासन नभमांही, सो रतन फिटक वर छवि छाइ ॥ १३ ॥ सहस्र ध्वजा परिवार करी, सो इंद्रध्वजा लहकंत खरी ॥ छय ऋतु अशोक तरु सम वरते, अंधकार भामंडल नीवरते ॥ १४ ॥ सम भूम हुवे प्रभु जिहां विचरे, कंटककी अणिया उलट करे ॥ जोजन लग छ ऋतु सुखकारी,

अचेत वायु रज परिहारी ॥ १५ ॥ वरसे जल मंडल रज जमे, वरसे फुलका पुंज अनेक गमे ॥ दुर्गंध टले शुभ वास रमे, अर्ध मागधी भाषा लोक गमे ॥ १६ ॥ वारे परिषद् मध्य धर्म कहे, निज निज भाषा सव अर्थ गहे ॥ वैर भाव न जागत सिंह अजा, वादीजन वाद करंत भजा ॥ १७ ॥ ईति होवे नहीं सौ कोश लगे, मरि मारी सो सव दूर भगे ॥ स्वपरचक्री दुःख देत नहीं, सौ कोश दुष्काल न आवे कहीं ॥ १८ ॥ अधिक अणगमतो नहीं वरसे, थोडोपण नहीं ज्युं जन तरसे ॥ आतंक जिरण सब टल जावे, नूतन वेदन नहीं संतावे ॥ १९ ॥ प्रभु चोतिश अतिशय करी छाजे, वाणी पेतिस जिम घन गाजे ॥ चोसट इंद्रो जिनभक्ति करे, सुर नर सेवा मन हर्ष धरे ॥ २० ॥ पाखंड मत खंडण मान भणी, त्रिगडो रचे करवा महिमा घणी ॥ प्रथम प्राकार सो रूपा तणो, कंचनको सीसा पीत भणो ॥ २१ ॥ तोरण मणि रत्नमें चंग कह्यो, पावडी दश सहस्र प्रमाण लह्यो ॥ दुजो गड सोवनके मांहि, रतन कोशीसां छवि छाही ॥ २२ ॥ रतनगड त्रीजो प्रवर घणो, कोशीसां माणिके मांही भणो ॥ पावडिया चारुहि पोल तणी, पांच पांच हजार रसाल वणी ॥ २३ ॥ भितियां तीनुही कोटि गणी, अर्द्ध सहस्र धनुष उत्तंग भणी ॥ धनुष तेत्रसि वत्तीस अंगुली, उपर वली ग्रंथाकार खुली ॥ २४ ॥ पावडिया उंचा चोडापणे, एक रयणीके परमाण वने ॥ लंवा तो धनुषे पंचागी सही, पीठिका मध्य भागे शोभ रही ॥ २५ ॥ आयाम विष्कंभ छत्रिश तणी, दोयेशे वली धनुष उचाइ भणी ॥ कोट कोटको अंतर सो तेरे, जोजन मंडल प्रकाश करे ॥ २६ ॥ पीठिकापर स्फटिक रतन केरो, सिंहासन सोहे अधकेरो ॥ तिणपर विराजी धर्म कहे, वारे परिषद्की वैठक कहे ॥ २७ ॥ श्रावक श्राविका देश विरति धर्णी, कल्प वासिक देव इशान अगी ॥ विमाणिक सुरि साधु समणी, ए तीनुंही अगनि कूण भणी ॥ २८ ॥ व्यंतर ज्योतिषी अरु भवणपति,

नैऋत कूण बेठत देव अति ॥ देवी वली तीनुंही देवतणी, वायव्य कूण बेठत सेव भणी ॥२९॥ इणविधि बेठी उपदेश सुणे, शुद्ध भाव थकी अघ मेल धुणे॥ एक जोजन लगे अमृतधारा, वैरागपणे ग्रहे व्रत सारा ॥३०॥ ग्रह गण उगे नित दिश चारी,॥ एक दिश प्रगटे रवि हद धारी॥ प्रसवे नंदन केइ जगनारी, धन धन जिन धन महेतारी ॥३१॥ जे रवि शशि मेरु उपमा सिंधु, गुण कहि न शकुं मुझ मति बिंदु॥ जिनगुण महिमा पार न पावे, सुरगुरु सरस्वति स्वयं गुण गावे ॥३२॥ प्रभु समरण जो करे भाव पके, अरि करि हरि जोर न लाग सके ॥ जल जलन जलोदर रोग हटे, वध बंधन परवश दुःख कटे ॥३३॥ रिद्धि सिद्धि भरपूर भंडार घणा, परताप ते प्रभुजी नामतणो॥ प्रथम पद मंगल अति भारी, तिलोक कहे सेवा द्यो चरणारी. ॥३४॥ संवत उगणीसे संवत्सर तीसे, ए छंद स्तवना करी जगीशे॥ शुद्ध भाव भगे गुणे नरनारी, ते पावे भवजलनिधि पारी ॥३५॥ कलश॥ इम देव अरिहंत सेव कीरति, करिये एक चित्त चावसुं ॥ तरिये भवजल दुःखसागर, बैठ कर जिम नावसुं ॥ तुम नाम मंगल टले उदंगल, करुणा मुझपर कीजिये॥ चरण सरणकी सेव साहेब, अचल पदवी दीजिये ॥ प्रभु अबतो महर करीजिये ॥१॥ इति॥

—:(❀):—

॥ जिनवाणी छंद. ॥

॥ त्रिभंगी छंद ॥

जय जय जिनराया, सूत्र सुणाया, धर्म बताया, हितकारी॥ गणधरजी झेली, संधि सुमेली, नयरस केली, विस्तारी ॥ रचे द्वादश अंगं, भंग तरंगं, ध्रुव अभंगं, अति भारी ॥ धन धन जिनवाणी, सब सुख दानी, भवजन प्राणी, उर धारी ॥१॥ टेक ॥ यह

नहिं तीर्थंकर, केवल गणधर, अवधि मुनिवर, मनज्ञानी ॥ जंघा विद्याचारी, पूरवधारी, आहारक सारी, महाध्यानी ॥ नहिं गगनगमणी, पद अनुसरणी, वैक्रिय करणी, परिहारी ॥ धन. ॥२॥ देवर्द्धि खमासमण, तारण भवियण, उद्यम लेखण, जिण कीनो ॥ इणहिज आधारे, पंचम आरे, धर्मज धारे, जिनजीनो ॥ आलंबन मोटो, सूत्रको ओटो, रंच न खोटो, हितकारी ॥ धन. ॥३॥ शुद्ध सम्यक तरुवर, अति दृढ परवर, वाणी सुधाकर, जलधारा ॥ या दया वधारण, हिंसा वारण, शिवसुख कारण भव पारा ॥ ए बुद्धि वढावे, भर्म कढावे, पाप बुडावे, शुभ चारी ॥ धन. ॥४॥ जे चिंता उच्चाटण, मोहनी दाटण, त्रिशल्य काटण, कातरणी ॥ अरिकंद कुदाली, बंधन पाली, सुरतरु डाली, सुत जरणी ॥ भवोदधिके मांइ, जहाज कहाइ, बेठा जाइ, नरनारी ॥ धन. ॥५॥ संशय विपर्याय, अने अध्यवसाय, तिहुअण माय, होय नहिं ॥ त्रिदोषरहितं, त्रिगुणसहितं, त्रिपदी रीतं, भेद सही ॥ शुद्ध न्याय आराधी, शिववधु साधी, कर्म उपाधि, जिण वारी ॥ धन. ॥६॥ या विराधन करके, यहांसे मरके, उपज्या नरके, दुःख पाया ॥ वली छेदन भेदन, ताडन तर्जन, बहु विध बंधन, घबराया ॥ वलि गर्भमें लटक्या, चौगती भटक्या, जक्तमें अटक्या, भय भारी ॥ धन. ॥७॥ जिण हितकर जाणी, श्री जिनवाणी, सो भवि प्राणी सुख पाया ॥ समकित शुद्ध करणे, मिथ्या हरणे, भवजल तरणे, शिव पाया ॥ तिलोकरिख जाची, शारदा साची, मन तन राची, जयकारी ॥ धन. ॥८॥ कलश ॥ दोहा ॥ जिनवाणी जयकार है, अनुभव रसको सार ॥ नय प्रमाण विचारजो, पक्षपात परिहार ॥१॥ शम दम उपशम भावशुं जे साधे नरनार ॥ तिलोकरिख तिणने सदा, प्रणमें वारंवार ॥२॥ इति ॥

॥ अथ चोवीश तीर्थंकरका लेखाकी चोवीशी प्रारंभः ॥

॥ तेमां प्रथम एकसो पच्चीश बोल संख्याकी गाथा ॥ श्री वीर जिणंद सासण धणी, जिन त्रिभुवन स्वामी ॥ ए देशी ॥ प्रणमुं निरंतर नित्य, जिन चोविशी वर्तमानो ॥ नाम १ बोध भव संख्या, २ द्वीप ३ क्षेत्र ४ दिशा ५ पहिचानो ॥ विजय ६ पूर्वभवनाम ७, पदवी ८ तिहां ज्ञान ९ जणाउं ॥ सेव्या स्थानक संख्या १०, स्वर्ग गति ११ तिथि बताउं ॥ च्यवन तिथि १२ नक्षत्र १३ समे ए १४, सुपन १५ संख्या १६ विचार १७ ॥ जनमतिथि १८ वेला भली १९, ओगणीश बोल विचार ॥१॥ विशमामें जन्म देश, २० नगर २१ माता २२ पिता २३ गति २४॥२५ ॥ दिशा कुमारी २६ इंद्र संख्या २७, गोत्र २८ वंशाकी रीती २९ ॥ नाम स्थापन ३० प्रभु चिन्ह ३१, देहका लच्छन ३२ दाखुं ॥ वर्ण ३३ बल ३४ अवगाहना ३५, उच्छेद आत्मांगुल ३६ भाखूं ॥ प्रथम आहार ३७ विवाहनो ३८ ए, लोकांतिक ३९ दान सुधार ४० ॥ कुमार पद स्थिति ४१ राजनी ४२, शिबिका नाम विचार ४३ ॥२॥ दीक्षातिथि ४४ वय ४५ तप ४६, दीक्षा परिवार ४७ पुर जाणो ४८ ॥ वन ४९ तरु ५० दीक्षा समय, ५१ लोच मुष्टि परमाणो ५२ ॥ संजम ज्ञान ५३ दुष्यमोल ५४, थिति ५५ वलि प्रथम आहारो ५६ ॥ पारणा काल ५७ पुर नाम, ५८ वली परथम दातारो ५९ ॥ दातार गति ६० वृष्टि दिव्यक ६१ हुय, वसुधारा संख्या ६२ जाण ॥ विहार भूमि ६३ तपस्या ६४ परम, पंसठमो अभिग्रह परिमाण ६५ ॥३॥ उपसर्ग ६६ प्रमादको काल ६७, छद्मस्थको काल ६८ जे आणुं॥ गुणसित्तेरमे केवल तिथि ६९ केवल पुर ७० वन वखाणुं ७१ ॥ केवल तप७२ वृक्ष नाम ७३ मान ७४ वेला ७५ तीरथ७६तीर्थविच्छेदो ७७॥ वर्जित दोष ७८ अतिशय ७९ वाणी ८० प्रातिहार्य ८१ सुरसेव ८२ उमेदो ॥ प्रथम गणधर ८३ वली साधवी ८४ ए, भक्तिवंत नृप नाम

८५ ॥ शासणाधिष्ट जक्ष ८६ जक्षणी, ८७ गणधर ८८ संख्याभिराम
॥४॥ साधु ८९ साधवी ९० श्रावक, ९१ श्राविका, ९२ केवल ज्ञानी
९३ ॥ मन.परजव ९४ अवधि धार, ९५ पूर्व धारक ९६ पहिचानी ॥
वैक्रियवंत ९७ वादी ९८ प्रत्येक बुध, ९९ प्रकीर्ण संख्या १०० परि-
साणो ॥ महाव्रत १०१ संजम १०२ आवसग्ग, १०३ सर्व आयु १०४
तिथि निर्वाणो १०५ ॥ मोक्ष नक्षत्र १०६ स्थानक १०७ वली ए, मोक्ष
आ सण १०८ तप धार १०९ ॥ मोक्षत्र ा ११० परिवार तस, १११ युगां-
तकृत भूमि ११२ विचार ॥५॥ पर्यायांतकृत भूमि, ११३ मुनि प्रकृति
११४ वस्त्र वर्णो ११५ ॥ जन्म ११६ दीक्षा ११७ केवल, नक्षत्र
११८ श्रावक व्रत ठाणो ११९ ॥ आचार १२० आरो उत्पत्ति, १२१ धर्म
भेद १२२ संजम गुण १२३ अणगारो १२४ ॥ सासण थिति १२५ इन
बोल, एकसो पच्चीश सारो ॥ केइक चोथा अंगथी ए, केइक ग्रंथ विचार
॥ श्रोता ते अवधारजो, जिरा टल कर्म विकार ॥ वरते मगल चार ॥६॥

॥ हवे एकशो पच्चीश बोलमांथी प्रथम बोलें

चोवीशे जिननां नाम कहे छे ॥

॥ जय जय आदि जिणंद, अजित संभव सुखकारी ॥ श्री अ-
भिनंदन सुमति, पद्म सुपास विचारी ॥ चंदप्रभ श्रीसुविधि, शीतल
श्रेयांस दयाला ॥ वासुपूज्य धन विमल, अनत जिन धर्म कृपाला ॥
शांति कुंथु अर मल्ली नमुं ए, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्वनाथ वर्द्ध-
मानजी, प्रणमुं मन धरि प्रेम ॥ ७ ॥ १ ॥
॥ हवे समकित प्राप्त थया पछी चोवीशे जिननी भवसंख्या कहे छे ॥
॥ रिखभ जिणंद भव तेरा, चंद प्रभु सात लहीजें ॥ दुवादश शां
जिणंद, मुनिसुव्रत नव लीजें ॥ रिष्टनमि नव. पार्श्व नाथ दश
आधिकारा ॥ सत्तावीस वर्द्धमान. सहोटा भवनणो विस्तारो ॥ शेष

जिन त्रिहुं त्रिहुं भणो ए, ग्रंथमांहे अधिकार ॥ समकित पाया तिहांथकी, भव संख्या सुविचार ॥ ८ ॥ २ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां पूर्वभव द्वीपनां नाम कहे छे ॥

प्रथम चार वली सोलमासु, चरम जिनवर लग जाणो ॥ जंबुद्विपके मांय, तीर्थंकर गोत्र बधाणो ॥ नवमासुं बारमा जाण, अर्ध पुष्करके मांही ॥ शेष सात जिनराज, धातकी खंड लहाई ॥ तृतीय बोल इस द्विपनो ए, आगममें अधिकार ॥ सुगुणा जन हिय धारजो, अनुभव दृष्टि विचार ॥ ९ ॥ ३ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां जन्मक्षेत्रनां नाम कहे छे ॥

॥ पहेलासुं बारमा सुधी, पूर्व विदेह क्षेत्र कहीजें ॥ विमल धर्मजिन भरत, धातकी खंड ग्रहीजें ॥ जंबु पूर्व विदेह क्षेत्र, शांति कुंथु अर जाणुं ॥ जंबु पश्चिम विदेह, मल्लि जिनराज वखाणुं ॥ अनंत एरवय धातकी ए, जंबु भरत मझार ॥ विशमासुं छेला लगें, सर्देहो क्षेत्र सुमार ॥ १० ॥ ४ ॥

॥ पूर्वोक्त क्षेत्रमां चोवीश तीर्थंकरनी जन्म दिशा कहे छे ॥

॥ रिखभ सुमति सुविधि, शांति कुंथु जिनराया ॥ ए सितासुं उत्तर मल्लि, सितोदा दाक्षिण पाया ॥ विमल धर्म विशमाथी, छेला मेरु दाक्षिण मांई ॥ मेरुथी उत्तर दिशा, अनंताजिन ऋद्धि उपाई ॥ शेष दिशी जगदीशजी ए, सीताथी दाक्षिण मांय ॥ वर करणी पर भावथी, गोत्र तीर्थंकर पाय ॥ ११ ॥ ५ ॥

॥ ते पूर्वोक्त दिशामां पण चोवीश तीर्थंकरना जन्म संबंधि विजयनां नाम कहे छे ॥

॥ पुखलावती वच्छा रमणिजा, मंगलावती विचारो ॥ पंचमासुं आठमा सुधि, चार एहि नाम उच्चारो ॥ वली चारे एही रीत, नवमासुं बारमा धारो ॥ साहपुरी रिठा भद्दिल, पुंडरिक गणि खगपुरी

सारो ॥ सुसमा वीतसोगा चंपापुरि ए, कोसंबी राजगृही जाण ॥ अयोध्या अहिच्छत्ता चर्म जिन, विजयपुरी नाम प्रमाण ॥ १२ ॥ ६

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरोनां पूर्व भवना नाम कहे छे. ॥

॥ वज्रनाभ १ विमलवाहन, २ विपुलवल ३ माहावल ४ नामें॥ अतिवल ५ अपराजित, ६ नंदि ७ पदम ८ गुणधामो ॥ महापद्म ९ पउम, १० नलिणी गुल्म ११ पद्मोत्तर १२ ॥ पद्मसेन १३ पद्मरथ, १४ दृढरथ १५ मेघरथ १६ नरवर ॥ सिंहावह १७ धन पति १८ वेश्रमणजी १९ ए, श्रीवर्म २० सिद्धारथ २१ सुप्रतिष्ट २२ ॥ आनंद २३ नंदन २४ नामथी, करणी कीनी विशिष्ट ॥ १३ ॥ ७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी पूर्वभव पदवी तथा पूर्वभव ज्ञान तथा विशस्थानकमें कितरा सेवन कीनां? ते कहे छे. ॥

॥ पूरव भव जिनरिखभ, एकछत्र पदवी पाया ॥ भणीया चउदा पूर्व, करणी कारि मन वच काया ॥ शेष तेवीश मंडलीक, भण्या सहु अंगइग्यारा ॥ पेला छेला प्रभु वीश, वोल सेवन किया सारा ॥ बावीश जिन एक दोय त्रिहुं ए, सव्यां स्थानक सार ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधियुं, धन धन कृपावतार ॥ १४ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

हवे ते चोवीश तीर्थंकरनी स्वर्गगति कहे छे.

सर्वार्थ सिद्ध १ विजय २ ग्रैवेयक, ३ जयंत ४ अभिनंदन ५ सुमति ॥ नमो छट्टो ६ ग्रैवेयक, ७ विजय ८ आण ९ अच्चुत १० उत्पत्ती॥ ॥ अच्चु ११ प्राण १२ सहसार १३, प्राणत १४ वलि विजय १५ विमाणो ॥ शांति १६ कुंथु १७ अर सर्वार्थ १८ सिद्ध, १९ मल्ली जयंत प्रमाणो ॥ अपराजित २० प्राणत वली २१ ए, अपराजित २२ रिटि नेम ॥ पार्श्व २३ वीर प्राणतसुरें, २४ उत्कृष्टस्थिति सुख खेम ॥ १५ ॥ ११

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी च्यवन कल्याण तिथि कहे छे. ॥

॥ आषाढमास वदि चोथ १. वैशाख शुद्ध तेरस जाणो २ ॥ फागुण आठम शुक्ल. ३ वैशाख शुक्ल चोथ प्रमाणो ४ ॥ श्रावण उजली

बीज, ५ माघ वदि छठ कहीजें ६ ॥ अष्टमी भादव कृष्ण. ७ कृष्णचैत्र पंचमी लीजें ८ ॥ वदि फागुण नौमी तिथि ९ ए, वदि छट वैशाख १० तिम ज्येष्ठ ११ ॥ वासुपूज्य च्यवन कल्याणसों, ज्येष्ठ शुदि नवमी विशिष्ट ॥ १२ ॥ १६ उजली बारस वैशाख, १३ श्रावण वदि सातम १४ आई ॥ वैशाख शुदि १५ भाद्रवकृष्ण, १६ दोईमें तिथि सातम ठाई ॥ नौमी श्रावण कृष्ण, १७ फागुण शुदि बीज उजाली १८॥ फागण श्रावण १९ शुदि, चोथ २० पूनम सुविशाली ॥ चउदश उज्जल आसोजनी २१ ए, कार्त्तिक वदि बारस २२ जाण ॥ चौथ चैत्र वदि २३ अषाढशुदि छठ तिथि २४ च्यवन कल्याण ॥ १७ ॥ १२ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना च्यवन नक्षत्रनां नाम कहे छे. ॥

॥ उत्तराषाढा १ रोहिणी नक्षत्र २, मृगशिर ३ पुनर्वसु ४ आयो ॥ मघा ५ चित्रा ६ विशाखा. ७ अनुराधा ८ मूल ९ बतायो ॥ पूर्वाषाढा १० श्रवण ११, शतभिषा १२ भाद्रपद उत्तरा १३ ॥ अनंत रेवती १४ पुष्य, १५ भरणी १६ शांति जिने कहि सुतरा ॥ कृत्तिका १७ रेवती १८ आश्विनी १९ ए, श्रवण २० आश्विनी २१ धार ॥ चित्रा २२ विशाखा २३ हस्तोत्तरा, २४ च्यवन जिन नक्षत्र विचार ॥ १८ ॥ १३

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना च्यवन समय तथा स्वप्न तथा स्वप्न संख्या तथा स्वप्न संबंधि विचार केने पूछ्यो ? ते कहे छे. ॥

॥ सहु जिनवरनुं च्यवन, थयुं आधीनिशि विरियां ॥ सहु दिनां चउदे स्वप्न, उत्तम उत्कृष्ट उच्चारियां ॥ निजपतिसूं कह्या स्वपन, नाभि कह्यो इंद्रनी आगे ॥ स्वपन पाठकसूं तेवीस; भूप परसन विधि थागे ॥ दान मान देई भोजिया ए, आनंद अंग अपार ॥ पुण्य दशा परभावथी, सुखें रह्या गर्भमझार ॥ १९ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

॥ चोविशे तीर्थंकरनी जन्म तिथि तथा जन्मवेला कहे छे. ॥

॥ चैत्र वदि १ महा शुद्ध, २ दोईमें अष्टमी सारो ॥ महा शुद्ध चउ

दश ३ त्रीज ४ मास पक्ष से हि विचारो ॥ अष्टमी शुकल वैशाख, ५
कार्तिक वदि ६ बारस धारो ॥ वारस उजली ज्येष्ट. ७ पोष वदि वार-
स जहारो ८॥ मगशिर ९ माह वदि १० पंचमी वारस ए, वारस फागुण
वदि ११ जाण ॥ चउदश फागण वदि १२ शुद्ध त्रीज माहा, १३
वैशाख वदि तेरश १४ प्रमाण ॥ २० ॥ त्रीज सदा शुध्द १५ ज्येष्ठ,
वदि तेरश १६ दरसाई ॥ वदि चउदश वैशाख, १७ मृगशिर शुध्द
दशमी १८ ठाई ॥ मृगशिर शुध्द इग्यारस १९, ज्येष्ठ वदि अष्टमी
ठाणो २० ॥ अष्टमी श्रावण वदि २१, श्रावण शुद्ध पंचमी २२ जाणो ॥
पोष वदि तिथि दशमी २३ ए, चैत्रशुद्ध तेरश सांय २४ ॥ अर्धरात
दशीयां बहु, जन्म्या श्री जिनराय ॥ २१ ॥ १८ ॥ १९ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना जन्मदेशना नाम कहे छे. ॥

॥ पहेलासुं पंचमा लगें, देश कोशल । १ । २ । ३ । ४ । ५ ॥ वच्छ
६ काशी ७ ॥ पूर्व देश ८ प्रसिद्ध ९, मलय १० वली अप्रसिद्ध
११ त्रिमासी ॥ अंगदेश १२ पांचाल, १३, कोशल १४ धर्मजिन
अप्रसिद्धो १५ ॥ शांति १६ कुंथु १७ अरनाथ, जन्म कुरु १८ देशमें
लीधो ॥ विदेह १९ मगध २० विदेहमें २१ ए, कुशावर्त्त २२ काशी
२३ विशाल ॥ पूर्वदेश २४ आरज विषे, जन्म्या दीनदयाल २२॥२०॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी नगरी कहे छे. ॥

॥ इक्खागभूमि १ अयोध्या २ जाण, सावत्थि ३ अयोध्या ४
कहीयें ॥ कंचनपुर ५ कोसंबी, ६ वणारसी ७ चंद्रपुरी ८ लहीयें ॥ का-
कंदी ९ भद्दिलपुर १०, सिंहपुर ११ चंपा १२ जाणो ॥ कंपिलपुर १३
अयोध्या १४, रत्नपुर १५ नाम वखाणो ॥ हथिणापुर १६ गज १७
ग ए, १८ मिथिला १९ राजगृहि २० ठाम ॥ मथुरा २१ सोरीपुर
वणारसी, २३ कुंडलपूर २४ जन्म धाम ॥ चोवीश जिन जन्मधाम
२ ॥ २१ ॥

दश ३ दुज ४ मास पक्ष से हि विचारो ॥ अष्टमी शुकल वैशाख, ५ कार्तिक वदि ६ वारस धारो ॥ वारस उजली ज्येष्ट ७ पोष वदि वारस जहारो ८॥ मगशिर १माह वदि १० पंचमी वारस ए, वारस फागुण वदि ११ जाण ॥ चउदश फागण वदि १२ शुद्ध त्रीज माहा, १३ वैशाख वदि तेरश १४ प्रमाण ॥ २० ॥ त्रीज महा शुध्द १५ ज्येष्ठ, वदि तेरश १६ दरसाई ॥ वदि चउदश वैशाख, १७ मृगशिर शुध्द दशमी १८ ठाई ॥ मृगशिर शुध्द इग्यारस १९, ज्येष्ठ वदि अष्टमी ठाणो २० ॥ अष्टमी श्रावण वदि २१, श्रावण शुद्ध पंचमी २२ जाणो ॥ पोष वदि तिथि दशमी २३ ए, चैत्रशुद्ध तेरश सांय २४ ॥ अर्धरात दलीथां सहु, जन्म्या श्री जिनराय ॥ २१ ॥ १८ ॥ १९ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना जन्मदेशना नाम कहे छे. ॥

॥ पहेलासुं पंचमा लगें, देश कोशल । १ । २ । ३ । ४ । ५ ॥ वच्छ ६ काशी ७ ॥ पूर्व देश ८ प्रसिद्ध ९, मलय १० वली अप्रसिद्ध ११ विमासी ॥ अंगदेश १२ पांचाल, १३, कोशल १४ धर्मजिन अप्रासिद्धो १५ ॥ शांति १६ कुंथु १७ अरनाथ, जन्म कुरु १८ देशमें लीधो ॥ विदेह १९ मगध २० विदेहमें २१ ए, कुशावर्त्त २२ काशी २३ विशाल ॥ पूर्वदेश २४ आरज विषे, जन्म्या दीनदयाल २२॥२०॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी नगरी कहेछे. ॥

॥ इक्ष्वागभूमि १ अयोध्या २ जाण, सावत्थि ३ अयोध्या ४ कहीयें ॥ कंचनपुर ५ कोसंबी, ६ वणारसी ७ चंद्रपुरी ८ लहीयें ॥ काकंडी ९ भाद्दिलपूर १०, सिंहपुर ११ चंपा १२ जाणो ॥ कंपिलपुर १३ अयोध्या १४, रत्नपुर १५ नाम वखाणो ॥ हथिणापुर १६ गज १७ नाग ए, १८ मिथिला १९ राजग्रहि २० ठाम ॥ मथुरा २१ सोरीपुर २२ वणारसी, २३ कुंडलपूर २४ जन्म धाम ॥ चोवीश जिन जन्मधाम ॥ २३ ॥ २१ ॥

हवे चोवीश तीर्थंकरनं जन्म कल्याणकमां दिक्कुमारिका तथा इंद्रो आव्या ते तथा चोवीश तीर्थंकरनां गोत्र, अने वंश कहे छे ॥

॥ जाणी प्रभुनो जन्म, छपन्न कुमारी आई ॥ सहुना चोसठ इंद्र, मोच्छव मेरुगिरि केरो जाई ॥ मुनिसुव्रत रिष्टनेमि, गोत्रवर गौतम पाया ॥ हरिवंश अरहंत, जगमें प्रसिद्ध कहाया ॥ काश्यप गोत्री शेष जिन सहु ए, इक्ष्वाकु वंश तस जाण ॥ वसुधर कुल जातमें, जन्म लियो जगभाण २८॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥

॥ हवे चोवीश जिननां यथागुण विशेपनाम कहे छे. ॥

॥ प्रथम वृषभनुं स्वपन, देखि जननी हरखाणी ॥ तिणथी रिखभ कुमार, नाम स्थापनाविधि जाणी ॥ गर्भमांय जिनराय, पासा रमतां राय राणी ॥ राणी जीत विचार, अजित जिन नाम पहिछानी॥ प्रभुजी गर्भमें आविया ए, दुष्काल टल्यो तिण वार ॥ धान्य संभव थयो ते भणी, संभव नाम उदार ॥ २९ ॥ गर्भमांय जिणवार इंद्र जयकार उच्चार्यो ॥ उपनो आनंद ताम, नाम अभिनंदन धार्यो॥ सुमति उपनी मात, शोक्यपुत्र न्याय सु कीनो ॥ जाणी गर्भ प्रभाव, सुमति सुत नामज दीनो ॥ पद्म कमल शय्यापर ए, सुवर्णनो दोहलो थाय ॥ नाम पद्मप्रभुजी तणुं, थयुं प्रसिद्ध जगमांय॥३०॥ पासा खरधरां मात, सुंदर थयां गर्भ प्रभावे ॥ दियो सुपारस नाम, मात चंद्र पिवण उमावे ॥ चंद्रलंच्छन चंद्रवर्ण, चंद्रप्रभ नाम कहावे॥ सुविधि थपाणो सहेर, सुविधि जिन नाम विख्याता ॥ भूप दाहज्वर जाण, राणी कर फरसथी शाता॥ तिणथी शीतल कुमरसुं ए, नाम दियो हित धार ॥ द्रव्य भाव शीतल प्रभु, नामथकी निस्तार ॥ ३१ ॥ कूरदेव मणिपीठ, जननि दोहलो तिही खेलण ॥ जावनां श्रेय थयो देव, श्रेयांस सुत नाम सुमेलण ॥ विकट देवघर वास, वसण दोहलो थया माई ॥ चमतां पूज्यां सो सुरे, वासुपूज्य नाम थपाई ॥ तन मति विमल थई मातनी ए, दियो विमल सुत नाम ॥ माल देखी अनंतमणिमालथी,

अनंत अनंत गुणधाम ॥ ३२ ॥ धर्म इच्छा गर्भपरभाव, धर्म जिन नाम प्रसिद्धो ॥ शांति करी पुर मांय, शांति प्रभु नामज दीधो ॥ अरि थया कंथुआ जेम, कुंथु प्रभु नाम थपाणो ॥ रत्नमय आरो दिख्यो, अरह जिन नाम कहाणो ॥ फूलसेजें सोवण दोहलो ए, मल्ली सुनाम उदार ॥ मुनि जिम माता भावथी, मुनिसुव्रत सुविचार ॥ ३३ ॥ शत्रू नमाड्या सर्व, नमी जगमांही कहाया ॥ अरिष्ट रत्न देख्यो चक्र, अरिष्टनेमिनाथ सुहाया ॥ कृष्ण सर्प विंटी सेज, माता निज हाथे हठाया ॥ पार्श्वनाथ पुरिसादाणी, प्रसिद्ध खट मतमें गाया ॥ वृद्धि थई ऋद्धि संपदा ए, तिण कारण वर्धमान ॥ इंद्र दियो महावीर, जय जय जय जगभान ॥ ३४ ॥ ३० ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां चिन्ह तथा लक्षण कहे छे. ॥

॥ वृषभ १ गज २ हय ३ कपी ४, भारंडपंखी ५ चिन्ह सोहे ॥ पद्म ६ साथीयो ७ चंद्र ८, मकर ९ श्रीवच्छ १० मन मोहे ॥ गेंडे ११ माहिष १२ वाराह १३ सिंचाणो १४ वज्र १५ कहीजें ॥ हारिण १६ बकरो १७ नंदावर्त १८ कलश १९ काछवो २० सुग्रहीजें ॥ नीलोत्पल २१ शख २२ सर्प २३ ए, सिंह २४ चिन्हथी ओलखाण ॥ एक सहस्त्र अष्ट लक्षण भलां, सहु जिननुं परिमाण ॥ ३५ ॥

॥ हवे चोवीश जिनना वर्ण तथा बल कहे छे ॥

॥ चंद्रप्रभजी ने सुविधि, दोय जिन शुक्ल सुहावे ॥ पद्मप्रभ वासुपूज्य, देहद्युति रक्त कहावे ॥ मल्लिनाथ श्रीपार्श्व, नीलवर्ण दमके काया ॥ मुनिसुव्रत अरिष्ट श्याम. रंग अधिक सुहाया ॥ शेष शोल जिनवर सहु ए, कंचन वर्ण शरीर ॥ अनंतबल सहु जिन तणुं, धन धन साहस धीर ॥ ३६ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी अवगाहना उच्छेदांगुल
तथा आत्मांगुले कहे छे ॥

॥ धनुष पांचसे १ उच्छेदांगुल, साडी चारसो २ जाणो ॥ चारसें ३

साडीतिनसें, ४ तीनसें ५ अढिसें ६ वखानो॥ दोयसें ७ देढसें ८ सोय ९, नेउ एंशी कह्या ईसो ॥ सित्तेर साठ पचास, पेंतालीस चालीस पेंतीसो ॥ तीस पचीस वीस पनरा दश ए, हस्त नव सात विचार॥ एकसो वीश आत्मांगुलें, जाणो जग किरतार॥ ३७॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने आहार, तथा विवाह, तथा लोकांतिकें देवोनी स्तुति तथा दान दीधुं, ते कहे छे. ॥

॥ प्रथम कल्पतरु आहार, शेष विशिष्ठज लीनो ॥ मल्ली रिष्टनेमि वर्जि, शेष सहु व्याहज कीनो ॥ सहुने लोकांतिक देव, कह्युं प्रभु भविजन तारो ॥ जाण्यो संजम समय, प्रभु दियो दान उदारो ॥ सोनईयो सोल मासानो ए, तीनसें अठ्याशी कोड ॥ एंशी लाख उपर वली, एक संवच्छर जोड ॥३८॥३७॥३८॥३९॥४०॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी कुमारस्थिति कहे छे ॥

॥ पूरव विश लख १ अढार २, पनरा ३ साडीबारा ४ दशो ५॥ साडिसात ६ पंच ७ अढी ८ पूरव सहस्र पचासो ९ पूर्वसहस्र पचीश १०, वर्ष एकविश ११ लक्ष जाणो ॥ अढारे १२ पनरा १३ साडी सात १४, अढीलक्ष १५ धर्म वखाणो ॥ सहस पचीश १६ तेवीस १७ एकवीस १८ ए, सो १९ साडि सात २० हजार ॥ अढाई सहस्र २१ तीनसें २२ त्रीश २३ त्रीश २४, वरस रहिया स्वामि कुमार॥३९॥४१॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी राजस्थिति कहे छे. ॥

॥ पूरव त्रेसठ लाख १ त्रेपन २, चुमालीश ३ साडी छत्रीशो ४॥ गुणातिस ५ साडी एकवीश ६ चउदे ७, खट ८ एक ९ एक १० उगणीशो ॥ पूरव पचास हजार ११ वरस, बयालीस लाखो १२ ॥ वासुपूज्य वर्जित त्रिश १३, वीश १४ पंद्र १५ पंच १६ दाखो ॥ पचास सहस्र १७ साडिसडतालीस १८ सडतालीस ए १९, मुनिसुव्रत पंद्र हजार २० ॥ नमी पंच २१ शेष निहुं मली २२ २३ २४, राजपदनो परिहार ॥ ४० ॥ ४२ ॥

॥ हवे चोवशि तीर्थंकरनी शिबिकानां नाम कहे छे ॥

॥ सुदंसणा १ सुप्रभा, २ सिद्धार्था ३ अर्थ सिद्धा ४ कहीयें॥ अभयंकरा ५ निवृत्तिकरा ६, मनोहरा ७ मनोरमा लहियें ८॥ सुरप्रभा ९ शुक्रप्रभा १०, विमल प्रभा ११ नाम वखानी ॥ पृथिविनाथा १२ देवद्त्ता १३, सागरदत्ता १४ नागदत्ता १५ जाणी ॥ सर्वार्था १६ विजया १७ विजयंतीका ए १८, जयंती १९ अपराजिता २० धार ॥ देवकुरा २१ धारावती २२, विशाला २३ सुचंद्रप्रभा २४ शिबिका सार ॥ ४१ ॥ ४३ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी दीक्षातिथिनां नाम कहे छे ॥

चैत्र वदि आठस १ नोम महा २ पूनम मार्गशिरकी ३॥ महा शुद्ध द्वादशी ४ शुद्ध वैशाख नौमी ५ जिनवरकी ॥ कार्तिक वदि ६ जेष्ट शुद्धि ७ पोष वदि ८, त्रिहूं तेरश तिथि जाणो॥ मार्गशिर बदि तिथि छठ, माघ ९ वदि बारस १० ठाणो॥ फागण वदि तेरश तिथि ए, ११, फागण अमावस १२ जाण ॥ माघ शुक्र तिथि चतुर्थी १३, विमल जिन दीक्षा कल्याण ॥४२॥ वैशाख कृष्ण चउदश १४, माघ शुद्ध तेरस धारो १५ ॥ ज्येष्ठ वदि चउदश १६, वैशाख शुद्ध पंचमी १७ सारो ॥ इग्यारस १८ शुद्ध माघ, १९ मल्लिजिन एह तिथि आई ॥ फागण शुद्ध द्वादशी, १० आषाढ वदि नौमी २१ कहाई ॥ श्रावणशुद्ध छठ २२ नेमजी ए, पोष वदि दशमी २३ जाण॥ मार्गशिर वदि दशमी २४ इम, जिन दीक्षा कल्याण।४३।४४।

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां वय तथा दीक्षा तप कहे छे ॥

॥ वासुपूज्य मल्लि नमी, नेमी पारस वर्धमानो ॥ प्रथमवयली दीक्षा, शेष जिन अंत वय मानो ॥ वासुपूज्य तप चोथ, अठम तप मल्लि जिन पालो ॥ सुमति जिन करि आहार, दीक्षा लिनी सुउल्हासो ॥ शेष वीश जिनेश्वरू ए, छठ तप संजम धार॥ दीक्षा ली जगदीश जी, धन धन प्रभु अवतार॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनो परिवार कहे छे ॥

॥ चार सहस्त्र नर साथ, रिखभ प्रभु दीक्षा धारी ॥ छशें श्री वासुपूज्य, मल्लि तीनशें परिवारी ॥ तीनशे पारस नाथ, चरम जिन एकलविहारी ॥ शेष ओगणीश जिनराज, एक एक सहस्त्र उच्चारी ॥ इणविध चोवीश जगदीशने ए, दीक्षासमय परिवार ॥ तप जप करी जिण शिव वरी, प्रणमुं वारं वार ॥ ४५ ॥ ४७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां दीक्षापुर दीक्षावन कहे छे ॥

॥ रिखभ अयोध्या नेम द्वारका, शेष जन्म पूरमें धारी ॥ आदि जिनंद सिद्धार्थ, वनमें भये अणगारी ॥ दूजाथी ग्यारमा लगें, सहस्त्राम्र वन विचारी ॥ विहार गृह दोय सहस्त्राम्रवन, शांतिथी मल्लि उच्चारी ॥ ए चिहूं सहसावन कह्यां ए, नील गुहान सह सावन जाण ॥ आश्रमपद ज्ञात खंडमें, दीक्षावन पहिचान ॥ ४६ ॥

॥ हवे चोवीश जिननां दीक्षातरु, तथा दीक्षा वेळा, दीक्षा लेती कया वखत तीर्थंकरें केटली मुष्टिनो लोच कर्यो ते, तथा तेमनुं संयमज्ञान, दुष्यमोल, दुष्यस्थिति कहे छे ॥

॥ सर्वे अशोक तरुतलें, संयम समे ज्ञानज चारो ॥ रिखभ जिनंद चउमुष्टि, शेष पंच मुष्टि उच्चारो ॥ सुमति श्रेयांस नेमी पार्श्व, पूर्वान्हें दीक्षा कालो ॥ शेष पाश्चिमान्ह समे, दीक्षा लीनी उजमालो ॥ प्रथमगुं त्रेविशमा लगें ए, देव दुष्य सदा जाण ॥ वर्ष जा जेरो वीरने, लक्षामें परिमाण ॥ ४७ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरमां कया तीर्थंकरे शेनो दिव्य आहार कर्यो तथा कया तीर्थंकरनो केटलो पारणाकाल? ते कहे ॥

॥ रिखभ जिनंद आहार, प्रथम इखुरसनो कीयो ॥ शेष जिनंदने खीर तणो, भोजनवर लीयो ॥ रिखभ जिनंदनो पारणो, आयो बार मासी ॥ शेष जिनंदनो पारणो, आयो दुजे दिन विमासी ॥ धन धन

दीन दयालजो ए, जगतपति जगदीश ॥ शम दम उपशम सागरू, वंदू मे जिनदीश ॥ -णमुं में० ॥ ४८ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना पारणानां नगर कहे छे ॥

॥ गजपुर १ अयोध्या २ सावात्थि ३, अयोध्या ४ विजय ५ पुर चीनो ॥ ब्रह्मस्थलें ६ पाडली ७, पद्म खंड ८ श्वेतपुर ९ कीनो ॥ रिष्ट १० सिधत्थ ११ महापुर, १२ धनक १३ वर्धमान पुरमांइ १४ ॥ सोमणस १५ ग्राममंदीर १६, चक्रराज १७ पुरठाई १८ ॥ मिथिला १९ राजगृहि २० वीरपुर २१ ए, द्वारिका २२ कोप कटग्राम २३ ॥ कोलाग सन्निवेश २४ माहावीर इम, पारणा तणां पुर धाम ॥४९॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना प्रथम दातार कहे छे ॥

॥ सिज्जंस १ ब्रह्मदत्त २ नाम, सुरिंददत्त ३ इंद्रदत्त ४ वखाणो ॥ पद्म ५ सोम देवनाम, ६ महिंद ७ सोमदत्त ८ सो जाणो ॥ पुष्प ९ पुनर्वसु १० नंद ११, सुनंद १२ जय १३ जसधारी ॥ विजय १४ धर्म सिंह १५ सुमित्र १६, व्याघ्र सिंहनाम १७ विचारी ॥ अपराजित १८ विश्वसेनजी १९ ए, ब्रह्मदत्त २० दिन्न २१ उदार ॥ वरादिन्न २२ धन २३ बहुल २४ कह्या, प्रथम दान दातार ॥५०॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने प्रथम दान देनारनी गति तथा
पंचदिव्य तथा वसुधारा, तथा क्षेत्र विहार कहे छे ॥

॥ पहेलासुं आठमा तणा दातार, तिणभव शिव पाई ॥ नव-मासुं छेला लगें, मुक्ति त्रीजा भव मांइ ॥ पंच दिव्य सहुने जाणा, साडी बारा कोडी वसुधारो ॥ रिखभ छेला जिन तीन, आर्ज अनार्ज विहारो ॥ शेष वीश जिनराजजी ए, आरज देश मझार ॥ विचर्‌या दीनदयाल जी, करवा पर उपगार ॥ ५१ ॥ ६० थी ६३ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां उत्कृष्ट तप, तथा अभिग्रह,
उपसर्ग अने प्रमाद काल कहे छे ॥

॥ रिखभ जिनंद शासन उत्कृष्ट, तप बारें मासी ॥ विजासुं त्रेविश

मा लगें, तप अट्ठमासी विमासी ॥ वर्धमान खटमासी सर्व, अभिग्रह द्रव्यादिक चारो ॥ उपसर्ग पारस वीर, शेष सहुने परिहारो ॥ प्रमाद काळ श्रीरिखभने ए, एक अहोरात्र उच्चार ॥ अंतर मुहूर्त्त श्रीवीरने, शेष सहुने परिहार ॥ ५२ ॥ ६४ थी ६७ ॥

॥ हवे चोवीस तीर्थंकरनों छद्मस्थकाल कहे छे ॥

॥ सहस्र वर्ष १ बारा २ चउदा, ३ अठारा ४वीश विवेको ५ ॥मास ६ छे ७ नव ८ चार ९ तीन, १० दोईने ११ एक १२ एको १३ ॥ तिन १४ दोय १५ एक १६ एक १७ नव, १८ मल्ली जिनने एक १९ पहेरो ॥ इग्यारा मास २० नव जाण, २१ चोपन दिन नेमजी हेरो २२ ॥ रात्रि च्याशी पारस प्रभु २३ ए, साडीबारा वरस विचार ॥ उपर पंदरा दिन चरम २४, छद्मस्थकाल सुमार ॥ ५३ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी केवलज्ञाननी तिथि कहे छे. ॥

॥ फागण वदि १ पोष शुद्ध, तिथि इग्यारस २ आइ ॥ पंचमी कार्त्तिक कृष्ण ३, पोष शुदि चौदश ४ ठाई ॥ चैत्र शुद्ध इग्यारस, ५ चैत्रकी पुनम ६ कहीयें ॥ फागण वदि छठ सातम ७।८, कार्त्तीक शुद्ध तीज सुगाहियें ९ ॥ पोष वदी चउदश १० माघ अमावस ११ ए, बिज माघ शुकल वखाण १२ ॥ शुद्ध पोष छट्ठ १३ श्रीविमलजिन. जाणो सुकेवल कल्याण ॥ ५४ ॥ वैशाख वदि चउदशी १४, पौष शुद्ध पूनम १५ सारो ॥ पोष १६ चैत्र शुद्ध नोमी १७, तेज अनुक्रमें विचारो १८,॥ कार्त्तिक शुद्ध द्वादशी १९, माघ शुद्ध ग्यारस धारो २० ॥ फागण द्वादशी कृष्ण २१, माघ शुद्ध इग्यारस जहारो ॥ अमावस आसोजनी ए २२, चैत्र चोथ वदि २३ ठाण ॥ वीर वैशाख शुद्ध दशमी २४, जाणो केवल कल्याण ॥ ५५ ॥६९ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां केवलज्ञाननां नगर कहे छे ॥

॥ पुरिमताल १ अयोध्या २ श्रावस्थी ३, दोय वलि अयोध्या

स्थानो ४।५ ॥ कोसंबी ६ वाणारसी, ७ चंद्रपुरी ८ कांकिपुर ९ मानो ॥ भद्दिल १० सिंहपुर ११ चंपा, १२, कंपिलपुर १३ अयोध्या ठाणो १४ ॥ रतनपुर १५ शांति १६ कुंथु १७, अरह १८ गजपुर पहिचानो ॥ मिथिला १९ राजगृहि २० मिथिला ए २१, रेवतका चल २२ जाण ॥ वाणारसी २३ जंभिक ग्राममें २४, पाया केवल नाण ॥ ५६ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनां केवलज्ञान पामवानां स्थान तथा केटले तपें केवलज्ञान उत्पन्न थयुं ? ते कहे छे ॥

॥ आदि जिनंद शकट मुख, दुजासुं इग्यारमा तांई ॥ सहस्राम्र विहारगृह जाण, विमलजीसें पार्श्व लहाइ ॥ आश्रम पद कह्युं स्थान, सलीला रजु वालुका आइ ॥ केवल वन विचार, रिखभ तप अष्टम मांइ ॥ वासुपूज्य मल्ली नेमजी ए, पार्श्व चोथ तप मांय ॥ शेष ओगणीश छठ्ठ तपविषे, ज्ञान केवल प्रगटाय ॥ ५७ ॥ ७१॥ ७२॥

॥हवे चोवीश तीर्थंकरोने जे वृक्षोनी नीचें केवलज्ञान उपनुं ते वृक्षनां नाम, तथा अशोक वृक्षोनी उंचाइ कहे छे ॥

॥ वड १ सत्तवण २ शाली ३ राजादनी ४ प्रियंगु सुहावे ५॥ छत्ताहना ६ सरस ७ नाग ८, मल्लिका ९ बिल्व १० तिंदुक ११ कहावे ॥ पाडल १२ जंबू १३ अश्वत्थ १४, दहीवन १५ नंदि १६ भिलककी छाया १७ ॥ आम्र १८ अशोक १९ चंपक २०, बकुल २१ वेडस तलें आया २२ ॥ धातकी २३ शाली २४ उंच पणे ए, देहथी बार गुणा जाण ॥ शासनपति श्रीवीरने एकविश धनुष्य प्रमाण ॥ ५८ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी केवल ज्ञाननी वेला, तथा प्रथम समवसरणमें तीर्थ स्थापन तथा जिनांतरें तीर्थ विच्छेद कहे छे.॥

॥ रिखभ जिनंदसें पार्श्व लगें, केवल पूर्वान्हें ॥ महावीर गुण धीर केवलवेला पश्चिमान्हें ॥ प्रथम समोसरण मांय, तीरथ थाप्यां

नवीशो ॥ छला दूजा मांय, तीर्थ थाप्यां जगदीशो ॥ नवमासुं सोलमा विचें ए, सात अंतरा मांय ॥ तीर्थविच्छेद थयो तिहां, भांख्यो श्री जिनराय ॥ ५९ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरने दोष वर्जितपणुं तथा अतिशय तथा वाणी तथा प्रातिहार्य तथा देवसेवा कहे हे. ॥

॥ अटरा दोष वर्जित, सकल जिनवर सुखदाता ॥ चोत्रीश अतिशयधार, पेंतिस वाणी सुविख्याता ॥ सहुने प्रातिहार्य आठ, ठाठ साहापुण्यसें पाया ॥ एक कोटी सहुने देव, सेव करे तनमन उलसाया ॥ धन धन दीन दयानिधि ए, अनंत गुणातम देव ॥ मन वच काय करी सदा, द्यो प्रभु अविचल सेव ॥ ६० ॥ ७८ थी ८२ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरना प्रथम गणधर कहे छे ॥

॥ पुंडरीक १ सिंहसेन २, चारु ३ वज्रनाभ ४ कहीजें ॥ चरम ५ प्रद्योतन ६ विदर्भ ७, दीन ८ वराहक ९ गहिजें ॥ नंद १० कच्छप ११ सुभूम १२, मंदर १३ जस १४ अरिष्ट १५ गुणवंता ॥ चक्रायुध १६ सांब १७ कुंभ १८, अभिक्षक १९ मल्लि २० महंता ॥ शुंभ २१ वरदत्त २२ आर्यदिन्न २३ ए, इंद्रभूति २४ गणधार ॥ ए चोवीश जिनना प्रथम, प्रणमुं नित अणगार ॥ ६१ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थकरनी प्रथम साधवी कहे छे ॥

॥ ब्राह्मी १ फल्गुणी २ श्यामा ३, अजिता ४ काश्यपी ५ जाणो ॥ रति ६ सोमा ७ सुमना ८, वारुणी ९ सुजसा १० वखाणो ॥ धारणी ११ धरणी १२ धरा १३, पद्मा १४ आर्यशिवा १५ सती ॥ शूचि १६ दामिनी १७ रक्षिता १८ वंदुं बंधुमती १९ पुष्पवती २० ॥ अनिला २१ जक्षदिन्ना २२ पुष्फचुला २३ ए, चंदनवाला २४ नाम ॥ ए चोविश वडि समणीने नित नित होजो प्रणाम ॥ ६२ ॥ ८४ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थकरना भक्तिवंत राजा कहे छे ॥

॥ भरत १ सगर २ अमितसेन ३, मित्रवर्य नृप ४ सारो ॥ शतवीर्य

५ अजितसेन, ६, दानवीर्य ७ मघवा ८ धारो ॥ बुद्धिवीर्य ९ सिमंधर १० त्रिपृष्ट ११ द्विपृष्ट १२ नृप जाणो ॥ स्वयंभु १३ पुरुषोत्तम नाम १४, पुरुषसिंह १५ कोणाल १६ बखाणो ॥ कुबेर १७ सूभूमजी १८ जित १९ विजय २० ए, हरिषेण २१ कृष्ण २२ उदार ॥ प्रसेनजित २३ श्रेणिक २४ चरम, भक्तिवंता नृप धार ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना शासनना यक्ष कहे छे ॥

॥ गोमुख १ महायक्ष २, त्रिमुख ३ नायकमुख ४ कहियें ॥ तुंबुरु ५ कुसुम ६ मातंग ७, विजय ८ जित ९ ब्रह्मा १० लहीयें ॥ जक्षट ११ कुमार १२ षणमुख १३, पाताल १४ किंनर १५ गरुड १६ धारो ॥ गंधर्व १७ यक्षट १८ कुबेर १९, वरुण यक्ष २० भृकुटि २१ विचारो ॥ गोमेद २२ पार्श्व २३ मातंग २४ नामें ए, सासणाधिष्ट यक्ष जाण ॥ प्रभु समरण करे भावशुं, हरे संकट हित आण ॥६४॥८६॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी अधिष्टायिका यक्षणी कहे छे. ॥

॥ चक्केसरी १ अजितबला २, दुरितारि ३ कालिका देवी ४ ॥ महाकाली ५ श्यामा ६ शांति, ७ भृकुटी ८ सुतारिका ९ लेवी ॥ अशोका १० मानवी ११ चंडा १२, विदिता १३ अंकुशा १४ जक्षणी ॥ कंदर्पा १५ निर्वाणी १६ बला १७, धणा १८ धरणी प्रिया १९ प्रभु यक्षणी ॥ नरदत्ता २० गंधारी २१ अंबिका ए २२, पद्मावती २३ सिद्धायिका २४ नाम ॥ सासणाधिष्ट ए जक्षणी, सारे वंछित काम ॥६५॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना गणधरनी संख्या कहे छे. ॥

॥ चोरासी १ पंचाणू २ जाण, एकसो दोय ३ सुज्ञानी ॥ एक सो इग्यारा ४ सोय, ५ एकसो सात ६ पिछानी ॥ पचाणु ७ त्राणुं ८ गिणत, अठ्याशी ९ बैयासी १० सासी ॥ सत्तोतेर ११ गुणसित्तेर १२ सत्तावन १३, पचास १४ सो ते नमुं शिर नासी ॥ पेंतालीस १५ छत्तीस १६ पेंतीस १७ वली ए, तेंतिस १८ अठ्ठाविश १९ अढार

२० ॥ सतरे २१ इग्यारे २२ दश २३ इग्यारे २४ ते, प्रणमुं प्रभु गुणधार ॥ ६६ ॥ ८८ ॥

॥ हवे चोवीस तीर्थंकरना साधुनी संख्या कहे छे. ॥

॥ सहस्र चोराशी १ एकलक्ष २, दोय ३ तीनलक्ष ४ विचारो॥ तीनलख पर सहस्र वीश ५, तीन लक्ष तीस हजारो ६ ॥ लक्ष तीन ७ अढी ८ दोय ९ एक १० चौरासी सहस्र ११ अणगारो ॥ बहोत्तर १२ अडसठ १३ छासठ १४, चोसठ १५ बासठ १६ रिख धारो ॥ साठ १७ पचास १८ चालीस १९ वली ए, त्रीश २० वीश २१ अढार २२ ॥ सोला २३ चवदा २४ सहस्रमव, वंदूं प्रभु अणगार॥६७॥८९॥

॥ हवे चोवीस तीर्थंकरनी साध्वीनी संख्या कहे छे. ॥

॥ तीन १ लक्ष तनि २ तीन ३ खट४ पांच ५, [illegible] चउ ७ तीन ८ एक ९ एक १० एको ११ ॥ दुजासुं [illegible] सहस्र अनुक्रमें विवेको ॥ त्रीश २ छत्रीश ३ त्रीश ४ [illegible] ६ त्रीश ७ असी ८ वीशो ९ खट १० तीन ११ सहस्र [illegible], एकलख १३ आठसें श्रमणीसो ॥ बासठ १४ बासठ [illegible] ए १५, इगसठ १६ सठ १७ छछसें धार ॥ साठ [illegible] १९ पचास, २० इगतालीस २१ चालीस २२ कही, [illegible] छत्तीस २४ धार ॥ प्रभु श्रमणी परिवार ॥ ६८ ॥ ९० ॥

॥ हवे चोवीस तीर्थंकरना श्रावकोनी [illegible] छे.॥

॥ आदिनाथ तीन लाख. दुजासुं पंदर श्रावक दोय दोय लाख, (१६ मासुं २४ मा लगें एक लख एक एक लाख कहाई ॥ सहस्र पचास अठाणुं. [illegible] इक्यासी ॥ छिहंतर सत्तावन पचा[illegible] [illegible] ॥ पन्नर आठ [illegible] चार नेउं ए, [illegible] [illegible] [illegible]त्तर सित्तर गुणसित्तर[illegible] [illegible] ॥६९॥९१॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी श्राविकानो परिवार कहे छे ॥

॥ लक्ष पंच पंच छ पंच, पंच पंच उपरंत चारो ॥ (सोल मासूं ७४ मा तांई त्रण लाख उपरांत हजार छे) सोलमासूं तीन तीन लक्ष, उपरंत संख्या चोपन हजारो ॥ पेंतालीस छत्तीस सत्ता-वीस, सोला पंच त्राणु नेव्याशी ॥ एकोतेर अठावन अडता-लीश, छत्तीस चोबीस चउदे विमासी ॥ तेरे त्राणुं इक्यासी वहोत्तेर ए, सित्तेर पचास अडतालीश ॥ छत्रीस गुणचालीश अठारा, सहस्र, श्राविका कहि जगदीश ॥ ७० ॥ ९२ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने केवलीनो परिवार कहे छे. ॥

॥ सहस्र वीस १ बावीस, २ पंद्रा ३ चउदा ४ तेरा ५ ॥ बारे ६ इग्यारे ७ दश, ८ सहस्र साडीसात ९ भलेरा ॥ सात १० साडी छ ११ खट १२, साडीपंच १३ पंच १४ साडीचारो १५ ॥ त्रेंता-लीशें १६ बत्तिशें १७, अट्ठाविशशें १८ बावीससें १९ धारो ॥ अठारासें २० सोलासें २१ पंद्रासें ए २२, पारस एक हजार २३ ॥ सातसें २४ केवली वीरने, प्रणमूं ते सुखकार ॥ ७१ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना मनःपर्यव ज्ञानीनी संख्या कहे छे. ॥

॥ पुनि तेरा १ हजार बार २ सहस्र, पर पांचशें पचासो ॥ बारा ३ सहस्र पर डेढसो, इग्यारा ४ सहस्र साडी छशे विमासो ॥ दश ५ सहस्र साडी चारशें, सहस्र दश ६ तीनशें उपर ॥ एकाणुसें ७ पचास, एंसीसें ८ शत पंचोत्तर ९ ॥ पिचंतर १० साठ ११ पेंसठ १२ वली ए, पंचावनशें १३ जाण ॥ पचास १४ पेंतालीस १५ सेंकडा, मुनि मनःपरजव नाण ॥ ७२ ॥ शांति जिनंद सहस्र चार, १६ तेत्रीशसें चालीस १७ उपर ॥ पचीसशें एकावन, १८ साडीसत्तरशें १९ मुनिवर ॥ पंद्रासें २०, साडीबारासें २१, नेमि प्रभु एक हजारो २२ ॥ पार्श्वप्रभुके जाण, साडी सातशें अणगारो

२३ ॥ वर्धमानजीके पाचशें २४ ए, अढाई द्वीप मझार ॥ जाणे सहु मन वारता, प्रणमूं ते अणगार ॥ ७३ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना अवधिज्ञानी साधु कहें छे. ॥

॥ सेंकडा नउं १ चोराणुं २, छन्नुं ३ अट्ठाणुं ४ जाणी ॥ सहस्र इग्यारा ५ दश ६ नव ७, आठ ८ अवधि नाणी ॥ सेंकडा चोराशी ९ बोहोंतेर, १० साठ ११ चोपन १२ अडतालीसो १३ ॥ त्रेंतालीश १४ छत्तीस १५ तीस १६, वली पच्चीश १७ छवीशो १८ । बावीश १९ अठारा २० षोडश ए २१, पंद्रा २२ दश २३ सत सात २४ ॥ अवधि नाणी जिनवर तणा, वंदूं उठि परभात ॥ ७४ ॥ ९५ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना पूर्वधरोनी संख्या कहे छे. ॥

॥ छेंतालीसशें पचास १, सेंतिससें वीश २ विचारो ॥ इकविशशें पचास ३, पंद्रेसें ४ चोविशशें ५ धारो ॥ तेविशशें ६ विशशें परत्रीश ७ चंदा प्रभु दोय हजारो ८ ॥ सेंकडा पंद्रा ९. चउदा १०, तेरा ११ बारा १२ इग्यारो १३ ॥ दश १४ नव १५ आठ १६ छशें सित्तर १७ ए, छशें दश १८ छशें अडसट्ठ १९ ॥ पांचशें २० साडीचार २१ चारशें, २२ साडी तिनशें २३ तिनशें विशिष्ट २४ ॥ पूरव धारक श्रेष्ट ॥ ७५ ॥ ९६ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना वैक्रिय लब्धिवंत मुनि कहे छे. ॥

॥ छशें वीश सहस्र. चारशें वीश हजारो ॥ ओगणीश सहस्र शत आठ, ओगणीश सहस्र वैक्रिय धारो ॥ अढारा सहस्र सत चार, सोला सहस्र एक शत आठो ॥ पंद्रा सहस्र शत तीन. सहस्र चउदा तेर पाठो ॥ बारा इग्यारा दश सहस्र ए, नव आठ सात जाण ॥ खट सहस्र एकावनशें. वैक्रियध [illegible] बहोत्तरशें गुणातिससें, सहस्र दो पंच विचारो ॥ [illegible] वीर प्रभु धारो ॥ महा तपस्या परभाव [illegible] गोपवी

राखी तेह, लोकने खबर न कांइ ॥ इम मुनि चोवीश जिन तणा ए सत्ताविश गुण धार ॥ प्रणमुं मन तन कायसूं, नित्यप्रत्यें वारं वार ॥ ७७ ॥ ९७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना वादी मुनिनी संख्या कहे छे. ॥

॥ बारा सहस्र, साडीछसें, चार सत बारा हजारो ॥ बारा इग्यारा सहस्र दश, उपर शत चारो ॥ छन्नुं शत चोराशी, छहोंत्तर साठ अट्ठावन ॥ पचास सेंतालीस छत्तीश, बतिश अठाविश चोवीश भन ॥ विश सोला चउदा बारे दश ए, आठशें छशें सत चार ॥ शेंकडा संख्या समजीयें, जिनवादी अणगार ॥ ७८ ॥ ९८ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने प्रत्येक बुधमुनि, तथा प्रकीर्ण, तथा महाव्रत, तथा चारित्र, तथा पडिक्कमण कहे छे. ॥

॥ साधुसंख्या प्रत्येक बुध, तेता प्रकीर्ण बिचारो ॥ आदि अंत पंच जाम, शेष महाव्रत कहे चारो ॥ प्रथम चरम के पंच, चारित्र करे अंगीकारो ॥ दूजो त्रीजो चारीत्रसो, मध्याजिनने परिहारो ॥ प्रथम चरम जिनसासणें ए, पडिक्कमणुं उभयकाल॥ शेष बावीश प्रायश्चित समे, करे आवश्यक उजमाल ॥ ७९ ॥ ९९ थी १०३

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनुं सर्वायु कहे छे. ॥

॥ पूर्वचोराशी १ लाख, बहोत्तर २ साठ ३ पचासो ४ ॥ चालिश ५ तीश ६ वीश ७ दश, ८ दोय ९एक १० पूर्व विमासो ॥ वर्ष चोराशी ११ लाख, बहोंत्तर १२ साठ १३ वालि त्रीशो १४ ॥ दश १५ एक १६ लक्ष कुंथु, पचाणुं १७ सहस्र गहीसो ॥ चौराशी १८ पचावन १९ तिश २० वलि ए, दश २१ नेमी एक हजार २२ ॥ सो २३ वली बहोत्तर २४ वर्षनुं प्रभु आउखुं सुविचार ॥ ८० ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी निर्वाण तिथि कहे छे. ॥

॥ माघ वदि तेरश १ चैत्र, उभे शुद्ध २ पंचमी ३ आई ॥ शुद्ध अष्टमी वैशाख ४, शुक्ल चैत्र नौमी ५ कहाई ॥ ईग्यारस मार्ग शिर्षवदि,

६ फागण वदि सातम ७ ठाई ॥ भाद्रवा वदि सातम, ८ नोम भाद्रवा शुद्ध ९ मांई ॥ वैशाख वदि १० तिथि दूजसु ए, तिज श्रावण वदि ११ जाण ॥ आपाढ शुद्ध चउदश १२ वारमा, दाखी तिथि निर्वाण ॥८१॥ सातम आपाढ वदि १३, चैत्र १४ जेष्ठ शुद्ध पंचमी १५ जाणी ॥ ज्येष्ट वदी तेरश तिथि,१६ वैशाख वदी पडिवा १७ ठानी ॥ मार्गसिर फागुण शुद्ध, दशमी १८ वारस १९ कहीयें ॥ ज्येष्ट वैशाखवदि नोम, २० दशमी तिथि २१ सुगहीयें ॥ आपाढ श्रावण शुद्ध अष्टमी ए,नेमी पार्श्व २२।२३ जिनजान ॥ कार्तिक अमावस वीरजिन २४,पाया पद निर्वाण ॥ ८२ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थकरनां निर्वाण नक्षत्र कहे छे. ॥

॥ आभिजित १ मृगाशिर २ आर्दरा ३, पुष्य ४, पुनर्वसु ५ आयो ॥ चित्रा ६ अनुराधा ७ ज्येष्टा, ८ मूल ९ पूर्वापाढा १० गायो ॥ धनिष्टा ११ उत्तराभाद्र, १२ दोयके रेवती १३ जाणो ॥ १४ पुष्य १५ भरणी १६ कृत्तिका १७, रेवती १८ भरणी १९ वखाणो ॥ श्रवण २० अश्विनी २१ चित्रा २२ वली ए, विशाखा २३ स्वाति २४ विचार ॥ इन नक्षत्र निर्वाणपद, पाया शिव सुखसार ॥ प्रणमुं वारं वार ॥८३॥१०६॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनुं मोक्षस्थान तथा
अणसण तप कहे छे. ॥

॥ रिखभ अष्टापद शिखर, वासुपूज्य चंपा जाणो ॥ नेमि नाथ गिरनार, पावापुरी वीर वखाणो ॥ शेप समेत शिखर, गीरि पर अणसण लीना ॥ छ दिन रिखभ जिणंद, वीर छठम तप चीना॥ शेप जिनंद एकमासनोए, ठायो अणसण सार॥ होय अजोगी मुक्तिगया प्रणमुं वारंवार ॥ जय जय परम दातार ॥ ८४ ॥ १०७ १०८ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनुं मोक्ष आसन तथा मोक्ष वेला कहे छे. ॥

॥ रिखभ जिणंद रिष्ट नेमि, चोविशमा वीर जिनंदा ॥ पल्यंक आसण संथारो. [illegible] काउस[illegible] ॥ बीजा छठा नवमा बारमा,

अपरान्हें धारो ॥ तिण बिचला जे अठ, जिन पूर्वान्हें बिचारो ॥ धर्म कुंथु नमि वीर प्रभु ए, अपर रात्रि निर्वाण ॥ शेष आठ पूर्व रात्रिमें, मुक्ति गया जगभाण ॥ ८५ ॥ १०९ ॥ ११० ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने मोक्ष समय अणसणधारक कहे छे ॥

॥ आदिजिनंद दश सहस्र, पद्म प्रभु तिनशें आठो ॥ पांचशें सुपारस संग, वासुपूज्य छशें पाठो ॥ विमलसंगें खट सहस्र, अनंत जिकें सात हजारो ॥ धर्म एकसो आठ, नवशें शांति विचारो ॥ पाचशें छत्रिश मल्लि नेमी ए, तेत्रीश पार्श्वप्रभु लार ॥ माहावीर एका एकी, शेष सहस्र परिवार ॥ प्रभु साथें अणसणधार ॥ प्रणमुं ते वारं वार ॥ ८६ ॥ १११ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी युगांतकृत भूमि तथा पर्यायांतकृत भूमि कहे छे ॥

॥ रिखभ जिनंद असंख्यात, पाट मुनि मुक्ति सिधाया ॥ नेमी आठ चउ पार्श्व, चरम जिन तीन बताया ॥ शेष जिनंद संख्यात, युगांतर भूमि कहीयें ॥ पर्यायांतक श्री आदि, अंतरमुहूरत लगें लहीयें ॥ नेमि वर्ष दोय पारस त्रिहूं ए, वर्द्धमान वर्ष चार ॥ शेष एक दिनांतरें, मुक्ति गया अणगार प्रणमुं ते वारं वार ॥८७॥११२॥११३॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना मुनियोनी केवी प्रकृति, तथा वस्त्र रंग, तेमज जन्म नक्षत्र, दीक्षानक्षत्र, केवल ज्ञान नक्षत्र, तथा केटलाश्रावक व्रत, पंचाचार, ते सर्व कहे छे. ॥

॥ आदिजिणंद मुनिराज, प्रकृति ऋजु जड जाणो ॥ चरम प्रभुका वक्रजड, शेष ऋजु सरल वखाणो ॥ आदि अंत श्वेतवस्त्र, शेष पंचरंगा ठाणो ॥ च्यवन नक्षत्र जेह, तेहि जन्मदीक्षा नाणो ॥ सहुने श्रावक व्रत दुवादश ए, सहुने पंच आचार ॥ जे पाली शिवपुर गया, प्रणमुं ते वारं वार ॥ ८८ ॥ ११४ ॥ थी १२० ॥

६ फागण वदि सातम ७ ठाई ॥ भाद्रवा वदि सातम, ८ नोम भाद्रवा शुद्ध ९ मांई ॥ वैशाख वदि १० तिथि दूजसु ए, तिज श्रावण वदि ११ जाण ॥ आषाढ शुद्ध चउदश १२ बारमा, दाखी तिथि निर्वाण ॥८१॥ सातम आषाढ वदि १३, चैत्र १४ जेष्ठ शुद्ध पंचमी १५ जाणी ॥ ज्येष्ट वदी तेरश तिथि,१६ वैशाख वदी पडिवा १७ ठानी ॥ मार्गसिर फागुण शुद्ध, दशमी १८ बारस १९ कहीयें ॥ ज्येष्ट वैशाखवदि नोम, २० दशमी तिथि २१ सुगहीयें ॥ आषाढ श्रावण शुद्ध अष्टमी ए,नेमी पार्श्व २२।२३ जिनजान ॥ कार्तिक अमावस वीरजिन २४,पाया पद निर्वाण ॥ ८२ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनां निर्वाण नक्षत्र कहे छे. ॥

॥ आभिजित १ मृगाशिर २ आर्दरा ३, पुष्य ४, पुनर्वसु ५ आयो ॥ चित्रा ६ अनुराधा ७ ज्येष्टा, ८ मूल ९ पूर्वाषाढा १० गायो ॥ धनिष्टा ११ उत्तराभाद्र, १२ दायके रेवती १३ जाणो ॥ १४ पुष्य १५ भरणी १६ कृत्तिका १७, रेवती १८ भरणी १९ वखाणो ॥ श्रवण २० अश्विनी २१ चित्रा २२ वली ए, विशाखा २३ स्वाति २४ विचार ॥ इन नक्षत्र निर्वाणपद, पाया शिव सुखसार ॥ प्रणमुं वारं वार ॥८३॥१०६॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनुं मोक्षस्थान तथा अणसण तप कहे छे. ॥

॥ रिखभ अष्टापद शिखर, वासुपूज्य चंपा जाणो ॥ नेमि नाथ गिरनार, पावापुरी वीर वखाणो ॥ शेष समेत शिखर, गीरि पर अणसण लीना ॥ छ दिन रिखभ जिणंद, वीर छठम तप चीना॥ शेष जिनंद एकमासनोए, ठाचो अणसण सार॥ होय अजोगी मुक्तिगया प्रणमुं वारंवार ॥ जय जय परम दातार ॥ ८४ ॥ १०७ १०८ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनुं मोक्ष आसन तथा मोक्ष वेला कहे छे. ॥

॥ रिखभ जिणंद रिष्ट नेमि, चोविशमा वीर जिनंदा ॥ पल्यंक आसण संथारो, शेष काउसगमें करंदा ॥ त्रीजा छठा नवमा बारमा,

अपरान्हें धारो ॥ तिण बिचला जे अठ, जिन पूर्वान्हें बिचारो ॥ धर्म कुंथु नमि वीर प्रभु ए, अपर रात्रि निर्वाण ॥ शेष आठ पूर्व रात्रिमें, मुक्ति गया जगभाण ॥ ८५ ॥ १०९ ॥ ११० ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने मोक्ष समय अणसणधारक कहे छे ॥

॥ आदिजिनंद दश सहस्र, पद्म प्रभु तिनशें आठो ॥ पांचशें सुपारस संग, वासुपूज्य छशें पाठो ॥ विमलसंगें खट सहस्र, अनंत जिकें सात हजारो ॥ धर्म एकसो आठ, नवशें शांति बिचारो ॥ पाचशें छत्रिश सांहि नेमी ए, तेत्रीश पार्श्वप्रभु लार ॥ माहावीर एका एकी, शेष सहस्र परिवार ॥ प्रभु साथें अणसणधार ॥ प्रणमुं ते वारं वार ॥ ८६ ॥ १११ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी युगांतकृत भूमि तथा पर्यायांतकृत भूमि कहे छे ॥

॥ रिखभ जिनंद असंख्यात, पाट मुनि मुक्ति सिधाया ॥ नेमी आठ चउ पार्श्व, चरम जिन तीन बताया ॥ शेष जिनंद संख्यात, युगांतर भूमि कहीयें ॥ पर्यायांतक श्री आदि, अंतरमुहूरत लगें लहीयें ॥ नेमि वर्ष दोय पारस त्रिहूं ए, वर्द्धमान वर्ष चार ॥ शेष एक दिनांतरें, मुक्ति गया अणगार प्रणमुं ते वारं वार ॥८७॥११२॥११३॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना मुनियोनी केवी प्रकृति, तथा वस्त्र रंग, तेमज जन्म नक्षत्र, दीक्षानक्षत्र, केवल ज्ञान नक्षत्र, तथा केटलाश्रावक व्रत, पंचाचार, ते सर्व कहे छे. ॥

॥ आदिजिणंद मुनिराज, प्रकृति ऋजु जड जाणो ॥ चरम प्रभुका वक्रजड, शेष ऋजु सरल वखाणो ॥ आदि अंत श्वेतवस्त्र, शेष पंचरंगा ठाणो ॥ च्यवन नक्षत्र जेह, तेहि जन्मदीक्षा नाणो ॥ सहुने श्रावक व्रत दुवादश ए, सहुने पंच आचार ॥ जे पाली शिवपुर गया, प्रणमुं ते वारं वार ॥ ८८ ॥ ११४ ॥ थी १२० ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी उत्पत्तिना आरानो समय, धर्म भेद तथा संयमभेद अने मुनिओना गुण कहे छे. ॥

॥ त्रीजा आरानी अंतें, रिखभ जिनवर प्रगटाया ॥ चोथा आरा मध्य अजित, शेष अंतें दरसाया ॥ श्रुत अरु चारित्रधर्म, सकल दो भेद बताया ॥ संजम सतरा प्रकार, पाले सहु जिन मुनिराया ॥ गुण सत्तावीश धारणा ए, तारण तरण मुनिंद ॥ ते प्रणमुं मनवच करी, आणी अधिक आनंद ॥ ८९ ॥ १२१ थी १२४ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनुं केटलो काल शासन रह्युं ? ते कहे छे. ॥

सागर पचास लक्ष कोड १, आदिजिन सासण कहीयें ॥ इम त्रिश २ दश ३ नव ४ लाख, कोडी सागर सदहियें ॥ हजार नेउं ५ नव ६ जाण, नवशें कोडी सुपासो ७ ॥ नेवुं ८ नव कोड ९ सागर, शीतल एक १० कोडि विमासो ॥ तिणमें सो सागर ग्रहो ए, वर्ष छासठ लक्ष जाण ॥ सहस्र छवीश कमती कह्यो, दशमा सासण प्रमाण ॥ ९० ॥ सागर चोपन ११ त्रीश, १२ नव १३ चउ १४ धरम तिहुं सागर १५ ॥ तिणमें पूणो पल घाट, शांति अर्ध पल १६ उजागर ॥ कुंथु जिन पाव पल्य, १७ कमति वर्षकोडि हजारो ॥ अरह कोडि हजार १८, चोपन लक्ष १९ माहि विचारो ॥ षट २० पंच २१ लक्ष पोणी २२ चोरासी सहस्रज ए, अढाइशें २३ एकविश हजार २४ ॥ समण समणी शासन प्रभु, प्रणमुं ते वारं वार ॥ ललि ललि वारंवार ॥ ९१ ॥ १२५ ॥

॥ अथ स्तवन आरति प्रारंभः ॥

॥ जयजय श्री जगदीश, रोष अरु तोष मिटाई ॥ जय जय श्री जगदीश, कर्म कण पीसे सांई ॥ जय जय श्री जगदीश, ध्यायो प्रभु शुकल ध्याने ॥ जय जय श्री जगदीश, पाया सव केवल ज्ञाने ॥ जय जय श्री जगदीशजी ए, करवा पर उपगार ॥ दीधि

महा धर्म देशना, तान्या बहु नर नार ॥९०॥ जय जय श्री जगदीश, केइ समदृष्टि करिया ॥ जय जय श्री जगदीश, केइ श्रावक उद्धरिया ॥ जय जय श्री जगदीश. केई कीना अणगारो ॥ जय जय श्री जगदीश, केइ कीना केवल धारो ॥ जय जय श्री जगदीशजी ए, आप तऱ्या परतार ॥ शिव सुख आविचल संपदा, पाया पद अविकार ॥९३॥ जो समरे एक चित्त, वित्त नित वंछित आवे ॥ जो समरे एक मन, जन तन रोग मिटावे ॥ जो समरे चित्त चाव, भाव तस निर्मल थावे ॥ जो समरे एक ध्यान, ज्ञान केवल प्रगटावे ॥ इन कारण भवियन सहु ए, नास ठाम शुभ काम ॥ गुणग्राम लेखा विधि. रचि रुचि शुचि हितधाम ॥ ९४ ॥ अल्पश्रुति प्रमादी, आलसी में अति भारी ॥ श्रीगुरुने परसाद, भक्ति वश शक्ति सुधारी ॥ बाल ख्याल जिम ग्रंथ, निजमति लायक बणायो ॥ हीण अधिक विपरीत, जोडमें शब्द जो आयो ॥ मिच्छामि दुक्कडं सब साखसुं ए, श्रीजिनवाणी तत ॥ अशुद्ध जो देखो बुधजना, शुद्ध कर लीजो सुहेत ॥ ९५ ॥ संवत ओगणीशशें चालीस, मास मधु नाम बिचारो ॥ शुद्ध पक्ष पंचमी तिथि, वार गुरु जोग उदारो ॥ देश दाक्षिण प्रसिद्ध, अहमद नगर मझारो ॥ किनो यह महास्तवन, सवाशें बोल विस्तारो ॥ अनुक्रमें समकित दृढ भणी ए, बोल तोल अमोल ॥ धारो भविजन भावशुं गाथा संधिशुं खोल ॥ ९६ ॥

॥ हवे पट्टावली लिख्यते ॥

॥ पूज्यश्री कान्हजी रिखि, बीज शशि जेम परतापी ॥ दिपायो दयाधर्म, कुमतिमति दूर उत्थापी ॥ तस पाटोधर पूज्य, तारा रिखजी जस धारक ॥ काला रिखजी तस शिष्य, बक रिखजी सुविचारक ॥ तस शिष्य पूज्यगुण आगला ए, धनजी रिखजी महाराय ॥ तस शिष्य श्रीगुरु मम तणा, श्रीयवंताजी रिखराय ॥ तास तणोजी सुपसाय॥९७॥ शिशु सम थो हूं अज्ञानी, गुरु उपगारज कीनो ॥ दीनो धर्मको बोध.

शोध हिरदे लय लीनो ॥ जाणी किंचित रीत, प्रीत हिन निज पर कारण ॥ तिलोकरिख कहे जैन, येन भवजलनिधि तारण ॥ जो समरे जगगुरु भणी ए. यथा जोग विधि धार ॥ जगगुरु पद पावे सही, वरते मंगल चार ॥ १८ ॥ कलश ॥ जय जय जिनंद, सुखकंद साहेब, जक्त पति जग, रंजणं ॥ अजर अमर, अविकार निर्भय, करम रिपुदल, गंजणं ॥ तिलोकरिख कहे, धर्म धर्म गुरु, विघन सब, दूरें हरे ॥ हित सुख खेम, कल्याण शिवपद, ताप मुक्ति हो जय करे ॥ प्रभु भव भव सरणो आपरो ॥ १९ ॥ इति चोविश जिनराज, गरीबनिवाज तरण तारण जहाजको, एकसो चोवीश बोल नामादिक लेखागर्भित महास्तवन समाप्त ॥

॥ अथ मुनिगुण मंगलमाला प्रारंभः ॥

॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ अथवा धन धन संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥ समरूं श्रीअरिहंत सिद्ध साधु, धर्मजिण आणा मझार जी ॥ चारुहि मंगल उत्तम सरणो, होजो सदा सुखकारजी ॥ प्रणमूं ते गुणवंत त्रिकालें, त्रिकरण मन वचकाय जी ॥ १ ॥ ऋद्धि सिद्धि सुखसंपत्ति शाता, नित नित होवे सवाय जी ॥ प्र० ॥ २ ॥ अतित अनन चोवीशी वंदूं. केवली अनंत अपार जी ॥ वर्त्तमान चोविशी साहेब, नाम कहुं सुविचार जी ॥ प्र० ॥ ३ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन. सुमति पद्म सुपासजी ॥ चंदा प्रभुजी ने सुविधि जिनेश्वर. शीतल श्री शिववास जी ॥ प्र० ॥४॥ श्रीश्रेयांस वासुपूज्य वंदूं, विमल अनंत धर्मदेव जी ॥ शांति कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत. नमि नेमी करु सेव जी ॥ प्र० ॥५॥ पारस अने वर्धमान जिनेश्वर, ए चोविश जिनराय जी ॥ कर्म खपाई केवल पाया, मुक्ति बिराज्या जाय जी ॥ प्र० ॥ ६ ॥ जयवंता सीमंधर स्वामी, युगमंधर सुखकार जी ॥ बाहु सुबाहु ए चउ विचरे, जंबूद्वीप मझार जी ॥ प्र० ॥ ७ ॥ सुजात स्वयंप्रभ ने ऋष-

भानन, अनंतवीरज जगभाण जी ॥ सूरप्रभु विशाल वज्रंधर, चंद्रानन गुणखाण जी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ पूरव पश्चिम चार चार जिन, धातकीखंड मझार जी ॥ विचरे गाम नगर पुर पाटण, करता पर उपगार जी ॥ प्र० ॥ ९ ॥ चंद्रवाहु भुजंग ईश्वर जी, नेमीश्वर शिवकंत जी ॥ वीरसेनने श्रीमहाभद्र जी, देवजसजी जसवंत जी ॥ प्र० ॥ १० ॥ विशमा अजितवीरज जगनायक, चार चार जिन राय जी ॥ पुष्करार्धमें विचरे साहिब, नामें नवनिधि थाय जी प्र० ॥ ११ ॥ उत्कृष्टं पदें एकसो सित्तेर, जघन्य केवली कोडी दोय जी ॥ उत्कृष्ट पदें पृथकत्व कोडी तिनमें, वर्तमान जे होय जी ॥ प्र० ॥ १२ ॥ अष्ट गुणातम पंद्रा भेदें, सिद्ध सदा सुखकार जी ॥ अलख निरंजन भवदुःख भंजण, समरतां सुखकार जी ॥ प्र० ॥१३॥ आचारज अष्ट संपदा धारक, वारक मिथ्या भर्म जी ॥ गुण छत्रीश ईश चउ तीरथ, दीपावे जैनधर्म जी ॥ प्र० ॥ १४ ॥ इंद्रभूति अग्निभूति वंदूं, वायुभूति गुणवंत जी ॥ चोथा व्यक्त सुधर्मास्वामी, मंडितजी जसवंत जी ॥ प्र० ॥ १५ ॥ मौर्यपुत्र अकंपित अचल जी, मेतारज गुणधार जी ॥ इग्यारमा परभासजी वंदूं, चुम्मालिशशें परिवारजी ॥ प्र० ॥१६॥ चोविश जिनना गणधर वंदूं, चउदशें बावन जाण जी ॥ चउदा पूरव धारक सारा, पहूंता सहु निर्वाण जी ॥ प्र० ॥ १७ ॥ ऋषभ सेनादिक सहस्र चोराशी, मुनिवर गुण भंडार जी ॥ धीर वीर गंभीर गुणातम, नमता जयजयकार जी ॥ प्र० ॥ १८ ॥ अरिसाभवनमें श्रीभरतेश्वर, पाया केवल ज्ञान जी ॥ अनुक्रमें आठ पट्टोधर इणविध, पाया पद निर्वाण जी ॥ प्र० ॥ १९ ॥ वाहुवल मुनिवर महा वलीया, वार मासी तप ध्यान जी ॥ मान मोलिने पग उठायो, पाया केवल ज्ञान जी ॥ प्र०॥२० ॥ जूझ करतां पुत्र अट्टाणुं, श्रीआदिश्वर स्वामि जी ॥ समजाई दियो संजम तेहने, पहोता ते शिवधाम जी ॥ प्र०

॥ २१ ॥ सागर मघवा खट खंड त्यागी, चक्री सनत्कुमार जी ॥ रूप देखवा सुर छल कीधो, लीधो संजम भार जी ॥ प्र० ॥२२॥ पद्म हरी खेण जयनामें रिख, चक्री दश ऋद्धि छोड जी ॥ शम दम उपशम धीर गुणागर, कर्मबंधण दिया तोड जी ॥ प्र० ॥ २३ ॥ अचल विजय भद्ररिख वंदूं, सुभद्रमुनि रिखि राय जी ॥ सुदर्शन आनंदन नंदन, राम गया शिवमांय जी ॥ प्र० ॥ २४ ॥ हलधर वलिभद्र जी पहोता, पंचमस्वर्ग मझार जी ॥ उत्तम पुरुष ए पुण्य प्रतापी, वली कहुं अंगनुसार जी ॥ प्र० ॥ २५ ॥ आर्द्रकुमार माहाबुद्धिवंता, जीत्या महा पंचवाद जी ॥ संयम पाली शिवपद पाया, जिन आणा मरजाद जी ॥ प्र० ॥ २६ ॥ उदय पेढालपुत्रें करी चर्चा, गोतमस्वामीसुं जाय जी ॥ कुमारपुतिया नाम लेइनें, सूत्र सुयगडांगनीमांय जी ॥ प्र० ॥ २७ ॥ दश दशांग त्रीजे अंग चाल्या, कह्या तिहां मुनिवर नाम जी ॥ ते सहु शिवगामी गुणधामी, कीनां उत्तम काम जी ॥ प्र० ॥ २८ ॥ सूत्रसमवायांग मांही प्रकाश्यां, नाम केई प्रसिद्ध जी ॥ गणधर मुनिवर चउद पूर्वधर, नाम लियां ऋद्धिसिद्ध जी ॥ प्र० ॥ २९ ॥ पिंगल नाम नियंठे पूछ्या, प्रश्न पंच रसाल जी ॥ खंधक सन्यासी सुणके तत्क्षण, वीर पासें गया चाल जी ॥ प्र० ॥ ३० ॥ संशय निवरत्यां संजम लीनो, कीनो तप श्रीकार जी ॥ अणसणधारी स्वर्ग बारमें, थया एका अवतार जी ॥ प्र० ॥ ३१ ॥ वीर जिनेश्वर तात वखाणुं, रिखभदत्त गुणधार जी ॥ शेठ सुदर्शन राज ऋषीश्वर, धन गांगियो अणगार जी ॥ प्र० ॥ ३२ ॥ ए चार ऋषि मुगतें पहोता, धन धन भगवंत मात जी ॥ देवानंदा धन मोति जयवंती, पूछ्या प्रश्न विख्यात जी ॥ प्र० ॥ ३३ ॥ वीर प्रभुजीनी नंदिनी वंदूं, सती सुदर्शना जाण जी ॥ दीक्षाधारी कर्म निवारी, पाइ पद निर्वाण जी ॥ प्र० ॥ ३४ ॥ पंचमी पडिमा कार्तिक शेठें, धारी तिण सो वार

जी ॥ तापस खीर जम्यो मोरा पर, जाण्यो अथिर संसार जी ॥ प्र० ॥ ३५ ॥ सहस्र अष्टोत्तर गुमास्ता साथें, आदर्यो संजमभार जी ॥ शेठ थया शक्रेंद्र सौधर्में, जाशे मोक्ष मझार जी ॥ प्र० ॥ ३६ ॥ सोला देश तजि संजम लीधो, दियो भाणेजने राज जी ॥ करी क्षमा धनराय उदाई, सार्यां आतम काज जी॥ प्र० ॥ ३७ ॥ गंगदत्त आणंद कोसल रिखरोहा, सुनक्षत्र नाम अणगार जी ॥ श्रवणभूति आराधक थईने, पहोता स्वर्ग मझार जी ॥ प्र० ॥ ३८ ॥ तिहांथी चवीने मुक्ति सिधाशे, इत्यादिक अणगार जी ॥ नाम ठाम तप जपको वर्णव, विवाहपन्नात्ति मझार जी ॥ प्र० ॥ ३९ ॥ धारणीसुत श्रेणिक नृपनंदन, धन धन मेघ कुमार जी ॥ आठ अंतेउर छिनमें छोडी, त्याग दियो संसार जी ॥ प्र० ॥ ४० ॥ गुणरतन भिक्खु पडिमा तप, अंतें अणसण कीध जी ॥ विजयविमानमें जाय बिराज्या, होशे विदेहमें सिद्ध जी ॥ प्र० ॥ ४१ ॥ बत्रीश नार तजी रंभासी, धन थावच्चा कुमार जी ॥ नेम प्रभुपें संजम लीधो, सहस्र पुरुष परिवार जी ॥ प्र० ॥ ४२ ॥ थावच्चा मुनिसूं चर्चा कीनी, शुकदेव संन्यासी जाण जी ॥ एक सहस्र शिष्य साथें संजम, लीधो गुणनिधि खाण जी ॥ प्र० ॥ ४३ ॥ पंथकादिक परधान पांचसें, सेलक राय नी लार जी ॥ अढाइ सहस्र पुंडरीकागिरी सिद्धा ॥ धन जिणरा अवतार जी ॥ प्र० ॥ ४४ ॥ रेणा देवीकी केण न कीधी, रत्नद्वीपसूं आय जी ॥ संजम लीनो चंपा नगरी, जिनपाल मुनिराय जी ॥ प्र० ॥ ४५ ॥ तीन धन्नायें धार्यो संजम, सुगुरु थिविरनी पास जी ॥ तीनुं परथम स्वर्गे सिधाया, महाविदेह शिववास जी ॥ प्र० ॥ ४६ ॥ छए मित्र मल्लि जिनवरना, महाबलादिक गुणवंत जी ॥ गणधर पद ग्रही मुक्ति विराज्या, थया सिद्ध भगवंत जी ॥ प्र० ॥ ४७ ॥ सुबुद्धि प्रधानजीयें भलि विधें, पाणी परचो बताय जी ॥ जितशत्रु नृपको भर्म मिटायो, दोइ गया शिवमांय जी ॥ प्र० ॥ ४८ ॥

तेतली मुनिवर गुणना दरिया, पोट्टिला दियो प्रतिबोध जी ॥ केवल पामी मुक्ति विराज्या, तजियो सकल विरोध जी ॥ प्र० ॥ ४९ ॥ युधिष्ठिर अर्जुन अने भीमजी, सहदेव नकुल अणगार जी ॥ मास मास तप अभिग्रह कीनो, नेम वंदण सुविचार जी ॥ प्र० ॥ ५० ॥ हस्तिकल्पपुर गोचरी करतां नेम तणुं निर्वाण जी ॥ सुणिने पांडव पांच शत्रुंजे, संथारो लियो जाण जी ॥ प्र० ॥ ५१ ॥ दोय मास संलेखणा सिद्धा, श्रमणी द्रोपदी सोय जी ॥ संजम पाली स्वर्ग पंचमें, एकावतारी होय जी ॥ प्र० ॥ ५२ ॥ धर्मघोष शिष्य धर्मरुचि जी, किड्यां पर करुणा आण जी ॥ कडवा तुंबानो आहारज कीधो, खीर खांड सम जाण जी ॥ प्र० ॥ ५३ ॥ क्षण अंतरमें वेदना प्रगटी, रिख समता मन धार जी ॥ सर्वार्थसिद्धमें जाय बिराज्या, च्यवि गया मुक्ति मझार जी ॥ प्र० ॥ ५४ ॥ कुंडरिक भाईने डगियो जाणी पुंडरिक संजम धार जी ॥ सर्वार्थसिद्ध लियो तीन दिवसमें, धन जिणरो अवतार जी ॥ प्र० ॥ ५५ ॥ सुव्रतादिक श्रमणी महासतिया, पाली प्रभु नी आण जी ॥ ते वर्णन भिन्न भिन्न करि देखो, ज्ञाता अंग प्रमाण जी ॥ प्र० ॥ ५६ ॥ गौतम समुद्र सागर अने गंभीर, थिमिनने अचल कुमार जी ॥ कपिल अक्षोभ प्रश्नसेन ने विष्णु, अक्षोभ सागर जसधार जी ॥ प्र० ॥ ५७ ॥ सागर समुद्र हेमवंत नामें, अचलधरण गुणवंत जी ॥ पूरण अभिचंद्र एह अठारा, ज्ञाता जाणो सहु संत जी ॥ प्र० ॥ ५८ ॥ अंधक विष्णुसुत धारणी अंगज, आठ अंतडर मेल जी ॥ नेम समीपे लीनो संजम, करि सुगतिमें सहेल जी ॥ प्र० ॥ ५९ ॥ वसुदेवसुत देवकी जाया, अणियसेण अनंतसेण जी ॥ अजितसेण अणिहय रिपुनामें, देवसेण शत्रुसेण जी ॥ प्र० ॥ ६० ॥ सुलसाघर वाधिया के वंधव, बत्रीश बत्रीश नारि जी ॥ तजिने नेम प्रभुपे संजम, लईने छठ छठ धार जी ॥प्र०॥६१॥ पूरवधारी कर्म निवारी, पहोता मोक्ष मझार जी ॥

वसुदेवसुत धारणी अंगज, सारण थया अविकार जी ॥ प्र० ॥ ६२ ॥ गजतालव जिम कोमल काया, धन धन गजसुकुमाल जी ॥ वसुदेवसुत देवकी अंगज, छोड्यो जग जंजाल जी ॥ प्र० ॥ ६३ ॥ एकाकी समशानमें जाइ, उभा ध्यान लगाय जी ॥ ससरो देखी रीषें भराणो, माटीकी पाल बणाय जी ॥ प्र० ॥ ६४ ॥ धग धगता खेराना खीरा, मेल्या रिखने शीश जी ॥ महावेदना सहि सम परिणामें, मुक्ति गया तजि रीश जी ॥ प्र० ॥ ६५ ॥ सुमुख दुर्मुख वली उवय कुंवर, दारुण, अनाधिष्ट जाण जी ॥ जाली मयाली उवयाली ऋषि, पुरुषसेन वखाण जी ॥ प्र० ॥ ६६ ॥ वारिषेण प्रद्युम्न ऋषि संब, अनिरुद्ध वैदर्भिनंदजी ॥ सत्यनेमी दृढनेमी ए सब, पाम्या शिवसुखकंद जी ॥ प्र० ॥ ६७ ॥ पद्मावती गौरी गांधारी, लखमणा सुसमा नार जी ॥ जांबुवती सत्यभामा रुक्मिणी, कृष्णरामा सुविचार जी ॥ प्र० ॥ ६८ ॥ मूलसिरी मूलदत्ता श्रमणी, सांबकुमरनी नार जी ॥ ए दशे संजम केवल लेई, पहोती मुक्ति मझार जी ॥ प्र० ॥ ६९ ॥ मक्काई किंकम रिख महोटा, धन अर्जुन अणगार जी ॥ संजम लेइ क्षमा हृदधारी, छठ छठ तप लियुं धार जी ॥ प्र० ॥ ७० ॥ छ मासामें कर्म खपाई, मुक्ति गया गुणवंत जी ॥ कासव क्षेम धितिधर हितकर, कैलास हरिचंद संत जी ॥ प्र० ॥ ७१ ॥ वारत सुदंसण पूरणभद्दर, सुमनभद्र सुप्रतिष्ठ जी ॥ मेघ ऐमंता अलख ए शोला, पाया पदवी श्रेष्ठ जी ॥ प्र० ॥ ७२ ॥ नंदादिक तेरे पट्टराणी, वीर जिनंद उपदेश जी ॥ केवल पाई मुक्ति सिधाइ, पाई अविचल यश जी ॥ प्र० ॥ ७३ ॥ कालीयादिक दश श्रेणिक राणी, सुणियो पुत्र विजोग जी ॥ माहातपधारी कर्म निवारी, मेट दिया सब रोग जी ॥ प्र० ॥ ७४ ॥ ए नेउं सहु अंतगड सिद्धा, अंतसमे केवल पाय जी ॥ अंतगडसूत्रमें वर्णव जाणो, जपतां सुख सवाय जी ॥ प्र० ॥ ७५ ॥ श्रेणिकसुत धन जाली मयाली, उवयाली पुरुष

सेन जी ॥ वारीसेण दीर्घसेण लठदंत जी, गूढदंत सव जगसेन जी ॥ प्र० ॥ ७६ ॥ विहल कुमर अभयादिक त्रविश, श्रेणिकसुत गुणधाम जी ॥ अनुत्तर विमान गया सहुरिखजी, चवि जाशे शिवठाम जी ॥ प्र० ॥ ७७ ॥ बत्रीश रंभा तजि धन कोडी, धन धन्नो अणगार जी ॥ छठ छठ तप निरंतर करणी, आयंविल उच्छित आहार जी ॥ प्र० ॥ ७८ ॥ चोद सहस्र मुनीश्वरमांही, श्रेणिक आगें स्वाम जी ॥ कहे दुक्कर दुक्कर तप धारी, शम दम उपशम धाम जी ॥ प्र० ॥ ७९ ॥ सुनक्षत्र इसीदासजी पेढग, रामपुत चंदिमा नाम जी ॥ मूढमाई पेढाल पुतर रिख, पोटिल विहल अभिराम जी ॥ प्र० ॥ ८० ॥ धन्नानी रीतें ए नवही, करि करणी श्रीकार जी ॥ अनुत्तरोववाई सूत्रके मांही, दाख्यो छे विस्तार जी ॥ प्र० ॥ ८१ ॥ धन सुवाहु भद्र नंदी रिख, सुजात सुवासव धीर जी ॥ जिनदास धनपति माहावल जी, भद्रनंदी गंभीर जी ॥ प्र० ॥ ८२ ॥ महचंद वरदत्त ए दश मुनिवर, पूरव दान प्रभाव जी ॥ ऋद्धि संपत्ति पाया अति सुंदर, संजम लियो चित्त चाव जी ॥ प्र० ॥ ८३ ॥ केइक तिण भव मुगति सिधाया, केइ पंद्रा भव धार जी ॥ मुगतिसिरी वरशे वडभागी, सुखविपाक अधिकार जी ॥प्र०॥८४॥ पउमादिक दश श्रेणिक पोत्रा, वीर जिनेश्वर पास जी ॥ दीक्षा लेई स्वर्ग सिधाया, पामशे अविचल वास जी ॥ प्र० ॥ ८५ ॥ निखढादिक वलभद्रजीका नंदन, वाराही गुणवंत जी ॥ पचास पचास त्यागि अंतउर, सर्वार्थसिद्ध पोहंत जी ॥ प्र० ॥८६॥ सूत्र निरावलियानीमांही, भाख्या भाव जिनंद जी ॥ एकावतारी छे रिख सारा, टालशे भवदुःख फंद जी ॥ प्र० ॥ ८७ ॥ दो मासा सुवर्णकी इच्छा, आई तृष्णा अपार जी ॥ समतार्थी केवल पद पाया, धन कपिल अणगारजी ॥ प्र० ॥ ८८ ॥ धन वलि नेमी राजऋषीश्वर, त्यागी रमणी हजार जी ॥ इंद्रसूं प्रति उत्तर कीना,

पाया भवजल पार जी ॥ प्र० ॥ ८९ ॥ हरिकेशी चित्तमुनि गुण-सागर, संजयति ऋषिराय जी ॥ गर्दभाली क्षत्री राजऋषि धन, दशारण भद्र कहाय जी ॥ प्र० ॥ ९० ॥ करकंडू दुमुह नमी राजा, निग्गाई एह चार जी ॥ एक समय चउ संयम धार्यो, एक समे भवपार जी ॥प्र०॥९१॥ माहाबल मृगापुत्र मुनीश्वर, मुनि अनाथी जाण जी ॥ समुद्रपाल प्रतिपाल दयानिधि, रहे नेमी उजमाल जी ॥ प्र० ॥ ९२ ॥ केशी गौतम चर्चा कीनी, जय विजय घोष रसाल जी ॥ गर्गाचार्य उत्तराध्ययनें, मेल्यो शिष्य जंजाल जी ॥ प्र० ॥ ९३ ॥ धन्ना शालिभद्र रिख जोडी, तडके तोड्यो नेह जी ॥ मास मास तप धारण कीनो, त्यागी ममता देह जी ॥ प्र० ॥ ९४ ॥ आठ अंतेउर रातें परण्या, सोनैया निन्याणुं कोड जी ॥ दिन उगा लियो संजम भावें, पांचशें सत्तावीश जोड जी ॥ प्र० ॥ ९५ ॥ ढंढणऋषि लियो अभिग्रह दुःकर, चूर्यां कर्म करूर जी ॥ खंधक ऋषिनी खाल उतारी, क्षमा करी भरपूर जी ॥ प्र० ॥ ९६ ॥ खंधक ऋषिना शिष्य पांचशें, पील्या घाणी मांय जी ॥ क्षमा करि केवल पद पाया, मुगति गया मुनिराय जी ॥ प्र० ॥ ९७ ॥ थूलिभद्र अरणिक सिज्झंभव, श्रीजिन आज्ञा मांय जी ॥ वरत्या वरते ते सहु मुनिवर, थूणतां पातक जाय जी ॥ प्र० ॥ ९८ ॥ मरुदेवी गज होदे पाम्या, निर्मल केवल ज्ञान जी ॥ ब्राह्मी सुंदरी चंदनबाला, ध्यायुं शूकल ध्यान जी ॥ प्र० ॥ ९९ ॥ राजेमती द्रौपदी सुभद्रा, सीता कौशल्या जाण जी ॥ मृगावती अंजना मृगलेखा, मलया शीलनी खाण जी ॥ प्र० ॥ १०० ॥ चेलणा सुज्येष्ठा शिवा कुंती, मयणरेहादिक जेह जी ॥ संकट पडिया शीलज राख्युं, आण्यो संजम नेह जी ॥ प्र० ॥ १०१ ॥ इण चोवीशी मांही जिनना, मुनिवरनो परिवार जी ॥ लाख अठ्ठाविश उपर जाणो, अडतालीस हजार जी ॥ प्र० ॥ १०२ ॥ श्रीजिनवर ना

शासनमांहि, केवली थया अपार जी ॥ साधु साधवी थया असंख्या, नामथकी जयकार जी ॥ प्र० ॥ १०३ ॥ जघन्यपदें दोय सहस्र कोडी, उत्कृष्ट पृथक् सहस्र कोड जी ॥ वर्तमान जे वर्त्ते मुनिवर, जग माया सब छोड जी ॥ प्र० ॥ १०४ ॥ पंच भरत पंच एरवय जाणो, पंच महाविदेह मझार जी ॥ अढाई द्वीपके मांही वरते, सत्तावीश गुण धार जी ॥ प्र० ॥ १०५ ॥ तप जप साधे धर्म आराधे, बालक वलि वृद्ध संत जी ॥ ममता टाले समता झाले, पाले संजम खंत जी ॥ प्र० ॥ १०६ ॥ एहवा मुनिना जे गुण गावे, मुख जयणा सुविचार जी ॥ पाप पलावे संपत आवे, कटे कर्मको खार जी ॥ प्र० ॥ १०७ ॥ इम जाणी भवियण नित भणजो, थावे शुद्ध परिणाम जी ॥ ओगणीशें सेंतीस माहावदि आलम, तिलोकरिख कीया गुणग्राम जी ॥ प्र० ॥ १०८ ॥ अधिको ओछो जो जोडाणो, मिच्छामि दुक्कडं सोय जी ॥ पंच परमेष्टी सरणो मुझने, मनवंछित फल जोय जी ॥ प्र० ॥ १०९ ॥ कलश ॥ अरिहंत सिद्ध आचार्य त्रीजा, उपाध्याय अणगार ए ॥ मति श्रुत रिख अवधि ज्ञानी, मनपर्यव सुखकार ए ॥ केवलज्ञानी लब्धि धारक, चारित्र पंच प्रकार ए ॥ तिलोकरिख कहे वर्त्या वर्त्ते, वंदूं वार वार ए ॥ सदा देजो शिवसुख सार ए ॥ इति श्रीतिलोकरिखजी महाराज कृत मुनि गुण मंगलमाला संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीगौतमस्वामि इंद्रभूतिजीको रास प्रारंभः ॥

॥ सिद्धचक्रजीने पूजो रे भविका, ॥ ए देशी ॥ प्रणमुं श्रीवर्धमान सुहंकर, सतगुरु शीश नमाउं ॥ ज्येष्ट शिष्य श्रीगौतम स्वामि, शुधभावें गुण गाउं रे ॥ भविका, गोयम गणधर वंदो, भव भव दुःख निकंदो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥१॥ गोवर गाम आराम मनोहर, वसुभूति विप्र जाणो ॥ तस घर प्रथ्वी नारि सुलक्षण, शीलगुणें मृदु वाणो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥२॥ एकदिन सुखसिज्जामांहि

सूती, इंद्रभवन झलकंतो ॥ दीठां स्वप्न हरख अति पामी, कंतसुं कह्यो विरतंतो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ३ ॥ सवा नवमास पूरण थया जनम्या, दान मान बहु कीनो ॥ इंद्रभुवन देख्यो तिण कारण, इंद्रभूति नाम दीनो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥४॥ रूप अनुपम कनकसी काया, झलक झलक तन दमके ॥ पंच धावें करि वध्या दिन दिन सो, दुशमन देखीने चमके रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ५ ॥ चार वेद छ शास्त्र सो भणीया, अरथ तरक विधि सारी ॥ चउदे विद्या निधान सो पंडित, विस्तरी महिमा सो भारी रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ६ ॥ मध्य पापापुर सोमल ब्राह्मण, यज्ञ करण सो बुलाया ॥ अग्निभूति वायुभूति संगें, अति आडंबरें आया रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ७ ॥ विद्या पात्र छात्र नर संगें, एक एकने लारें ॥ पांच पांचशें आया विचक्षण, यज्ञ मांड्यो तिणवारें रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ८ ॥ श्री महावीर अति धीर गुणातम, तप कियो दुःकर कारी ॥ ऋजुवालुकानदि तीर छठ तपस्या, गोदुज आसण करारी रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ९ ॥ वैशाख शुद्ध दशमी दिन जाणो, ध्यान शुकल मन ध्यायो ॥ परम नरम पणे करम भरमकूं, टालि केवल पद पायों रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ १० ॥ मध्य पापापुरि वाहिर पधार्‍या, केवल महोत्सव काजें ॥ इंद्र चोसठ मिल आया उमंगसूं, त्रिगडा तणी विधि साजे रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ११ ॥ तिण अवसर चार जातिना आवे, देव देवी केइ कोडी ॥ अमर विमाणसूं अंवर छायो, सेवा करे कर जोडी रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ १२ ॥ यज्ञ उपर थई देवता जावे, इंद्रभूति तव वोले ॥ यज्ञ लगें आई किहां जावे, किणे पाड्या सुर भोले रे ॥ भ० ॥ गो० ॥१३॥ एटले कोई कहे पुर वारे, आया छे दीनदयाला ॥ त्रिसलानंद जिनंद दिवाकर, खटकाया प्रतिपाला रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ १४ ॥ तेहणा दरिसण काजें असुर सुर, आया छे इहां चलाई ॥ इंद्रभूति इम सुणि जन वाणी, आणे मान अकडाई रे ॥

भ० ॥ गो० ॥ १५ ॥ मुझसूं कवण अधिक जगमांई, विद्यागुण बलधारी ॥ इंद्रजालसूं सुर वश कीधा, आडंबर रच्यो भारी रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ १६ ॥ मुझ आगल सो कदि नही ठेरे, इम सोची तिण वारें ॥ चेला पालखी मान धरीने, पांचशें छात्र परिवारें रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ १७ ॥ समोसरण तणी देखी रचना, मनमांही तास विचारे ॥ एसीकलाई नहि मुझमांहि, वश किम आवशे ह्मारे रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ १८ ॥ पाछो फिरूं तो निंदना थावे, पगपग शोच घणेरो ॥ देख्या श्री जिनराज नयणसूं, विस्मय थया बहुतेरो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ १९ ॥ हरि हर ब्रह्मा नहिं रवि इंदर, दिखे प्रताप सवायो ॥ इणसूं विवाद करी नहि जीतूं, नाहक में चल आयो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २० ॥ साहामा उभा अणबोला रह्या तव, श्री जगदीश उच्चारे ॥ इंद्रभूति सुखें आया चलाई, तव मनमें सो विचारे रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २१ ॥ दिनकरनें सब जाणे जगतमें, तिम मुझ नाम ए जाणे ॥ पण मुझ मन शंका जो निवारे, तो सवि भाव पिछाणे रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २२ ॥ परमेश्वर कहे तुझ चित्त शंका, वेदमे तीन दकारो ॥ दया दान दमणो इंद्रिय मन, तत्त्व शुभ एह विचारो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २३ ॥ जीव छे निश्चें ए त्रिहुं पदसें, वेद साक्षी इण न्यावे ॥ इम सुणी पंचसयां परिवारें, संजमको पद ठावे रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २४ ॥ अग्निभूति वायुभूति पण आया, संजम लियो त्रिहुं भाई ॥ त्रिपदि ज्ञान लब्धि थइ परगट, गणधर पदवी पाई रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २५ ॥ छठ छठ तप निरंतर करणी, वरणवी सूत्र मझारे ॥ च्यार ज्ञान चउद पूरवधर, उकड्ड आसण धारे रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २६ ॥ रात दीवस प्रभु सेवना कीधी, पूछया प्रश्न अपारो ॥ चर्चा वाद विषे अति कर्डा, कीनो अनो उपगारो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २७ ॥ एक दिवस श्री गोयम गोत्रे, प्रथम में दिक्षा धारी

॥ मुझने केवल ज्ञान न उपनो, थया चिंतातुर भारी रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २८ ॥ वीर प्रभु कहे गोयमसेंती, आगें आपण रह्या भेला ॥ लहुड वडाईकी रीतज होती, इहां पण थया तुमें चेला रे॥भ०॥गो० ॥ २९ ॥ अब इण भवके आंतरे आपण, थाल्यां बरोबरी दोई ॥ मोहनी किह्लो जित लेवो थें, कमी रहे नहि कोइ रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ३० ॥ एम सुणी हिये हर्ष घणेरो, इंद्रभूति मन आयो ॥ धन धन अंतरजामी दयानिधि, मुझ पर प्रेम सवायो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ३१ ॥ लब्धिनिधि श्री गौतमस्वामी, गृहवासें रह्या पचासो ॥ त्रीस वरस छद्मस्थपणामें, प्रभु सेव्या उल्लासो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ३२ ॥ कार्तिक वदि अमावसनी रात्रें, श्री जिन मुक्ति सीधाया ॥ गौतमस्वामीनें, केवल उपनो, इंद्र महोत्सव भणी आया रे ॥भ०॥गो० ॥ ३३ ॥ बारा वरष केवल पदमांही, श्री जिनधर्म दीपायो ॥ होइ अजोगी मुक्ति सिधाया, परम मंगल पद पायो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ३४ ॥ बाणुं वर्षको सर्व आउखो, जगमें कीर्त्ति सवाई ॥ गोतम नामथी रोग न व्यापे, सोग न आवे कदाइ रे ॥ भ० ॥गो०॥ ३५ ॥ वधबंधन उच्चाटण कामण, जंत्र मंत्र नही चाले ॥ अरि करि हरि भय भागे नामथी, दुशमनको गर्व गाले रे ॥भ० ॥ गो० ॥ ३६ ॥ गौतम नामसूं विघन विनासे, चोर चरड नहि गंजे ॥ गौतमनामसुं ताव तेजारी, दुःख बिमारी सो भंजे रे ॥ भ० ॥ गो० ॥३७॥ गौतम नामसुं हिरि सिरि संपति, रिद्ध सिध्द बहु आवे ॥ पुत्र परिवार सज्जन सुख शाता, जो समरे शुध्द भावें रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ३८ ॥ गग्गा गो कामधेनु सुखदायी, तत्ता सुरतरु जाणो ॥ मम्मा मणि चिंतामणिसेंती, गोतम नाम वखाणो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ३९ ॥ ओगणीशें अडातिश मृगशिर शुद्धकी, पंचमी तिथि रविवारो ॥ तिलोक रिखजी कहे गोयम प्रभुने, होजो सदा नमस्कारो रे ॥ भ० ॥ ४० ॥ इति गौतम स्वामीको रास संपूर्ण ॥

॥ अथ चोविश जिनवरका स्तवन प्रारंभः ॥

॥ राग प्रभाती ॥ प्रात उठी चोविश जिनवरको, समरण कीजें भाव धरी ॥ प्रा० ॥ रिखभ आजित संभव अभिनंदन, सुमति कुमति सव दूर हरी ॥ पद्म सुपास चंदा प्रभु ध्यावो, पुप्पदंत हण्या कर्म अरि ॥ प्रा० ॥ १ ॥ शीतल जिन श्रेयांस वासुपूज्य, विमल विमल बुद्धि देत खरी ॥ अनंत धर्म श्री शांति जिनेश्वर, हरियो रोग असाध्य मरी ॥ प्रा० ॥२॥ कुंथु अर मल्लि मुनि सुव्रतजी, नमी नेमि शिव रमणी वरी ॥ पारसनाथ वर्द्धमान जिनेश्वर, केवल लह्यो भव ओघ तरी ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ तुम सम नहिं कोइ तारक दूजो, इम निश्चें मनमांहे धरी ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, मुक्तिश्री दो प्रभु मेहेर करी ॥ प्रा० ॥ ४ ॥

॥ अथ द्वितीय पद ॥ राग प्रभाती ॥

॥ समर ले श्री आदिनाथ, अजितनाथ भारी ॥ संभव नाथ जगत तात, चरण वलिहारि ॥ उठि प्रभात समरुं नाथ, वंदणा नित ह्मारि ॥ बोधवीज आथ साथ, सेवा दिजो थारी ॥ उ० ॥ स० ॥ १ ॥ अभिनंदन दुःख निकंदन, सुमति सुमति धारी ॥ पदम सुपास चंदा प्रभु, आशा पूरो सारी ॥ उ० ॥ स० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस नाथ, वासुपूज्य जहारी ॥ विमल अनंत धर्म शांति, मेटो सब बिमारी ॥ उ० ॥ स० ॥ ३ ॥ कुंथु अरह मल्लिनाथ, कर्म कियां छारी ॥ मुनिसुव्रत विशमा प्रभु, करुणाके भंडारी ॥ उ० ॥ स० ॥ ४ ॥ एकविशमा नमिनाथ वंदूं, सदा सुखकारी ॥ रिष्टनेमी दया काज, तजी राजुल नारी ॥ उ० ॥ स० ॥ ५ ॥ बचाव्या नाग नागिणी प्रभु, परमेष्टी उच्चारी ॥ परचा पूरण पारसनाथ, परउपगारी ॥उ०॥स०॥६॥ महावीर धीर धार, कर्मकूं विदारी ॥ केवल ज्ञान भाव भया, थाप्यां तीर्थ चारी ॥उ०॥स०॥ ७ ॥ तारि भव्यजीव गया, मुक्तिके मझारी ॥ तिलोकरिख वीनवे प्रभु, वीनती ल्यो धारी ॥ उ० ॥स०॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय पद प्रारंभः ॥

॥ गौतम समुद्र, सागर सुगंभीर ॥ ए देशी ॥ श्री आदिआदीश्वरू, परम परमेश्वरू, नमत सुरेश्वरू, हित धरी ए॥ अजित रिपुजित ए, जगत आदित ए, प्रसिद्ध जसकीर्त्ति, शिववधु वरी ए॥ १॥ श्री संभव साम ए, सकलगुणधाम ए, प्रणमुं शिर नाम, सेवा करूं ए॥ अभिनंदन ईश ए, जय जगदीश ए, रिपुदल पीस, केवलवरू ए ॥ २॥ सुमति कुमति हरो, कोशसुकृत भरो, तुम तणो आशरो, मुझ भणी ए ॥ पद्म प्रभु पद्म ए, सुमन सुपद्म ए, द्यो शिव सद्म, प्रभु शिवधणी ए ॥ ३ ॥ वंदूं सुपास ए, अनंतगुणरास ए, पूरो प्रभु आश, सेवक तणी ए ॥ चंदप्रभु वंदियें, दुष्कृत निकंदियें, काटिमोह फंदी, शिरोमणी ए ॥४॥ सुविधि सुबुद्धि धणी, कीर्त्ति जगमें घणी, सेवना तेह तणी, वर सदा ए ॥ दशमा शीतलशिरें, नामथी निस्तरे, हरे संकट, करे संपदा ए ॥५॥ श्रेयांस दयाल ए, परमकृपाल ए, भक्तप्रतिपाल, करुणा करो ए ॥ वासुपूज्य जगतारणा, मंगलकारणा, भविक उद्धारणा, दुःख हरो ए ॥ ६ ॥ विमल विमल मति, करो सुखसंपति, परम पती जती, गुण घणा ए, ॥ अनंतजिनंद ए, अनंतगुण कंद ए, टाले भव फंद, सेवकतणा ए ॥ ७ ॥ धर्म धुरंधरा, राजराजेश्वरा, मेटो मरण जरा, जगपति ए ॥ शांति शांति करो, रोग दूरित हरो, नाथ द्यो आशरो, सिद्धगति ए ॥८॥ कुंथु कुंथु करी, कर्म कुरंग हरी, जिम थइ शिव वरी, जगगुरु ए ॥ अरह गुणसागरू, परम उजागरू, धन करुणागरू, नागरू ए ॥९॥ मल्ली मल्लमारणा, जगतजन तारणा, भक्तसुख कारणा, स्वामिजी ए ॥ मुनिसुव्रत सार ए, करुणाभंडार ए, अमर अविकार, गुणधामजी ए ॥ १० ॥ नमी हित कारणा, अधम उद्धारणा, विघनविदारणा, कर दया ए ॥ रिष्टनेमी पुरा जती, परमकरुणा मती, त्यागी राजुल सती, शिवगया ए ॥ ११ ॥ पारस खारस क्षय, ना

वारस वारसभय, पंचमीगतिगय, जस घणो ए ॥ महावीर गुणधीर ए, जगतजनपीर ए, करो भवतीर, द्यो निजपणो ए ॥ १२ ॥ हुं प्रभुदास ए, करुं अरदास ए, द्यो सिद्धवास, मया करी ए ॥ कहे रिखतिलोक ए, सुदृष्टिविलोक ए, अविचल थोक, द्यो हिरि सिरी ए ॥ १३ ॥ इति संपूर्ण ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ पद प्रारंभः ॥

॥ राग ठुमरी ॥ समर समर जिननाथ समरि ले, भविजन जनम सुधारक हे ॥ वारी स० ॥ १ ॥ रिखभ अजित संभव अभिनंदन, कर्मरिपुके विदारक हे ॥ वारि स० ॥ २ ॥ सुमति पदम सुपास चंदा प्रभु, भवदुःखताप निवारक हे ॥ वारी स० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, छ कायके जीव उगारक हे ॥ वारी स० ॥ ४ ॥ विमल अनंत धर्म शांति नाथजी, सुखसंपति हितकारक हे ॥ वारी स० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रतजी, धर्मको मार्ग उच्चारक हे ॥ वारी स० ॥ ६ ॥ नमी नेमी पारस महावीरजी, हद क्षमा प्रभु धारक हे ॥ वारी स० ॥ ७ ॥ केवल लेइ प्रभु मुक्ति बिराज्या, अजर अमर अविकारक हे ॥ वारी स० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे तार जगतारक, तुम विना नहिं कोई उवारक हे ॥ वारी स० ॥ ९ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम पद प्रारंभः ॥

॥ देशी फागनी ॥ प्रणमो नित नित चोविशजिन सुखदाता ॥ ॥ ए टेक ॥ रिखभ अजित संभव अभिनंदन, तोडदिया मोहनीका ताता ॥ प्र० ॥ १ ॥ सुमति पदम सुपास चंदा प्रभु, विघन टले ज्यांरा गुण गाता ॥ प्र० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, छोड दिया कुटुंबका नाता ॥ प्र० ॥ ३ ॥ विमल अनंत धर्म शांतिनाथ जी, मरिकी मेट दिनी सुखशाता ॥ प्र० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रतजी, जनम मरणका मिटाया खाता ॥ प्र० ॥ ५ ॥

नमी नेमी पारस माहावीरजी, शासननायक जगभ्राता ॥ प्र० ॥६॥ ए चोविश जगदीश दयाला, शिवपुर सुखमें सदाय साता ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे तारो मोय वेगसुं, अचल भक्ति दिजो एहि चाहता ॥ प्र० ॥ ८ ॥ उगणीशें उगणचालीश पोसशुदि चउदश, दियावडीमें गुण किया उलसाता ॥ प्र० ॥ ९ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ पद प्रारंभः ॥

॥ मानव जनम मानव जनम रतन तेनें पायो रे, सतगुरु समझायो ॥ मा० ॥ ए देशी ॥ नित वंदुं नित वंदुं चोवीश जिन देवा रे, चाहुं चरणकी सेवा ॥ नि० ॥ ए टेक ॥ रिखभ अजित संभव सुखकारी, अभिनंदनजी जसधारी रे ॥ प्रभु परम दयाला, काव्या कर्मका जाला, दिया चउगति ताला ॥ नि० ॥ १ ॥ सुमति पदम सुपारस जसवंता, चंद्रवर्ण चंदाप्रभु सोहंता रे ॥ भवताप निवारी, सब शत्रुविदारी, केवलपदधारी ॥ नि० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस जिनंदा, वासुपूज्य मेव्या भवफंदा रे ॥ जगजीवन सामी, प्रभु अंतरजामी, शिवलक्ष्मी पामी ॥ नि० ॥ ३ ॥ विमल अनंत धर्म रिद्धि पाई, शांतिनाथजी शांति वरताई रे ॥ भया परम सोभागी, चक्रीपद ऋद्धि त्यागी, शिववधू अनुरागी ॥ नि० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्ली मल घाया, मुनिसुव्रतजी व्रत ठाया रे ॥ भविजन समझाया, त्रिजक्तका राया, अविचलपद पाया ॥ नि० ॥ ५ ॥ नमी नेमी पारस पुरिसादानी, महावीर सासण पति ठानी रे ॥ हद क्षमा प्रभुधारी, घातिककर्म निवारी, थाप्यां तीरथ चारी ॥ नि० ॥ ६ ॥ ए चोविशजगदीश महंता, सुण लीजो अरजि कृपावंता रे ॥ तुम सरण न आयो, तिणथी दुःख पायो, भयो में अति कायो ॥ नि० ॥ ७ ॥ निरर्थक काल अनंत गमायो, अब हुं तुम शरणें आयो रे ॥ सुधन्याए पिछाणी, जगतारक जाणी, दृढता मन आणी ॥ नि० ॥ ८ ॥ तिलोकरिखजी कहे तिलोकरक्षपद दिजो,

वारस वारसभय, पंचमीगतिगय, जस घणो ए ॥ महावीर गुणधीर ए, जगतजनपीर ए, करो भवतीर, द्यो निजपणो ए ॥ १२ ॥ हुं प्रभुदास ए, करुं अरदास ए, द्यो सिद्धवास, मया करी ए ॥ कहे रिखतिलोक ए, सुदृष्टिविलोक ए, अविचल थोक, द्यो हिरि सिरी ए ॥ १३ ॥ इति संपूर्ण ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ पद प्रारंभः ॥

॥ राग ठुमरी ॥ समर समर जिननाथ समरि ले, भविजन जनम सुधारक हे ॥ वारी भ० ॥ १ ॥ रिखभ अजित संभव अभिनंदन, कर्मरिपुके विदारक हे ॥ वारि स० ॥ २ ॥ सुमति पद्म सुपास चंदा प्रभु, भवदुःखताप निवारक हे ॥ वारी स० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, छ कायके जीव उगारक हे ॥ वारी स० ॥ ४ ॥ विमल अनंत धर्म शांति नाथजी, सुखसंपति हितकारक हे ॥ वारी स० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रतजी, धर्मको मार्ग उच्चारक हे ॥ वारी स० ॥ ६ ॥ नमी नेमी पारस महावीरजी, हद क्षमा प्रभु धारक हे ॥ वारी स० ॥ ७ ॥ केवल लेइ प्रभु मुक्ति विराज्या, अजर अमर अविकारक हे ॥ वारी स० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे तार जगतारक, तुम विना नहिं कोई उवारक हे ॥ वारी स० ॥ ९ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम पद प्रारंभः ॥

॥ देशी फागनी ॥ प्रणमो नित नित चोविशजिन सुखदाता ॥ ॥ ए टेक ॥ रिखभ अजित संभव अभिनंदन, तोडदिया मोहनीका ताता ॥ प्र० ॥ १ ॥ सुमति पद्म सुपास चंदा प्रभु, विघन टले ज्यांरा गुण गाता ॥ प्र० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, छोड दिया कुटुंबका नाता ॥ प्र० ॥ ३ ॥ विमल अनंत धर्म शांतिनाथ जी, मरिकी मेट दिनी सुखशाता ॥ प्र० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रतजी, जनम मरणका मिटाया खाता ॥ प्र० ॥ ५ ॥

नमी नेमी पारस माहावीरजी, शासननायक जगभ्राता ॥ प्र० ॥६॥ ए चोविश जगदीश दयाला, शिवपुर सुखमें सदाय साता ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे तारो मोय वेगसुं, अचल भक्ति दिजो एहि चाहता ॥ प्र० ॥ ८ ॥ उगणीसें उगणचालीश पोसशुदि चउदश, दियावडीमें गुण किया उलसाता ॥ प्र० ॥ ९ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ पद प्रारंभः ॥

॥ मानव जनम मानव जनम रतन तेनें पायो रे, सतगुरु समझायो ॥ मा० ॥ ए देशी ॥ नित वंदुं नित वंदु चोवीश जिन देवा रे, चाहुं चरणकी सेवा ॥ नि० ॥ ए टेक ॥ रिखभ अजित संभव सुखकारी, अभिनंदनजी जसधारी रे ॥ प्रभु परम दयाला, काट्या कर्मका जाला, दिया चउगति ताला ॥ नि० ॥ १ ॥ सुमति पदम सुपारस जसवंता, चंद्रवर्ण चंदाप्रभु सोहंता रे ॥ भवताप निवारी, सव शत्रुविदारी, केवलपदधारी ॥ नि० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस जिनंदा, वासुपूज्य मेट्या भवफंदा रे ॥ जगजीवन सामी, प्रभु अंतरजामी, शिवलक्ष्मी पामी ॥ नि० ॥ ३ ॥ विमल अनंत धर्म रिद्धि पाई, शांतिनाथजी शांति वरताई रे ॥ भया परम सोभागी, चक्रीपद ऋद्धि त्यागी, शिववधू अनुरागी ॥ नि० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्ली मल धाया, मुनिसुव्रतजी व्रत ठाया रे ॥ भविजन समझाया, त्रिजत्तका राया, अविचलपद पाया ॥ नि० ॥ ५ ॥ नमी नेमी पारस पुरिसादानी, महावीर सासण पति ठानी रे ॥ हद क्षमा प्रभुधारी, घातिककर्म निवारी, थाप्यां तीरथ चारी ॥ नि० ॥ ६ ॥ ए चोविशजगदीश महंता, सुण लीजो अरजि कृपावंता रे ॥ तुम सरण न आयो, तिणथी दुःख पायो, भयो में अति कायो ॥ नि० ॥ ७ ॥ निरर्थक काल अनंत गमायो, अब हुं तुम शरणें आयो रे ॥ सुधन्याए पिछाणी, जगतारक जाणी, दृढता मन आणी ॥ नि० ॥ ८ ॥ तिलोकरिखजो कहे तिलोकरक्षपद दिजो,

सेवकपर महेर करीजो रे ॥ निजविरुद्विचारो, सुनजर निहालो, भवपार उतारो ॥ नित० ॥ १ ॥ इति संपूर्ण ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम पद प्रारंभः ॥

॥ ठाकुर भलें विराज्या जी ॥ ए देशी ॥ आरतिसां छे ॥ साहिब भलें विराज्या जी, चोवीशे महाराज, मुक्तिमें भलें विराज्या जी ॥ ए टेक ॥ रिखभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम सुपास ॥ चंदा प्रभुजी ने सुविधि जिनेश्वर, शीतल द्यो शिववास ॥ सा० ॥१॥ श्रीश्रेयांस वासुपूज्य समरो, विमल विमल मतिवंत ॥ अनंतनाथ प्रभुधर्म जिनेश्वर, शांति करो श्रीसंत ॥ सा० ॥ २ ॥ कुंथुनाथ प्रभु करुणा सागर, अरहनाथ जगदीश ॥ मल्लिनाथ श्रीमुनिसुव्रतजी, नित्य नमाउं शीश ॥ सा० ॥ ३ ॥ एकविशमा नमिनाथ निरुपम, रिष्टनेमि जगधार ॥ तोरणसें पाछा फिर्या प्रभु, शिवरमणी भरतार ॥ सा० ॥ ४ ॥ पारस पारस सरिखा प्रभु, निरधारसका नाथ ॥ वर्धमान सासणका सामी, प्रणमूं जोडी हाथ ॥ सा० ॥ ५ ॥ तुम विन पायो दुःख अनंता, जनम मरण जंजाल ॥ तिलोक रिख कहे जिम तिम करिने तारो दीनदयाल ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति संपूर्ण ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम पद प्रारंभः ॥

॥ राग वसंत ॥ शांति चरणारी जाउं वलिहारी ॥ शां० ॥ ए देशी ॥ झेलो वंदणा नाथ हमारी, तुमारे चरणकी वलिहारी ॥ ए टेक ॥ रिखभ अजित संभव अभिनंदन, ॥ सुमतिपदमसुखकारी ॥ श्रीसुपार्श्व चंदाप्रभु समरो, जगनायक जसधारी, प्रभुजी पूरण उपगारी ॥ झे० ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, विमल अनंत धर्म धारी ॥ शांतिजिनंद सुख कंद जगतसें, मेट दीनी सव मारी, हरो मेरी विपत विमारी ॥ झे० ॥ २ ॥ कुंथू अर मल्लि मुनि-सुव्रतजी, नमी नेमी सुविचारी ॥ तोरणसें पाछा फिर आया, छोडिकें राज दुलारी, नाथ तुम करुणाभंडारी ॥ झे० ॥ ३ ॥ वेवारस

के वारस पारस, पंचपरमेष्ठी उच्चारी ॥ नागनागिणी जलत बचाया, कीना सुर अवतारी, महिमा जगमें अति थारी ॥ झे० ॥ ४ ॥ शासन नायक वीर जिनेश्वर, हद्क्षमाप्रभुधारी ॥ केवल ले प्रभु धर्म बतायो, सूत्र चारितर सारी, तीरथ थाप्यां प्रभु चारी ॥ झे० ॥ ५ ॥ अण-सण लेई प्रभुजोग त्याग कर, पहूंता हे मुक्तिमझारी ॥ अनंत सुख-मांही जाय विराज्यातो, नीरंजननीराकारी, रह्या लोकालोक निहारी ॥ झे० ॥ ६ ॥ मोहमायामांहि उलज रह्यो में, पायो हुं दुःख अपारी ॥ तुम शरणाविन चउगति भटक्यो, धर्मकी बुद्धि विसारी, शीख सतगुरुकी न धारी ॥ झे० ॥ ७ ॥ अशुभकर्म कछु दूर भयासूं, वाणी लगी प्रभु प्यारी ॥ अधम उद्धारण विरुद् सुणिने, सरणो लियो सुविचारी, सार करजो प्रभु ह्मारी ॥ झें० ॥ ८ ॥ मुझ सरिखो नहिं दीन जगतमें, तुम सरखो दातारी ॥ जिम तिम करि भवपार उतारो, या मांगु रिझवारी, अरज लीजो अवधारी ॥ झे० ॥ ९ ॥ ओगणीशें अडतिश माघकृष्ण पक्ष, त्रीज तिथी शनिवारी ॥ देश दक्षिण आवलकोटि पेठमें, जोड करी हितकारी, तिलोक रिख कहे सुविचारी ॥ झे० ॥ १० ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ अथ चोवीश तीर्थंकर स्तवन प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम श्री रिखभजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ इण सरवरियारी पाल, उभी दोय नागरी ॥ मारा लाल ॥ उभी दोयनागरी ॥ ए देशी ॥ श्री सतगुरु सुपसाय, जाण्या शिव-पुर धणी माराराज ॥ जाण्या० ॥ श्री मरुदेवीना नंद, नाभि कुल गुणमणी ॥ मा० ॥ ना० ॥ त्रिभुवन नायक देव, पायकनी वीनती ॥ मा० ॥ पा० ॥ मोह रिपु भय आण, सरण ग्रह्यो शुभमति ॥ मा० ॥ स० ॥ १ ॥ तार तार मुझ तात, वात कहुं मनतणी ॥ मा० ॥ वा० ॥ जनम मरण जंजाल, आवे घवरावणी ॥ मा० ॥ आ० ॥ तारया जीव अनंत, संत सुगुणा घणा ॥ मा० ॥ सं० ॥

उद्धरिया अपराधि, महा अवगुण तणा ॥ मा० ॥ मा० ॥ २ ॥ तुम वृद्ध दीन दयाल, हुं वाल दयामणो ॥ मा० ॥ हुं० ॥ क्यों न करो मुझ सार, विसार्यो किम घणो ॥ मा० ॥ वि० ॥ जो तारो गुणवंत, अचरिज छे नही ॥ मा० ॥ अ० ॥ जो मुझ सरिखो दीन, उद्धार्या जस सही ॥ मा० ॥ उ० ॥ ३ ॥ आपद् पडियो आज, आयो शरणें वही ॥ मा० ॥ आ० ॥ ओर न तारणहार, ते माटें में कही ॥ मा० ॥ ते० ॥ मुझ सरिखो कोइ दीन, प्रभु तुझ सारिखो ॥ मा० ॥ प्र० ॥ लाधें नहिं जगमांय , कियो में पारखो ॥ मा० ॥ कि० ॥ ४ ॥ तुंहिज तारशे नेट, पहिला पाछें सही ॥ मा० ॥ प० ॥ सेवक करे पोकार, वाहिर शोभा नहीं ॥ मा० ॥ वा० ॥ समर्थ छो तुमें स्वामि, जगत तारण भणी ॥ मा० ॥ ज० ॥ हवे मुझ वेला केम, आना कानी घणी ॥ मा० ॥ आ० ॥ ५ ॥ भावे तार म तार, महारुं शुं जावशे ॥ मा० ॥ म० ॥ पण तुम तारक विरुद्, किणी विध आवशें ॥ मा० ॥ कि० ॥ कहेशो ए छे अजाण, आवे नहिं वीनती ॥ मा० ॥ आ० ॥ मावित्र विना कहो कोण, शिखावे ते रीती ॥ मा० ॥ शि० ॥ ६ ॥ शिखावो मुझ सोय, कृपा करि नाथ जी ॥ मा० ॥ कृ० ॥ विण मनाया नही छोडुं, तुमारो साथ जी ॥ मा० ॥ तु० ॥ करुणा करी मुझ काढ्यो, नरक निगोदशुं ॥ मा० ॥ न० ॥ आव्यो आप हजूर, तारो हवे मोदशुं ॥ मा० ॥ ता० ॥ ७ ॥ गजहोदे निज मात, सुगति मेली खरी ॥ मा० ॥ मु० ॥ भरतने अरिसा भवनें, दीनी केवल सिरी ॥ मा० ॥ दि० ॥ अठाणुं निज पुत्र, जूझंता वारिया ॥ मा० ॥ जू० ॥ वाहुवल गजमान, थकी ते ऊतारीया ॥ मा० ॥ थ० ॥ ८ ॥ वीतराग समभाव, छो समतासागरु ॥ मा० ॥ छो० ॥ म्हारो थारो नही आप तो, तारो उजागरु ॥ मा० ॥ ता० ॥ मातपिताथी जेम,

बालक आडो करे ॥ मा० ॥ बा० ॥ रिखभ जिनंदसुं तेम, तिलोकरिख उच्चरे ॥ मा० ॥ तिलो० ॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय अजित जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ मेरी मेरी करतां जन्म गयो रे ॥ ए देशी ॥ श्री श्री अजित अरज सुणो मेरी, टालो दुःखदायक अष्ट वेरी ॥ श्री० ॥ ए आंकणी ॥ जिहां जाउं तिहां संगज आवे, निज गुण संपति दूर भगावे ॥ श्री० ॥ ज्ञान ग्रहूं तब आलस आवे, भणीयो सो छिनमें विसरावे ॥ श्री० ॥ १ ॥ नींद आवे धर्म कारजमांही, सुख दुःख वेदनासुं डर पाइ ॥ श्री० ॥ देव गुरु शुद्ध दाय न आवे, मिथ्यामोहनी अधिक भमावे ॥ श्री० ॥ २ ॥ आयुष्य बंधण छिन छिन छीजे, अटल अवगाहन केम लहीजें ॥ श्री० ॥ किहांइक उच्च नामपद आपे, किहांइक नीच नाम करि थापे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ किहांइक शुभ सोभाग बढावे, किहांइक अपजस नाम फेलावे ॥ श्री० ॥ अमूर्तिक पदकी करे हाणी, विपत्ति इम मुझने अधिकाणी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ किहांइक उच्चगोत्रमांही मेले, किहांइक नीच गोत्रविषे ठेले ॥ श्री० ॥ अगरु अलघु रूप करे दूरो, कायर मोय कियो भरपूरो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ दान लाभ अंतराय दे भारी, भोगोपभोग वीरज परिहारी ॥ श्री० ॥ शक्ति अनंत सो दीनी लुकाइ, दुःख देवे मुझ चउगति मांई ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जितशत्रुसुत विजया देके नंदा, तुम शरणे आयो गुणच्छंदा ॥ श्री० ॥ शत्रु सकल सो करियो निकंदा, तिलोकरिख भव भव तुम वंदा ॥ श्री० ॥ ७ ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय संभवाजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ श्री सीमंधर पाय नमुं हो प्रभु जी ॥ ए देशी ॥ संभव जिन सुणो वीनती हो प्रभुजी, उपगारी जगधार ॥ कियो उपगार थें लोकमें हो ॥ प्र० ॥ सुखी कियां नर नारि ॥ साहिब मानजो हो, प्रभुजी सेवकनी अरदास ॥ १ ॥ ए टेक ॥ ज्ञान ध्यान तप

जप क्रिया हो ॥ प्र० ॥ संजम मारग बुद्ध ॥ असंभव कर्म काल शुं हो ॥ प्र० ॥ सो करो संभव शुद्ध ॥ सा० ॥ २ ॥ तुम विन संभव कुण करे हो ॥ प्र० ॥ कुण ऊतारे पार ॥ दीनदयाल दया करो हो ॥ प्र० ॥ तुम छो जगदाधार ॥ सा० ॥ ३ ॥ शरणें आयो आपके हो ॥ प्र० ॥ पतित उद्धारण आप ॥ जाणो घट घट वातडी हो ॥ प्र० ॥ दिजो कर्मबंध काप ॥ सा० ॥ ४ ॥ तुं अंतर धन माहरो हो ॥ प्र० ॥ भव जल तारण जहाज ॥ मुझ अवगुण मत झांखजो हो ॥ प्र० ॥ बांहे ग्रह्याकी लाज ॥ सा० ॥ ५ ॥ एक गामनो अधिपति हो ॥ प्र० ॥ करे प्रजानी सार ॥ तुम त्रीजगना ईश्वरू हो ॥ प्र० ॥ क्यों न करो भवपार ॥ सा० ॥ ६ ॥ नृप जितारथ कुलतिलो हो ॥ प्र० ॥ सेना देवीना नंद ॥ तिलोकरिख करे विनती हो ॥ प्र० ॥ देजो शिव सुख कंद ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥३॥

॥ अथ चतुर्थ अभिनंदनजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ कुविसन मारग माथे धिक धिक ॥ ए देशी ॥ अभिनंदन वंदन नित करियें, धरियें आतम ध्यान हो ॥ डरियें मिथ्या देव सकलथी, जे वश पडिया तोफान हो ॥ अ० ॥ १ ॥ शंख चक्र धनुष कर धारी, माता विषय कषाय हो ॥ नित्य रहे राता रामा रमणमें, तस शरणें शुं थाय हो ॥ अ० ॥ २ ॥ कोइक दंड कमंडल धारी, निज धी सुंइ घरवास हो ॥ मृगछाला माला मोजीयुत, ते किम दे शिववास हो ॥ अ० ॥ ३ ॥ हस्त कपाल व्याल भूषण युत, रुंढमाल गलमांय हो ॥ गिरिजा भोग मगन निशिवासर, ते किम आवे दाय हो ॥ अ० ॥ ४ ॥ कोइक महिप अजा भख मागे, कोइक मादिरा पान हो ॥ राग द्वेष मद मोहमें लीना, ते किम दे निर्वाण हो ॥ अ० ॥ ५ ॥ आप तरे नहिं भवसागरथी, ते नहिं तारणहार हो ॥ पाहण नाव तरे किण विध करि, सोचो हिरदे विचार हो ॥ अ० ॥ ६ ॥ संवरराय सिद्धारथ नंदन, परम अदाप्री

देव हो ॥ तिलोकरिख अलि गुणरस लीनो, प्रभु चरणांबुज सेव हो ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम सुमतिजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ कुंथु जिनराज तुं एसो ॥ ए देशी ॥ रेखतामें ॥ सुमति जिनराज हे प्यारा, खलकमां सुर मोहनगारा ॥ एता दिन भर्ममें भूला, चतुर्गति हिंडोलमें झूला ॥ सु० ॥ १ ॥ बावल में बोया आम जानी, काचटुक लिया रत्न मानी ॥ जहेर के पिया अमृत जेसा, रत्नकुं देखा कंकर तेसा ॥ सु० ॥ २ ॥ एसी भर्म बुद्धि रहि मेरी, प्रतित नहिं रखी दिल्ल तेरी ॥ किया मेने कर्म खुब खोटा, सह्या में नर्क विच सोटा ॥ स० ॥ ३ ॥ चढी मोहे बागीकी मस्ती, उस्सें मेरि रही अकल खस्ती ॥ पस्ती विन पाया में तस्ती, जहान मेरी लही पूर कस्ती ॥ सु० ॥ ४ ॥ मेरा दिल बहोत घबराया, तुमारे आसरे आया ॥ तकसिरी माफ कर दे मेरी, देख तुं लायकी तेरी ॥ सु० ॥ ५ ॥ अर्जकी मर्ज तुम जाणो, प्रभु अब कायकूं ताणो ॥ अब तो महेरबानगी करणां, मिटा दो जन्म और मरणां ॥ सु० ॥ ६ ॥ मेघरथ भूप फरजंदा, मंगला मातके नंदा ॥ तिलोकरिख सेव चित्त चहाता, अचल मोय देनां सुखशाता ॥ सु०॥७॥इति॥५॥

॥ अथ षष्ठ पद्मप्रभजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ श्री जिन मुझने पार उतारो ॥ ए देशी ॥ पद्म प्रभु भव-जल पार उतारो, में सरणो लियो चरणांरो ॥ ए टेक ॥ पद्म लक्षन प्रभु पगमांहि झलके, उपमा पदम उच्चारो ॥ उत्पन्न होवे पंकथकी पंकज, जलसुं लहे विस्तारो ॥ प० ॥ १ ॥ कामभोग सो कादव सरिखा, फरमाया सूत्र मझारो ॥ कर्मजलें वृद्धि पाया प्रभुजी, गोत्रतीर्थंकर सारो ॥ प० ॥ २ ॥ दोनुइ छोड तोड सब बंधन, वरी शिववधू सुखकारो ॥ तिम तुम किंकर पर करो करुणा, जुगमें ए दोइ नित्रारो ॥ प० ॥ ३ ॥ तुमविन कोइ दूसरो जगमें, दिसे

नहि तारणहारो ॥ भक्तवत्सल भगवंत दयानिधि, अविनाशी अविकारो ॥ प० ॥ ४ ॥ भूख्याने भोजन जल तश्याने, रोगी औषध उपचारो ॥ तिम मुझ मनमां निश्चें निरंतर, आप तणो आधारो ॥ प० ॥ ५ ॥ आशानिराश करे नहिं दाता, मंगण जो आवे द्वारो ॥ वंछित दायक भक्तसहायक, तुम छो परम दातारो ॥ प० ॥ ६ ॥ श्रीधर नराधिप सुसमा तनय प्रभु, जीवन प्राण आधारो ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम मुझने, द्यो निज पद गुण थारो ॥प०॥७॥इति॥६॥

॥ अथ सप्तम सुपार्श्वजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ बंधव बोल मानो हो ॥ ए देशी ॥ आशा पुरो सुपासजी, नित भावना भाउं हो ॥ चरण कमल सेवा सदा, दरिसण चित्त चाउं हो ॥ सुपारस आश पूरो हो ॥ १ ॥ तुम गुण जो श्रवणे सुणु, तो पण हरखाउं हो ॥ तुम भय भंजन साहेबा, शरणागतमें बोलाउं हो ॥ सु० ॥ २ ॥ पुष्करावर्त घन धार जूं, सुखवेलि वधाउं हो ॥ मोहणी अंधकार अनादिके, रवि तेम नसाउं हो ॥ सु० ॥३॥ शिवपंथ बतावन तुं प्रभु, जिम नेत्र अगाउं हो ॥ कर्म सघन वन काटवा, फरशी जिम घाउं हो ॥ सु० ॥ ४ ॥ संकट शिला भंजन भणी, जिम वज्र सराउं हो ॥ आशा पूरण सुरतरु, चिंतामणि जिम भाउं हो ॥ सु० ॥ ५ ॥ भवजल तारण तुं प्रभु, निर्यामक नाऊं हो ॥ आधि व्याधिने निवारवा, धनंतर तिम गाउं हो ॥ सु० ॥ ६ ॥ विष्णुपिता नंदा मायना, अंगजने मनाऊं हो ॥ तिलोकरिख कहे इच्छा पूरजो, नित्य शिश नमाउं हो ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टम चंदप्रभ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ कडखानी देशीमां ॥ वंदुं जिनंद श्री चंद प्रभ भावशुं, चरण अरविंद सुख कंद सेवा ॥ गुण मकरंद मन अलि रली गहगहे, लखमणा नंद देवाधिदेवा ॥ वं० ॥ १ ॥ छंड जगरंद कुधंध निकंदके, तोड मोह फंद सो केवल पाया ॥ इंद्र नरेंद्र सुरेंद्र फणींद्रादिक,

आनंद्धर सेव करिने उमाया ॥ वं० ॥ २ ॥ चंद्रपुरी जन्म चंद्रलक्षन चरणमें, वरण पण चंद्र द्रव्य भाव चंदा ॥ पूरण चंद सो वदन झगमग करे, वाणी शीतल सुख अमृत झरंदा ॥ वं० ॥ ३ ॥ विषय कषायको ताप महा प्रबलता, उपशमे जो शुद्ध भाव ध्यावे ॥ ऊपमा देश अविशेष पक्ष शोधतां, संपूर्ण उपमा केम आवे ॥ वं० ॥ ४ ॥ चंद्र सकलंक तस राहु प्रति शत्रुसंग, दिवसें पलाश दल जेम दीसे ॥ तुम निकलंक कर्म राहु दूरें किया, सदा संक्रांति गुण विश्वावीशे ॥ वं० ॥ ५ ॥ भक्तके सहायक घायक कर्मके, त्रिभुवन नायक दुःख हरता ॥ करुणाके सागरु गुण रतना गरु, जगत ऊजागरु सुख करता ॥ वं० ॥ ६ ॥ माहासेन राजिंदके नंदसूं वंदना, तिलोकरिख कहे कर जोडि दोई ॥ एक समे मात्र मुझ मया करी दर्श द्यो, अपर नहिं वांछना रंच कोई ॥ वं० ॥ ७ ॥

॥ अथ नवम सुविधिजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ सिद्धचक्रजीने पूजो रे भविका ॥ ए देशी ॥ सुविधि जिनंदने ध्यावो रे भविका, अजर अमर पद पावो ॥ ए आंकणी ॥ करम हणी केवल पद पाया, थाप्या तीरथ चउ खंती ॥ सयमेव बोध ते पुरुषमें उत्तम, सिंह पुंडरिक गंध दंती रे ॥ भ० ॥ १ ॥ ॥ सु० ॥ लोक उत्तम नाथ सो हितकारक, दीपक रवि जिम जाणो ॥ अभय चक्खु मारग शरण दाता, जितवबोध वखाणुं रे ॥ ॥ भ० ॥ २ ॥ सु० ॥ धर्म अने धर्मदेशना दायक, नायक सारथी सोइ ॥ धरम प्रधान धर्म चक्री सम, भवोदधि दीप ज्युं जोइ रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ सु० ॥ शरणागतने राखण समरथ, ज्ञान दरिसण थिर सेरी ॥ नीवरत्या छद्मस्थपणाथी, जीते जीतावे वैरी रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ सु० ॥ तरे तरावे समझे समझावे, पापने छोडे छोडावे ॥ पूरण ज्ञान दरिसण शिव अचल, रोगरहित सो कहावे ॥ भ० ॥ ५ ॥ सु० ॥ अनंत अक्षय पद बाधा नहिं जिनके, वलि संसारमें

नावे ॥ सिद्धगति नाम शाश्वत स्थानकें, पहूता जिहां मन चावे रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ सु० ॥ सुग्रीव तात रंभा देवी जाया, धन धन अंतरजामी ॥ तिलोकरिख पायक तुमें नायक, वंदूं नित शिर नामी रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ सु० ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ अथ दशम शीतलजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ दयापर दोलत झुक रही ॥ तिजकी ए देशी ॥ शीतलजिन जी शीतल करो, तेरे तन गीयाकी लाय स्वामी ॥ जनम रूपी रूइ विषेजी कांइ, मरणकी आग द्यो बुझाय स्वामी ॥ शी० ॥ १ ॥ संजोगमांहे विजोगनी जी कांइ, संपदामें विपत्ति कहाय ॥ स्वा० ॥ सुखशातामें अशाताकी जी कांइ, अग्नि दियोने मिटाय ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ २ ॥ हरख ठिकाणे शोककी जी कांइ, ज्ञानके मांही अज्ञान ॥ स्वा० ॥ सुबुद्धिके कुबुद्धितणी जी कांइ, शीलमें कुशील दुःख-दान ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ३ ॥ संजम सतरा प्रकारको जी कांइ, जिणमें असंजम आग ॥ स्वा० ॥ क्षमा धरम रूइ विषे जी कांइ, मेटो क्रोध तणो दाग ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ४ ॥ विनय कह्यो सुख कारणो जी कांइ, सर्व धर्मको सार ॥ स्वा० ॥ अविनय हुताशनी लोकमें जी कांइ, दीजो एह निवार ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ५ ॥ संताप विषे तृष्णा तणी जी कांइ, दीजो हुताशन टाल ॥ स्वा० ॥ दीसे नहि त्रिहुं लोकमें जी कांइ, तुम सम शीतल हेमाल ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ६ ॥ दृढसेन भूप नंदा मायना जी कांइ, अंगज सुणो अरदास ॥ स्वा० ॥ तिलोक कहे मुझ भणी जी कांइ, दीजो शिवशीतलवास ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ७ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ एकादश श्रेयांसजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ श्रीमहावीर जिनेश्वर, आप विराज्या अमर सहेरमें ॥ ए देशी ॥ श्रेयांस जिनेश्वर, अरज सुनोजी मोरी साहेबा ॥ ए आंकणी ॥ जिम तुम श्रेयपद अंश शुद्ध कर, श्रेय पद नाम प्रसिद्ध ॥ त

तुम कृपा भावशुंजी कांइ, आपो एहज रिद्ध हो ॥ श्रे० ॥ १ ॥ तुम करुणारस सागर नागर, गुण रतनागर ईश ॥ शुं तुमने स्वामी पडे सो कांई, क्यों न करो बकसीस हो ॥श्रे०॥२॥ चाकर चूक पडे कोइ बिरियां, गिरुवा ठाकुर जेह ॥ तेह निवाजे पलकमें जी कांइ, गिरुवा एम सनेह हो ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ मात पिताशुं मूरख बालक, करे कोइक अपराध ॥ निज जाणीने तेह निवाजे, तुम गुण अगम अगाध हो ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ हुं निगुणो पापी निर्बुद्धि, कूड कपट भंडार ॥ जिम तिम करिने पावन करकें, ऊतारो भवपार हो ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ तुम विना कोई तारणहारो, जगमें दीसे नांहिं ॥ विण तार्‌या तुमने नहि छोडुं, ए निश्चें मनमांहि हो ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ विष्णु पिता विन्हु सहतारी, धन धन नंदन जेह ॥ तिलोकरिख कहे मुझ शिर टीको, लागो नवल सनेह हो ॥ श्रे० ॥ ७ ॥११॥

॥ अथ द्वादश वासुपूज्यजिन स्तवन प्रारंभः ॥

राग ठुमरी ॥ प्रभु वासुपूज्य जगनाथ निरंजन, रोम रोम मेरे मन वसिया, वारी रोम रोम मेरे दिल वसिया ॥ प्र० ॥ ए टेक ॥ चंद्र चकोर ओर मोर मेघ मन, मधुकर ज्यों मालति रसिया रे ॥ म० ॥ प्र० ॥ १ ॥ सति भरतार बालक चित्त जननी, कुंजर कजली वन धसीया ॥ कुं० ॥ प्र० ॥ अंब कोयल चकवी रवि चाहत, हंस सागर जल उल्लासियावारी ॥ हं० ॥ प्र० ॥ २ ॥ तिम तुमसुं मुझ प्रीति घणेरी, करम भरममांही में फसिया ॥ क० ॥ प्र० ॥ विषय कषाय माहा मदमातो, राग द्वेष विषधर डसीया ॥ रा० ॥ प्र० ॥ ३ ॥ तुम जप गरुड शब्द जिम जाणुं, मन शुद्ध नाम लेतां नसिया ॥ म० ॥ प्र० ॥ परम गारुडी तुम हो कृपानिधि, सकल जहर दुरा जे चासिया ॥ स० ॥ प्र० ॥ ४ ॥ देवाधिदेव अलेव अगोचर, मिथ्या भर्म सो दुरा खसिया ॥ मि० ॥ प्र० ॥ करमको खार हर्‌यो तप सोगसुं, भाव अगनि करी उज्जासिया ॥ भा० ॥ प्र० ॥ ५ ॥

भवि मन रंजन अलख निरंजन, सिद्धिमें सिद्ध जाय ठसिया ॥ सि० ॥ प्र० ॥ सहज स्वभाव तुंबाको तिरण पण, करम वजन छुटा उकसिया ॥ क० ॥ प्र० ॥ ६ ॥ मेरेसें दूर नहिं प्रभु कछुही, जैसें अग्नि अरणीके घसीया ॥ जै० ॥ प्र० ॥ वासुपूज्य जयादेवी नंदनका, तिलोकरिखजी दरसण त्रसिया ॥ ति० ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ त्रयोदश विमलजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ विमल जिनेसर वंदो रे भविका, भव भव सरण सहाई ॥ ए टेक ॥ ज्ञान अनंत पण अलोकको छेडो, कह्यो न आगम माई ॥ दरिसन केवल स्वपन नहिं देखे, ए देखो अधिकाई ॥ वि० ॥ १ ॥ शाता अशाता वेदे नहिं कछु, निरावाध सुखमांइ ॥ त्याग नही पण आश्रव छूटो, अटल अवगहणा अकायी ॥ वि० ॥ २ ॥ आयुष्यविन थिर थित तुम स्वामी, नाम गोत्र क्षय साई ॥ समरे एक भाव शुद्ध करकें, सुख होवत उनताई ॥ वि० ॥ ३ ॥ अंत राय क्षय करीयो साहिब, नूतन लाभ न कांइ ॥ वीतराग दशा पावत प्रभु में, तारक विरुद कहाइ ॥ वि० ॥४॥ हय गय रथ पायक नहिं ममता, जगतके नाथ कहाइ ॥ नारी नही शिवरमणीके रसिया, प्रसिद्ध कहे जगमांइ ॥ वि० ॥ ५ ॥ क्रोध नहिं अरु करुणासिंधु, शत्रूसों दिया भगाइ ॥ कृतवर्म भूप श्यामा देवी नंदा, जगमें शोभा सवाइ ॥ वि० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कहे मुझ तारणमें, कायकूं जेज लगाइ ॥ तुम जगतारक विरुद विचारी, शिवगढ देओ जिताई ॥ वि० ॥ ७ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ चतुर्दश अनंतनाथजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ नमुं नमुं में वे सुगुरुकुं, वे जिन मुद्रा धारी हे ॥ ए देशी ॥ अनंतनाथ प्रभु नित्य उठि वंदूं, अनंतज्ञान गुणधारी हे ॥ ए टेक ॥ अनंत चारित्र अनंत शक्तिधर, अनंत जीवके हितकारी हे ॥ सचित्त अचित्त अनंत पदारथ, देखे ज्यो दर्पण मझारी हे ॥ अ० ॥ १ ॥

अनंत जीवाके प्रतिपालक साहिव, अनंत वर्गणा निवारी हे ॥ द्रव्य गुण पर्याय सकलमें, भिन भिन करकें उच्चारी हे ॥ अ० ॥ २ ॥ तीन भवन जस उज्जल तेरो, महिमा अपरमपारी हे ॥ वंदनीय पूजनीय सकलकों, चरण शरण बलिहारी हे ॥ अ० ॥ ३ ॥ जगगुरु जगबंधव जगनायक, जगतारक सुखकारी हे ॥ सब विध लायक संत सहायक, वायक सकल पियारी हे ॥ अ० ॥ ४ ॥ संयम साधी मोक्ष आराधी, उपाधि सकल परिहारी हे ॥ अलख निरंजन शत्रुके गंजन, अजर अमर अविकारी हे ॥ अ० ॥ ५ ॥ अवर देव मुझ दाय न आवे, तुमसूं प्रीत करारी हे ॥ कल्पवृक्ष सम वंछित दायक, अविचल भक्ति तुमारी हे ॥ अ० ॥ ६ ॥ सिंहसेन कुल दीपक प्रगट्या, सुजसा प्रभु महतारी हे ॥ तिलोकरिख कहे करुणा सागर, करजो भव जल पारी हे ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ पंचदश धर्मनाथजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ धन ब्राह्मी ने धन सुंदरी जी कांइ, पाल्युं शियल अखंड ॥ ए देशी ॥ धर्मजिनंद सेव्या विनाजी कांइ, इम रूले संसार ॥ ए टेक ॥ धरम धरम करतो फिर्यो जी कांइ, धरम न जाणे भेद ॥ रुलियो चउगति जीवडो कांइ, पायो पूरण खेद जी ॥ ध० ॥ १ ॥ वार अनंती उपनो जी कांइ, भोगव्यां दुःख अनंत ॥ के तो जाणे आतमा जी कांइ, के जाणे भगवंत जी ॥ ध० ॥ २ ॥ एक मुहूर्त्तमें भव कर्या जी कांइ, साडी पेंसठ हजार ॥ छत्तिस अधिक निगोदमें जी कांइ, काल अनंत विचार जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ त्रसथावर तिर्यंचमें जी कांइ, छेदन भेदन त्रास ॥ सही तिहां परवश पणे जी कांइ, संची करमनी राश जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ जो कदि नरभव पामियो जी कांइ, संपदा पायो हीन ॥ पापकर्म संचय कर्यांजी कांइ, मिथ्यामतमें लीन जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ सुर भयो तो चाकर पणेजी कांइ,

राच्यो ख्याल विनोद ॥ मरणसमे झूरयो घणोजी कांइ, भूल्यो सघली मोद जी ॥ ध० ॥ ६ ॥ पुद्गल नाता सहुग्रह्या जी कांइ, भानु सुत सुव्रताना जात ॥ तिलोकरिखनी ए विनती जी कांइ, आपो धर्म निज वातजी ॥ ध० ॥ ७ ॥ १५ ॥

॥ अथ षोडश शांतिजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ समर ले समर ले राधिका श्री हरि ॥ ए देशी ॥ राग प्रभातीमें ॥ ध्यान धर ध्यान धर शांति जिनराजको, दिन दिन संपत्ति अधिक आवे ॥ सकल संकट हरे ऋद्धि वृद्धि करे, कर्मको भर्म दूरें हठावे ॥ ध्या० ॥ १ ॥ नृप विश्वसेन कुल चंद रवि किरणसा, अचिरा देवी मायने कूखें आवे ॥ मारी निवारी प्रभु देशकी गर्भमें, शांतिकुमार प्रभु नाम ठावे ॥ ध्या० ॥ २ ॥ शांतिजीको नाम सत तंत करी जाणीयें, अरि करी हरि सो दूरा भगावे ॥ ताव तेजा तरो चउथारो वेलांतरो, आधि व्याधि दुःख उपशमावे ॥ ध्या० ॥ ३ ॥ दुर्जन दुष्ट माहा वेरी जे वांकडो, समरता शांति सो लागे पावे ॥ सजन संजोग विजोग दुशमन तणो, अवनिपति मान अधिको वढावे ॥ ध्या० ॥ ४ ॥ डंकणी शंकणी भूत झोटिंग सो, समरतां सकल दूरां पलावे ॥ ऊतरे जहेर भुजंग विंछु तणां, अनल जिननामजलें उपशमावे ॥ ध्या० ॥ ५ ॥ वध वंधन सहु छुटे प्रभु नामशुं, चोर लुंटेरा ठग भागि जावे ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री शांति शांती करे, दुष्ट दसण स्वाहा हिरदे ध्यावे ॥ ध्या० ॥ ६ ॥ इह भवें सुख परभवें शिव संपदा, देत जगदीश जो समर भावें ॥ तिलोकरिख करे अरदास कर जोडिने, द्यो निज नाम गुण प्रेम भावें ॥ ध्या० ॥ ७ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ सप्तदश कुंथुनाथजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ पवन सुत कोन दिशासें आयो ॥ ए देशी ॥ राग श्याम कल्याण ॥ मेरे प्रभु कुंथु नाथ मन भाया ॥ मे० ॥ ए टेक ॥

संजम करणी भवजल तरणी, धारकें कर्म हठाया ॥ ध्यायो शुक्ल ध्यान अनुपम, ज्ञान केवल प्रगटाया ॥ मे० ॥ १ ॥ अशरण शरण अबंधव बंधव, अनाथके नाथ कहाया ॥ जगजीवन जग वत्सल तारक, हित उपदेश सुनाया ॥ मे० ॥ २ ॥ कोइक राग तानसें मगन हे, कोइ फुलेल लगाया ॥ कोइक रूप रंग अंग राचे, खट रसभोजन भाया ॥ मे० ॥ ३ ॥ तन धन सज्जन नानाविध नर, ख्याल तमासें लोभाया ॥ निज गुण भुल गे भूल होय कर, करमके फंद फंदाया ॥ मे० ॥ ४ ॥ प्रभु सरणा विन तरणो न होवे, ज्युं मंदिर विन पाया ॥ अंक विना शून्य काम न सारे, जेसें सुपनकी माया ॥ मे० ॥ ५ ॥ चरण सरणकी डरण करणसुं, भव अरणव भटकाया ॥ बिणजाराका बेल ज्युं जगसें, पच पच जनम गमाया ॥ मे० ॥ ६ ॥ सूरराय श्रीदेवी अंगजके, तिलोकरिख सरणे चल आया ॥ जिम तिम कर निज दास वतावो, तो में सकल भर पाया ॥ मे० ॥ ७ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ अथ अष्टादश अर जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ कपूर होवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ श्री अरनाथ अरति हरो रे, वीनती मुझ अवधार ॥ सेवा कठिन प्रभु ताहरी रे, सोहली खड्गकी धार ॥ जिनेश्वर अरहनाथ सुखपूर, मुझ राखो चरण हजूर ॥ जि० ॥ १ ॥ लोहचणा दांतें चावणा रे, सागर तरणो अथाह ॥ पवनने भरणो कोथले रे, इणसुंई भक्ति अगाह ॥ जि० ॥ २ ॥ श्वेतांबरी दिगंबरी रे, जैनमें भेद अनेक ॥ निज निज पक्ष करे खेंचना रे, एकांत नय पक्ष टेक ॥ जि० ॥ ३ ॥ अनेकांत मत ताहरो रे, हेय ज्ञेय उपादेय ॥ सप्तभंगी स्याद्वाद नो रे, समजग दुःकर अंग ॥ जि० ॥ ४ ॥ अंतर तेरे प्रकारका रे, किम करि दीजें ठेल ॥ कांस्यपात्र सिंहणी क्षीरने रे, किम करि राखे झेल ॥ जि० ॥ ५ ॥ देव अदोषी गुरु संजमी रे, धरम दयामांही सार ॥ निरवद्य

वाणी ताहरी रे, मानुं शरण आधार ॥ जि० ॥ ६ ॥ श्रीधर नृप देवी नंदना रे, वंदणा झेलो दयाल ॥ तिलोक आश सफल करो रे, तुमे छो परम कृपाल ॥ जिनेश्वर ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ अथ एकोनविंशति मल्लिजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ सुण चेतन रे तुम गुणवंत मुनिकों सेवो ॥ ए देशी ॥ सुण चेतन रे तुं मल्ली जिनंद समर ले ॥ कर धर्मध्यान गुणग्राम भवोदधि तर ले ॥ ए टेक ॥ एक विदेह देशमें, मथुरा नगरी सोहे ॥ जहां प्रजापाल भूपाल, कुंभ मन मोहे ॥ राणी प्रभावति नाम, शीयल गुणधारी ॥ जिन कूखें लियो अवतार, मल्लि जिन जहारी ॥ सु० ॥ १ ॥ या हुंडासर्पिणीकाल, अछेरो जाणो ॥ भयो प्रथम वेद अवतार, प्रभुकों वखाणो ॥ दोयसें नन्याणव वर्ष, उमरमें आया ॥ छ भूप पूरव भव मित्र, परणन ऊमाया ॥ सु० ॥ २ ॥ प्रभुसुं मोहन घरके मांहि, छहुं बुलवाया ॥ पूतलिको उघाड्यो ढंक, दुर्गंधसुं घवराया ॥ तव प्रभुजी दे उपदेश, सुणो रे शाणा ॥ ए देह अशुचि भंडार, अंत तज जाणां ॥ सु० ॥ ३ ॥ ए भोग रोगको मूल, सोगको घर हे ॥ ए फल किंपाक समान, दुःख आगर हे ॥ श्रवणवश अरणमें हरिण, प्राण निज खोवे ॥ दीपकमें पतंग निज अंग, नयनसें विगोवे ॥ सु० ॥ ४ ॥ भमर फूल के मांहिं, घ्राणवशें हाणी ॥ रसना वश मच्छ मरे, फरसे गज जाणी ॥ एक एक इंद्रियके, वशें प्राण गमावे ॥ जे पांचुके वश होय, कवण गति थावे ॥ सु० ॥ ५ ॥ पूरव भव तप कपट, तणे परभावें ॥ तुम हम अंतर जाणो, प्रभुजी दरसावे ॥ जातीसमरण पाय, सकल शिव जावे ॥ प्रभु तार्यां वहु नर नारि, अमर पद पावे ॥ सु० ॥ ६ ॥ अशरण शरण कृपाल, दयानिधि स्वामी ॥ प्रभु अधम उद्धारण विरुद, थें अंतरजामी ॥ तिलोकरिख कर जोडि, नमे शिर नामी ॥ तुम चरण शरणको वास, किजो शिवधामी ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ अथ विंशति मुनिसुव्रत जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ स्वामी सुणेने सुंदरी भांखे ॥ ए देशी ॥ श्री मुनिसुव्रत साहिब साचो, रोम रोम मांहि राच्यो रे ॥ जबलग में तुझ जाणियो काचो, नट जिम चउगति नाच्यो रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ तुं अविनाशी गुणधनराशि, निरंजन निराकारी रे ॥ जैसी सिद्ध अवस्था तुमारी, तैसी मुझमें विचारी रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ द्वैत कल्पना ते सहु छोडी, भर्मकी टाटी तोडी रे ॥ प्रीत पुराणी तुमशुं जोडी, आउ में किम करि दोडी रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ काम क्रोध मद मोहणी नाता, लागा निपट यह ताता रे ॥ क्षण भर लेन देत नहिं शाता, चउगतिमें अकुलाता रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ काल अनंत में एम गमायो, पारो ज्युं बुटो मूर्छायो रे ॥ तिम मिथ्या मोहनी कर्म बंधायो, मुनिसुव्रत पद नहिं भायो रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ हेय ज्ञेय उपादेय नयरस केली, जाणी में किंचित शेलि रे ॥ हवे मत तोडो प्रीत ए पहेली, विनती ल्यो प्रभु झेली रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ सुमित्र नृप पद्मावती जाया, अबके तो दुर्लभ पाया रे ॥ तिलोकरिख शरणागत आया, तार तार माहाराया रे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥ २० ॥

॥ अथैकविंशति नमि जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ नहिं हे संदेह लगार निरुपम, ॥ ए देशी ॥ एकविशमा नमि नाथ निरुपम, उपमा कही नहिं जावे ॥ तेज रविसम ज्यों कहुं प्रभुने, सो पर प्रतें दझावे ॥ एक० ॥ १ ॥ बाल तरुण वृद्ध तीन अवस्था, नित नित उदय अस्तावे ॥ बादलथी मंद अस्यसे तस केतु, असंभव इण न्यावे ॥ एक० ॥ २ ॥ जो कहुं चंद्र सरिखा जिनेश्वर, सो तो कलंकी जनावे ॥ नित नित हानि वृद्धि तस दीसे, रवि उदय मंद थावे ॥ ए० ॥ ३ ॥ जो सागर सम कहुं जगतारक, आर पार दोई पावे ॥ खारापणमें कवण वडाई, जंतु अनेक डुबावे ॥ ए० ॥ ४ ॥ पारस सम कहेनां पण शंकूं,

लोहने हेम वणावे ॥ न करे लोहका खंडने सरिखो, गज हरि पशुमें गिणावे ॥ ए० ॥ ५ ॥ मेरु कहुं तो कठिन घणेरो, अग्नि सो लाय लगावे ॥ सुरतरु चिंतामणि आदि पदारथ, परभवें काम न आवे ॥ एक० ॥ ६ ॥ विश्वसेन नृप विप्रा अंगजने, तिलोकरिख शीश नमावे ॥ मोय अनुपम करो जगवत्सल, अवर कछू नहिं चावे ॥ एक० ॥ ७ ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ अथ द्वाविंशति रिष्टनेमि जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ गाफल मत रहे रे ॥ ए देशी ॥ जपो नेमिसरजी, मेरी जान, जपो नेमिसरजी ॥ नेमीश्वर बालब्रह्मचारी, वडाई हे जगमें जहारी ॥ जपो० ॥ ए टेक ॥ समुद्रविजय शिवा देवी नंदा, भये जादव कुलमें चंदा, जे भविजनके सुखकंदा ॥ हरिकी शस्त्र शालामांई, मित्र संग गया सो चलाई ॥ ज० ॥ १ ॥ नाक श्वासशुं शंख वजायो, ले धनुष्य टंकार सुणायो, हरि सुण मन अचरिज आयो ॥ जाण्या जब नेमकुंवर तांई, कृष्ण मन चिंता अधिकाई ॥ ज० ॥ २ ॥ राज लेशे इम डर आयो, छल करकें फाग रचायो, जिम तिस करी व्याह मनायो ॥ उग्रसेन नृपति की बेटी, राजुल रूप गुणोंकी पेटी ॥ ज० ॥ ३ ॥ जिणसुं करी हरजीयें सगाई, किनी खुब जान सजाई, जुनेगढ आया चढाई ॥ पशुपर करुणा दिल आणी, तोरणसुं रथ फेरयो जाणी ॥ ज० ॥ ४ ॥ प्रभु वरशी दान नित दीनो, फिर संजम मारग लीनो, तप जप अति दुःकर कीनो ॥ कर्म क्षयकर केवल पाया, प्रीत धर भवजन समझाया ॥ ज० ॥ ५ ॥ सति किनी हे झुरणा भारी, आखर फिर समता धारी, सातसें सखी संग भई त्यारी ॥ चोपन दिन पहेली शिव पाई, पिछेसें मुक्ति गया सांई ॥ ज० ॥ ६ ॥ ज्यूं पशुपर करुणा लाया, तिम महेर करो महाराया, तिलोकरिखजी तुम शरणें आया ॥ प्रभु तकसिर माफ कीजो, अचल शिव भक्ति लाभ दिजो ॥जपो०॥७॥२२॥

॥ अथ त्रयोविंशति पार्श्व जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ पिले रे प्याला ॥ ए देशी ॥ भजले रे वाला, वामा देवी लाला, भगत रखवाला, जगत प्रतिपाला, रक्षपालक त्रस थावरका रे ॥ ए टेक ॥ अश्वसेन कुलदीपक सामी, मरद्या मान कमठ सुरका रे ॥ नाग नागणी जलत निकाल्या, करुणावंत साहेब परका रे ॥ भ० ॥ १ ॥ परमेष्ठी नवकार सुणा कर, ठाम दिया धरणी धरका रे ॥ नागणी पद्मावती गती सुरिकी, शासनाधिष्ट श्री जिनवरका रे ॥ भ० ॥ २ ॥ प्रभुजी जगमाया छटकाई, मारग लिना प्रभु मुनिसरका रे ॥ कमठासुर उपसर्गज दीना, संकट सह्यां प्रभु जलधरका रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ धरणिंद्र डराया तब नरमाया, गुन्हा माफ करो अनुचरका रे ॥ में मूरख मतिहीन दुरातम, तुम साहेब शिव मंदिरका रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ नील वरण तन दमकत काया, चरणमें लक्षन फणिधरका रे ॥ विषय कषायकी लाय बुझाई, नाश किया मोह मच्छरका रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ श्री जिन केवलज्ञान जो पाया, क्षय किया घनघाति अरिका रे ॥ भव जन तारण तीरथ थाप्यां, उपदेश दिया हित संवरका रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ ना वारसके वारस पारस, कुण उपगार चाहे परका रे ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, वास बतावो प्रभु शिवघरका रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशति वर्द्धमान जिन स्तवन प्रारंभः ॥

मेरी सुनीयो करुणा नाथ, भवोदधि पार कीजो जी ॥ ए देशी ॥ अर्जि सुणजो त्रिशलानंद, भवजल वेग तारो जी ॥ करुणा कीजो ॥ ए टेक ॥ कुंडलपुरमें लिया अवतारा, सिद्धारथ नृप कुल सिणगारा ॥ त्रीश वरस गृहवासमें रहिया, जग तज संजम मारग गहिया ॥ तपस्या पूर किनी जी, ममता त्याग दिनीजी ॥ अ० ॥ १ ॥ नर सुर तिर्यंच परिसह खमिया, राग द्वेष मोह मत्सर

वासमया ॥ घनघातिक शत्रु चउ दमिया, धरम शुकल आराममें रमिया ॥ प्रभु केवलज्ञान पाया जी, सुर नर सेवा उमाया जी ॥ अ० ॥ २ ॥ सूत्र चारित्र दोय प्रकारा, दिया उपदेश ज्यों अमृत धारा ॥ चउदा सहस्र भये अणगारा, माहासतियांजी छत्तिस हजारा ॥ महाव्रत पंच धारी जी, नित धोक महारीजी ॥ अ० ॥ ३ ॥ श्रावक एक लक्ष उगणसाठ हजारा, श्राविका तीन लक्ष सहस्र अठारा ॥ बारा व्रत धारक परकास्या, आज्ञा आराधी स्वर्गमें वासा ॥ जाशे मोक्ष मांईजी, आठूं कर्म घाइ जी ॥ अ० ॥ ४ ॥ संसार सागरमें कर्मको पाणी, भोगको कर्दम महा दुःख दाणी ॥ चार कषाय वडवानल भारी, राग द्वेष माहा मगर करारी ॥ भवि रहे भर्म केरा जी, मिथ्यामोहनी परम अंधेरा जी ॥ अ० ॥ ५ ॥ धर्मको दीवो पाटण शिवपुर हे, सो देखणकी अधिक आतुर हे ॥ अधम उद्धारण विरुद विचारो, सरणे आयाने पार उतारो ॥ तुम प्रभु जहाज थावो जी, सुखें सुख ठेठ पहोंचावोजी ॥ अ० ॥ ६ ॥ इंद्रभूति अभिमानज कीनो, तिणने शिष्य करि शिवपुर दीनो ॥ चंडकोशें डंक दीनो हे आई, मल्यो तेहि स्वर्ग आठमा मांइ ॥ अपराधी अनेक तारया जी, दुर्गति में पडता वारया जी ॥ अ० ॥ ७ ॥ अनादि कालको दुष्ट अधर्मी, चउगति दुःख हुं पायो कुकर्मी ॥ तुम विन और उद्धारणहारो, दीसे नही कोई इण संसारो ॥ सरणो तुमारो शोध आयो जी, भयो में पूरणकायोजी ॥ अ० ॥ ८ ॥ अरोग बोध समाधि संयुक्ति, दीजो करुणानिधि वर मुक्ति ॥ इणभवें हिरि सिरि रिधी निधि वृद्धि, मन इच्छा करजो सब सिद्धि ॥ तिलोकरिखजी आश पूरो जी, राखो नित आप हजूरो जी ॥ अ० ॥ ९ ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ कलश ॥

॥ चोवीश जिनवर, परम सुखकर, भावशुं स्तवना करी ॥ उग-

णीशें अडातिस, ज्येष्ठ वदि पक्ष, वार रवी नव तिथि खरी ॥ माहाराज अयवंता, रिखजी प्रसादें, तिलोकरिख, विनवे सदा ॥ आरोग बोधि, समाधि शाता, दिजो ॐ ह्रीं श्री, संपदा ॥ प्रभु दिजो अविचल, संपदा ॥ इति चोवीश जिनस्तवनानि संपूर्णानि ॥

॥ अथ जिनेश्वरजीकी आरति प्रारंभः ॥

॥ ऐसे जिन ऐसे जिन ऐसे जिन हे ॥ ए देशी ॥ जय जय जय जय बोलो जिनवरकी, जो है आशा अमर शिवघरकी ॥ज० ॥ ए टेक ॥ १ ॥ जैसी कांति शशी दिनकरकी, काया दमके सकल हितकरकी ॥ जय० ॥ २ ॥ ज्युं खसबोइ अगर तगरकी, जिणसूं श्वास सुगंध मनोहरकी ॥ जय० ॥ ३ ॥ जैसी मीठी डली हे सक्करकी, वाणी अनंत गुणी सुमधुरकी ॥ जय० ॥ ४ ॥ काया सोहे सुर अनुत्तरकी, सोभा अनुपम प्रभुजीका नुरकी ॥ जय० ॥ ५ ॥ जैसी चाल मराल गजवरकी, तिणसुं गमनगति सुंदरकी ॥ ज० ॥ ६ ॥ चिंता आणी हे भव सागरकी, संवत्सरी दान इच्छा उजागरकी ॥ ज० ॥ ७ ॥ घात करवा करम रूप अरिकी, क्रियाधारी संजम संवरकी ॥ ज० ॥ ८ ॥ केवल ज्ञान दिशा जव फरकी, जव त्रिगडाकी रचना अमर की ॥ ज० ॥ ९ ॥ करुणा आणी हे जीव अपरकी, दी उपदेशना पापका डरकी ॥ ज० ॥ १० ॥ काया माया अथिर हे सुरकी, तिण आगें कहां ऋद्धि नरकी ॥ ज० ॥ ११ ॥ परथम थापना करी गणधरकी, पिछें चार तीरथ गुणिवरकी ॥ ज० ॥ १२ ॥ जे गति पावे मोक्ष नगरकी, पदवी सिद्ध अमर अजर की ॥ ज० ॥ १३ ॥ होड कुण करि शके उण नगरकी, गिणती सागर आगें क्या छिल्लरकी ॥ ज० ॥ १४ ॥ महिमा अपरमपार गुणागरकी, कहेवा शक्ति नहिं सुरगुरुकी ॥ ज० ॥ १५ ॥ अयवंतारिखजी महाराज महेरकी, कीर्त्ति दाखी देव अघहरकी ॥ ज० ॥ १६ ॥ तिलोकरिख कहे धन जिनवरकी, भाव भक्ति कर तीर्थकरकी ॥ ज०

॥ १७ ॥ इति चतुर्विंशति जिनस्तवनानि संपूर्णानि ॥

॥ अथ श्रीपंचपरमेष्ठीका प्रत्येक स्तवन लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्री अरिहंत स्तवन प्रारंभः ॥

॥ सिद्धचक्र जिन पूजो रे भविका ॥ ए देशी ॥ श्रीअरिहंतजी वंदो रे भविका, दुःष्कृत दूर निकंदो रे ॥ भ० ॥ श्रीअरिहंतजी वंदो ॥ ए आंकणी ॥ वीश बोल सेवन करी स्वामी, तिसरा भवके मांही ॥ गोत्र तीर्थंकर बंधन कीयो, चउद स्वपन दिया माईरे ॥ भ० ॥ १ ॥ शुभ विरियां मांही जन्म भयो हे, इंद्र सकल हरखाया ॥ मंदर गिरिपर महोत्सव करकें, माता पास पोढाया रे ॥ भ० ॥ २ ॥ भोगावली कर्म भोगवियांसु, वरसीदान दे करकें ॥ संजम ले कर कर्मक्षय कीनां, केवल पद अनुसरकें रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ पेंतिस वाणी निरवद्य जाणी, भव्य प्राणी सुखदाणी ॥ अमृत जिम उपदेश देइने, तीरथ चउ दिया ठाणी रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ प्रथम संघयण संठाण प्रभुके, रोग रहित वर काया ॥ प्रभुको रूप देखीने सुर नर, रोम रोम उल्हसाया रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ एक सहस्र अष्ट लक्षन स्वच्छन, जहां विचरे जिन राया ॥ सात ईति सो शोक न थावे, अशोक तरु करे छाया रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ देवदुंदुभि वाजे गगनमें, इंद्रध्वजा लहकावे ॥ चोसठ जोडा विंजाय चमरनां, तीनछत्र शिर थावे रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ योजन मंडल वायु सुगंधी, अचित्तजल वरसावे ॥ कुसुम पंच वर्णा जल थल सरखां, ढंग अधिक महकावे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विषम पंथ सो पाधरा होवे, कंटक अणी अधो थावे ॥ वैरभाव नाहिं जांग जोजनमें, सिंह अजा सम भावे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ आभ कागल लेखण वनराइ, श्याही सागर जल लावे ॥ कोडाकोडि सागर सुरगुरु जो, लिखे तो पार नहिं पावे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १० ॥

अनंत गुणातम आतम प्रभुकी, मूलका गुण कह्या बारा ॥ तिलोकरिख अनुरागी प्रभुको, चाहे भवजलपारा रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय सिद्धस्तवन प्रारंभः ॥

॥ शांति चरणारी जाउं बलिहारी ॥ ए देशी ॥ वंदूं सिद्ध सदा अविकारी, पूरो प्रभु आश हमारी ॥ ए आंकणी ॥ शुक्लध्यान शैलेशी परिणामें, तिनही जोग निवारी ॥ एक समयमांही जाय विराज्या तो, सिद्धक्षेत्र सुखकारी, कर्मकी लगे न कारी ॥ वं० ॥ ॥ १ ॥ सर्वार्थसिद्धसुं जोजन बारा, ऊर्ध्व दिशाके मझारी ॥ लाख पेंतालीस जोजन पहोली, चितां छत्र आकारी, जोजन दल आठ उच्चारी ॥ वं० ॥ २ ॥ छेहडे माखीकी पांखसुं झीणी, सुंहाली घटारी मठारी ॥ अर्जुन सुवर्णमांही मनोहर, छबि लागे अतिप्यारी, दोष नहिं दीसे लगारी ॥ वं० ॥ ३ ॥ जोजनको उपरलो गाउ, भाग छट्ठो सुविचारी ॥ सहजानंद आतम अवगाहना, परमानंद पद धारी, नहिं जहां दुःख विमारी ॥ वं० ॥ ४ ॥ पंच वर्णमें वर्ण नहिं हे, वासना दोय प्रकारी ॥ पंचरस अठ फरस न जिनके, तीनही वेद विकारी, विषयकी लाय निवारी ॥ वं० ॥ ५ ॥ पंच प्रमाद उपाधि नही हे, चार कषायके टारी ॥ अजर अमर अविनाशी अखंडित, निरंजन निराकारी, सदा तृपत निराहारी ॥ वं० ॥ ६ ॥ जाणत देखत सर्व पदारथ, निराबाध सुखधारी ॥ समकित क्षायिक अटल अवगाहन, अमूर्त्तिक गुणधारी, अलख जस ज्योति अपारी ॥ वं० ॥ ७ ॥ अगुरुलघु परजाय सदा थिर, नहिं जिहां तात महेतारी ॥ सुत सहोदर सज्जन दुशमन, नहिं सगपण व्यवहारी, जात कुल वर्ण न चारी ॥ वं० ॥ ८ ॥ शिष्य गुरु नहि पायक नायक, रूप अनूपम धारी ॥ पन्नर भेदें अगम अगोचर, नहिं उज्ण नहिं टारी, नहिं कोई वस्ति उजारी ॥ वं० ॥ ९ ॥

जावे पण आवे नहीं पाछा, पंचमी गति सुखकारी ॥ तिलोकरिख कहे तुम स्थान बतावो, एमागुं रिझ थारी, वारीमें जाउं वलिहारी ॥ वं० ॥ १० ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय आचारज स्तवन प्रारंभः ॥

॥ सुगुरु पिछाणो इण आचारें ॥ ए देशी ॥ आचारज प्रणमुं पद त्रीजे, अष्ट संपदा धार जी ॥ चार तीरथके दे सुख शाता, आदेय वचनका धार जी ॥ आ० ॥ १ ॥ पंच महाव्रत पूरण पाले, पंच सुमतिका धार जी ॥ तीन गुप्ति सो दृढ करी राखे, निर्मल पंच आचार जी ॥ आ० ॥ २ ॥ नव वाड शुद्ध ब्रह्मचर्य धारी, जीत्या चार कषाय जी ॥ पांच इंद्रिय गणी वश करी राखे, निरवद्य वाणी न्याय जी ॥ आ० ॥ ३ ॥ श्रीजिनधर्मने खूब दीपावे, मिथ्या खंडनहार जी ॥ वादी जनसूं हार न पावे, बुध्दि प्रवल नय सार जी ॥ आ० ॥ ४ ॥ शूरा मन वचन कायाना, झलके नांहिं लवलेश जी ॥ भव्य जीव तारनके कारण, साचो दे उपदेश जी ॥ आ० ॥ ५ ॥ क्लेश होवे जो चार तीरथमें, देवे आप मिटाय जी ॥ संतोशे अमृतवाणीशुं, दिन दिन पुण्य सवाय जी ॥ आ० ॥ ६ ॥ शम दम उपशम तप जप राता, ध्याता निर्मल ध्यानजी ॥ नाता ताता तोड दिया सव, करता जिनगुणगान जी ॥ आ० ॥ ७ ॥ पंच आचार ज पाले पलावे, टाले टलावे दोष जी ॥ पर उपगारी झाझ सरीखा, नाने राग ने रोष जी ॥ आ० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे छत्तिस गुण गणी, गुण गावो नरनार जी ॥ अशुभ कर्मका बंधन छूटे, थावे सफल जमार जी ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ उवज्झाय स्तवन प्रारंभः ॥

॥ सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे जाजो ॥ ए देशी ॥ सुणो भवियण जी, चउथे पद उवज्झाय नमो सुख कारणा ॥ शुध्द

श्रद्धा जी, बोध देइनें मिथ्या भरम निवारणा ॥ ए आंकणी ॥ जे अंग इग्यारका धारक छे, चउदा पूरव सुविचारक छे, शुद्ध पाठ अर्थ उच्चारक छे ॥ सु० ॥ १ ॥ जे सातुइ नयका जाणक छे, निश्चय व्यवहार वखाणक छे, जे शुद्ध अशुद्ध पहिचाणक छे ॥ सु० ॥ २ ॥ जे नीति वात वतावे छे, सव मिथ्या भर्म उडावे छे, भिन्न भिन्न करकें समझावे छे ॥ सु० ॥ ३ ॥ जे ज्ञान ग्रहणने आवे छे, शुद्ध पात्र देखिने पढावे छे, अज्ञानपणुं तस ढावे छे ॥ सु० ॥ ४ ॥ जे उपशम रसना सागर छे तप संजम गुण रतनागर छे, उत्पात माहाबुद्धि नागर छे ॥ सु० ॥ ५ ॥ जे चर्चा करवा आवे छे, सत्य न्याय वताई हरावे छे, फिटा हुइ करकें जावे छे ॥ सु० ॥ ६ ॥ जिन नहिं पण जे जिन जेवा छे, वाणी सत्य निरवद्य मेवा छे, हितकारी जेहनी सेवा छे, ॥ सु० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे जे गुण गावे छे, ज्ञानावरणीने खपावे छे, अनुक्रमें मुक्ति सिधावे छे ॥ सु० ॥ ८ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम साधु स्तवन प्रारंभः ॥

॥ निर्मल शुद्ध समकित जिनपाई, जिणरे कमी रहे नही कांई ॥ ए देशी ॥ वंदो साधु सदा सुणो ज्ञाता, जिणसुं भवभवमें सुख शाता ॥ ए आंकणी ॥ ए संसार असार जानिकें, लीनो संजम भारो ॥ तप जपकी खप करता विचरे, निरवद्य वेण उच्चारो ॥ ॥ वं० ॥ १ ॥ एक विचारे एक निवारे, दो पाले दो टाले ॥ तीनहु अराधे तीनके साधे, त्रिहुं गाले चिहुं ढाले ॥ वं० ॥ २ ॥ चार करे नही चार धरे चित्त, पंच पाले पच छोडे ॥ छ प्रतिपालन छ प्रतिपाले, छ सें तीनके मोडे ॥ वं० ॥ ३ ॥ छ जाणे अरु छके त्यागे, सात विशुद्धि लावे ॥ सात सातके दूर निवारे, तजे आठ आठ चावे ॥ वं० ॥ ४ ॥ पाले नव टाले नव जाणे, दसण करे दश सेवे ॥ दश दशसो वोले नहिं मुखसें, दश वारासो कहेवे

॥ वं० ॥ ५ ॥ हत्या करण करावण कामी, झूठ कहे जे जाणी ॥ अदत्त हेरे परको हित आणी, परधि प्रेमज ठाणी ॥ वं० ॥ ॥ ६ ॥ धन अखूट अधर्मसा ध्यानी, महामानी निर्मानी ॥ मांस भखे नित्य मांस भखे नही, मद्यथी तृपति आणी ॥ वं० ॥ ७ ॥ हय गय रथ पायक तज दीना, लीनासो सहु पासें ॥ मात पिता नारी सुत त्यागी, अनुरागी नित्य भासे ॥ वं० ॥ ८ ॥ पर दुःख देखी शाता चावे, इत्यादिक गुणधारी ॥ तिलोक रिख अनुभवरस शैली, समझ कही सुविचारी ॥ वं० ॥ ९ ॥ सुगुणा समझी शशि नमावे, निगुणाने मन हांसी ॥ एसा मुनिवर जो कोइ सेवे, सो होशे शिववासी ॥ वं० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ कलश ॥ एम पंच नाम, नवकार जगमें, सार इण सम, को नही ॥ जे समरे भावे, सुख पावे, विघन सव, नासे सही ॥ उगणीशें सेंतिस, विजय दशमी, तिलोक रिख, स्तवना करी ॥ भव भव सरणुं, होजो सुजने, अधिक दिन दिन हिरी सिरी ॥ प्रभु अधि० ॥ १ ॥ इती पंच परमेष्टिस्तवनानि संपूर्णानि ॥ सर्वगाथा ॥ ४९ ॥

॥ साधु स्तवनकी दुसरी गाथासूं नवमी गाथासूधीको कठिणअर्थ हावाथी ते कहे छे. ॥

एकविचारे-एकतत्त्व विचारे एकनिवारे-एकदोष निवारे दोसंयमपाले तप अने संजम पाले दोटाले-राग अने द्वेषने टाले तीनहुआराधे-ज्ञान दर्शन चारित्र ए त्रणने आराधे तीनकेसाधे-मन वचनकायाको साधे त्रिहुंगाले-तिन गर्व गाले चिहुं टाले-चारकषाय गिरावे ॥ २ ॥ चारकरेनहि-चार विकथा न करे चारधरे चित्त-चार सरणा प्रत्ये चित्तमे धारे. पचपाले-पंचमहाव्रत पाले पंचलांडे-पचेंद्रीयने पाले. छप्रतिपालन छव्रत पालक मुनिराज ते छ प्रतिपाले-छ कायनी दयापाले छमेंतीनकुंमांडे-छ लेश्यामेंसूं तीन अधर्मलेश्याने वरजे, ॥ ३ ॥ छजाणे-षट्द्रव्य भेद जाणे अरु छके त्यागे-वली छ अव्रत त्यागे सातविशुद्धिलावे-सात पिंडेषणा विशुद्ध आहार लावे. सातसातके दूरनिवारे-सात भय सात व्यसन वेगला करे तजेआठ-आठ मद छोडे आठचावे आठप्रवचन पांचसमिति तीन गुप्ति, ए आटकी वंदना करे ॥ ४ ॥ पालेनव-नववाड ब्रह्मचर्य पाले. टाले नव-नवनियाणां टाले. जाणे-

नवतत्त्व जाणे **दमन करे दश**--पांच इंद्रियो, चार कषाय, एक मन ए दशने दमे **दश सेवे**--दशप्रकारें श्रमण धर्म सेवे. **दशदशसोबोले नहि मुखसें**--दश प्रकारें असत्य दश प्रकारें मिश्र, ए भाषा न बोले **दश बार सो कहेवे**--दश प्रकारें सत्य, बार प्रकारी व्यवहारी भाषा बोले ॥ ५ ॥ **हत्याकरण**--आठ कर्म रूप शत्रुने घात करे **करावण कामी**--कर्मरूपी शत्रुको नाश करावण कामी **झठ कहे जे जाणी**- जे पदार्थने मृषा जाणे तेने झूठो कहे **अदत्तहेरे परको हित आणी**--अपराया जीव अदत्त ग्रहण करे ते छोडावे. तथा पुद्गल चोरी छे ईम ग्रहे **परथी प्रेमज ठाणी**--श्रीजिन वाणी रूपथी जेबुद्धि तेथी प्रेम आणे ॥ ६ ॥ **धन अखूट**--तप जप रूप धन भंडार युक्त छे **अधर्मसाध्यानी**--अधर्मास्तिनो गुण थिर छे तेम ते स्थिर ध्यानना करणहार छे **माहामानी**--श्रीजिननी आज्ञा माने छे **निर्मानी**--अहंकार रहित छे **मांसभखे नित्य**--मास तप करी शरीरको मांस निरंतर सोसे **मांसभखे नहि**--मासदुगछनिक तथा बार मास भखे नहि **मद्यथी**--आठ मदथकी **तृप्ति आणी**--इछा नहि ॥ ७ ॥ **हय गय रथपायकतजदीना**--लौकिक हाथी, घोडा, रथ-पायक, ए चार दल छोड्यां छे जेणें एवा **लीनासोसहुपासें**--लोकोत्तर चार ते मनरूप घोडो धीरज रूप हाथी, शीलरूप रथ, भावरूप पेदल सदा राखे छे **मातापिता नारी सुततयागी**--सांसारिक मात पिता नारी पुत्र तेनो त्याग कीधो छे जेणे एवा **अनुरागी नित्यभासे**--अनुरागी ते दया रूप माता, ज्ञान रूप पिता, सुमति रूप नारी, सुबुद्धि रूप पुत्र तेथी राग राखे ॥८॥ **परदुःख देइ शाता चावे**--कर्मवर्गणा कर्मचेतना दुःख देवे अने जीव चेतनाके शाता वंछे, इत्यादिक गुणना धारक छे. **तिलोकरिख अनुभव रसशैलि**--तिलोकरिख नामा कवि कहे छे, के अनुभवरस अंतरज्ञानकी शैली जे विवेकना तेनी समझ **कही सुविचारी**- समझि बोधदृष्टि करिने कही विचारी छे ॥ ९ ॥

॥ अथ चोवीशजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ राग प्रभाती ॥ श्रीअरिहंत गुण गावो रे भविका, चोवीश जिन गुण गावो रे ॥ श्री अ० ॥ ए आंकणी ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम प्रभु ध्यावो रे ॥ श्री सुपार्श्व चंद प्रभु समरो, नित नित शीश नमावो रे ॥ श्री अ० ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, विमल विमल चित ठावो रे ॥ अनंत धर्म श्रीशांति जिनेसर, शांतिकरण जग चावो रे ॥ श्री अ० ॥ ॥ २ ॥ कुंथु अर मल्ली मुनिसुव्रत जी, सुव्रत करण उमावो रे ॥ नमी नेम पारस माहावीर जी, सासणपति जिम नावो रे ॥ श्री अ० ॥ ३ ॥ ए चोवीश जिन संजम धारी, दियो करमके घावो रे ॥

केवल लेईने तीरथ थाप्यां, भवजल तारण नावो रे ॥ श्री अ० ॥ ४ ॥ होय अजोगी मुक्ति सिधाया, फिर न रह्यो इहां आवो रे ॥ अजर अमर अविनाशी निरंजन, सकल जगतका रावो रे ॥ श्री अ० ॥ ५ ॥ नाम लिया सब विघन विनासे, न रहे दुःखको दावो रे ॥ शत्रु सो मित्र सम वरते, जो सुमरन मन ल्यावो रे ॥ श्री अ० ॥ ६ ॥ संवत् उगणशि आडतीस शालें, विजयदशमी दिन ठावो रे ॥ दिन दिन विजय होवे प्रभु नामें, भव भवमें सुख पावो रे ॥ श्री अ० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे प्रभु तुम सरणो, भव भवमें मुझ थावो रे ॥ शिवसंपत अरु द्यो तुम दरिसण, नित नित मंगल वधावो रे ॥ श्री अ० ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ अथ चोवशिजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ मेरी मेरी करतां जन्म गयो रे ॥ ए देशी ॥ भजो रे भविक जिन चोवीश विख्याता, तजो रे आलस गुणिजन गुण गाता ॥ भ० ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव जगताता, अभिनंदनजी आनंदके दाता ॥ भ० ॥ २ ॥ सुमति पदम पदम रंग राता, सुपार्श्व चंदाप्रभु सबकुं सुहाता ॥ भ० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस जो भ्राता, वासुपूज्य तोड्या हे जगनाता ॥ भ० ॥ ४ ॥ विमल अनंत धर्मधन माता, शांति जिणंद करी हे सुखशाता ॥ भ० ॥५॥ कुंथु अर मल्लि मलघाता, मुनिसुव्रत व्रतसें रंग राता ॥ भ० ॥ ६ ॥ नमि नेमी पारस चित भाता, महावीर रह्या पाप पलाता ॥ भ० ॥ ७ ॥ विहरमान गुणधर गुरु ज्ञाता, साधि सकल बंधु सति माता ॥ भ० ॥ ८ ॥ इनके चरण सरण चित्त चाता, तिलोकरिख ताकुं शशि नमाता ॥ भ० ॥ ९ ॥ २ ॥

॥ अथ ऋषभ जिन स्तवन ॥

॥ जे गणेश जे गणेश जे गणेश देवा ॥ ए देशी ॥ जे जिणंद जे जिणंद जे जिणंद देवा ॥ उठि प्रभात समर नाथ, श्रीऋषभ देवा

॥ ए टेक ॥ पिता तेरे नाभिराजा, जननी हे मरुदेवा ॥ देही कंचन वृषभ लंछन, तेजें रतिपति जेहवा ॥ जे० ॥ १ ॥ जुगला धर्म निवार किया प्रभु, छे कुलगरकी ठेवा ॥ संजम लीधो श्रीजिन भावें, कर्म अरिने हणेवा ॥ जे० ॥ २ ॥ केवल ले प्रभु देशना दीधी, वाणी ज्युं अमृत मेवा ॥ चार तीरथकी स्थापना कीनी, भवजल पार करेवा ॥ जे० ॥ ३ ॥ दश सहस्र मुनि संगें अष्टापद, चढीया अणसण लेवा ॥ छ दिन संथारे मुक्ति विराज्या, सुखि अनंत नितमेवा ॥ जे० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे में तुम चाकर, हुं चरणारज खेवा ॥ जिम तिम करि भव पार ऊतारो, दिजो अविचल सेवा ॥ जे० ॥ ५ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ श्रीगौतम स्वामीसें गुण घणा ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमुं आदिजिनेश्वरजी, भयभंजण जगभाण ॥ गोत्रतीर्थंकर बांधिने, उपना सर्वार्थ सिध्दाविमाण जी ॥ अषाढ विदि चोथ तिथि जाण जी, थयो प्रभुको चवण कल्याण जी, नाभि नामें नृपति कुल आणजी, माता मरुदेवजी वखाणजी ॥ श्रीऋषभ जिणंद जिसुं वंदणा ॥ ए टेक ॥ चैत्र विदि तिथि अष्टमीजी, शुभवेला शुभ वार ॥ जनम थयो जगदीशको, छपनकुमारी आइ तिणवार जी, जन्मकारज कियो सुविचार जी, आया इंद्र हरषें अपार जी, कियो मोछव मेरुमझार जी, सर्गें गया साधि व्यवहारजी ॥ श्री० ॥ १ ॥ वृषभ स्वपनलंच्छनथकी जी, ऋषभ कुमर दियो नाम ॥ पंचसें धनुष उंचापणे प्रभु, तन कंचन अभिरामजी, विश लख पूरव कुंवर पदठाम जी, राज कीयो त्रेशठ लख स्वामजी, जुगलधर्म निवार्या तमाम जी, वसायां नगर पुर गाम जी, ॥ श्री० ॥ २ ॥ कला बहुत्तर पुरुषनी जी, चोशठकला वली नार ॥ वरन चार थापन किया प्रभु, सीखायो रुजगार जी, चैत्रवदि नोमी तिथि

सारजी, छठ तपस्या लिवि धार जी, चार सहस्त्र पुरुष परिवार जी, लीनो प्रभु संजम भार जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वरस दिवसने पारणे जी, लियो इक्षुरस आहार ॥ छद्मस्थपणे परिसा सह्या प्रभु, संवच्छर एक हजार जी, फागुन वदी ग्यारस जहार जी, घनघातिक हण्यां कर्म चार जी, थया प्रभु केवल धारजी, उपदेश दीयो हितकार जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ चार तीरथ प्रभु थापीयां जी, तार्‍यां वहु नर नार ॥ अष्टापद अणसण कर्‍या, साथें दश सहस्त्र अणगार जी, छ दिनको आयो संथारजी, माघकृष्ण तेरस जगधार जी, प्रभु पहुता मुक्ति मझार जी, पाट असंखें वरी शिवनार जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ गजहोदे मातेश्वरी जी, पामी मोक्ष दुवार ॥ भरत आरिसा भवनमें, लहि केवल कमला सारजी, सो पुत्र दो पुत्री विचारजी, सहु शालि रूंख परिवारजी, तिलोक रिख कहे वारोवार जी, महारी वीनतडी अवधार जी, प्रभु करो मुझ भवोदधि पारजी ॥ श्रीऋषभजी० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ श्री वीरजिणंद सासन धणी, जिन त्रिभुवनसामी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमुं आदिजिणंद, युग्मचरणांवुज सरणो ॥ मनमधुकर मोही रह्यो, गुणवास आचरणो ॥ पूरवभवें भए पांच, पूर्वचक्रीपद त्याग कीना ॥ गोत्रतीर्थंकर वांध, चवी सर्वार्थ सिद्धलीना ॥ आषाढ विदि तिथि चोथसें ए, आधिरेण मझार ॥ चवणकल्याण प्रभुजीतणुं, भाख्युं सूत्र मझार ॥ भां० ॥ १ ॥ नाभिरायकुलनंद, मात मरुदेवी जाणी ॥ तिणकूखें अवतार लियो, अद्धरयणी टानी ॥ कृष्ण अष्टमी चैत्र, मास शुभवेलासांई ॥ जनम्याऋषभ जिणंद, छपन कुमारी आई ॥ जनमकारज तिने सहुकियो ए, आसण चल्यो तिनवार ॥ शक्रइंद्र चल आईया. आणी हरष अपार ॥ श० ॥ २ ॥ मूकी निद्रा मातवेंकियें, निजरूपज धारिया ॥ पंच रूप

करी इंद्र प्रभु, लेई प्रभु परवरीया ॥ गिरि सुदरसण जाइ, इंद्र कऱ्यो मोच्छव हरषे ॥ प्रभुको रूप अनूप, नेत्र अनिमेषित निरखे ॥ प्रभुके मेल्या फिर मातपें, रचि वनिता पुरसाज ॥ इंद्र गया निज-स्थानकें, करि मोच्छव सब साज ॥ क० ॥ ३ ॥ चउदे सपनामें प्रथम, वृषभवर उज्ज्वल दीठो ॥ तहनो फल एह पुत्र, महासुखका-र* मीठो ॥ तिणकारण करि नाम, दियो प्रभु ऋषभ कुमार ॥ कंचन वरण शरीर, वृषभ लंछन पग धार ॥ पांचशें धनुष उंचापणे, देह मान जिनराज ॥ वीश लाख कुंवर पदें, रह्या श्री गरिव नि-वाज ॥ र० ॥ ४ ॥ पूर्व त्रेशठ लाख राज, जुगल धर्म दूरो कीनो ॥ लिखतगिणतादिक वहोंतेर, कला तस बोधज दीनो ॥ महिला गुण जे चोसठ, शिल्प कर्म सब विध स्थापी ॥ भरतादिक सो नंद, राजश्री सहुने आपी ॥ चैत्र कृष्ण नौमी दिन ए, चार सहस्र नर लार ॥ छठ तप धारी निकल्या, लीनो संजम भार ॥ ली० ॥ ५ ॥ चउ मुष्टी कर लोच, पंच महाव्रत उच्चरिया ॥ सह्या परिसह सर्व, पाली शुध्द मनसुं किरिया ॥ प्रथम पारणें हंस कुंवर, इक्षु-रस वहोराया ॥ सहस्र वरस छद्मस्थ, करणी करी मन वच काया ॥ चंद्र जेम शीतल कह्या ए, सागर जेम गंभीर ॥ अधिक तेज रवि किरणथी, मेरु अचल गज धीर ॥ मे० ॥ ६ ॥ ध्यावता निर्मल ध्यान, विचऱ्या श्रीजिनवर राया ॥ पुरिमताल पुर बाहिर, अष्टम तप करकें आया ॥ शकटमुख उद्यान, वृक्ष वड हेठ विराज्या ॥ ध्यायो शुक्लज ध्यान, पाय तिजें शुभ साजा ॥ फागण कृष्ण एकादशी ए, [illegible]न समयमें जान ॥ आदिजिनेश्वर पामिया, केवल दरिसन ज्ञान ॥ के० ॥ ७ ॥ लोकालोक सरूप, जाण्यो जिनवर जिन ज्ञाने ॥ दीनो तब उपदेश, चतुर्विध तीरथ ठाने ॥ ऋषभ सेणादिक जाण, चोराशी गणधर भारी ॥ चोराशी सहस्र मुनिराज, मांहे दीपे अधिकारी ॥ ब्राह्मी सुंदरी धन साधवी ए, सब सतियां

शिरदार ॥ तीन लक्ष थई साहुणी, श्रीजिन आज्ञाकार ॥ श्री० ॥ ८ ॥ चार सहस्र साडी सातशें चउदे पूरवधारी ॥ अवधिज्ञानी मुनिराज सहस्र नव सोहत भारी ॥ वैक्रिय लब्धिका धार, छशें विश सहस्र कहीजें ॥ मनःपरजव वारे सहस्र, छशें पचास लहीजें ॥ केवल नाणी मुनिवरु ए, वीश सहस्र परिमाण ॥ ते वंदूं नित भावशुं, पाया पद निर्वाण ॥ पा० ॥ ९ ॥ चर्चावादी सहस्र, वारे साडी छसें कहीयें ॥ नवशें वाविश हजार, अनुत्तर वैमानिक गहीयें ॥ साधवी चालिश सहस्र, केवल ले सुगति विराजी ॥ अवर वहु गुण धार, मुनि निज आतम साजी ॥ ते प्रणमुं सहु भावशुं ए, जिनवर आज्ञाधार ॥ साथें रह्या जिनराजने, करता उग्र विहार ॥ क० ॥ १० ॥ बाराव्रतका धार, सिज्जंसादिक श्रावक भारी ॥ पांच सहस्र तिन लक्ष, सबे इकविश गुणधारी ॥ सुभद्रादिक पंच लाख, श्राविका चौपन हजारी ॥ श्रीजिन आज्ञामांहि, कही गुणवंती नारी ॥ करी करणी शुद्ध भावशुं ए, पाई अमर विमाण ॥ ए संख्या तीरथ तणी, आगममांहि प्रमाण ॥ आ० ॥ ११ ॥ एक लख पूरव सर्व, संजम केवलपद पाली ॥ भव्य जीव उपदेश, दियो कुगति मत टाली ॥ दश सहस्र मुनि साथ, अष्टापद चढीया जाइ ॥ पल्यंक आसण करी ध्यान, अणसण छ दिनकी आइ ॥ माघ कृष्ण तेरश तिथि ए, प्रभु पहुता निर्वाण ॥ सागर पचास लक्ष कोडीनो, जिनशासन परिमाण ॥ जि० ॥ १२ ॥ कोडाकोडी असंख, पाट केवलपद पाया ॥ गजहोदे प्रभुमात, केवल लेइ मुक्ति सिधाया ॥ श्रीभरतेश्वर भुवन, अरिसे केवल लीधो ॥ वाहुवल प्रभुनंद, सोहि जगमें परसीधो ॥ पुत्र सकल मुक्तें गया, पुत्री पण गुणवंत ॥ प्रणमुं आदि जिनेंद्रजी, भय भंजण भगवंत ॥ भ० ॥ १३ ॥ पटदरिसण सिद्ध आदि, जिणवर सुखकारी ॥ सब देवा सिरमोड, होड कोन करे चरणारी ॥ अरि करी भय दुःख दूर, होय जिण

समसरण करतां ॥ प्रभुगुण अनंत अपार, पार नहिं आवे उच्चरतां ॥ सुगुरु शारदा स्वयमुखें ए, करे प्रभु गुण विस्तार ॥ कोडाकोड सागर लगें, तोहि न आवेजी पार ॥ तो० ॥ १४ ॥ मुझमति छे अति हीन, गुणोदधिपार न आवे ॥ मन समजावा काज, कह्या गुण संमित भावें ॥ चंदनवृक्ष भुजंग, जीवसंग कर्मज लागे ॥ जिनवर जप छे गरुड, करम अहि दूरा भागे ॥ श्री परमेश्वर एहवा ए, जो समरे शुद्ध भाव ॥ भीम भवोदधि तारवा, परतख जिन जयनाव ॥ पं० ॥ १५ ॥ संवत उगणीशैंत्रीश, मास आषाढ उजारी ॥ तिथि तेरश भोमवार, शहेर मंदशोर मझारी ॥ अधमउद्धारण विरुद, सुणी प्रभुसरणो लीनो ॥ जन्ममरण रोग सोग, दुःख संसार सुविहीनो ॥ तिलोकरिख कर जोडिने, अरज करे शिर नाम ॥ हवे तारो प्रभु मुझ भणी, आपो अविचल ठाम ॥ आ० ॥ १५ ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ केरबानी देशी ॥ जय जय रहो प्रभु ताहरी, ह्मारी वंदणां लीजो स्वीकार भलां जी ॥ ह्मारी० ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, अधम उद्धारणहार ॥ भ० ॥ अ० ॥ जय० ॥ २ ॥ सुमति पद्म सुपास चंदा प्रभु, अष्ट कर्म कियां छार ॥ भ० ॥ अ० ॥ जय० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, जगनायक जयकार ॥ भ० ॥ ज० ॥ जय ॥ ४ ॥ विमल अनंत श्रीधर्म शांतीश्वर, शांति करि छे संसार ॥ भ० ॥ शां० ॥ जय० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत, करुणानिधी किरतार ॥ भ० ॥ क० ॥ जय० ॥ ६ ॥ नमी नेम पारस माहावीरजी, सासणका सिरदार ॥ भ० ॥ सा० ॥ जय० ॥ ७ ॥ कर्म खपाई केवल पाया, शुक्लध्यान मझार ॥ भ० ॥ शु० ॥ जय० ॥ ८ ॥ ए चोवीश जिनवर जगराया, त्याग दिया छे संसार ॥ भ० ॥ त्या० ॥ जय० ॥ ९ ॥ संजम करणी भवजल तरणी, करि अति दुःकरकार ॥ भ० ॥ क० ॥ जय० ॥ १० ।

भविजनने उपदेश सुणायो, वाणी ज्यों अमृतधार ॥ भ० ॥ वा० ॥ जय० ॥ ११ ॥ सूत्र चरित्र धर्म प्ररूप्यो, थाप्या तीरथ चार ॥ भ० ॥ था० ॥ जय० ॥ १२ ॥ होय अजोगी सुगति सिधाया, अजर अमर अविकार ॥ भ० ॥ अ० ॥ जय० ॥ १३ ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, तारो भवजल पार ॥ भलांजी प्रभु तारो ॥ भ० ॥ ता० ॥ जय० ॥ १४ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ सुण सुण रे सयण सयाणां ॥ ए देशी ॥ ऋषभ अजित संभव सुखकारी, अभिनंदनकी बलिहारी ॥ सुमति पदम प्रभु जग राया, जाये आठु कर्मकूं घाया ॥ १ ॥ सुपारस चंदा प्रभु देवा, चाहुं भव भवमें तुम सेवा ॥ सुविधि शितल श्रेयांस दयाला, वासुपूज्य जगतप्रतिपाला ॥ २ ॥ विमल अनंत धर्म धन दाता, शांति नाथजी करो सुखशाता ॥ कुंथु अर मल्लिजी महाराया, प्रभु आठ करम रिपु घाया ॥ ३ ॥ विशमा श्रीमुनिसुव्रत वंदूं, भव भव दुःख दूर निकंदूं ॥ नमी नेम पारस जसवंता, महावीर प्रभु सासण कंता ॥ ४ ॥ प्रभु थाप्या हे तीरथ चारी, प्रभु परमपति उपगारी ॥ प्रभु तुम विन अति दुःख पायो, चारुगतिमें घभरायो ॥ ५ ॥ अब जाण्या में साहिब साचा, सब देव जाण्या अन्य काचा ॥ इम जाणी तुम सरणमें आयो, तिलोक वंदे मन वच काया ॥ ६ ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ मल्लिनाथ मन मोह्यो रे, खटराजिंद केरो ॥ ए देशी ॥ प्रणमुं नित पाया, तारो तारो जिनराया रे ॥ प्र० ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, भविजनने सुखदाया रे ॥ प्र० ॥ ॥ १ ॥ सुमति पदम सुपार्श्व चंदा प्रभु, आठ कर्म रिपु घाया जी ॥ प्र० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, राग द्वेषकू हठाया जी ॥ प्र० ॥

॥ ३ ॥ विमल अनंत धर्मनाथ शांति जी, मरकी रोग उपशमाया जी ॥ प्र० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत जी, चोतिस अतिशे दिपाया जी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ नमी नेम पारस महावीर जी, सासणपति मन भाया जी ॥ प्र० ॥ ६ ॥ ए चोवीश जिन कर्म निवारी, ज्ञान केवल प्रभु पाया जी ॥ प्र० ॥ ७ ॥ चार तीरथकी किनी थापना, ज्ञान केवल प्रभु पाया जी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे नित नित प्रभुकूं, वंदूं मन वच काया जी ॥ प्र० ॥ ९ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ पद चोथुं ॥

॥ मेरी मेरी करतां जनम गयो रे ॥ ए देशी ॥ जय जय जिनंदा जय जय जिनंदा, टाले चउगति भव भव फंदा ॥ ज० ॥ ॥ १ ॥ रिषभ अजित संभव सुखकारी, अभिनंदण चरणन बलिहारी ॥ ज० ॥ २ ॥ सुमति पदम सुपारस सामी, चंदा प्रभु धन अंतरजामी ॥ ज० ॥ ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस दयाला, वासुपूज्य प्रणमुं किरपाला ॥ ज० ॥ ४ ॥ विमल अनंत धरम धनदाता, शांतिजिनंद करि हे सुखशाता ॥ ज० ॥ ५ ॥ कूंथु अर मल्ली गुणवंता, श्रीमुनिसुव्रत शिवपुर कंता ॥ ज० ॥ ६ ॥ नमी नेमी पारस मन भाया, महावीरपति शासनराया ॥ ज० ॥ ॥ ७ ॥ ए चोविश जिन जग छटकाई, लियो संजम तन मन उलसाइ ॥ ज० ॥ ८ ॥ जप तप किरिया करि अति भारी, कर्मशत्रु सब दिया निवारी ॥ ज० ॥ ९ ॥ केवलज्ञान प्रगट्यो जिण वारी, देइ उपदेशना भवि हितकारी ॥ ज० ॥ १० ॥ मन वचन तन जोग निवारी, शिवगढ राज लियो तिन वारी ॥ ज० ॥ ११ ॥ तिलोकरिख कहे सरणा तुमारो, जिम तिम करि भव पार उतारो ॥ ज० ॥ १२ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ शांति चरणारी जाउं वलिहारी ॥ ए देशी ॥ झेलो वंदना स्वामि हमारी, तुमारे चरण वलिहारी ॥ ए टेक ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम सुखकारी ॥ श्रीसुपार्श्व चंदा प्रभु समरो, जगनायक जसधारी ॥ प्रभुजी पूर्ण ऊपगारी ॥ झे० ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, विमल अनंत धर्मधारी ॥ शांति जिनंद सुखकंद जगतमें, मेट दिनी सव मारी ॥ हरो मेरी विपत्त विमारी ॥ झे० ॥ २ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रतजी, नमी नेमी सुविचारी ॥ तोरणसें पाछा फिर आया, छोडकें राजदुलारी ॥ नाथ तुम करुणा भंडारी ॥ झे० ॥ ३ ॥ वे वारसके वारस पारस, पंचपरमेष्टी उच्चारी ॥ नाग नागणी जलत बचाया, किना सुर अवतारी ॥ माहिमा जगमें अति थारी ॥ झे० ॥ ४ ॥ शासननायक वीर जिनेश्वर, हद्द क्षमा प्रभु धारी ॥ केवल लई प्रभु धर्म वतायो, सूत्र चारितर सारी ॥ तीरथ थाप्या प्रभु चारी ॥ झे० ॥ ५ ॥ अणसण लेइ प्रभु जोग त्याग कर, पहुता हे मुगति मझारी ॥ अनंत सुखामांही जाइ विराज्या नो, निरंजन निराकारी ॥ रह्या लोकालोक निहारी ॥ झे० ॥ ६ ॥ मोह मायामांहि उलज रह्यो में, पायो हुं दुःख अपारी ॥ तुम सरण विन चउगति भटक्यो, धर्मकी बुद्धि विसारी ॥ शीख सतगुरुकी न धारी ॥ झे० ॥ ७ ॥ अशुभ करम कछु दूर भयासुं, वाणी लगी प्रभु प्यारी ॥ अधम उद्धारण विरुद सुणीने, सरणो लियो सुविचारी ॥ सार करजो प्रभु ह्मारी ॥ झे० ॥ ८ ॥ मुझ सरिखो नहि दीन जगतमें, तुम सरिखो दातारी ॥ जिम तिम करि भव पार उतारो, या मांगु रिझवारी ॥ अरज लीजो अवधारी ॥ झे० ॥ ९ ॥ ओगणीशें अडातिस माघ कृष्ण पक्ष, तीज तिथि शनिवारी ॥ देश दक्षिण आवलकोटि पेटमें, जोड करी हितकारी ॥ तिलोकरिख

कहे सुविचारी ॥ झं० ॥ १० ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ पद छट्ठं ॥

॥ पणीयारीकी देशी ॥ जय जय आदि जिनेश्वरु ॥ माहाराया रे ॥ भव भव दुःख निकंद ॥ तार माहाराया रे ॥ अजित जीत करी कर्मसुं ॥ मा० ॥ प्रभु भविजनके सुखकंद ॥ ता० ॥ १ ॥ संभव स्वामी सुहामणा ॥ मा० ॥ करुणानिधि किरतार ॥ ता० ॥ अभिनंदन हितकारीया ॥ मा० ॥ सुमाते सुमति दातार ॥ ता० ॥ २ ॥ पद्म कद्मको आसरो ॥ मा० ॥ सूपारस जसवंत ॥ ता० ॥ चंद आनंद सदा करो ॥ मा० ॥ शिवरमणीका कंत ॥ ता० ॥ ३ ॥ सुविधिनाथ बुद्धि दीजीयें ॥ मा० ॥ शीतल दीन दयाल ॥ ता० ॥ श्रीश्रेयांस कृपा करो ॥ मा० ॥ प्रभु वासुपूज्य कृपाल ॥ ता० ॥ ४ ॥ विमल विमल मति दीजीयें ॥ मा० ॥ अनंत अनंत गुणधार ॥ ता० ॥ धर्म धर्म दाता सदा ॥ मा० ॥ शांति शांति दातार ॥ ता० ॥ ५ ॥ कुंथुनाथ करुणानिधि ॥ मा० ॥ अरनाथजी जगभाण ॥ ता० ॥ मल्लि नाथ मनमोहियो ॥ मा० ॥ मुनिसुव्रत पद निरवाण ॥ ता० ॥ ६ ॥ नमुं नमी रिष्ट नेमजी ॥ मा० ॥ पशुकी सुणी हे पुकार ॥ ता० ॥ तोरणसुं पाछा फिऱ्या ॥ मा० ॥ जाय चढ्या गिरनार ॥ ता० ॥ ७ ॥ नावारस वारस प्रभु ॥ मा० ॥ पारस जिन जयकार ॥ ता० ॥ माहावीर जगधीरजी ॥ मा० ॥ शासनका शिरदार ॥ ता० ॥ ८ ॥ असरण शरण दयानिधि ॥ मा० ॥ तुम विन नहीं को आधार ॥ ता० ॥ तिलोक रिख अरजी करे ॥ मा० ॥ तार तार प्रभु तार ॥ तार माहाराया रे ॥ ९ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पद सातमुं

॥ देशी वणझारीकी ॥ जिन राया रे ॥ श्रीमरुदेवी नंद, प्रणमुं आदि जिणंदजी ॥ जि० ॥ जि० ॥ अजित संभव हितकार,

अभिनंदन सुखकंद जी ॥ जि० ॥ १ ॥ जि० ॥ सुमतिपद्म सुपास, चंदा प्रभु हितकारिया ॥ जि० ॥ जि० ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस, वासुपूज्य उपगारीया ॥ जि० ॥ २ ॥ जि० ॥ विमल अनंत धर्म नाथ, शांति जिनंद शाता करो ॥ जि० ॥ कुंथु अर मल्लीनाथ, मुनिसुव्रत आरति हरो ॥ जि० ॥ ३ ॥ जि० ॥ नमी नेमी जिनराज, पारसनाथ करुणा घणी ॥ जि० ॥ जि० ॥ वर्द्धमान सुखकार, जय जय जय सासणधणी ॥ जि० ॥ ४ ॥ जि० ॥ घनघातिक चउ कर्म, हणी केवल पद पामिया ॥ जि० ॥ जि० ॥ दीनो धर्म उपदेश, चार तीरथ थापन किया ॥ जि० ॥ ५ ॥ जि० ॥ थया निरंजन निराकार, शिवरमणी प्रभुजी वरी ॥ जि० ॥ जि० ॥ तिलोकरिख कहे एम, तारजो मोहि कृपा करी ॥ जि० ॥ ६ ॥ जि० ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥ तुं धन तुं धन तुं धन तुं धन, शांति जिनेसर स्वामी ॥ ए देशी ॥ राग प्रभाती ॥ प्रात उठी चोविश जिनवरको, समरण कीजें भावधरी ॥ प्रा० ॥ ध्रु० ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति कुमति सव दूर हरी ॥ पद्म सुपारस चंदा प्रभु ध्यावो, पुष्पदंत हणया कर्म अरि ॥ प्रा० ॥ १ ॥ शीतल जिन श्रेयांस वासुपूज्य, विमल विमल वुद्धि देत खरी ॥ अनंत धर्म श्रीशांति जिनेश्वर, हरियो रोग असाध्य मरी ॥ प्रा० ॥ २ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत जी, नमी नेमी शिवरमणी वरी ॥ पारसनाथ वर्धमान जिनेश्वर, केवल लह्यो भवओघ तरी ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ तुम सम नहि कोइ तारक दूजो, इस निश्चे मनमांहे धरी ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, मुक्ति श्री द्यो महेर करी ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ पद नवमुं ॥

॥ पारस जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ श्रीजिन समरो रे भाइ, दिन दिन संपति पामो सवाइ ॥ भय सब जावे रे भागी, महा दुशमन होवे अनुरागी ॥ श्री० ॥ १ ॥ ऋषभ जिनेश्वर रे पहेला, अजित जिनंद नमुं अलवेला ॥ संभव स्वामी रे गावो, अभिनंदनके चरण चित्त लावो ॥ श्री० ॥ २ ॥ सुमति पदम प्रभु रे वंदो, सुपार्श्व नाम सदा सुखकंदो ॥ चंदा प्रभु पुष्पदंत रे स्वामी, शीतल श्रेयांस नमुं शिर नामी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वासुपूज्य जगना रे ताता, विमल अनंत धर्म शिवदाता ॥ शांति कुंथु अर मल्लि रे देवा, मुनिसुव्रतजीनी करो नित्य सेवा ॥ श्री० ॥ ४ ॥ नमी नेमी पारस रे प्यारा, वर्धमान शासन शणगारा ॥ प्रभु तुम शिवपुर रे बसिया, तुम दरिसण नामें निशिदिन तरसीया ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अधम उद्धारण रे जाणी, चरण शरण इम हिदेमें थाणी ॥ तिलोकरिख वंदे रे पाया, तार तार कृपा करि माहाराया ॥ श्री० ॥ ६ ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ पद दशमुं ॥

॥ माचका दोहाकी देशी ॥ प्रणमुं आदि जिनंदने जी कांइ, अजित नाथ महाराज ॥ संभवगुण संभव करोजी कांइ, अभिनंदन जिनराज हो ॥ चोविश जिनराया, एस वतावो सुगति सहेलकी ॥ सुमति सुमति दातार दयानिधि, पद्मप्रभ जगदीश ॥ श्रीसुपास चंदा प्रभुकु, नित्य नमाउं शसि हो ॥ चो० ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, विमल अनंत धर्मनाथ ॥ शांति कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत, वंदूं में जोडी हाथ हो ॥ चो० ॥ २ ॥ एकाविशमा नमिनाथ निरुपम, वाविशमा रिष्टनेम ॥ ना वारसके वारस पारस, दीजो अविचल खेम हो ॥ चो० ॥ ३ ॥ वर्द्धमान शासनका साहेव, हण्या घनघातिक कर्म ॥ केवल लक्ष्मी पायनेजी कांइ, दाख्यो

श्रीजिनधर्म हो ॥ चो० ॥ ४ ॥ तीरथ थापी मिथ्या उथापी, किनो परम उपगार ॥ होय अजोगी मुगति विराज्या, अजर अमर अविकार हो ॥ चो० ॥ ५ ॥ अलख निरंजन भवदुःख भंजन, सिद्धपद लियो सार ॥ तिलोकरिख कहे अहो जगवत्सल, जिम तिम करो भवपार हो ॥ चो० ॥ ६ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पद अग्यारमुं ॥ चोपाइनी देशीमां ॥

॥ ऋषभ अजित संभव सुखकार, अभिनंदन प्रभु जग आधार ॥ सुमति पदम प्रभु तारण जहाज, प्रणमुं चोवीशे जिनराज ॥ १ ॥ सुपारस चंद्रप्रभ स्वाम, सुविधि शीतल जिन करूं प्रणाम ॥ श्रेयांस वासुपुज्य सारो काज ॥ प्र० ॥ २ ॥ विमल विमलमति दायक देव, अनंत धर्म जिन करीयें सेव ॥ शांति करो श्रीशांति महाराज ॥प्र० ॥ ३ ॥ कुंथु अर मल्लि जिन जाण, श्रीमुनिसुव्रत त्रिजग भाण ॥ नमी नेम राखो मुझ लाज ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पारसनाथ महावीर दयाल, भवदुःख भंजन परम कृपाल ॥ मुक्ति नगर को लीनो राज ॥ प्र० ॥ ५ ॥ तुम विन नहिं कोई तारणहार, तिलोकरिख इम निश्चें धार ॥ अरज करे द्यो शिवपुरसाज ॥ प्र० ॥ ६ ॥

॥ पद बारमुं ॥

॥ देशी न्यालदेमें ॥ ऋषभ अजित संभव नमुं संभव नमुं जी कांई, अभिनंदन जस धार ॥ सुमति पदम प्रभु वंदीयें वंदियें जी कांई, सुपारस जिन हितकार ॥ करुणा सागर तारजो तारजो जी प्रभु. भक्तवत्सल भगवंत ॥ क० ॥ १ ॥ चंदा प्रभु सुविधिशिर सुविधिशिर जी कांइ, शीतल जिन श्रेयांस ॥ वासुपूज्य विमल नमुं विमल नमुं जी कांइ. अनंतनाथ अवतंस ॥ क० ॥ २ ॥ धर्म शांति कुंथु नमुं कुंथु नमुं जी कांइ, अरनाथजी जगतात ॥ मल्लिनाथ आगणीशमा ओगणीशमा जी कांइ, प्रभावतीना अंगजात ॥ क० ॥ ३ ॥ मुनिसुव्रत मुनिसुव्रत वर्णा जी कांइ, नमि-

नाथ जस धार ॥ रिष्ट नेमी करुणा धणी करुणा धणी जी कांइ, पशुवाकी सुणिहे पुकार ॥ क० ॥ ४ ॥ पारस पारस सारीखा सारिखा जी कांइ, बलतां नागिणी नाग ॥ परमेष्ठी सुणाइ सुरपद दीयो सुरपद दीयो जी कांइ, कीना तिण महाभाग ॥ क० ॥ ५ ॥ महावीर शासन धणी शासन धणी जी कांइ, हद क्षमा प्रभु धार ॥ केवल लेइ सुगतें गया सुगतें गया जी कांइ, पाया पद अविकार ॥ क० ॥ ६ ॥ तुम शरणा विनुं हुं भम्यो हुं भम्योजी कांइ, पायो दुःख अपार॥ तिलोकरिख कहे में लियो में लियो जी प्रभु, चरण शरणको आधार ॥ क० ॥ ७ ॥ इति॥ १२ ॥

॥ पद तेरमुं ॥

॥ सुमति सदा दिलमें धरो ॥ ए देशी ॥ ऋषभ अजित संभव नमुं, अभिनंदन श्रीकंत ॥ जिनेश्वर ॥ सुमति पदम सुपास जी, कीधो करमको अंत ॥ जि० ॥ मोय तारो किरपा करी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ चंदा प्रभु सुविधि वली, शीतल टालो संताप ॥ जि० ॥ श्रेयांस वासुपूज्य विमल जी, अनंतजीको करो जाप ॥ जि० ॥ मो० ॥ २ ॥ धर्म शांति कुंथु अर, मल्ली मुनिसुव्रत श्याम ॥ जि० ॥ नमियें नमी रिठनेम जी, पारस प्रभु गुणधाम ॥ जि० ॥ मो० ॥ ३ ॥ वर्द्धमान शासन धणी, कर्म भर्म किया छार ॥ जि० ॥ केवल ज्ञान दीवाकरु, थाप्यां तीरथ च्यार ॥ जि० ॥ मो० ॥ ४ ॥ कियो उपगार दया निधि, पहुंता मुक्तिमझार ॥ जि० ॥ तिलोक कहे जिम तिम करी, कीजो भवजल पार ॥ जि० ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ पद चौदमुं ॥

॥ चार पहरको दिन होवे रे ॥ ए देशी ॥ ऋषभ अजित जिन वंदियें रे. संभव जिन सुखकार हो ॥ भविक जन ॥ अभिनंदन करुणानिधि रे, सुमति सुमति दातार हो ॥ भ० ॥ चंदो चोविश

जिन भावशुं रे ॥ १ ॥ पद्म सुपारस चंदा प्रभु रे, सुविधि शीतल कृपाल हो ॥ भ० ॥ श्रेयांस वासुपूज्य ध्याइयें रे, विमल अनंत सुविशाल हो ॥ भ० ॥ वं० ॥ २ ॥ धर्मनाथ शांतीश्वरू रे, कुंथु अर मल्लि जाण हो ॥ भ० ॥ श्री मुनिसुव्रत साहिबा रे, नमी नेम गुण खाण हो ॥ भ० ॥ वं० ॥ ३ ॥ पारस प्रभु महावीरजी रे, शासनका शिरदार हो ॥ भ० ॥ राग द्वेष मल जीतिने रे, पहोता मुगति मझार हो ॥ भ० ॥ वं० ॥ ४ ॥ अहो अविनाशी साहिवा रे, जगवत्सल जगदीश हो ॥ जि० ॥ तिलोकरिख करे विनति रे, कीजो भव निस्तार हो ॥ भ० ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ पद पन्नरमुं ॥

॥ भूंडी रे भूख अभागणी ॥ ए देशी ॥ प्रभु समरो नित्य भावशुं, ऋषभ अजित सुखकार ॥ लाल रे संभव अभिनंदन भला, नाम लिया निस्तार ॥ लालरे ॥ प्र० ॥ १ ॥ सुमति पद्म सुपास जी, चंदा प्रभु चंद जेम ॥ ला० ॥ भवदुःख ताप बुझावणा, भविजनने करे खेम ॥ला०॥२॥ सुविधि शीतल श्रेयांस जी, वासुपूज्य शिवकंत ॥ला०॥ विमल अनंत धर्म धारणा, शांतिकारक श्रीशांति ॥ लाल रे ॥प्र०॥३॥ कुंथु अर मल्ली नमुं, मुनिसुव्रत सुखदाय ॥ला०॥ एकविशमा नमिनाथ जी, भक्तवत्सल जिनराय ॥ लाल रे ॥प्र०॥४॥ रिष्टनेमि जिनवर जयो, पशुवांकी सुणी पुकार ॥ ला० ॥ तोरणसूं पाछा फिर्‍या, शिववधूना भरतार ॥ला०॥प्र०॥५॥ पारस पारस सारिखा, संभलाया नवकर ॥ला०॥ बचाया नाग नागिणी, दियो सुर पद अवतार ॥ ला० ॥ प्र० ॥ ६ ॥ वर्धमान शासन धणी, दीनानाथ दयाल ॥ ला० ॥ केवल कमला लेइने, लीनां सुख विशाल ॥ ला० ॥ प्र० ॥ ७ ॥ ए चोविश जगदीश जी, परमगुरु जगनाथ ॥ ला० ॥ तिलोकरिख कहे तारजो, वीनवुं जोडी हाथ ॥ ला० ॥ प्र० ॥ ८ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ पद शोलमुं ॥

॥ श्रीमुनिसुव्रत साहेबा ॥ अथवा अंजणाना रासना कडवामां ॥ प्रणमुं जिनेश्वर जगपति, परमदयाल करुणाना भंडार तो ॥ जुगला रे धर्म निवारीया, ऋषभ जिनंद नृप नाभिकुमार तो ॥ प्र० ॥ १ ॥ अजित कंदर्प दल जीतिया, संभवनाथ गुणसंभव जाण तो ॥ अभिनंदण वंदण करुं भावशुं, सुमति पदम प्रभु त्रिजगभाण तो ॥ प्र० ॥ २ ॥ श्रीसुपारस जस घणो, चंदा प्रभुजीने सुविधि जिनंद तो ॥ शीतल श्रेयांस गुणधारणा, वासुपूज्य जगगुरु टाल्या भवफंद तो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ विमल विमल मति वंदियें, अनंत अनंत गुण सुखनी राश तो ॥ धर्म श्री शांति कुंथु अर, मल्ली जिनंद कियो शिववास तो ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रीमुनिसुव्रत नमी प्रभु, रिष्टनेमी दयासिंधु दातार तो ॥ पशुकी पुकार सुणी साहीबा, तोरणसुं फिर गया मोक्ष मझार तो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ पारस पारस सारिखा, जगत वारस प्रभु परम दयाल तो ॥ श्रीवर्धमान शासन धनी, भक्त-तारक प्रभु जग प्रतिपाल तो ॥ प्र० ॥ ६ ॥ अधम उद्धारण विरुद आपको, जाणिने शरण लियो जगदीश तो ॥ जिम तिम तारो प्रभु मुझ भणी, तिलोकरिख वीनवे पूरा जगीश तो ॥ ७ ॥ प्र० ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ पद सत्तरमुं ॥

॥ गाफल मत रहे रे, मेरी जान ॥ गा० ॥ ए देशी ॥ जपो जिनवर रे मेरि जान, जपो जिनवर रे ॥ जिनवर जप जगतमे सुखदाता, झूठा हे सब जगका नाता ॥ ज० ॥ ऋषभ अजित संभव सुखकारी, अभिनंदन जग जसधारी, सुमतिनाथ सुमति दातारी ॥ पद्मप्रभु सद्म अचल पाया, भया तीन भवन अचल राया ॥ ज० ॥ १ ॥ सुपास आश सब पूरो, चंदा प्रभु संकट चूरो, सुविधि शीतल मोह किया दूरो ॥ इग्यारमा श्रेयांसनाथ स्वामी,

वासुपूज्य वंद्रू सें शिर नामी ॥ ज० ॥ २ ॥ श्रीविमल विमल मतिवंता, श्रीअनंत धर्म शिवकंता, शांति करो शांति महंता ॥ कुंथु अर कियो कर्म घाणो, केवल लेइ पाया निर्वाणो ॥ ज० ॥ ३ ॥ मल्लिनाथ अनत बालिराया, छहूं नृपतिकूं प्रभु समझाया, मुनिसुव्रत व्रत सुहाया ॥ एकविशमा नमिनाथ म्होटा, नमतां मिटे जन्म मरण दोटा ॥ ज० ॥ ४ ॥ रिष्टनेमी शिवादेवी नंदा, जादव कुलदीपक चंदा, चढ्या व्याहन आलके छंदा ॥ पशुकी पुकार अवधारी, त्यागी प्रभु राजुलसी नारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ पारस करुणाके भंडारो, नागनागिणी जलत उगारी, परमेष्टीको शरण उच्चारी ॥ कमठमद भंजण निःशंका, दिया प्रभु मुक्तिमांहे डंका ॥ ज० ॥ ६ ॥ वर्द्धमान शासन पति सच्चा, जग जान लिया प्रभु कच्चा, संजम करणी मांही राच्या, केवल लेइ थाप्यां तीरथ चारी, मुलकमें कीर्त्ति अपरम पारी॥ ज० ॥ ७ ॥प्रभु असरण सरण कहाया, जगवत्सल नाम धराया, तिलोकरिख सरण तुम आया ॥ नाथजी में भवभव तुम वंदा, मेटो मेरा जनम मरण फंदा ॥ ज० ॥ ८ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ पद अढारमुं ॥

॥ कुंथु जिनराज तुं ऐसो ॥ रेखताकी देशीमें ॥ समर जिन नामकूं प्यारा, मिटे सब कर्मका भारा ॥ ध्रु० ॥ ऋषभ जिननाम सुख दाता, दरिसण घटमांही विख्याता ॥ स० ॥ १ ॥ अजित जिनराज गुणवंता, संभव जगदीश शिवकंता ॥ जय जय जय अभिनंदन स्वामी, सुमति पद्मप्रभजी अंतरजामी ॥ स० ॥ २ ॥ सुपारस नाथ जसधारी, जिनोंके चरण बलिहारी ॥ चंदा प्रभु वंदूं चंद्रवरणा, भवो भव चरणका सरणा ॥ स० ॥ ३ ॥ शीतल श्रेयांस जगदीशा, नमूं नित्य वासुपूज्य ईशा ॥ विमलमति विमल प्रभु कीजो, अनंत सुख अनंत नाथ दीजो ॥ स० ॥ ४ ॥ धरम धन धरमनाथ धरता, शांतिप्रभु शांतिके करता ॥ कुंथु अर मल्लि

मल घाया, मेरे प्रभु मुनिसुव्रत भाया ॥ स० ॥ ५ ॥ एकाविंशमा नमिनाथ ध्याउं, चरण पें शीश नमाउं ॥ बावीशमा रिष्टनेमी सांई, तारिफ मासुरमुलक ठाई ॥ स० ॥ ६ ॥ त्रेवीशमा पारसनाथ सच्चा, जिनोंका प्रगट हे परचा ॥ सासणपति महावीर बंका, बजे हे आज उनका डंका ॥ स० ॥ ७ ॥ करी प्रभु जबरदस्त करणी, लीनी हे अचल शिवघरणी ॥ प्रभुजी मेरी अर्ज मान लीजो, तिलोकरिख पदवी सोय दीजो ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ पद ओगणीशमुं ॥

॥ कडखाकीदेशी ॥ वंदूं चोवीश, जिनंद आनंदसुं, तारो कृपाल, करुणा भंडारी ॥ तुम सम और नहिं, ठौर त्रिहुं भुवनमें, जाणीने सरण, लीयो विचारी ॥ वं० ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमतिपदम, सुपार्श्व देवा ॥ चंद्रलच्छन चंद्रवर्ण चंदा प्रभु, भवभव दिजो प्रभु, अचल सेवा ॥ वं० ॥ २ ॥ प्रणमुं पुष्पदंत, शीतल श्रेयांसजिन, वासुपूज्य पूजनिक, जगजन सुहाया ॥ विमल अनंत धर्म, शांतिशांति करो, जक्तनायक जगगुरु कहाया ॥ वं० ॥ ३ ॥ श्रीकुंथु अर मल्लि, श्री मुनिसुव्रत, सुकृत करणी सरल भावें ॥ नमी नेमी श्री पार्श्व महावीरजी, नाम लियां सकल, विघन जावे ॥ वं० ॥ ४ ॥ ईशका ईश, जगदीश चोविस प्रभु, कर्मकाटी काटी, सत्तिमुक्ति पाया ॥ तिलोकरिख वीनती, दरिसण दीजीयें, अचलभक्ति अरु, चरण छाया ॥ वं० ॥ ५ ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पद वीशमुं ॥

॥ प्रभु थारा गुण अनंत अपारा ॥ ए देशी ॥ प्रभुजी थारा चरणको आधार, प्रभुजी थारा धर्मको आधार ॥ध्रु०॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति सुमतिदातार ॥ प्र० ॥ १ ॥ पद्म सुपास चंदा प्रभु समरो, सुचंद्रवदन सुखकार ॥ प्र० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, जगमें कीर्ति अपार ॥ प्र० ॥ ३ ॥ विमल अनंत

धर्म शांतीश्वर, शांतिकरण संसार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्ली मुनिसुव्रतजी, सुव्रतपद दातार ॥ प्र० ॥ ५ ॥ नमी नेमि पारस महावीरजी, सासणपति शिरदार ॥ प्र० ॥ ६ ॥ मुझ सम दीन नहीं कोइ जगमें, तुम सम नहिं को दातार ॥ प्र० ॥ ७ ॥ अधम उद्धारण विरुद विचारो, करुणानिधि किरतार ॥ प्र० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, कीजो भवजल पार ॥ प्र० ॥ ९ ॥ इति ॥२०॥

॥ पद एकवीशमुं ॥

॥ आज भलो दिन उगो जी ॥ भटीयाणीनी देशी ॥ प्रात उठ नित भावेंजी, प्रणमुं चोविश जिनंदजी, प्रभु करजो भवजल पार ॥ ध्रु० ॥ ऋषभ अजित सुखदाई हो, संभवजगमांइ दीपता, प्रभु अभिनंदन हितकार ॥ सुमति सुमतिके दातार हो, जगत्राता पद्म सुपासजी कांइ, वंछित पूरणहार ॥ प्रा० ॥१॥ चंद्रा प्रभु चंदवरणा हो सुखकरणा सुविधि जिनेश्वरू, प्रभु शीतल शिवदातार ॥ श्रेयांस वासुपूज्य ध्याउं हो, मनाउं विमल जिनंद जी प्रभु, अनंत अनंत गुणधार ॥ प्रा० ॥ २ ॥ धर्मधर्म धननायक हो, दायक शांति दया करुं प्रभु, शांति करी संसार ॥ कुंथु अर मल्ली वंदूं हो, निकंदूं पातक माहेरां प्रभु, मुनिसुव्रत व्रतधार ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ नमि नेमी जिनराया हो, मनभाया पारसनाथजी, प्रभु परचा पूरणहार ॥ महावीर जग डाह्या हो, तजि माया ममता मोहनी, प्रभु कर्म भर्म किया छार ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ केवलज्ञानज पाया हो, जव आया इंद्र उमावसुं, कियो मोच्छव हर्ष अपार ॥ हितउपदेश सुणायाजी, जगराया पर उपगारीया, प्रभु, थाप्यां तीरथ चार ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ सुगतिनगर सीधाया जी कांई, पाया शिव सुखसासतां, प्रभु अजर अमर अविकार ॥ तिलोकरिख इम वोले हो, प्रभु खोल आयो आपके, मुझ द्यो अविचल सुखसार ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ पद बाविशमु ॥

॥ सद्गुरुजी कहे जग सपनां ए ॥ ए देशी ॥ जपो जपो भविक जिन राया, कर्म काटके अमर पदपाया रे ॥ ज० ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव मन भाया, अभिनंदन वंदुं नमकाया रे ॥ ज० ॥२॥ सुमति पद्म सुपास सुखदाया, चंदाप्रभु चंद बरन सोहाया रे ॥ ज० ॥३॥ सुविधि शीतल श्रेयांस अति डाह्या, वासुपूज्य कर्मरिपु घाया रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ विमल अनंत धर्मधन पाया, शांतिनाथ भविक समझाया रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मल्लि मलहठाया, मुनिसुव्रत व्रत दृढ ठाया रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ नमी नेमी पारस सरसाया, महावीर त्रिशलादेवी जाया रे ॥ज०॥७॥ तिलोकरिख प्रभुसरणे चल आया, जिम तिम करि तार महाराया रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ पद तेवीशमुं ॥

॥ कपूर होवे अतिउजलो जी ॥ ए देशी ॥ प्रणमुं आदिजिनेश्वरू जी, भयभंजण भगवंत ॥ अजितनाथ जीत्या अरि जी, संभव गुण अनंत ॥ जिनेश्वर आपतणो छे आधार ॥ ध्रु० ॥ १ ॥ अभिनंदन आनंदकरो जी, सुमति सुमतिदातार ॥ पद्मप्रभु करुणा निधि जी, सुपारस सुखकार ॥ जि० ॥ २ ॥ चंद्रप्रभ चंद्रलच्छना जी, चंदरवरण शरीर ॥ पुष्पदंत शीतल नमूं जी, श्रेयांस श्रेयांस गुणधीर ॥ जि० ॥ ३ ॥ वासुपूज्य विमल नमूं जी, अनंत अनंत सुखलीन, धर्मनाथ शांतीश्वरू जी, मरीनो रोग शांतिकीन ॥ जि० ॥ ४ ॥ कुंथु अरजिनवर जपो जी, मल्ली मलमद मार ॥ केवलकमला पाइया जी, मुनिसुव्रत व्रतधार ॥ जि० ॥ ५ ॥ नमी नेमी पारस नमुं जी, चोविशमा वर्धमान ॥ ए चोविशजिन जगगुरु जी, पास्या अविचल थान ॥ जि० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कर जोडिने जी, वंदे वारम वार ॥ अरज सुतिक अवधारजो जी, कीजो भवजल पार ॥जि० ॥ ७ ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ पद चोवीशमुं ॥

॥ श्रीमुनिसुव्रत साहिब साचो ॥ ए देशी ॥ वंदूं चोविश जगदीश दयाला, गुणरतनाकर माला रे ॥ जग उद्धारण जगरच्छ पाला, काव्या कर्मका जाला रे ॥ वं० ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव सुखकारी, अभिनंदन जसधारी रे ॥ सुमति पदम प्रभुजी उपगारी, चरणसरण वलिहारी रे ॥ वं० ॥ २ ॥ सुपारस चंदा प्रभु स्वामी, सुविधि शीतल गुणधामी रे ॥ श्रीश्रेयांस नमूं शिवगामी, जय जय अंतरजामी रे ॥ वं० ॥ ३ ॥ वासुपूज्य श्रीविमल महंता अनंत धरम शिवकंता रे ॥ शांतिजिनेश्वर शांति करंता, किना करम रिपुअंता रे ॥ वं० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्ली मल घाया, मुनिसुव्रत व्रत डाया रे ॥ नमी नेमी पारस भाया, भक्तवत्सल पद पाया रे ॥ वं० ॥ ५ ॥ श्रीमहावीर सासणपति साचा, भव दुःख भंजन जाचा रे ॥ रोम रोममें मन तन राचा, खोटा जगका लाचा रे ॥ वं० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कहे अहो जगराया, दुर्लभ दुर्लभ पायारे ॥ कुदेव त्यागी तुम शरणे आया, तार तार माहारायारे ॥ वं० ॥ ७ ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ अथ देवगुणस्तवन प्रारंभः ॥

॥ देशी बाबा आदमकी ॥ ऐसा जिन ऐसा जिन ऐसा जिन है, ललि ललि वंदुं सदा निश दिन है ॥ ऐ० ॥ १ ॥ एक सहस्र अष्ट लक्षण है, तनकांति झलक ज्यों रतन है ॥ ऐ० ॥ २ ॥ जाके परथम संठाण संघयण है, उत्कृष्ट रूप सुवर्ण है ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ जाण्यो सब अथिर तन धन है, कियो संजम लेवनको मन है ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ एक कोड अठ लख दिन दीन है, दई दान महा तप कीन है ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ शुकल ध्यानविषे लय लीन है, घनघातिक कर्म कीने छिन है ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ केवल ज्ञान प्रगट्यो तत्क्षण है, सब द्रव्य जाणे भिन्न भिन्न है ॥ ऐ० ॥ ७ ॥ चोतिस अतिशय पांतिस

वचन है, उपदेश देते भविजन है ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ नारी पुत्र जण त कोटीन है, स्वामी सरिखा न और नवीन है ॥ ऐ ० ॥ ९ ॥ कर्म वंधनकी ज्याकूं घीन है, परमपात्र परम प्रवीन है ॥ ऐ ॥ ॥ १० ॥ तीर्थ थापे कापे कर्मवन है, प्रभु पहुंचे अचल भवन है ॥ ऐ० ॥ ११ ॥ अजर अमर अविनाशी पद लीन है, जन्म मरण किया पर क्षीन है ॥ ऐ० ॥ १२ ॥ अयवंता रिखाजि महाराज मया कीन है, ऐसा देव लिया मैंने चिन है ॥ ऐ० ॥ १३ ॥ तिलोक रिख कहे प्रभु धन धन है, ऐसा देव वसे मेरे मन है ॥ ऐ० ॥ १४ ॥ इति ॥२५॥

अथ गुरुगुण स्तवन प्रारंभः ॥

॥ देशी एहीज ॥ ऐसा गुरु ऐसा गुरु ऐसा गुरु है, रहे कनक कामिनीसे दूर है ॥ ऐ० ॥ ॥ ज्ञान ध्यानमें रहे भरपूर है, वीतराग शरण सदा उर है ॥ ऐ० ॥ २ ॥ आठुं कर्मकी फौज करूर है, सो तप जपसें करे चक चूर है ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ नहिं क्रोध कपट मगरूर है, विषय मदन किया चक चूर है ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ त्यागे पाप अठारा जे क्रूर है, बोले निरवद्य वचन मधुर है ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ नर पशु और सुर असुर है, सहे परिसह सकल सच्चा शूर है ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ शील समकित धन भरया भूर है, दूर होत कर्मरूपी धूर है ॥ ऐ० ॥ ७ ॥ सज्झाय रूप वजे रणतूर है, कीर्त्तिरूप नोबत रही घूर है ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ नही माने विकथा मजकूर है, जे जिनागमकु करे मंजूर है ॥ ऐ० ॥ ९ ॥ संसार माने सो क्षणभंगूर है, जाणे धर्म थिर सदा मशहूर है ॥ ऐ० ॥ १० ॥ मिथ्यामत माने फितूर है, नव तत्त्व पेछाने चतुर है ॥ ऐ० ॥ ११ ॥ भविजन मन भावे जरूर है. नहिं वंदे सोई बे शहूर है ॥ ऐ० ॥ १२ ॥ अयवंतारिखजी महाराज हजूर है. मैंने जाण्यो धर्मको अंकुर है ॥ ऐ० ॥ १३ ॥ तिलोकरिख कहे जे

सतगुरु है, सदा वंदणा उगंतां सूर है ॥ ऐ० ॥ १४ ॥ इति ॥२६॥

॥ अथ धर्मवर्णन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ देशी एहीज ॥ ऐसा धर्म ऐसा धर्म ऐसा धर्म है, जिणसें मिटत सकल भयभर्म है ॥ ऐ० ॥ १ ॥ सब जीव चाहे शाता परम है, नहिं दे परकुं परिश्रम है ॥ ऐ० ॥ २ ॥ नहिं भाखे मृपा को मरम है, टाले चोरी पाले व्रत ब्रह्म है ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ टाले ममता छल रहे नरम है, नही राग द्वेप नहिं गरम है ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ कलहो कलंक चाडीसुवंधे कर्म है, परिहरे सुगुणी राखे शरम है ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ श्रीजिन आज्ञाके मांही धर्म है, कोइ बुध जनकुं महेरम है ॥ ए० ॥ ६ ॥ पाले धर्म होवे अकरम है, केवल लेई भया भव चरम है ॥ ऐ० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे सिद्ध परिब्रह्म है, गुरु महेरसुं हुवो महेरम है ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ ॥ इति ॥२७॥

॥ अथ जिनगुणविस्मयस्तवन प्रारंभः ॥

॥ मेरी मेरी करतां जनम गयो रे ॥ ए देशी ॥ अहो प्रभु तुम गुण अचरिज आवे, कहेता सुरगुरु पार न पावे ॥ अ० ॥ १ ॥ तुम सहु जाण कहे जग मांइ ॥ जीवकी आदि सो कछु न बताई ॥ अ० ॥ २ ॥ जगत कहे देखे सब स्वामी, स्वपनुं नहि देखो शिवगामी ॥ अ० ॥ ३ ॥ वेदो नहिं सुख दुःख जग जाणे, सुख अनंत सिद्धांत बखाणे ॥ अ० ॥ ४ ॥ तुम वीतराग दशा सदा पावे, आराध्या विण कोइ मोक्ष न जावे ॥ अ० ॥ ५ ॥ निगुणा पर नहि द्वेप तुमारो, आज्ञा नही माने तो भमत संसारो ॥ अ० ॥ ६ ॥ पच्चक्खाण तो प्रभु एक न कांइ, आश्रव नहिं लागे तुम तांइ ॥ अ० ॥ ७ ॥ आउखा कर्मको बंधन नांइ, अनंत कालकी थिरथिति पाइ ॥ अ० ॥ ८ ॥ नाम करम क्षय करि शिववासो, नाम लिया सब विघन विनासो ॥ अ० ॥ ९ ॥ गोत्र

करम तुमने नाहि देवा, गोत्र संभालि करे जन सेवा ॥ अ० ॥ १० ॥ अंतराय करि दुरि थां सांइ, नूंतन लाभ दिसे नहिं कांइ ॥अ० ॥ ११ ॥ करुणासागर जगमें कहावो, करम रिपु सब दूर भगावो ॥ अ० ॥ १२ ॥ परिग्रह नहिं तुमने जग दाखे, जगनायक कहे आगम साखें ॥ अ० ॥ १३ ॥ कामिनी त्रिविध त्रिविध तुम त्यागी, शिवरमणी पति कहे जगरागी ॥ अ० ॥ १४ ॥ तिलोक-रिख लियो शरण तुमारो, अधम उद्धारण विरुद विचारो ॥ अ० ॥ १५ ॥ मुझ अवगुण प्रभु दूर निवारो, जेम तेम करि भव पार उतारो ॥ अ० ॥ १६ ॥इति॥२८॥

॥ अथ उपदेश स्तवन पद पहेलुं प्रारंभ ॥

॥ समज समज गुणवंत सयाणां, कर ले सुकृत प्रभुका गुण गाणां ॥ स० ॥ १ ॥ काल अनंत भम्यो चउ गतिमें, राच्यो नहिं तुं श्रीजिनमतमें ॥ स० ॥ २ ॥ गर्भवासमें बहुत दुःख पायो, नवमास तुं उंधो लटकायो ॥ स० ॥ ३ ॥ जन्म भयो विसर्यो दुःख सारा, खावण पीवण प्रेम अपारा ॥ स० ॥ ४ ॥ बालपणुं हसि खेल गमायो, धर्म ध्यान कछु दाय न आयो ॥ स० ॥ ५ ॥ जोबन वयमांहि पाप कमायो, भोग विलासविषे ललचायो ॥ स० ॥ ६ ॥ निशिदिन हाय करे धन केरी, देश विदेश देवे घाणि फेरी ॥ स० ॥ ७ ॥ भूलो कहे माया मेरी या मेरी, तेरे कहे कछु होत न तेरी ॥ स० ॥ ८ ॥ बाप दादा सबही गये छंडी, किसविध आश करे तुं घमंडी ॥ स० ॥ ९ ॥ मुट्ठि बांधके जन्म तुं पायो, हाथ पसारके आगें सिधायो ॥ स० ॥ १० ॥ कर कर खोटा धंदा धन जोडे, धर्मकरणीसुं प्रीती क्युं तोडे ॥ स० ॥ ११ ॥ पिप्पलपान संझाका उजाला, बादल छाय सुपन धन आशा ॥ स० ॥ १२ ॥ देहसुं ममता करे तुं घणेरी, होवे घडीकमें राखकी ढेरी ॥ स० ॥ १३ ॥ पल पल आयु घटे नर तेरो, पाप कमायासुं

नरकमें डेरो ॥ स० ॥ १४ ॥ देव निरंजन भक्ति करीजें, गुरु निर्ग्रंथके नित्य नमीजें ॥ स० ॥ १५ ॥ धर्म दयासें हे सुखदानी, ए तीन तत्त्व लो न्याय पीछाणी ॥ स० ॥ १६ ॥ मिथ्या भर्म कर्म सब छंडो, छकाय जीव भर्णा मत दंडो ॥ स० ॥ १७ ॥ तिलोकरिख कहे सुणो नर नारी, इण भव जस आगें सुख भारी ॥ स० ॥ १८ ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ देशी एहीज ॥ गफलतमें मत रहे रे दिवाना, जीव चिडा यमराज सिचाना ॥ ग० ॥ १ ॥ रात दिवस करता नित धंधा, जाणके होय रह्या कैसें अंधा ॥ २ ॥ ग० ॥ जैसें त्तित्तरकुं बाझ झपटे, मुसककों ज्यों मांजर गटके ॥ ३ ॥ ग० ॥ कुरंगको सिंह ज्यों पकड विदारे, तैसेंही प्राणीकुं काल प्रहारे ॥ ४ ॥ ग० ॥ मात पिता तिरिया सुत सारा, मरण आया नहिं राखणहारा ॥ ५ ॥ ग० ॥ सात कोट भूतल धसि जावे, जहां पण यम आयकें गटकावे ॥ ६ ॥ ग० ॥ हरि हर इंद्र चंद्र नर राया, यमकी त्रासेंसे सब घवराया ॥ ७ ॥ ग० ॥ जिण घर हय गय लक्ष चोराशी, वे पण हो गये मसाणके वासी ॥ ८ ॥ ग० ॥ छप्पन कोडिके नाथ कहाया, पाणी विना वनसें मरण पाया ॥ ९ ॥ ग० ॥ काहेकुं तुं करता अकडाइ, देख तुं दादा पडदादाके तांइ ॥ १० ॥ ग० ॥ केइ चल्या केइ चालणहारा, क्युं न हुशियार होवे तुं गमारा ॥ ११ ॥ ग० ॥ दिन दिन चलणो निकट जो आवे, काल अचानक झपट ले जावे ॥ १२ ॥ ग० ॥ धन दोलत ओर माल खजाना, छेवट छोड अकेला सिधाणां ॥ १३ ॥ ग० ॥ धन कमायो सो पाछला खावे. कर्मसें कोय न पांति पडावे ॥ १४ ॥ ग० ॥ घेवर सो नो जमाइने खाया. कैदखानामें मोटो दुःख पाया ॥ १५ ॥ ग० ॥ दो कोसाके आंतर जावे, तो पण

खरची साथ ले सिधावे ॥ १६ ॥ ग० ॥ परभव तो निश्चय तुझ जाणो, क्युं नहिं लेव तुं धर्मको नाणो ॥ १७ ॥ ग० ॥ सद्गुरु चोकिदार चेतावे, सुकृतसौदा तेरे संग आवे ॥ १८ ॥ ग० ॥ ओगणीशें गुणचालिस मझारो, मगाशिर शुदि अष्टमी चंद्र वारो ॥ १९ ॥ ग० ॥ शहेर सतारा दक्षिणमांइ, तिलोकरिख कहे चेतजो भाई ॥ २० ॥ ग० ॥

॥ अथ उपदेशीफटको स्तवन प्रारंभः ॥

॥ चाल एहीज ॥ धिक तेरा जीवडा, न करता धरमकुं ॥ धिक तेरा तन मन, धिक हे जनमकुं ॥ धि० ॥ १ ॥ रत्नचिंतामणि जन्म जो नरको, खोय दियो जेसें भव तेने खरको ॥ धि० ॥ २ ॥ नीचकुं देखिकें शिश नमावे, संतकुं देखि अधिक अकडावे ॥ धि० ॥ ३ ॥ धर्मकथा कछु दाय न आवे, जो सुण तो झुकझुक झोला खावे ॥ धि० ॥ ४ ॥ इष्कका ख्याल राग अनुरागें, धक्का खाय तोहि धसे आगें ॥ धि० ॥ ५ ॥ नाटकमें उभा रहे रात सारी, मुनिदरसण आलस अति भारी ॥ धि० ॥ ६ ॥ तप जप वातमें पट नट जावे, खाणेमें लोटी लेई झट जावे ॥ धि० ॥ ७ ॥ स्तवन सझाय कहेतां शरमावे, लडतां तो कछु दाय न आवे ॥ धि० ॥ ८ ॥ दान देतां थरथर कर धृजे, हिंसा करणमें कर अति जूझे ॥ धि० ॥ ९ ॥ लोभ कारण करे अति नरमाई, साहधर्मीसुं करे गुस्साइ ॥ धि० ॥ १० ॥ पापकरणीमें मन उह्लसावे, धर्मक्रियामें न चित्त लगावे ॥ धि० ॥ ११ ॥ क्रोध मान तृष्णा छल भारी, दान शीयल तप भाव विसारी ॥ धि० ॥ १२ ॥ पाप करणमें जोर जणावे, धर्म उद्यममांहि कायर थावे ॥ धि० ॥ १३ ॥ परख नहिं देव गुरु धर्म केरी, तिणजमें दृष्टि पहोचावे घणेरी ॥ धि० ॥ १४ ॥ जीवदयामें खरचतां रोवे, जस शोभामें निर्थक धन खोवे ॥ धि० ॥ १५ ॥

निंदा विकथामें निशदिन रातो, गुणिजनका गुण सुणी अकलातो ॥ धि० ॥ १६ ॥ कर्मबंधनकी शिख सुणि राजी, धर्मशिक्षा सुणि अधिक नाराजी ॥ धि० ॥ १७ ॥ पापीकुं आदर देकें विठावे, धर्मीकुं देख अधिक घुररावे ॥ धि० ॥ १८ ॥ पापथी परचो दयाथकी दूरो, धर्ममें पाछो कर्ममांही शूरो ॥ धि० ॥ १९ ॥ परदुःख देखीने अति हरखावे, निज संपत्तसें अधिक पोमावे ॥ धि० ॥ २० ॥ बंबुल बोय आमफल चहावे, विष भक्षण करि जीवणो चहावे ॥ धि० ॥ २१ ॥ पच पच खोय दीयो भव सारो, तेलीका बेल ज्युं हार्यो जमारो ॥ धि० ॥ २२ ॥ निशदिन हाय हाय धन धनकी, लाज नहीं परभव गुरुजनकी ॥ धि० ॥ २३ ॥ धोबीका श्वान ज्युं कहे धन मेरो, सोचे न छेवठ नरकमें डेरो ॥ धि० ॥ २४ ॥ इहां अपजस आगें जस भारी, धर्म विना भव भवमें खुवारी ॥ धि० ॥ २५ ॥ जैसा जाया तैसा सिधाया, धिक जननी जिणें गोद खिलाया ॥ धि० ॥ २६ ॥ ओगणिशें अडातिस माहावदि जाणो, चौथ तिथि रवि वार वखाणो ॥ धि० ॥ २७ ॥ तिलोकरिख कहे आवलकोटी मांइ, इम सुणी करजो थे धर्म कमाई ॥ धि० ॥ २८ ॥ इति ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ उपदेशमें सुलट ॥ देशी एहीज ॥ धन तेरा जीवडा, नित करता धरमकुं ॥ धन तेरा तन मन, धन हे जनमकुं ॥ १ ॥ रत्न चिंतामणि नरभव पाई, धर्मचिंतामणि ले उलसाई ॥ २ ॥ मिथ्यात्वी नरकुं नहिं सरसावे, धर्मीकुं देख अधिक हरखावे ॥ ३ ॥ धर्मकथा सुणवा चित्त चहावे, सुण कर सार ग्रही उलसावे ॥ ४ ॥ तप जप किरियामें रहे अगवानी, पुद्गल पर कछु ममता न आणी ॥ ५ ॥ ख्याल नाटकमें कबहूं न जावे, मुनि दरिसण आलस नहिं लावे ॥ ६ ॥ प्रभुगुण गावता अधिक गुंजावे, क्रोध कलेश थकी

शरमोव ॥ध०॥७॥ दान देवे नित उलट परिणामें, थर थर ध्रूजे सो हिंसाके कामें ॥ध०॥८॥ पापका काममें डर अति आणे, धर्मको काम सदा भलो जाणे ॥ध०॥९॥ क्रोध मान तृष्णा छल त्यागे, दान शीयल तप भावमें आगे ॥ध०॥१०॥ पापका काममें निर्बल अंगे, धर्मका काममें शूरपणुं रंगे ॥ध०॥११॥ सत्यपक्षकी प्रतीत जो आणे, झुठको पक्ष रति नहीं ताणे ॥ध०॥१२॥ जीव दया धन खरचण जाणे, लाभ अनंत हिये इम ठाणे ॥ध०॥१३॥ न करे निंदा विकथा सुणे नांई, गुणिजननां गुण सुणि उल्लसाई ॥ध०॥१४॥ कर्मबंधणकी शीख न धारे, धर्मशिक्षा सुखदायी विचारे ॥ध०॥१५॥ पापीसुं प्रीति न राखे कदाई, धर्मीकुं आदर दे अधिकाई ॥ध०॥१६॥ धरमसुं परचो पापथी दूरो, कर्ममें पाछो सो तप जप शूरो ॥ध०॥१७॥ पर दुख देखि अणुकंपा घणेरी, मगरूरी करे नहीं निज सुख केरी ॥ध०॥१८॥ आमके बोय आम फल चहावे, ऐसे गुणीसों कदि न ठगावे ॥ध०॥१९॥ निशिदिन वंछता धर्म मरम की, लाज घणी परभव गुरुजनकी ॥ध०॥२०॥ धन कुटुंब तन नहीं जाणे मेरो, जाणे जैनधर्म सहायक तेरो ॥ध०॥२१॥ इणभव शोभा आगे सुख भारी, कर्मशत्रु हणि वरे शिवनारी ॥ध०॥२२॥ नरभव पायके धर्म कमाया, धन जननी जिणें गोद खिलाया ॥ध०॥२३॥ तिलोकरिख कहे हित उपदेशो, इम सुणि करजो थें धर्म हमेशो ॥ध०॥२४॥ इति ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ देशी एहीज ॥ देखि वदन गोरा, क्यों तुं भुलाना, रंग पतंग जिस संझा फुलानां ॥दे०॥१॥ हाडका पिंजर चाम मढानां, भितर दुर्गंधका भग है खजाना ॥दे०॥२॥ कच्चा घडामांहि पानी भराना, टूटे अचानक पींपल पाना ॥दे०॥३॥ जैसा वदन तेरा है रे दिवाना, देत दगो यह क्यों तुं लुभाणा ॥दे०॥४॥ निशिदिन सांग यह खानांहि खानां, दन नहिं तब करत हेराना

॥ दे० ॥ ५ ॥ तेने तो इसकू मेरा करी माना, कर कर हिंसा तुं देत हे खाना ॥दे०॥६॥ ए दगादार महा दुःखदाना, छेवट निकाले अकेला ही जानां ॥ दे० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे समज सयाणा, तप जप करकें लहे निर्वाणां ॥ दे० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ पद चौथुं ॥

॥ देशी एहीज ॥ एक दिन एसा वीतगा सकलमें, कर ले सुकृत तुं सोच अकलमें ॥ ए० ॥ १ ॥ कंकर चुन चुन महेल बनाया, उनका मसाणमें वास बसाया ॥ ए० ॥ २ ॥ जिणके धन होतो केई कोडी, उनके संग गइ नहीं एक कोडी ॥ ए० ॥ ३ ॥ केइ कोडी दल लाखोही हाथी, वे पण नंगे गये नहिं साथी ॥ ए० ॥ ४ ॥ हरि हलधर चक्री नर राशी, छेवट सबहीं मसाणके वासी ॥ ए० ॥ ५ ॥ जमका लश्कर जब चढि आवे, ततक्षण हंस कूच कर जावे ॥ ए० ॥ ६ ॥ श्वास रहे जबहीं लग आशा, श्वास गया तब होत निराशा ॥ ए० ॥ ७ ॥ मात पिता सुत बंधव नारी, रुदन करे मतलब परिवारि ॥ ए० ॥ ८ ॥ गहेणां आभूषण लेवे उतारी, मतलबकी जगमें सब यारी ॥ ए० ॥ ९ ॥ आठ हाथ को कपडो मंगाई, ओढाय सिढीमें दे पधराई ॥ ए० ॥ १० ॥ चार जणा लेवे खांधे उठाई, कोइ रोवे कोई हरखाई ॥ए०॥ ११ ॥ पलंग उपर जे सोते सदाई, उनकुं लकड चुण देवे जलाई ॥ ए० ॥ ॥ १२ ॥ हाड लकडके सज्यो घास पूलो, होवे भस्म तुं कहिंपे भूलो ॥ ए० ॥ १३ ॥ स्नान करी सब घर चल आवे, कोई कीसीके संग न जावे ॥ ए० ॥ १४ ॥ दो दिन याद करे उस नरके, बरस छः मासमें जाय विसरके ॥ ए० ॥ १५ ॥ पाती करके, सज्जन धन खावे, पाप कमाया तेरे संग आवे ॥ ए० ॥ १६ ॥ ए जगका सब झूठा हे नाता, क्युं तुं कमावत कर्मका खाता ॥ ए० ॥ १७ ॥ जो इस जगमें देहज धारी, छेवट जल बल होवेगा

क्षारी ॥ ए० ॥ १८ ॥ ओगणिशें गुणचालिश मागशिर मासो, तिथि इग्यारस पक्ष उजासो ॥ ए० ॥ १९ ॥ तिलोकरिख कहे सतारा मझारो, करी उपदेशी भविक हित कारो ॥ ए० ॥ २० ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ देशी एहीज ॥ धर्म कर्मका मर्म न जाणा, जिनका जन्म जैसा पशुके समाना ॥ १ ॥ सुकृत दुःकृत भेद न जाना, जीव अजीव कछु न पिछाना ॥ २ ॥ पुण्यपापकी परख न कांई, आश्रव संवर समज न आई ॥ ३ ॥ निर्जरा बंध मोक्ष पद जाणी, खबर नहिं कछु श्रीजिनवाणी ॥ ४ ॥ कौन है साधु असाधु है कैसा, इह भव परभव नहिं को अंदेसा ॥ ५ ॥ निशि दिन पाप करे निःशंका, साधुकुं देख होवे वडा वंका ॥ ६ ॥ धर्मकी शिक्षा जो दरसावे, हडक्या श्वान ज्युं काटण धावे ॥ ७ ॥ आप वडाई निंदा करे परकी, देखे नही करणी निजघरकी ॥ ८ ॥ हाय हाय करी जन्म गमावे, करके कुकर्म नहिं पछतावे ॥ ९ ॥ ममत करे तन सज्जन धनकी, खबर नाहिं कछु अपने वतनकी ॥ १० ॥ सींग पुंछकी रहि हिणताई, डाढी मूंछकी भइ अधिकाई ॥ ११ ॥ नरभव पायकें दान न दीनो, तप जपको कछु काम न कीनो ॥ १२ ॥ संतकुं देखिकें शीश न नमाया, जीभसुं प्रभुका गुण नाहिं गाया ॥ १३ ॥ कानसुं सूत्रकी सुणि नाहिं वाणी, नेत्रसुं मुनिदरिसण नाहिं जाणी ॥ १४ ॥ धरणीके भारें मारी अधिकाई, फिट फिट जनमकि कूख लजाई ॥ १५ ॥ ऐसा प्राणी चउगतिमांहे भटके, वडवागुल ऊंधे मुख लटके ॥ १६ ॥ पावे सो दुःख अनंत आपारा, बांध लिया संग पापका भारा ॥ १७ ॥ तिलोकरिखजी सताराके मांही, धर्म कियां होवे सुख सदाई ॥ १८ ॥

॥ अथ चतुर्विंशतिजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ बाजुबंध बिसर गई कंगनां ॥ ए देशी ॥ नमो नमो रे

भविक प्रभुचरणां, मिट जावे सकल दुःख मरणां रे ॥ न० ॥ १ ॥ आदि अजित संभव हित करणां, अभिनंदन सुमति शुद्ध धरणां रे ॥ न० ॥ २ ॥ श्रीपद्म सुपासजी उच्चरणां, चंद्रप्रभजी लंछन चंद्रवरणा रे ॥ न० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल अताप दुःख हरणा, श्रेयांस वासुपूज्य शरणा रे ॥ न० ॥ ४ ॥ होय विमल जपत भय टरणां, अनंत धरम मेटे भवफिरणां रे ॥ न० ॥ ५ ॥ शांति कुंथु अर किया न्याय निरणा, मल्ली मुनिसुव्रतजी समरणां रे ॥ न० ॥ ६ ॥ नमि नेमि पारस करि अहि करुणा, महावीरजी चरणे शीश धरणां रे ॥ न० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे जो दुःख हरणां, तो समरो प्रभु तारणतरणा रे ॥ न० ॥ ८ ॥ इति स्तवनं ॥

॥ अथ देवआश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ नमो नमो रे देव अरिहंता, प्रभु शिवरमणीके कंता रे ॥ न० ॥ ॥ १ ॥ घनघातिक करम सब हंता, सब जाणत केवल वंतारे ॥ न० ॥ २ ॥ जे अतिशय चोतिस सोहंता, प्रभु तीन भवनमें महंता रे ॥ न० ॥ ३ ॥ एक योजन वाणी वागरंता, चार तीरथ थापना करंता रे ॥ न० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख मन तनसें नमंता, सेवा दीजो सदाई भगवंता रे ॥ न० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ गुरु आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ सतगुरुजी जपो रे मेरे भैया, जे भवजल पार करैया रे ॥ स० ॥ १ ॥ सतगुरुजी है नाव खेवैया, परने तारत आप तरैया रे ॥ स० ॥ २ ॥ गुण सत्ताविशके धरैया, सत्यमधुर वाणीके उच्चरैया रे ॥स० ॥ ३ ॥ विषय कषायकी अगन बुझैया, वे तो ज्ञानको जल वरसैया रे ॥ स० ॥ ४ ॥ गुरु जोगें अनंत शिव लैया, सब सूत्रमें न्याव चेतैया रे ॥ स० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे गहि वैयां, सो तो अविचल वास वसैया रे ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ धर्म आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ धर्मरूपी बणाय लो नैया, मानो मानो रे शीख मेरी भैया रे ॥ ॥ ध० ॥ १ ॥ संतोपका पाटिया जमैया, क्षमाकी मेख लगैया रे ॥ ध० ॥ २ ॥ पंच आश्रव द्वार बुरैया, करो चाटु वैराग सोहैया रे ॥ ध ॥ ३ ॥ सतगुरुजी हे चतुर खेवैया, पर तारे और आप तरैया रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ भवोदधिसूं तरणकी जो चैया, तिलोकरिख कहे धर्म गहैया रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ ज्ञान आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ करो ज्ञान दीपक अजवालो, जिणसुं मिटत अज्ञानको कालो रे ॥क० ॥ १ ॥ पेहेली उंघ आलसकुं टालो, छोडो विकथा रसको प्यालो रे ॥ क० ॥ २ ॥ करो सुगुरु सेव विशालो, सूत्रसंधिसुं खोल देवे तालो रे ॥ क० ॥ ३ ॥ कुमति कलेश कषायकुं थें बालो, जाणपणा विना किरिया वेथालो रे ॥ क० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे ज्ञान गुणिआलो, वेगी लहेगा मुक्तिको मालो रे ॥क०॥

॥ अथ सम्यक्त्व आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ शुद्ध समकित व्रत रस राचो, जैन येन विना केन सब काचो रे ॥ शु० ॥ १ ॥ सचा देव गुरु धर्म परख जाचो, खोटो पक्ष सो मत खांचो रे ॥ शु० ॥ २ ॥ नित्यप्रतें जैन शास्त्रकुं वांचो, वली सुणके लगावो तन आंचो रे ॥ शु० ॥ ३ ॥ इणसुं सिर्वाजें कालको डाचो, छुटे अनंत भव सरधा साचो रे ॥ शु० ॥ ४ ॥ इण विना चार्ग गतिमें नाचो. नहीं छुटो कर्मको लाचो रे ॥ शु० ॥५॥ तिलोकरिख कहे समकित साचो, कुमति लता जड टांचो रे॥शु०॥६॥

॥ अथ चारित्र आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ पालो पालो रे संजमकी किरिया, जिणथी जीव अनंताहि तिरिया रे ॥ पा० ॥ २ ॥ पंच माहाव्रत भावें उच्चरियां, रहो पाप कर्मसूं टरिया रे ॥पा० ॥ ३ ॥ पंच आश्रवद्वारकु बुरियां, राग द्वेप

शत्रु सब चूरिया रे ॥ पा० ॥ ३ ॥ जो संजम करणीथकी डरिया, सो तो चार गतिमांहि फिरिया रे ॥ पा० ॥ ४ ॥ ऐसो जाणके संजम आदरिया, सो तो अनंत गुणाका हे दरिया रे ॥ पा० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे परहित धरिया, पुण्यजोगसुं मिलि एह विरियां रे ॥ पा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ तप आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ तुम तपस्या करो भव प्राणी, शम दम उपशम चित्त आणी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ कर्म धान्य पिसणकुं ए घाणी, मोह अटवीके आग लगाणी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ अहंकार पर्वत दुःखखाणी, तपस्या सो वज्र समाणी रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ भव ताप बुझावण पाणी, करे सकल कलेशनी हाणी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे तप सुखदाणी, जो करे सो वरे शिवराणी रे ॥ तु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ क्रोध आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मेटो मेटो रे भविक जन लाली, जिनसुं रहोगे सदाइ खुशियाली रे ॥ मे० ॥ १ ॥ पली देवें निज आत्मा वाली, पिछें दूजाने देवे प्रजाली रे ॥ मे० ॥ २ ॥ याती धर्मतरु छेदन वाली, जगमें रीश बडी हे जंजाली रे ॥ मे० ॥ ३ ॥ ऐसी जाणकें देवणी नाहिं गाली, क्षमा जाणजो सदा हितवाली रे ॥ मे० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे क्षमा धर्म झाली, गया शिवमंदिर सुविशाली रे ॥ मे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मानआश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मत करो रे चतुर अभिमानां, अंत दाव तो परभव जानां रे ॥ म० ॥ १ ॥ फूल फूले सो देख कुमलानां, जो बंध्या सो तो विखराना रे ॥ म० ॥ २ ॥ थिर नाहिं इंद्र चंद्र रवि भाना, थिर नाहि हे जगमें राजा राणा रे ॥ म० ॥ ३ ॥ एसी समजके दिल नरमाना, नित गुणिजनके गुण गानां रे ॥ म० ॥ ४ ॥ तिलो-

करिख कहे सुणजो शहाणा, विनय कियासुं पद निर्वाणा रे ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ कपट आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ छोडो छोडो रे कपटकी कतरणी. या तो धर्म डेराकी छिन करणी रे ॥ छो० ॥ १ ॥ या तो नरकनिगोदकी निसरणी, या तो धूर्त लोभीके घर घरणी रे ॥ छो० ॥ २ ॥ या तो अंतरका शल्य जैसी वरणी, या तो देवे भवोभव दुःख अरणी रे ॥ छो० ॥ ३ ॥ या तो दुःख देवावे वैतरणी, या तो शिवपुर सुखकी हरणी रे ॥ छो० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे कपट न करणी, जो थाने शिववधु वरणी रे ॥ छो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मायाआश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मत कहो रे चतुर माया मेरी, या तो पुण्य जिहां लगे ठेरी रे ॥ म० ॥ १ ॥ जव वीत जावे पुण्यकी लहेरी, तव राखि रहेगी नहि तेरी रे ॥ म० ॥ २ ॥ या तो साथी नहिं छे किण केरी, भाग्य विना मिले नहिं हेरी रे ॥ म० ॥ ३ ॥ चार रोजकी चांदणी गहेरी, छेवट रयण अंधेरी रे ॥ म० ॥ ४ ॥ या तो ज्युं ज्युं भेलि होवे गहेरी, त्युं त्युं तृष्णा वधे वहु तेरी रे ॥ म० ॥ ५ ॥ जाणो नरक निगोदकी या सेरी, ऐसी जाणके ल्यो तृष्णा थें केरी रे ॥ म० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कहे उपदेश किया भेरी इसकी संगत जा शिवशेरि रे ॥ म० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेशआश्रयी पद पहेलुं प्रारंभः ॥

॥ मानो मानो रे सुगुरुका कहेनां, जिणसें पावोगा अमर सुखचेना रे ॥ मा० ॥ १ ॥ मिथ्या धर्म जाण सव फेना, ग्वोल देखो थें अंतर नेनां रे ॥ मा० ॥ २ ॥ करो छकाय जीवकी जयणा, वोले मधुरता निरवद्य वेणां रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ विनादिया किसीका नहि लेणां परस्त्रिया गिणो माई वेनां रे ॥ मा० ॥

४ ॥ अति तृष्णा करो मति सेणा, चाडि चुगली आल नहिं देणां रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ संजम आदरकें परिसह सहेणां, तिलोकरिख कहे प्रभु सरणे रहेणां रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ उपदेशी पद बीजुं ॥

॥ भोर भइ रे वटाउ जागो जागो, थाने जाणो देशावर आघो रे ॥ भो० ॥ चले संग चतुरका सागो, जिणसुं रहे मति पाछो आघो रे ॥ भो० ॥ २ ॥ ले ले खरची आगें नहिं थागो, जिनसें लागें नहिं दुःखदाघो रे ॥ भो० ॥ ३ ॥ पंच ठगाणि सुं मति करे रागो, वश पडियासुं करदेशी नागो रे ॥ भो० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे मोहनिंद त्यागो, उवट छोडकें शिवपंथ लागो रे ॥ भो० ॥ ५ ॥

॥ उपदेशी पद त्रीजुं ॥

॥ चेतो चेतो रे चतुर जग खोटा, करो धर्मध्यान फल महोटा रे ॥ चे० ॥ १ ॥ धर्म विना भमेगा दडि दोटा, सहेगा नरक विषे जम सोटा रे ॥ चे० ॥ २ ॥ नहि मिले पापीने पूरा रोटा, पाणी पिवणका मिले नहिं लोटा रे ॥ चे० ॥ ३ ॥ भेला करे नर धन केइ कोटा, तोइ तृष्णावंत मन टोटा रे ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे ले लो धर्म ओटा, तो मिट जावेगा जमचोटा रे ॥ चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ काल आश्चर्यी पद प्रारंभः ॥

॥ काटो काटो रे कालकी फांसी, रहो रहो जगतसें उदासी रे ॥ का० ॥ १ ॥ काल रिपु तुझ पर चड आसी, एसी ठोर नहिं जहां लुक जासी रे ॥ का० ॥ २ ॥ इन्द्र चन्द्र असुर सुरराशि, जो उपजे सो सकल विनाशी रे ॥ का० ॥ ३ ॥ तु तो चार दिवसको-हे वासी, कर्म करेगा जेसी गति पासी रे ॥ का० ॥ ४ ॥ भय मरणको मनसें विमासी, करो सुकृत सोदा उल्लासी रे ॥ का० ॥ ५ ॥ जो मोहनी कर्म खपासी, तिलोकरिख कहे काल नहिं खासी रे

॥ का० ॥ ६ ॥

॥ अथ धर्म आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ रहो रहो रे धरम धल तसीया, जो थें शिवरमणीका रसिया रे ॥ र० ॥ १ ॥ राखजो थें तन तनके कासिया, शुद्ध समकित व्रतमें ठसिया रे ॥ र० ॥ २ ॥ राग द्वेष जगत जन डासिया, भविजन सो तो दूर नासिया रे ॥ र० ॥ ३ ॥ काम क्रोध ठगोमें जे फसिया, सो तो अचल दुकानसुं खसिया रे ॥ र० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे जे धर्म वसिया, सोवे शिवसेजमें उल्लसिया रे ॥ र० ॥ ५ ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ चेतो चेतो रे कुटुंबके बिगारी, जाणो मतलवकी जग यारी रे ॥ चे० ॥ १ ॥ मात पिता सुत बंधव नारी, तुं जाणी रह्यो दिल ह्यारी रे ॥ चे० ॥ २ ॥ कुटुंबी हे कपटके भंडारी, करे खुशामद उपरसुं थारी रे ॥ चे० ॥ ३ ॥ ज्यों पंखी बेठे तरु डारी, मन मांहि सो गरज विचारी रे ॥ चे० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे ल्यो धर्मधारी, जो उतरवा चाहो भवपारी रे ॥ चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शिखामण आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मानो मानो रे अचल सुख गरजी, मत होवो थे करमका करजी रे ॥ मा० ॥ १ ॥ मत दुःखाना किसीकी मरजी, होणहार टले नहिं जो सरजी रे ॥ मा० ॥ २ ॥ कुसंगतिको देवो तुम वरजी, पाप त्यागो सयाणे चित्त लरजी रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ मत होना जुवेगारका थे दरजी, विषय कषायकुं देवो तुम तरजी रे ॥ मा० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे धन जिनवरजी, करे प्रभुजीसुं शिव अरजी रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मानो मानो रे शिखामण मेरी, ज्यो चाहो सुगतिकी शेरी रे ॥ मा० ॥ १ ॥ मात पिता कुटुंब सब वेरी, जिणसुं ममता

करवा दुःख केरी रे ॥ मा० ॥ २ ॥ मायाकी सपना सम लेरी, मत कर तुं ममता बहु नेरी रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ काचा कुंभ जैसी कायाकी देहरी, छेवटस होवेगा राख ढेरी रे ॥ मा० ॥ ४ ॥ राग द्वेष सर्प महा जहेरी, ले उपशमकी जडी छेरी रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे शिख हेरी, पियांसु अमृता शिव नेरी रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ जोवन आश्चर्यी पद प्रारंभः ॥

॥ मत अकडे जोवनके मटके, तेरे शिरपर काल वैरी भटके रे ॥ म० ॥ १ ॥ नित अभक्ष आहारके गटके, वार वार तोय ज्ञानी गुरु हटके रे ॥ म० ॥ २ ॥ ख्याल तमासामें निशिदिन भटके, धरमके कामें दूरो छटके रे ॥ म० ॥ ३ ॥ वे तो नरककुंडमांही लटके, ज्याने पकड पकड जम पटके रे ॥ म० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे कर्म रज फटके, सो तो वेगा अचल सुख सटके रे ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ जोवन आश्चर्यी पद बीजुं ॥

॥ क्यों भूल्यो रे जोवनसें अकडी, नवमास लटक्यो सेरी सकडी रे ॥ क्यो० ॥ १ ॥ बालपणामें रम्यो ख्याल खखडी, रह्यो जोवनवयमें जकडी रे ॥ क्यों० ॥ २ ॥ आयो बुढापो सुझत नहिं अखडी, जोर पडियासुं पकडी लकडी रे ॥ क्यों० ॥ ३ ॥ तिलोकरिख कहे धर्म लेवो पकडी, तो पावोगा सुगति फुल पखडी रे ॥ क्यों० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ संसार आश्चर्यी पद प्रारंभः ॥

॥ सतगुरुजी कहे जग सुपनां, करो धर्मध्यान सोहि अपनां रे ॥ स० ॥ १ ॥ ज्ञान ध्यान करत नहिं धपनां, पाप करतां नो दिलमांहे कंपनां रे ॥ स० ॥ २ ॥ दान देनां शील पाल तप तपनां, शुद्ध भावनामें दिल थपनां रे ॥ स० ॥ ३ ॥ सजन सनेही नहिं है कोइ अपनां, आखर तो जरूर तुझ खपनां रे ॥ स० ॥ ४ ॥

सुगुरु सेवा करत नहिं छिपनां, तिलोकरिख कहे प्रभु जपनां रे ॥ स० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शिक्षा आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ वार वार सतगुरु समजावे, क्यों तुं कर्म बंध उपावे रे ॥ वा० ॥ १ ॥ जीव हसतां हसतां जमावे, छोडतां अति मुशकिल थावे रे ॥ वा० ॥ २ ॥ जो तुं आक धतुरा वावे, तो तुं आंब कहांसुं खावे रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ जहेर खायके जिवणो उमावे, तिम पाप करिने सुख चावे रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ जैसा बांध्या तैसा उदय आवे, चारुं गतिमांहि सो दुःख पावे रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे कर्म उडावे, सो तो शिवपुर वेग सिधावे रे ॥ वा० ॥ ६ ॥

॥ अथ कर्म आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ कर्मगति हे अजब जगमांहि, इण सम शत्रु कोइ नांइ रे ॥ क० ॥ १ ॥ कुंडरिक तप करियो उलसाइ, मर गयो नरक सातमी मांइ रे ॥ क० ॥ २ ॥ अढीदिन संजम पद पाइ, पुंडरीक सर्वार्थसिद्ध जाइ रे ॥ क० ॥ ३ ॥ प्रभुजी कीकिनी अधिक बुराइ, गोसालक पायो सुर प्रभुताइ रे ॥ क० ॥ ४ ॥ जमाली श्रीवीरका जमाइ, करमासुं खोटी सरधा आइ रे ॥ क० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे कर्म कसाइ, इनके कोइको मुलाहजो नांइ रे ॥ क० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ शूरपणा आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ करो करो करमसे दंगा, जिणसुं पावोगा सुख उत्तंगा रे ॥ क० ॥ १ ॥ वश कर लो मनकी तरंगा, छोडो विषय कषाय प्रसंगा रे ॥ क० ॥ २ ॥ राखो चित्त निर्मल जिम गंगा, छोडो पंच प्रमाद अडंगा रे ॥ क० ॥ ३ ॥ तप जप करणीमें रहो चंगा, मेटो कर्म बंधणकी उछंगा रे ॥ क० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे केवल संगा, तरो भवोदधि तरंग अथंगा रे ॥ क० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ दयाव्रत आश्री पद प्रारंभः ॥

॥ पालो पालो रे भविक दया माता, इणसुं पाओगा अचल सुखशाता रे ॥ पा० ॥ १ ॥ जग प्राणी सब जीवणो चहाता, दुःख मरणसें सब थरराता रे ॥ पा० ॥ २ ॥ ऐसें जाणके होवो-थें अभयदाता, कोइ जीवकुं न देणी असाता रे ॥ पा० ॥ ३ ॥ टले नरकानिगोदका खाता, जो रहे दयारस रंगराता रे ॥ पा० ॥ ४ ॥ साठ नाम बताया जगत्राता, जो आराधे सो शिवसुख पाता रे ॥ पा० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे आगम वाता, कोइ हलुकर्मी चित चाता रे ॥ पा० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

॥ अथ सत्यवचन आश्री पद प्रारंभः ॥

॥ सत्य वचन बोलो रे भविप्राणी, सो तो निरवद्य शिवसुख दाणी रे ॥ स० ॥ १ ॥ सत्य असत्यका भेद पिछाणी, पिछें बोलो वचन शुद्ध छाणी रे ॥ स० ॥ २ ॥ कोमल मृदु अमृतसी वाणी, जिणमें होवे नहिं धर्म हाणी रे ॥ स० ॥ ३ ॥ बोलो शुध्द सत्य मती ठाणी, जिनकी कीर्त्ति अधिक जग जाणी रे ॥ स० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे आगम वाणी, सत्यवादी वरे शिवराणी रे ॥ स० ॥ ५ ॥

॥ अथ अदत्त व्रत आश्री पद प्रारंभः ॥

॥ मत लेवो रे अदत्त पर भाइ, जिणसुं कमी रहे नहिं कांइ रे ॥ म० ॥ १ ॥ जे चोरी तजेगा चित्त चहाइ, कछु फिकर नहिं उणतांइ रे ॥ म० ॥ २ ॥ रहे जगमें प्रतीत सवाइ, संतोष समान सुख नांइ रे ॥ म० ॥ ३ ॥ जिसके अनेक विघन टल जाइ, मर जावे सुरगतके मांइ रे ॥ म० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे दत्तव्रत की वडाइ, जिनशास्त्रमें प्रभु फरमाइ रे ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शीयलव्रत आश्री पद प्रारंभः ॥

॥ सदा पालो रे शियल सुखदाइ, होइ सबसें कीर्त्ति सवाइ रे ॥ स० ॥ १ ॥ चोर शत्रु सो जावे नरसाइ, शीलवंतने नमे सुर

आइ रे ॥ स ०॥ २ ॥ सूत्र प्रश्नव्याकरणके मांइ, वत्तिस ओपमा प्रभु फरमाइ रे ॥ स० ॥ ३ ॥ सोला ओपमा छोटी बताइ, ए अद्भुत व्रत अधिकाइ रे ॥ स० ॥ ४ ॥ त्रिण मनसुंहिं पालो इणतांइ, चोसठ सहस्र वर्ष सुर जाइ रे ॥ स० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे धन उणतांइ, शील पाले सदा उलसाइ रे ॥ स० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

॥ अथ ममत्व आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ त्यागो ममता परिग्रह दुःखदाइ, ए तो जगतपति फरमाई रे ॥ त्या० ॥ १ ॥ संतोपको सुख अधिकाई, देवे तृष्णाकी लाय बुझाई रे ॥ त्या० ॥ २ ॥ इणमांही जे रह्या मूर्च्छाइ, सो तो संचे अति कर्म कमाई रे ॥ त्या० ॥ ३ ॥ लोभ गिणे नहिं सयण सगाइ, देखो भरत बाहुबल भाई रे ॥ त्या० ॥ ४ ॥ जिम जिम वधे धन प्रभुताइ, तिम तिम वधे तृष्णा सवाई रे ॥ त्या० ॥ ५ ॥ ऐसी समझके टाले मूर्च्छातांई, तिलोकरिख कहे सो शिव पाइ रे ॥ त्या० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ रात्रिभोजनव्रत आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मत करोरे भोजन निशिमांहि, द्रव्यभाव अणुकंपा लाइ रे ॥ म० ॥ १ ॥ त्रस जीव थालीमांहि पडे आइ, सुझे नहिं कछु अंधाराके मांइ रे ॥ म० ॥ २ ॥ जूं भक्षणे जलोदर थाइ, विछुथी कपाल सड जाइ रे ॥ म० ॥ ३ ॥ माखी भक्षण वमण दरसाइ, इत्यादिक दुःख इण भवमांइ रे ॥ म० ॥ ४ ॥ जो त्यागे निशिभोजन तांइ, संवच्छरसें छमासी तपसाइ रे ॥ म० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे त्यागो भाइ बाइ, द्रव्यभाव फल अति सुख दाइ रे ॥ म० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ दुःकृत आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ छोडो छोडो रे दुःकृत दुःखदानी, इस्कु कुमति रूप पटराणी

रे ॥ छो० ॥ १ ॥ नरक निगोदमें सज विछाणी, जिहां न मिले अन्न और पाणी रे ॥ छो० ॥ २ ॥ करे सुख संपत्ति जस हाणी, जम देवे अति त्रास पिले घाणी रे ॥ छो० ॥ ३ ॥ दुःख पावे चारी गतमें प्राणी, सो तो जाणत केवल नाणी रे ॥ छो० ॥४॥ तिलोकरिख कहे न्याय पिछाणी, सो तो भविजनके मन मानी रे ॥ छो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मन आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ चित्त चंचल चपल थिर करणां, नित धरम शुक्ल ध्यान धरणां रे ॥ चि० ॥ १ ॥ तीन दंड तीन शल्य परिहरनां, पंचपरमेष्ठीका गुण सो उच्चरनां रे ॥ चि० ॥ २ ॥ पंच आश्रव पापसेंती डरणां, आठ कर्मशत्रुसेंती लरनां रे ॥ चि० ॥ ३ ॥ ग्रहो मुनिधर्म दश चउ सरणां, बार भावना तप अनुसरणां रे ॥ चि० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे भवोदधि तरणां, धारो सुगुरु सुदेवका चरणां रे ॥ चि० ॥ ५ ॥ इति॥

॥ अथ आउखा आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ दम जमका नहिं विसवासा, क्यों करे मेरी तेरी धन आशा रे ॥ द० ॥ १ ॥ मत समझो इसमें कछु हासा, ये आसा हे जब लग सासा रे ॥ द० ॥ २ ॥ जैसा फुले संझाका उजासा, पड्या पाणीके बीच पतासा रे ॥ द० ॥ ३ ॥ जैसा जल मोतीका उकासा, तैसा हे इस तनका तमासा रे ॥ द० ॥ ४ ॥ क्युं चुणे उंचा उंचा आवासा, एक दिन होयगा जंगलवासा रे ॥ द० ॥ ५ ॥ काल अहेडीका नहिं विश्वासा, एकदिन देगा सब पर फांसा रे ॥ द० ॥ ६ ॥ तजो क्रोध मानका पासा, जिणसुं वजत सुजसका त्रांसा रे ॥ द० ॥ ७ ॥ इणसुं नर सुर सबही त्रासा, एक सिद्ध सदा उल्लासा रे ॥ द० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे सबकुं खुलासा, करो धर्म ध्यान नित्य खासा रे ॥ द० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ सुण चेतन रे, तुम गुणवंत मुनिकों सेवो ॥ ए देशी ॥ सुणो सुगुणा रे, तुम धर्म ध्यान नित कर लो ॥ तुम त्यागो पंच प्रमाद, भवोदधि तर लो ॥ ध्रु० ॥ यो नरभव लीनो नीठ, आरज देश पायो ॥ या काया निरोगी धार, उत्तम कुल जायो ॥ तोय सद्गुरु को मिल्यो जोग, सूत्र सुण कानें ॥ तुं मत कर आलस धार, शुद्ध सरधानें ॥ सु० ॥ १ ॥ या देह औदारिक जाण, उपरसें चंगी ॥ या पलमें सुंदराकार, पलमें विरंगी ॥ या माया हे वादलछांय, सुपन जो जाणो ॥ या जोवन नदीपूर, गरव मत आणो ॥ सु० ॥ २ ॥ ये मात पिता सुत भ्रात, कुटुंब और नारी ॥ सरणागत नहिं कोय, गरजकी यारी ॥ ज्यों तरुवर पर पंखेरु, आय ले वासो॥ जावे चउ दिशी विखर, दिवस उजासो ॥ सु०॥ ३ ॥ केइ वाजीगर ज्यों वाद, मचावे जाई ॥ डुम डुमीको सुण शब्द, खलक जुड आइ ॥ होय तमासो बंध, सवि भग जावे ॥ वाजीगर निज ठाम, अकेलो जावे ॥ सु० ॥ ४ ॥ महारुं महारुं कर रह्यो, जीव अज्ञानी ॥ पण छेवट जावे छोड, अकेलो प्राणी ॥ जगकाल जोरावर निपट ले जावे ताणी ॥ इम जाणीने चेतो चतुर, मानो प्रभु वाणी ॥ सु० ॥ ५॥ ओगणीशें अडतीस जेठ, शुद्ध छट जाणो ॥ ए रस्तापुरके मांय, कियो वखाणो ॥ तिलोकरिख कहे चेते, सोइ सुख पावे ॥ पावे अमर विमान, मुगति सिधावे ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ फागणकी देशीमें ॥ मत रच्चे रे, हां रे मतराचे रे ॥ संसार हे सपन माया, मन राचे रे ॥ हाडका को पिंजरो ने चामडासुं मढियो, काचाकुंभ जेसी तेरी काया ॥ म० ॥ १ ॥ पुण्यजोग धन संपदा रे पाया, विणस जाय जेसी बादल छाया ॥ म० ॥ २ ॥ जोबन रंग पतंग नदीपुरसों, ढलती जाणजो दुपेरकी छाया ॥ म० ॥ ३ ॥

आयो बुढापो कुडाणे रे आयो, सामा बोलण लागा घरजाया ॥ स० ॥ ४ ॥ काल वेताल किया धाक तिहुं लोकमें, इंद्र चंद्र सब थरराया ॥ स० ॥ ५ ॥ सुखी दुःखी वाल जुवान वृद्धनरने, छोडे नहिं हरि हर राया ॥ स० ॥ ६ ॥ माता पिता तिरिया सुत बंधव, आदर देवे मतलव आया ॥ स० ॥ ७ ॥ गरजविना कोइ सार नहिं पूछे, मूरखपणे क्यों तुं ललचाया ॥ स० ॥ ८ ॥ अकेलो तुं आयो ने अकेलो रे जावसी, सुकृत का सोदा थें कर लो भाया ॥ स० ॥ ९ ॥ धर्म विना तु भटक्यो चारु गतिमें, जनम मरण बहु दुःख पाया ॥ स० ॥ १० ॥ दान शियल तप भावना रे भावो, तिलोकरिख कहे अवसर आया ॥ स० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ पद बीजु ॥

॥ देशी एहीज ॥ मानो मानो रे, हांरे ॥ मा० ॥ चतुर सद्गुरु वाणी, मानो मानो रे ॥ देव गुरु धर्म साचा रे सरधो, तीन रतन यहो सुखदाणी ॥ मा० ॥ १ ॥ ज्ञान दरिसण चारित्र तप कर लो, आट करम करो धूल धाणी ॥ मा० ॥ २ ॥ क्रोध कपट अहंकार तज दीजो, तृष्णाकी लाय बुझावो प्राणी ॥ मा० ॥ ३ ॥ प्राणातिपात झूट चोरी नहिं करिये, पालो शील संजम समता आणी ॥ मा० ॥ ४ ॥ छिन छिनमांहे थारो छीजे रे आउखो, खूट जाय जैसे अंजलीको पाणी ॥ मा० ॥ ५ ॥ तन धन जोवन थिर मत जाणजो, मोह ममता करथा दुःखखाणी ॥ मा० ॥ ६ ॥ ओगणिशें सेंतिस माघशुदि तेरश, तिलोकरिख कहे हित आणी ॥ मा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ धन आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ देशी एहीज ॥ करे कायकुं, हांरे ॥ क० ॥ हाय माया नहिं साथी ॥ क० ॥ एकलोही आयो ने एकलोही जावसी, संगे कोई नहि आवे सुगुणा ॥ क० ॥ १ ॥ दामके काम फिरे देश पर देशमें, पुण्यविना

आवे रीतो सुगुणा ॥ क० ॥ २ ॥ कूड कपटसुं तो माया करे एकठी, जिणमांहि सात पांतो पडे सुगुणा ॥ क० ॥ ३ ॥ पाप कमाइने जावे मरी एकिलो, धनको मालक ओर होवे सुगुणा ॥ क० ॥ ४ ॥ नरकमांहे प्राणी दुःख सहे एकिलो, कुटुंबी सो आडा नहिं आवे सुगुणा ॥ क० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे हाय लाय छोड दो, समतासुं शिवपुर पावे सुगुणा ॥ क० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ देशी एहीज ॥ जागो जागो रे, हांरे ॥ जा० ॥ विदेशी थाने दूरो जाणो ॥ जा० ॥ काल अनंतको तुं सुतो मोहनिंदमें, कायासा नगरमांहि वण्यो राणो ॥ जा० ॥ १ ॥ कामक्रोध मद ठग लारें पडिया, तपसंजमको लूटे छे नाणो ॥ जा० ॥ २ ॥ चार तीरथको सागर मोटको, धर्मरूपि मोटी जहाज साणो ॥ जा० ॥३॥ ज्ञान दरिसण चारित्र तप जपको, भर लो हरखसुं करियाणो ॥ जा० ॥ ४ ॥ सतगुरु खेवटीया मांहि जाणजो, भला परिणामको पवन आणो ॥ जा० ॥ ५ ॥ मोक्षरूपी पाटणमें वेगसुं सिधावणो, सिद्ध वेपारी ज्याको सदा थाणो ॥ जा० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कहे माल खप जावसी, कर लो हुशियारी पद निर्वाणो ॥ जा० ॥ ७ ॥

॥ अथ नरकदुःख वर्णन पद प्रारंभः ॥

॥ चेतो चेतो रे, हांरे चेतो चेतो रे, धरमविना दुःख पायो ॥ चेतो० ॥ पाप करीने जीव नरकमांही उपज्यो, अनंत दुःख देखी घभरायो ॥ चे० ॥ १ ॥ जम अरडाट सुणिने चल आवे, लइ तरवार तिहां झटकायो ॥ चे० ॥ २ ॥ भूख लागी जद तिणमांही तनको, मांस काट काट कर खवायो ॥ चे० ॥ ३ ॥ तृषा लागी जद जम देव आयने, तांबो उकाल कर पाणी पायो ॥ चे० ॥ ४ ॥ गरमि लागी जब जबरीसुं पकडी, कूड सामली तले लटकायो

॥ चे० ॥ ५ ॥ टुट टुट कायापर पडे रे पानडां, टुक टुक हुवो अति घभरायो ॥ चे० ॥ ६ ॥ पाय पकडकें उछाल्यो रे गगनमें, झेल्यो त्रिशूल माहा दुःख आयो ॥ चे० ॥ ७ ॥ अणछाण्या जलमांहि घणो रे न्हावतो, नदी वेतरणीमांहि छटकायो ॥ चे० ॥ ८ ॥ पराइ तिरियानें प्यारी करि मानतो, लालथंभो करी चपकायो ॥ चे ॥ ९ ॥ दारु मांस विनां घडि नहि चालतो, अगनिका कुंडमांहि डुवकायो ॥ चे० ॥ १० ॥ नरकमांहि दुःख सह्या रे अनंत थें, पल सागरथिति थररायो ॥ चे० ॥ ११ ॥ तिहांथी मरिने तिरजंच गति उपज्यो, जन्म मरण भयो दुःख कायो ॥ चे० ॥ १२ ॥ नीठ नीठ कर नर भव पायो, देश आरज उंच कुलें जायो ॥ चे० ॥ १३ ॥ दीर्घ आउखो ने पूरण इंद्री, काया निरोगी पोतें पुण्य लायो ॥ चे० ॥ १४ ॥ सतगुरु जोग मिल्यो सूत्रकी सरधा, जैन धरम सत्य मन भायो ॥ चे० ॥ १५ ॥ चाटी साटें नरभव मतिहारो, वासी टुकडामें क्युं तुं ललचायो ॥ चे० ॥ १६ ॥ तन धन जोवन कुटुंव कवीलो, अथिर सकल प्रभु दरसायो ॥ चे० ॥ १७ ॥ काल वेरी थारी लारां रे पडियो, सकल लोक इणसुं थररायो ॥ चे० ॥ १८ ॥ धर्मध्यान सुकृत कर लीज्यो, जो शिवपुर सुख होवे चहायो ॥ चे० ॥ १९ ॥ उगणिशें सेंतिश माघशुदि तेरश तिलोकरिख यो उपदेश गायो ॥ चे० ॥ २० ॥ इति ॥

॥ वीस विहरमान को छंद ॥

॥ श्री सिरिमंदर स्वामी । थारो ध्यान धरूं सिर नामी जी । जुगमंदर आंतरज्यामी हो जिणंद जसधारी जसधारी । चरण वलिहारी हो ॥ १ ॥ या टेर ॥ वाहु सुवाहुजी की करुं सेवा ॥ हुंतो च्याहुं मित मेवा जी । धन धन थे देवाधी थे देवाहो ॥ जि० ॥ २ ॥ सुजायत स्वामी प्रभु ध्यावुं । रीखभानंदनजी गुण गाऊं । अनंत

वीरजी सीस नमाऊं हो ॥ जि० ॥ ३ ॥ सुर प्रभुजी सब कंता । विसलधरजी विख्याता । दीजो मूज भव भवमें सुख साता हो ॥ जि० ॥ ४ ॥ वालेसर वज्रधरजी । सुणो चद्रानंदन आरजी । ह्मारो जनम मरण द्यो वरजी हो ॥ जि० ॥ ५ ॥ चंद्रवाहु भुजंग दयाला । छे काय जीवांरा प्रतिपाला । जे रोक दीया आश्रवनाला हो ॥ जि० ॥ ६ ॥ ईश्वर नेमीश्वर राया । वीरसेन सदा सुखदाया । माहाभद्रजी सर्व करम हटाया हो ॥ जि० ॥ ७ ॥ देवजसजी हे जसवंता । अनंतवीरजी सुखकंता । दुःख जावे ध्यान धरंता हो ॥ जि० ॥ ८ ॥ विचरे महाविदेह क्षेत्रके माया । प्रभुजीरी पांचसे धनुर्ष्ये नी काया जुगमे सवाया हो ॥ जि० ॥ ९ ॥ प्रभुजी की कंचन वरणी काया । भवि जीवांके मन भाया । तिलोकरीख गुण गाया हो ॥ जि० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ वीश विहरमाननी लावणी ॥

॥ दीनदयाल कृपाल, करुणा भंडारी ॥ क० ॥ जय विहरमान जिन वीश, धर्म अधिकारी ॥ श्री सीमंधर स्वामि, सदा सुखकारी ॥ स० ॥ जय युग्मंधर जसवंत, चरण वलिहारी ॥ वाहुजिणंद कृपाल, करुणा भंडारी ॥ क० ॥ श्री सुवाहु जगदीश, परम पद धारी ॥ सुजात प्रभु घनघाती, कर्म कीया छारी ॥ क० ॥ स्वयं प्रभ वीतराग, ममता विडारी ॥ रिखभानन आनंद, करे नर नारी ॥ क० ॥ जय विहरमान माहाराज, धर्मअधिकारी ॥ १ ॥ अनंत वीरज जगनाथ, तज्या जगनाता ॥ त० ॥ श्री सूर प्रभु सुविख्यात, करो सुखशाता ॥ विशाल प्रभु सुविशाल, त्रिजगके त्राता ॥ त्रि० ॥ श्री वज्रधर तप वज्र, कर्मके घाता ॥ चंद्रानन सुखकंद, दर्शे चित्त चाता ॥ दर्श० ॥ चंद्रवाहु कर्मराहु, मिटाया खाता ॥ कियो कर्मसें जंग, भुजंग प्रभु भार्ग ॥ भु० ॥ ज० ॥ २ ॥ ईश्वर त्रिजग

ईश, मेरे मन भावे ॥ मे० ॥ श्री नमीश्वरजिन ध्यान, करतां दुःख जावे ॥ वीरसेन कर केण, अमर पद पावे ॥ अ० ॥ साहाभद्र कर भद्र, विघनकुं हटावे ॥ देवजस करे सेव, रिद्ध सिद्ध आवे ॥ रि० ॥ अजित वीरज निजपद, देत भज भावें ॥ जघन्यपदें वर्तमान, जिनंद उपगारी ॥ जि० ॥ ज० ॥ ३ ॥ धनुष्यपांचशें प्रमाण, प्रभुजीकी काया ॥ प्र० ॥ लक्ष चोराशी पूरव, आयु फरमाया ॥ थाप्या हे तीरथ चार, भविक मन भाया ॥ भ० ॥ होय अयोगी मोक्ष, जासि महाराया ॥ सें अधम उद्धारण विरुद, सुणी हरखाया ॥ सु० ॥ निलोकरिख यों जाण, शरणागत आया ॥ जिम तिम करो भवपार, अरज अवधारी ॥ अ० ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिनाथ जिन लावणी ॥

॥ अगडदं अगडदं ॥ ए देशी ॥ प्रभु तुम विण में भम्यो जगतमें, अव द्यो सुख संपति स्वामी ॥ शांति जिनेश्वर शांति करो मोय, विघन हरण अंतरजामी ॥ पाल्यो पारेवो मेघरथ नृपभव, गोत्र तीर्थकर बांध्यो जिहां ॥ सर्वार्थ सिद्ध गये संयम लेकर, स्थिति तेत्रिश सागरकी तिहां ॥ हथिणापुर विश्वसेन पट्टराणी, अचिरा कूखें जन्म लियो ॥ छे पदवी उपराजी पुण्यसें, मरकी रोग प्रभु दूर कियो ॥ जस फेल्यो तव सारे देशमे, परजा पण शाता पामी ॥ शां० ॥ १ ॥ पचिश पचिश हजार वर्ष लग, कुंअर राज चक्रवर्त्ती ॥ एक हजार पुरुष संगें प्रभु, संजम लीनो शुभ मती ॥ एक वरस छद्मस्थ पणासें, सह्या परिसह जिनराया ॥ घनघातिक चउ कर्म काटकें. श्रीजिनवर केवल पाया ॥ दियो उपदेश भविक जन तारण, धन जगवत्सल शिवगामी ॥ शां० ॥ २ ॥ पचीस सहस्त्र वर्षमें एक कम, केवल पदवी दीपाई ॥ छत्तिस गणधर हुवे नायक. बासठ सहस्त्र भये मुनिराई ॥ एकशठ हजार ओर छसें आर्जका, एक लक्ष नेवु हजार ॥ भये श्रावक एकविश

गुण पूरण, बाराव्रत धारणहारा ॥ तीन लक्ष त्र्याणुं सहस्र श्राविका, करणीमें कुछ नहिं खामी ॥ शां० ॥ ३ ॥ लक्ष वर्षको सर्व आउखो, जिन मारग हद दीपाया ॥ समेतशिखर पर्वत पर चढकें, जगतारक अणसण ठाया ॥ वदि तेरश नक्षत्र रेवती, ज्येष्ट मास में मुक्ति लही ॥ अजर अमर अविकार निरंजन दुःखभंजन बिर्द आप सही ॥ तिलोकरिख कहे तारो मुझकुं, अर्ज करुं नित शिर नामी ॥ शांति० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ उदायिन रिखकी लावणी ॥

॥ देशी तेहिज ॥ नरपति सुरपति नमे जिनोकुं, ध्यान धरे हे साधु सती ॥ जग उद्धारण समरो साहिब, महावीर त्रिजगतपति ॥ ए टेक ॥ वीतभय पाटणके अंदर, नाम उदायिन था राजा ॥ शूरवीर माहावीर जोरावर, सोला देशका शिरताजा ॥ मुकुट वंध दश राजा जिनकी, सेवा करता हर्ष धरी ॥ पद्मावती नामें पट्टराणी, शील रूप गुण प्रेम भरी ॥ परजाकुं फरजंदसी पाले दिन दिन चढती पुण्यरति ॥ ज० ॥ १ ॥ वर्द्धमान जगनाथ पधारे, वंदन गये राजा चालिकें ॥ धर्मकथा प्रभुजी फरमाइ, दूनीयामें ममत छलके ॥ विन मतलबसें कोइ न किस्का, जग माया हे स्वप्ने ज्यों ॥ इस्कों छोड कर धर्म आराधो, सुणकें लगा नृप कंपनें ज्यों ॥ प्रभुसुं कहे मैं संजम लेउंगा, पुत्रकुं दे के राज क्षिति ॥ जग० ॥ २ ॥ पीछे जोग में लेउंगा तुमपें, जेज करो मत लीगारा ॥ राजसें जाता सोचे दिलसें, एकी पुत्र मुझ अति प्यारा ॥ राज करेगा नरक पडेगा, दुःख पावेगा बहुत सही ॥ इसी सबब भाणेज राज देउं, सला दिलसें यों राजा ठही ॥ केशी नाम भाणेज राज दे, नृप भया निर्ग्रंथ जति ॥ ज० ॥ ३ ॥ पुत्र विचार किया दिल अंदर, मेरेसें क्या ऐब भरी ॥ क्युं नहिं दिया राजछत्र मुज, दिलमें चिंता बहुत करी ॥ रोष भराके गया

सो चंपा, मासी भ्रातके पास चली ॥ बारा व्रत वो पाले निर्मल, सो मुनि उपर द्वेष वली ॥ अब सुण लो मुनिवरकी किरिया, तप संजमसें अधिक रति ॥ ज० ॥ ४ ॥ मास मास तप करत निरंतर, अरस निरस तुच्छ आहार करे ॥ अग्यारा अंग कंठाग्र करकें, आज्ञा ले जनपद विचरे ॥ विहार करतां आया सोही पुर, केशी राजा दिल वहेम भया ॥ दुआइ फेराइ पुरमें साधुकुं, उतरने मत देनां यहां ॥ जो उतारेगा इनकुं घर अंदर, राजा करेगा घर जपति ॥ ज० ॥ ५ ॥ कुंभकार एक था भवि प्राणी, दिल अंदर विचार कीया ॥ राजा रूठा लेगा गद्धा, भांडा राखका ढंग रीया ॥ मेरे टपरी फुसकी हेगी, क्या कर ले राजा मेरा ॥ ऐसी समज कर दिनि हे आज्ञा, मुनिवर आकर जहां ठहेरा ॥ राजा सुन कर चुप रहा दिल, अच्छि नहिं कछु जिनस छती ॥ ज० ॥ ६ ॥ राजहकीमसुं राजा कहे तुम, जहेर देनां औषध मांइ ॥ दवा लगे नहिं फिर जीवणकी, ऐसा काम करो भाइ ॥ ऐसा हुकुम उन मान लिया और, साधुकुं दिया जहेर माहा ॥ दवा लेतेही भइ रिख दीकत, रोम रोममें प्रगटी दहा ॥ मुनिवर समता सागर पूरे, निर्मल जिनकी धर्म मति ॥ ज० ॥७॥ लहेने वाला मांग लहेनां, आनाकानी काम नहीं ॥ दे दिल साफी ढील करे मत, ध्याया शुक्ल ध्यान सही ॥ पाये केवल ज्ञान मुनीश्वर, मुक्ति नगरमें डंका दिया ॥ जय जय बोलो उनकी भइया, शमरस रसका प्याला पिया ॥ अजर अमर अविकारी निरंजन, सुख अनंत लहि सिद्धगति ॥ ज० ॥८॥ समकेती सुर दिल धुसे भराणे, विन तकसीरी हत्यारा ॥ दिया मुनिवरकु जहेर हलाहल, प्रजाप्राण कर दिया न्यारा ॥ धूल वृषा करी दट्टण पट्टण, वर्दी कीया दुःख पावत हे ॥ ऐसी दिलमें समजो सुगुणा. तिलोकरिख दरसावत हे ॥ धन जिनम . धन परमेश्वर, धन जो पाले धर्म अति ॥ ज० ॥ ९ ॥

इति उदायिन रिखकी लावणी ॥

॥ अथ धन्नाजीकी लावणी ॥

॥ साल स्वप्नकी लावणीकी देशीसें ॥ श्री वीरजिनेश्वर नमत सुरेश्वर, चोतीस अतिशय करि छाजे ॥ सकल कर्म भय भर्म मिटाया, वाणी पेंतिस ज्यों घन गाजे ॥ पाखंडी बंड अफंड करे नहिं, भगे शीयाल ज्यों सिंह देखी ॥ अपरंपार महिमा जिनवरकी, होये खुशी भवजन पेखी ॥ गाम नगर पुर पाटण फिरते, नगर राजगृहीकुं आया ॥ धन धन्नो मुनिराज जहाज सम, सब मुनिवरमें सरसाया ॥ ध० ॥ १ ॥ बागवान दिल हरख आनकें, कहेता श्रेणिक राजनके ॥ पुण्य उदय प्रभु बागमें आये, संग बहुत मुनि हे उनके ॥ विदा दे कें चले सज असवारी, वंदना कर वेठे सामे ॥ प्रभुजी दे उपदेश सभामें, पूछे श्रेणिक शिर नामे ॥ कहो मुझ दीनदयाल कृपा कर, तुम सब जाणक जगराया ॥ ध० ॥ २ ॥ चउद सहस्र मुनि संग आपके, शिवपुर आश करे सारा ॥ निजमेंतज हे कोन इनोसें, करणीसें दुःकरकारा ॥ प्रभुजी कहे सब मोतमाल सम, संजम करणी हुशियारा ॥ दुःकर दुःकर कार सकलसें, धन्नो मुनिवर अधिकारा ॥ नाम ठाम करणीका परसन, पूछे श्रेणिक उमाया ॥ ध० ॥ ३ ॥ काकंदी नगरीके अंदर, गाथा पतणी भद्रा नामें ॥ धन्नो सुत गुणवंत विचक्षण, बोंतेर कला जोवन पामे ॥ बत्तिस लडकी इभपतियोंकी, बहुत धूमसें परणाइ ॥ बत्तिस बत्तिस जिनसा दायज, सब एक सा बाणव आइ ॥ पडे नाटक धुंकार महेलसें, भोग भोगवे मन चाया ॥ ॥ ध० ॥ ४ ॥ एक दिन त्रिशलानंद दिवाकर, काकंदी नगरी आया ॥ जिनशत्रु नृप प्रजा लोक सब. श्री जिन दरिसणकुं धाया ॥ धन्ना शेठ पण आया उलट भर, वंदणा कर वेठ आइ ॥ फरमाया उपदेश धरमका. धिग धिग धिग हे जगताइ ॥ राच रह्या जग जीव अज्ञानी, माने मेरी संपत माया ॥ ध० ॥ ५ ॥

तन धन जोवन सर्व अथिर हे, पुद्गल सोभा हे सारी ॥ मात पिता ओर कुंटुव कवीला, मतलवकी जगसें यारी ॥ त्राण शरण नहिं मरण रोगमें, इसमें कुछ नहिं हे शंका ॥ काचकी शीशी फूट पलकसें, मत मगरूर करे अंगका ॥ धरम ध्यान दोइ हे तुझ संगी, जग सव सुपनेकी माया ॥ ध० ॥ ६ ॥ काम क्रोध मद राग द्वेष छल, सकल करमके वंधन है ॥ चेतनकुं वेहाल करे है, चार गति दुःख फंदन हे ॥ जवलों जरा व्याधि नहिं आवे, इंद्रियका वल घटे तेरा ॥ जिस पहले हुशियार होय कर, धरम ध्यान करलो गहेरा ॥ शिवसुखकी जो चहाय तुमारे, ए कहेणी मानो भाया ॥ ध० ॥ ७ ॥ धन्ना शेठ वैराग आणदिल, कहे साहिवसुं शिर नामी ॥ आप कही सो हे सव सच्ची, में संजम लेवणकामी ॥ जननीकी आज्ञा ले आउं, प्रभु कहे ज्यों सुख तुम तांइ ॥ जेज करो मत धर्म कामसें, गइ पल सो आवे नांहि ॥ वंदणां कर चल आया मातपें, आज्ञा मागे उलसाया ॥ ध० ॥ ८ ॥ पुत्र सवाल सुणी ततक्षण सा. मूर्च्छा खाय पडी धरती ॥ दासी मिल कर करी सचेतन, आंखो वुंदनसें झरती ॥ कहे पुत्रकुं संजम किरिया, दुर्लभ हे तुझकुं भाइ ॥ वत्तिस तरुणी लघु वयें सारी, हाल जाये मत छटकाइ ॥ मेरे पीछें तुझ वृद्ध वय आयां, फिर संजम लीजें जाया ॥ ध० ॥ ९ ॥ खड्ग धार ओर छुरी पान पर, चलणां दुष्कर अधिकाइ ॥ लोह चणा मोम दांतें चावणां, वेलुकवल नहिं सरसाइ ॥ पवनसु कोथलो भरणो जेसें, मेरु तोलणा कठिणाइ ॥ गंगा नदीकी धार पकड कर, चढनां जेसें गगनमांड ॥ एसें संजम दुःकर दुःकर, तेरी हे कोमल काया ॥ ध० ॥ १० ॥ जननीका सवाल समज कर, धन्नो कहे सुणरी माइ ॥ नारी क्यारी नरक कुंडकी, फल किंपाकसी दरसाइ ॥ काल जोरावर तीन लोकमें, छोड नहीं ए किसतांइ ॥

कौण वखत और कौण योगसें, पहेलां पीछें खबर नांइ ॥ मेरेतांइ झट दे द आज्ञा, जनम मरणसें घभराया ॥ ध० ॥ ११ ॥ संजम मारग दुःकर दुःकर, इसमें फरक नहिं माता ॥ कायर कृपण निर्वल नर और, इण भवकी चाहत शाता ॥ परभवकी नहिं चाहत जिसके, सो संजमसुं थरराता ॥ शूरवीरकुं सहज हे संयम, जगका झूठा हे नाता ॥ जो पल जावे सो नहिं आवे, जगनायकने दरसाया ॥ ध० ॥ १२ ॥ सवाल जवाव भये मा वेटाके, अधिक थकी आज्ञा दीनी ॥ वहुत मोच्छव और उलट भावसें, धन्नाने दीक्षा लीनी ॥ हाथ जोड कर कहे प्रभुजीसुं, जावजीव छठ तप धारुं ॥ पारणे आंविल आहार नाखतो, मिले तो लउं पारणा सारु ॥ भगवंत कहे तुम सुख होय सो, करो देवाणुप्रिय डाह्या ॥ ध० ॥ १३ ॥ चडते भाव और सम परिणामें, तप धार्यो दुक्करकारी ॥ कोई दिन आहार मिले नहिं मुनिकुं, कोई दिन नहिं मिलता वारी ॥ सूका लूखा तन भया भूखसें, लोही मांस सव सुकाणो ॥ काचा तुंवा सो शीस मुनिको, नेत्र प्रांत तारा जाणो ॥ उंडा कडेला सो पेट ज्युं दीखे, रसना पान जो सूकाया ॥ ध० ॥ १४ ॥ अंवपेसी ज्युं नासिका रिखकी, काचरी छाल ज्युं कान कया ॥ ढींक पंखी ज्युं जंघा दरसे, सूका सरप ज्यों वदन भया ॥ काक पाव ज्युं पावकी पिंडी, आंगली सूकी ज्यों मुंगफली ॥ न्यारा न्यारा हाड दीसे सव, अलग अलग सोले पसली ॥ सकल खुलासा हे शास्तरमें, श्री सुध्र साहेव फरमाया ॥ ध० ॥ १५ ॥ कोयलातिक और एरंड लकडको, चलतो गाडो वजे जेसें ॥ उठतां वेठतां हालतां चलतां, मुनिके हाड वजे तेसें॥तप तेजसे पुष्ट भया मुनि, निर्वल वहुत भये तनमें ॥ हिरते फिरते शठ वोलते, सुणते खेद पावे मनमें ॥ आयुष्य वलसें काम करे सव, भाव संजम निश्चल ठाया ॥ ध० ॥ १६ ॥ श्रेणिक सुणी हवाल मुनिका, प्रभुकुं वंदे शिर नामी ॥ धन्ना मुनिके पास

जायेकें, कहे तुम धन अंतरयामी ॥ सफल कियो तुम मनुष्य जनमकों, करणीसें कुछ नहिं खामी ॥ छता भोग छटकाय दिया सब, दुःकर तप किरिया कामी ॥ तुम हो गरीबनिवाज दयानिधि, चरण शरण मुझ मन भाया ॥ ध० ॥ १७ ॥ मुनिका करि गुणग्राम भूपति, प्रभु प्रणमी गये निज ठामें ॥ दिन किता रहि विहार कीयो प्रभु, विचरे पुर पाटण ग्रामें ॥ कोई दिन राजगृही नगरमें, समोसर्या फिर जिनराया ॥ धर्मजागरणामें मुनि चिंत्यो, शक्ति नहिं किंचित् काया ॥ दिन उगा प्रभु आज्ञा ले कर, साध साधवी खमाया ॥ ध० ॥ १८ ॥ विपुलगिर पर्वत पर चढकें, पादोपगमण अणसण कीना ॥ एक मास संथारो आराधि, रिख सर्वार्थसिद्ध लीना ॥ अरथ पाठ पढ अंग ग्यारा, नव महिना दीक्षा पाली ॥ आदि अंत चढते परिणामें, वहोत करम दिया परजाली ॥ सात लवका रह्या कमती आउखा, एकावतारी सो पद पाया ॥ ध० ॥ १९ ॥ कोडी तीन पंच लाखके ऊपर, सहस्र एकसठ तीनसें जाणो ॥ मास नवका मास बताया, सुकृत करणीके मानो ॥ एकसो सीतेर कोडी क ऊपर, लाख सत्ताणुं पल कहीयें ॥ सहस्र अठाणुं नवसें छत्तु, त्रीजा भाग अधिक लहीयें ॥ एक एक दम पर इतनी पलको, सर्वार्थ सिध्धमें सुख पाया ॥ ध० ॥ २० ॥ संवत ओगणीशें अडतीस शाले, चैत्र शुक्ल ग्यारश आइ ॥ वार चंद्र दिन पेठ आंबोरी, ठाइ देश दक्षिण मांइ ॥ महाराज अयवंता रिखजी प्रसादें, तिलोकरिख लावणी गाइ ॥ गुणी जनकी तारीफ करी यह, अशुभ कर्मके क्षय तांइ ॥ एसी समज सब गावो गुणी गुण, काम सिद्धि सुख सवाया ॥ ध० ॥ २१ ॥ इति धन्नाकाकंदीजीकी लावणी संपूर्ण ॥

॥ श्रावकके बाराव्रतकी लावणी ॥

॥ तुम सुणो सीख शास्त्रकी मान लो कहेना २॥ क्यों सोते

मोहकी नींद, खोलो अब नयणा ॥ १ ॥ टेर ॥ रहो निश्चल समकितवंत, ध्यान शुद्ध धरणा २॥ एक देव नमो आरिहंत, सुगुरुका सरणा ॥ हे धरम केवली भाख्यो दयामें जानो २ ॥ संका कंखा दिल माहे, कछु मत आणो ॥ करणी का फल संदेह, आनो मत भाइ २॥ पर पाखंडी परसंसा करणी कछु नाहीं ॥ सरच्यो परच्यो सब तज्यो, भजो एक जैना २॥ क्यों० ॥ तुम० ॥ ॥ २ ॥ मत करो प्राणीकी घात, झुट मत बोलो २॥ मत करो कोइसे कपट, पड़दा मत खोलो ॥ मत लेवो चोरीका रे माल, चोरी परिहरना २ ॥ करथो परनारीका त्याग, पापसे डरना ॥ अब करो धन मर्याद, लोभकुं छोडो २ ॥ तृष्णा हे दुःखको मूळ, काहेकुं जोडो ॥ करो दिलमें संतोष, परम सुख चैना २ ॥ क्यों० ॥ तुम० ॥ ३ ॥ अब करो दिशाकी मर्याद, अधिक नहीं जाना २ ॥ ए पंदरा करमादान, त्याग देवो शाना ॥ हिंसाकारी उपदेश, कूड़ नहीं लिखना २ ॥ हिंसाकारी अधिकरण, संग्रह नहीं करना ॥ करो सामायिक शुद्ध दोष सब टाली २ ॥ दसमो दीसावगासिक व्रत सुविसाली ॥ सच्चा हे जीनराज, और सब कहेना २ ॥ क्यों० ॥ तुम० ॥ ४ ॥ अब करो पोसा उपवास, शक्ति मत गोपो २॥ कोई देव सूर्धा सखि, ताम मत लोपो ॥ तुम उलट भाव दो दान, नेम नित धारो २॥ ए तीन मनोरथ रात माय, सदा चितारो ॥ नवतत्वका निरणा, करो गुरुपास २॥ यासे होय अमर विमान, फेर शिववास ॥ तिलोकरीख कहे सदा सुखसे तुम रहेना ॥ क्यों० ॥ तुम० ॥ ५ ॥ इति ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रावक उपर लावणी ॥

॥ चेत चेत रे भान मयाणा, दुर्लभ नर अवतार ॥ धरम करी उतरो भव जल पार ॥ आरज देश उत्तम कुल जनम्यो, देह निरोगी धार ॥ आउखो इंद्रिय पूरण सार ॥ सतगुरु जोग शास्त्रको

सरन्धा, धारो हिरदा मझार ॥ जगतमें जैनधर्म सुखकार ॥ ज्ञान दर्शन चारितर करणी, तप बारा परकार ॥ धारके तरे अनंत नर नार ॥ झेलो ॥ ऐसो जाणके धरम करीजें, करम बंधणसें अधिक डरीजें ॥ मिथ्या भर्मकुं दूर हरीजें, जप तप संजमसें चित्तदीजें, ॥ ज० ॥ निश्चल समकित धार ॥ होय तेरी आतमको उध्दार ॥ चेत० ॥ १ ॥ मात पिता तिरिया सुत बंधव, सजन स्नेही परिवार ॥ येतो सब हेगा मतलब यार ॥ बिन मतलब सब हे दुःखदाइ, नहिं तुझ तारणहार ॥ इसमें शंका नहिं हे लगार ॥ पुत्र अंगकुं भंग किया नृप, कनक रथ दुःखकार ॥ जिनोंका छेडे अंग विस्तार ॥ चुलणी राणी ब्रह्मदत्त सुतकुं, लाखका महेल मझार ॥ बालवा कियो अगन परिचार ॥ झेलो ॥ सुरिकांता पति जहेर खवायो, श्रेणिकके सुत पिंजरे ठायो ॥ भरत बाहुबालि हाथ उठायो ॥ दुर्योधन महा जंग मचायो ॥ दु० ॥ कीयो कुलको संहार ॥ चे० ॥ २ ॥ काचा कुंभ जेसी काया रे तेरी, छिनमें होय विनास ॥ इसीका झूठा हे विश्वास ॥ खावणां पीणां भोग इंद्रीका, ये सब हे दुःखरास ॥ भोगसें होवे नरकको वास ॥ पावे कष्ट अपार जहां सेहे, परवश जमकी त्रास ॥ शाता नहिं हे क्षण भरकी तास ॥ बीते काल असंख्य जहां नहिं, सुख रंच एक सास ॥ बंध रह्या अष्ट कर्मकी फास ॥ झेलो ॥ भोग हलाहल जहेरसा जाणो, उपमा फल किंपाक वखाणो ॥ अनित्य जाण जगके छिटकाणो, लेलो खरची धर्मको नाणो ॥ ले० ॥ करे सतगुरु हुशियार ॥ अवसर एसा नहिं हे वारं वार ॥ चे० ॥ ३ ॥ धन संपत सब कारमी जाणो, ज्यों विजली झबकार ॥ कवडी नहिं चलेगा तेरी लार ॥ छिन छिनमांहि छिजे आउखो, ज्यों अंजलीको वार ॥ जोरावर काल लग्यो हे तेरी लार ॥ देव दाणव हरि हर ओर चक्री, इंद्र चंद्र अवतार ॥ छोडे नहिं किसकुं काल कगार ॥

वखत वार नहि देखे जोगणी, बाल तरुण नयधार ॥ देखे नहि सुखी दुःखी नर नार ॥ झेलो ॥ दान शील तप भावना भावो, धरम ध्यानको लीजें लावो ॥ धन संपतमें मत अकडावो, साधु संतकुं शीश नमावो ॥ सा० ॥ जो चाहो निस्तार ॥ माया तजि आदरो संजमभार ॥ चे० ॥ ४ ॥ निज आतम सम जीव छकाया, जाणो दया जयकार ॥ दया विन करणी सब वेगार ॥ सत्य वचन निरवद्यसो बोलो, चोरी सर्व निवार ॥ शील नव वाड सहित शुद्ध धार ॥ परिग्रह ममता क्रोध निवारो, लोभ कपट अहंकार ॥ राग द्वेष करो सकल संहार ॥ कलह आल पर चुगली निंदा, रत अरत परिहार ॥ माया मृषा मिथ्या तज दुःखकार ॥ झेलो ॥ नरक गति दुःखकार ए जाणी, छोडो इनकुं भव्य जन प्राणी ॥ इण भव जस परभव सुखदाणी, लावणी श्रीगोंदा में जोडाणी ॥ ला० ॥ ओगणीशें सैंतीस मझार, तिलोकरिख कहेता पर उपगार ॥ चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ जीवरक्षा उपदेशनी लावणी ॥

॥ उत्तम कुल अवतार पाय कर, श्रावक, करणी धार ॥ तोही पग उतरोगे भवपार ॥ देव नमो अरिहंत भावशुं, गुरु गिरुवा गुण धार ॥ जिनोंकी सेव कियां निस्तार ॥ धर्म केवली आज्ञामें वर्तो, जीव दया ततसार ॥ सकल शास्त्रमें हे अधिकार ॥ त्रस थावर दो भेद प्ररूप्या, न निभे सर्व प्रकार ॥ तोहि पण त्रस जीव उगार ॥ झेलो ॥ जाणी देखी निरअपराधी, अथवा तनकुं दे न उपाधी ॥ हणवाकी बुद्धि दिलसुं साधी. हणो मत जिन आज्ञा आराधी ॥ ह० ॥ निर्दय हुइ मत मार, शक्तिसुं अधिक भरो मत भार ॥ उत्त० ॥ १ ॥ गाढा बंधण अंग छेदना, बंद करो मत अ-हार ॥ अणुकंपा निशदिन दिलमें धार ॥ वापरणो नही अणछाण्यो जल, निरर्थक मत करो खुचार ॥ पुंजे अग्नि मत दो नर नार

वासी लीपण लीपणो टालो, जूं माकड मत मार ॥ मच्छरकुं हण न कुंथुवो निवार ॥ अनंतगुणा पुनि थावरसूं त्रस, पाप तणो नहिं पार ॥ निजात्मसम सव जीव उगार ॥ झेलो ॥ तड़को न देणो सल्या धानके, मोल न लेणो पाप जाणके ॥ सेकणो पीसणो नहिं पाप मानके, जीव उगारो दया आनकें ॥ जी० ॥ तरस त्रास दुःखकार, दानमें अभय दान श्रीकार ॥ उ० ॥ २ ॥ कन्या पशु और धरती कारण, झूठ करो परिहार ॥ थापण पर ओलवणी नहिं यार ॥ लांच लेइ कूडी साख भरो मत, मत करो मर्म जहार ॥ झूठा खत मांडो मत कुविचार ॥ विना विचारे वोलणो नहिं कुछ, सत्य वडो संसार ॥ सत्यसूं कदी न होवे हार ॥ खातर खाणि धाडां मत पाडो, पडकूंची परिहार ॥ धणियाती पडि वस्तु ग्यो टार ॥ झेलो ॥ राज दंड सो काम न कीजें, चोखी वनाइ खोटी न दीजें ॥ चोरीकी वस्तु मोल न लीजें, कूड़ा तोला मापा परहरीजें ॥ कू० ॥ चोरी हे दुःखकार, समज कर त्यागो सव नर नार ॥ उ० ॥ ३ ॥ परनारीको पाप वहोत हे, खट मतसें विस्तार ॥ समझ कर ममता दिलकी मार ॥ शीलव्रत सुखदाइ हे सवकुं, वंछित पूरणहार ॥ उपमा वत्रीश सूत्र मझार ॥ अल्पवयें अणसार्खी पंचकी, सो वरजो निज नार ॥ तीव्र अभिलापाको अतिचार ॥ धन मरजादा करी हे तिणसुं, अधकी ममत निवार ॥ परधन देखी मत मुरझो लगार ॥ झेलो ॥ पुण्य विना दोलत नहीं पावे, निरर्थक मनसें क्यों मुरझावे ॥ धन संपत छिनसें विरलावे, एकलो आयो एकलो जावे ॥ ए० ॥ पुण्य पाप दो लार, पुण्यसें आश फले संसार ॥ उ० ॥ ४ ॥ ऊर्ध्व अधो तिरछी दिश जावण, मर्यादा लो धार ॥ टले ज्यूं आश्रव पंच प्रकार ॥ छवीश वोल मर्यादा कर लो, कंद मूल तुच्छ अहार ॥ कर्मादान पंद्रा तज महा भार ॥ तज प्रमाद और निरर्थक आरंभ, हिंसा दान निवार ॥ खोटा

उपदेश न दीजें लगार ॥ कुचेष्टा विकथा नहिं कीजें, पाप शस्त्र परिहार ॥ ऐसा है श्रावकका आचार ॥ झेलो ॥ तीन वखत सामायिक कीजें, बत्तीस दूषण दूर हरीजें ॥ शत्रु मित्र समभाव गुणीजें, सावद्य कारज सब तज दीजें ॥ सा० ॥ समता चित्तमें धार ॥ जिसको नफा है अपरमपार ॥ उ० ॥ ५ ॥ देशावगासिक नेम चितारो, खट पोषध व्रत धार ॥ जिसमें वर्जो दोष अढार ॥ तीन मनोरथ नित्य चितारो, धारो सरणा चार ॥ भावशुं प्रतिलाभो अणगार ॥ एकवीश गुण कह्या श्रावकका, सो लीजो हिरदे धार ॥ होय ज्युं आतमको उद्धार ॥ संवत् ओगणीशें साल सेंतिशका, श्रीगोंदाके मझार ॥ पोष शुदि अष्टमी शुक्रवार ॥ झेलो ॥ श्रावक करणी करजो भाइ, नरभव चिंतामणी अधिकाइ ॥ वार वार ए अवसर नांइ, चेतो चतुर करो धर्म सवाइ ॥ चे० ॥ कटे करमको खार, तिलोकरिख कहेता पर उपगार ॥ उत्त० ॥ ६ ॥ इति॥

अथ पुण्यआश्रवी लावणी प्रारंभः ॥

॥ धन्नाशेठ भवमांय दान दियो भावे ॥ दा० ॥ जिहां बांध्युं तीर्थंकर गोत्र, ऋषभजिन थावे ॥ खट दरिसण परसिद्ध, ऋद्धि अति पावे ॥ ऋ० ॥ प्रभु थाप्यां तीरथ चार, अचल गति जावे ॥ अजर अमर अविकार, कसी नही कांइ ॥ क० ॥ तुम करो धर्मका काम, सदा सुखदाइ ॥ १ ॥ पारणो पांचशें मुनिकुं, करायो भावें ॥ क० ॥ सो गया सर्वारथ सिद्ध, भरत नृप थावे ॥ छलाख पूरव कीयो राज, छ खंडके सांइ ॥ छ० ॥ भवन आरिसाके बीच, भावना भाइ ॥ पाया केवल ज्ञान, सुखें शिव पाया ॥ सु० ॥ करि वेयावच्च भावें, बाहुबलि राया ॥ अपरबली जगमांहि, भरत श्रे भाइ ॥ भ० ॥ तु० ॥ २ ॥ मेघरथ नृप भवमांय, दया दिल आणी ॥ द० ॥ जा राख्यो पारेवो सरण, भ्रजतो प्राणी ॥ ऊदलको मांस दियो काट, दियो बचाई ॥ द्वि० ॥ सर्वार्थसिद्धके मांइ, उत्कृष्ट

स्थिति पाई ॥ शांति जिनंद सुख कंद, चक्रिपद पाया ॥ च० ॥ दीपायो जिन धर्म, धन्य महाराया ॥ पाया केवल ज्ञान, आठुं कर्म धाइ ॥ आ० ॥ तु० ॥ ३ ॥ दीयो द्राखको पाणी, राजा और राणी ॥ रा० ॥ हर्ष भाव शंखराय, कपट नहिं आणी ॥ बांध्युं तीर्थंकर गोत्र, नेमि जिनराया ॥ ने० ॥ समुद्रविजयजी का नंद, जगत मन भाया ॥ तोरणसें फिर आया, पशु दया आणी ॥ प० ॥ प्रभु तज कर राजुल नार, संजम पद ठाणी ॥ जिनकी कीर्ति जगमांहि सदा है सवाइ ॥ स० ॥ तु० ॥ ४ ॥ धर्मरुचि मुनिराज, मास तप ठाया ॥ मा० ॥ वे चंपानगरी बीच, विचरता आया ॥ नागसिरी घर गया, तुंबो वोहोरायो ॥ तुं० ॥ गुरु आज्ञाथी जाय, विंदु परठायो ॥ मरती किडियां देख, दया दिल आणी ॥ द० ॥ मुनि जहेर हलाहल पियो, खरि सम जाणी ॥ खी० ॥ तेतीस सागर अमर, सुगति पुरी पाइ ॥ सु० ॥ तु० ॥ ५ ॥ दीयो क्षीरको दान, संगम भव मांइ ॥ स० ॥ शालिभद्र सोभागी, महा ऋद्धि पाइ ॥ सुबाहुदिक दश कुमर, दान परभावें ॥ दा० ॥ पंद्रह भवके मांय, सुगति सब पावे ॥ कृष्ण श्रेणिक नरनाथ, धर्म दलाली ॥ ध० ॥ जिणे बांध्युं तीर्थंकर गोत्र, सूत्रमें चाली ॥ करी क्षमा परदेशी, पाप छिटकाइ ॥ पा० ॥ तु० ॥ ६ ॥ दान शील तप भाव, शुद्ध आराधी ॥ शु० ॥ पाया हे सुख अनंत, छोड उपाधी ॥ ऐसो जाण सुकृत करो, थें नर नारी ॥ थें० ॥ छोडो पाप प्रमाद, महा दुःखकारी ॥ पुण्यानुबंधी पुण्य, जिससें सुख पावे ॥ जि० ॥ तिलोकरिख कहे सत्य, सूत्रक न्यांव ॥ शहर पुनाकी मांइ, लावणी बणाइ, लावणी गाइ ॥ तु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शील स्वभानी लावणी ॥

॥ दोहा ॥ सासण नायक सुरनरु, भयभंजण भगवंत ॥ त्रिशलानंद

दिनंद सम, प्रणमुं मन धरि खंत ॥ १ ॥ वली प्रणमुं गौतम गुरु, तप संजम दातार ॥ तास प्रसादें वर्णवुं, सुपन सोले अधिकार ॥ २ ॥ पाडलिपुर नगरविषे, चंद्रगुप्त राजिंद ॥ बारे व्रत धारक गुणी, परजाने सुखकंद ॥ ३ ॥ चउदे पूरव ज्ञान शुद्ध, भद्रबाहु मुनिराज ॥ समोसरया उद्यानमें, तारण तरण जहाज ॥ ॥ ४ ॥ पक्खी पोसाने विषे, देख्या स्वपनां सोल ॥ पूछे नृप कर जोडिने, अर्थ कहो मुनि खोल ॥ ५ ॥

॥ अगडदम अगडदम बजे चोघडां ॥ ए देशी ॥ कल्पवृक्षकी शाखा तूटी, अर्थ सुणो यह स्वपनेका ॥ अब जो राजा होयगा कोई, संजम वो नहीं लेनेका ॥ दूज अस्त भया सूर्य अकालें, भेद सुणो अब इसका सही ॥ पंचमे आरे जन्म लिया है, उनकुं केवलज्ञान नहीं ॥ नहिं मनपरयव अवधि पूरण, ये अंधकार भया भारी ॥ भद्रबाहु मुनि कहे भूपसूं, पंचमो आरो दुःखकारी ॥ १ ॥ चांद देखा तुम चालणी जैसा, तीसरे सपनाके मांई ॥ अलग अलग समाचारी होयगी, बोल फरक कुछ दरसाई ॥ भूत भूतणी नचते हिल मिल, देखा चोथे स्वप्नमांई ॥ देव गुरु धर्म खोटा जिनकुं, लोक मानेगा अधिकाई ॥ दया धर्मपर बहोत जलेंगे, थोडे जेनधरमधारी ॥ भ० ॥ २ ॥ पांचमे देखा सर्प भयंकर, बारे फणकर फूंकारे ॥ कितेक साल पीछे काल पडेगा, बारे बरस लग भयंकारे ॥ उत्तम साधु कर संथारा, आतमकारज सारेगा ॥ कायर साधू सो ढीले पडेंगे, हिंसाधर्म विस्तारेगा ॥ खोटा दे उपदेश लोकोंकुं, होवेगा केई घरबारी ॥ भ० ॥ ३ ॥ छठे स्वपने देवविमाग कुं, आता सो देख्या फिरता ॥ जिसका अर्थ सुणो तुम राजिंद, दिल अंदर आणो थिरता ॥ जंघाचारण लब्धि धारक, और विद्याचारण जाणो ॥ ये दो लब्धिके हैं धारक, एसे मुनिवरकी हाणो ॥ वैक्रिय और आहारिक की लब्धि, ये भी विछेदगा सारी ॥ भ० ॥ ४ ॥

विकसा कमल उकरडी उपर, जिसका भेद सुनो भाई ॥ चार वर्णमें महाजनके घर, धरम रहेगा अधिकाई ॥ शास्त्रकी रुचि रहेगी थोडी, सुणतां निद्रा लेवेगा ॥ स्तवन सज्झाय और ढाल चौपाइ, जिससें बहुत खुश रहवेगा ॥ प्रतिबोध पण इससें पाके, होवेगा संजमधारी ॥ स० ॥ ५ ॥ आगियाका चमत्कार आठमें, भेद सुणो इसका नीका ॥ उद्योत होयगा जैनधरमका, वाको मिथ्यातम है फीका ॥ समुद्र सूका तीन दिशा पर, दक्षिणदिश डोले पाणी ॥ दक्षिण दिशपर धरम रहेगा, तीन दिशा रहेगा हाणी ॥ पंचकल्याणक भये जिणपुरमें, धरम हानि जहां उच्चारी ॥स०॥६॥ दशमें सोनेकी थाली जिससें, कुत्ता देखा खीर खाता ॥उत्तमकुलकी दौलत है सो, जावेगी मध्यम हाता॥नट खट सोदा चोर ठगारा, धूर्त होवेगा धनवाला॥साहुकार सो झुरेगा दिलमें, कह न सके मनकी ज्वाला ॥ धन संपत सज्जनकी हाणी, सत्यवादी कम नर नारी ॥ स० ॥ ७ ॥ हस्तीके ऊपर ग्यारमे स्वपने, देखा बंदरकुं बेठा ॥ नीच राजा सो मालिक होयगा, उच्च राजा रहेगा हेठा ॥ बारमे स्वपने देखा तुमने, दरिये मर्यादा छोडी ॥ बेटा बेटी मात पिताकी, मर्यादा राखे थोडी ॥ बहू सासका न करेगी कहणां, उलटा दुःख देगी भारी ॥ स० ॥ ८ ॥ लोंच आहीं सो कमी होयगा, बचन देके नट जावेगा ॥ दगादार विश्वासघाती नर, सच्चे लाक्कुं हटावेगा ॥ भला शक्सका आदर करतां, भूर्ख आदर पावेगा ॥ गुरु गुराणीका चेला चेली, सेवा भक्ति कम भावेगा ॥ अपनी बडाइ करेगा मुखसे, गुरुकुं होयगा दुःखकारी ॥ स० ॥ ९ ॥ कोल्यां देखी स्वपने तरमें, बालकके संजम माहीं ॥ [illegible] उमरके धरम करेगा, संजम लेगा उलसाइ ॥ [illegible] तप जपमें चित्त देवेगा ॥ बुढ्ढा चिढ्ढा होनेगा धर्मी, आलस अधिको रखेगा

॥ सरखा नहिं सब लड्का बुड्ढा, समुच्चय भाव कह्या जहारी ॥ भ० ॥ १० ॥ रत्नकी कांति मंदी देखी, चउदमा स्वपना में जाणो ॥ भरतक्षेत्रका संत साधके, हेत इकलास थोडो मानो ॥ क्रोधी कपी अरु अभिमानी, अपनी बात जमावेगा ॥ भली सीख जो देगा कोइ, उसका अवगुण बतावेगा ॥ अल्प होयगा संजमवंता, होयगा बहोतसा लिंगधारी ॥ भद्र० ॥ ११ ॥ राजकुंअर सो चढ्या पोठिपर, देखा स्वपन पंदरसे ॥ राजा जैनधरम तज देगा, राचेगा मिथ्या करसें ॥ बात करे जो सच्चा पदकी, उसकी थोडा मानेगा ॥ झूठेकी परतीत करेगा खोटेका पक्ष तानेगा ॥ धर्मी पुरुषकी करेगा ठट्ठा, पापीका आदर भारी ॥ भ० ॥ १२ ॥ लडते हस्ती देखे सोलमे, तिन महावत आपस मांहीं ॥ वार वार दुष्काल पडेगा, मन च्हाया वर्षेगा नांहिं ॥ मात पिता गुरु बातके करता, विच विच बात करेगा छोटा ॥ भाई भाईमें संपत ओछी, बोलेगा निर्थक खोटा ॥ पिता पक्षको आदर ओछो त्रियापक्षसु करेगा यारी ॥ भ० ॥ १३ ॥ कायदावाला प्रामाणिक न्यायी, गुणिजन थोडा होवेगा ॥ झगडा टंटा निरर्थक करके, राजमांही धन खोवेगा ॥ केण न माने भला शख्सकी, फिर पीछे पछतावेगा ॥ एकविंश हजार वरस लग राजिंद, ऐसी रीत कर जावेगा ॥ अर्थ सुणी सोले स्वपनाका, राजा भया दृढ व्रतधारी ॥ भ० ॥ १४ ॥ संवत ओगणीसे साल सेंतिसका, फागण वदि ग्यारस आई ॥ तिलोकरिख कहे स्वपन लावणी, गाम कडासें बणाई ॥ पंचम आरा दुःखम नामें, दुःख है इणमें अधिकाई ॥ धरम ध्यान और समता राखे, उनकुं सुख समजो भाई ॥ ऐसा जाणके करजो सुकृत, उतरोगे भवजल पारी ॥ भद्रबाहु० ॥ १५ ॥ इति सोल स्वप्नानी लावणी ॥

॥ अथ कालकी लावणी ॥

॥ साखी ॥ छिन छिनमांहे छीजे आउखो, ज्यूं अंजलि जल जाण ॥ ओस बुंद पाणी परपोटो, वार न लागे हाण रे ॥ करलो हुशियारी, धर्म तयारी डरजो कालसूं ॥ १ ॥ जोवन जातां जेज न लागे, ज्युं नदीको पूर ॥ नदी किनारे तरुवर जेसे, कोई दिन जाये जरूर हो ॥ कर लो हुसियारी ॥ ध० ॥ २ ॥ वाल तरुण वृध्द सुखी दुःखी और, राय रंक नर नार ॥ हरि हर इद्र नरेंद्र सुरासुर, छोडे न काल करार रे ॥ करलो हु० ॥ ध० ॥ ३ ॥ वैधरत व्यतिपात जोगिणी, कालवास दिशाशूल ॥ काल न देखे वक्त वारने, छिनमें करेगे मूल हो ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ४ ॥ सूतां जागतां खातां पीतां, करतां वात विचार ॥नहीं भरोसो कालदूत को, जवरदस्त संसार हो ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ५ ॥ झाड़ पहाड़ उजाड़गाममें, नदी खाल नवाण ॥ खवर नहिं किण ठामके उपर, काल ले जावे ताण रे ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ६ ॥ जल अग्नि ओर जहर भुजंगम, सिंह रीच्छ पशु व्याल ॥ खवर नहिं रोग सोग उपद्रव की, आसी किण जोगे काल रे ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ७ ॥ जाया सो तो जरूर जावेगा, फूल्या सो कुम्हलाय ॥ वंधा सो विखरे इण जगमें, वेहम नहि इणमांय रे ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ८ ॥ जो क्षण जावे सो नहिं आवे, करतां कोडि उपाय ॥ आउखु समोलक पायकें चेतन, खोवे मत फोकटमांय रे ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ९ ॥ ज्ञान ध्यान तप जपको उद्यम, करजो सुगुणा लोक ॥ परभव खरची साथी जीवने, लीजो नाणो रोक रे ॥ करलो० ॥ ध० ॥ १० ॥ ये संसार असार वावले, ममता मोह निवार ॥ कालको डर जो मेटणो तुझने, करले खेवा पार रे ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ११ ॥ ओगणीशें अडतीस जेठ कृष्ण पक्ष, तीज तिथि शनिवार ॥ देवटाकली में तिलोकरिख कहे, धर्मसुं

जयजयकार रे ॥ करलो० ॥ ध० ॥ १२ ॥ ५ ॥

॥ अथ पांचमा आरानी लावणी ॥

॥ जमी निरस हो गई, पाणी कम वरसे ॥ पा० ॥ कबही धान्य गल जाय, कबहीं जन तरसे ॥ कबाहिंक ओछी थंड, लोक चित्त चहावे ॥ लो० ॥ कबहींक पडती वहोत, नाज जल जावे ॥ कबहींक गरमी अल्प, रोग उपजावे ॥ रो० ॥ कबहीं गर्म पडे वहोत, आलस घबरावे ॥ करो धर्म ध्यान संतोष, सदा सुखकारी ॥ स० ॥ सुणि इस आरेका हाल, करो हुशियारी ॥ ए टेक ॥ १ ॥ वस्ती ऊजड होत, नहिं धनवाला ॥ न० ॥ जो किसके मिले धन, नहिं रखवाला ॥ होवे तो जीवे नांय, सोग मन लावे ॥ सो० ॥ जीवे तो निकले कपूत, माया गमावे ॥ अथवा देवे दुःख झगडा [illegible]इ लावे ॥ झ० ॥ [illegible] कुव्यसनी होय, छाती दझावे ॥ कुलमें लगावे दाग, लजावे भारी ॥ ल० ॥ सु० ॥ ॥ २ ॥ बोले बापके सामे, देवे तुंकारो ॥ दे० ॥ साठीमें नाठी अक्कल, माने कुण थारो ॥ पुत्र पिताकी कहेण, सांहे नहिं रेवे ॥ सा० ॥ सासू कुं हुकम सें राखे, बहु दुःख देवे ॥ बेटा होवे अलग, परणके नारी ॥ प० ॥ [illegible] पिता सुं जोरो, माया सब हारी ॥ झगडे राजके मांय, बोले कुविचारी ॥ बो० ॥ सु० ॥ ३ ॥ कोईके पूत सपूत, नारी दुःखकारी ॥ ना० ॥ दुःख देवे दिन रात, महा कलहकारी ॥ छेडी लेका [illegible] लाय, शरम नहिं तनमें ॥ श० ॥ भांड लोकके बीच, केथ दुःखी मनमें ॥ जो नारी सुख होय, भ्रात संतावे ॥ भ्रा० ॥ वे झगडा टंटा करके, राजमें जावे ॥ बात बातमें [illegible], करे अति जहारी ॥ क० ॥ सु० ॥ ४ ॥ जो होवे वहोत कुटुंब, चिंता रहे भारी ॥ चि० ॥ घरमें धन होय अल्प, खर्च दुःख भारी ॥ दास सम सब कुटुंब, काम करे सारा ॥ का० ॥ तो पण न भरे पेट, सदा दुःखियारा ॥ कोइ

रुसे कोइ रोवे, कोइ सतावे ॥ को० ॥ निशदिन रहे उद्वेग, कालजो खावे ॥ जो नहीं होवे कुटुंब, तोहि दुःखियारी ॥ तो० ॥ सु० ॥ ५ ॥ भाई गोत्रीसें वेर, हेत करे परसूं ॥ हे० ॥ गुणकी नहीं कछु परख, राजी आडंबरसुं ॥ अल्प संपदासांहि, करे मगरूरी ॥ क० ॥ धर्मी नरपे द्वेष, निंदा करे क्रूरी ॥ गुमास्ता परपंची, सेठ धन खावे ॥ से० ॥ सेठको काढी दीवालो, आप भग जावे ॥ भली शीख जो देत, देत तस गारी ॥ दे० ॥ सु० ॥ ६ ॥ छोटे बडेकी रीत, कायदो नांही ॥ का० ॥ सनका ठाकर वणे, करे अकडाइ ॥ बीच बीचमें करे वात, जाणे से श्याणो ॥ जा० ॥ वचन दे के फिर जाय, ज्यो तेली घाणो ॥ सुख मीठो चित धिठो, उससें दिलराजी ॥ उ० ॥ कठण कहे हित वेण, उससें नाराजी ॥ पिता पक्षसुं नहिं हेत, नारी पक्ष यारी ॥ ना० ॥ सु० ॥ ७ ॥ दया दानके मांहि, खरचतां रोवे ॥ ख० ॥ ख्याल नाटके मांही, वृथा धन खोवे ॥ साधु संतके पास, जातां दिल शरमे ॥ जा० ॥ मिजलससें अणतेड्यो, जाय कुकर्मे ॥ धर्म कामसें पाछे, पाप अगवानी ॥ पा० ॥ खावणमें तैयार, तपमें करे कानी ॥ प्रभु गुण गातां लाज, ख्याल अधिकारी ॥ ख्या० ॥ सु० ॥ ८ ॥ करके कन्या म्होटी, दाम लिया च्हावे ॥ दा० ॥ माथे दुणां कर के, जाति जिमावे ॥ परम देवाधिदेव, जिनकुं नहिं ध्यावे ॥ जि० ॥ सेरव भवानी भूत, पीर सतावे ॥ गुरु निम्ना निर्ग्रंथ दाय नहिं आवे ॥ दा० ॥ लोभी ठगारा धूर्त, संत चित्त च्हावे ॥ धोरे खोटी शीख, अच्छी लगे खारी ॥ अ० ॥ सु० ॥ ९ ॥ दया धरम पर प्रेम, दिलमें नहिं राखे ॥ दिल० ॥ हिंसा धरम से राचे, झूठ सुख भाखे ॥ भेर सायदा भ्रष्ट, प्रपंची पापी ॥ प्र० ॥ दगादार कृतघ्न, वहोत परतापी ॥ निंदा विकथा वात, करके हरखावे ॥ क० ॥ जो

कहे शास्त्र बोल, तो झोका खावे ॥ जप तप करणी वात, लगे नहिं प्यारी ॥ ल० ॥ सु० ॥ १० ॥ किसके लेणका दुःख किसके देणका ॥ कि० ॥ किसके गेणेका सोच, किसके रेणेका ॥ किसके खाणेका दुःख, किसके लाणेका ॥ कि० ॥ किसके जाणेका दुःख, किसके लाणेका ॥ किसके पिताका दुःख, किसके माईका ॥ कि० ॥ किसके बहेन सुत दुःख, किसके भाईका ॥ किसके धनकी फिकर, किसके वीमारी ॥ कि० ॥ सु० ॥ ११ ॥ कोईके शत्रुका सोच, कोईके साजनका ॥ को० ॥ कोईके परचक्री दुःख, कोईके राजनका ॥ किसके खेतीका दुःख, कोईके वतनका ॥ को० ॥ कोईके चोर हाकल, धाड़ अगनका ॥ कोईके पड़ोशी दुःख, दुष्ट जन जलका ॥ दु० ॥ कोईके अकलका दुःख, कोईके दल बलका ॥ नहिं संपूरण सुखी, कोइ नर नारी ॥ को० ॥ सु० ॥ १२ ॥ जो कोई माने सुख, सकल सुझ मांई ॥ स० ॥ सांज तलक कोई दुःख, आवे उसतांई ॥ जो नहिं मानो वात, देखो अजमाई ॥ दे० ॥ ये शास्त्रकी वात, विचारो भाई ॥ पंचम कालका हाल, वड़ा हे वंका ॥ व० ॥ तिलोकरिख कहे साच, इसमें नहिं शंका ॥ कलियुगकी निसाणी, कही सुविचारी ॥ क० ॥ सु० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ चेतनकर्मकी अदालत लावणी ॥

॥ दोहा ॥

॥ समरुं शासन स्वामिकुं, त्रिकरण शीश नमाय ॥ झगड़ो चेतनकर्मको, न्याय कहुं चित्त लाय ॥ १ ॥ अथ धोसो ॥ समरुं गुणधर संघपति, जेन भूप जाणी, शासन रानी, असल यो मानि, पुण्यकी रानि, गुहि करे ज्ञानि गम्मे कर्म कानि, देखो सिद्ध गति, चाहुं समानि, अनंत शक्ति जो ॥ १ ॥ अथ चाल ॥ धर्मकी वनी कचेरी भारी, तिहुं जग जोवे नर नारी ॥ बेठे प्रभु सिंहासन पर दुनियारी, जिसमें मुझे तीर्थ धारी ॥ अदालत करे सत्त जहारी,

खोटकी नहीं है कछु यारी ॥ दंगा जीव चेतनका है बंका, न्याव तुम सुण लो निःशंका जी ॥१॥ अथ लावणी ॥ मेरी धन दौलत जमीन, अचल दिलवाणा ॥ अचल दिलवाणा ॥ तुम करो अदालत मेरी, जगतपति राणा ॥ ए टेक ॥ खुद चेतन मुद्दइ. बणा है जहारी ॥ ब० ॥ आठुं कर्म मुद्दायले कपट भंडारी ॥ धीरजका इष्टांप, शोध कर लाया ॥ शो० ॥ सज्झाय ध्यान मजमून, सच्च वणवाया ॥ अर्जी आन गुजारी, क्षमा तलवाणा ॥ क्ष० ॥ तुम० ॥ १ ॥ में जाता शिवपंथ, कर्म दिया घेरा ॥ क० ॥ धोका दे मिले संग, लूंटा सब डेरा ॥ लक्ष चोरासीके बीच, मोकुं अटकाया ॥ मो० ॥ फिर राग द्वेष दृढ बंध, मोकुं बंधवाया ॥ में पाया दुःख अनंत, भेद नहिं जाणा ॥ भे० ॥ तुम० ॥ २ ॥ ये टंटा है वेपार, बोत है जूना ॥ बो० ॥ में रहा ओलपके मांहि, माफि करो गूना ॥ मोय मिले नहिं वकील, सबे कानूना ॥ स० ॥ ये झगडा बढा बहोत, दिनो दिन दूना ॥ में तो भया बलहीण, बडे कर्म दाणा ॥ व० ॥ तु० ॥ ३ ॥ अब खुली कछु तकदीर, पुण्य परभावें ॥ पु० ॥ जाणा में हुं सच्च, हारुं नहिं न्यावें ॥ सत्तावीश गुणधार, वकील कानूना ॥ व० ॥ जाणे अर्जकी मर्ज, बहोत मजमूना ॥ में किया जाके मिलाप, बहुत हरखाणा ॥ व० ॥ तुम० ॥ ४ ॥ उन देख शास्त्रका न्याय, भेद बनाया ॥ भे० ॥ में जाना कर्मोका जुल्म, मसोदा बनवाया ॥ तुम विन कोन सुण न्याय, अर्जी में लाया ॥ अ० ॥ सुमति गुप्ति ये आठ, गवाह बुलवाया ॥ शील असेसर चोधरी, उसकुं बुलवाणा ॥ उ० ॥ तु ॥ ५ ॥ अब अर्जी गुजरी उस वखत, हुकुम फरमाया ॥ हु० ॥ प्रभु ज्ञान चपरासी भेज, मुद्दायले बुलवाया ॥ जो बोले हम संग, कछु नहीं दाना ॥ क० ॥ चेतन सुणाइ सुठ, खलकमें दाना ॥

॥ पंचप्रमाद विखवाद गवाह संग आणा ॥ ग० ॥ तु० ॥ ६ ॥ हम घर आया यह, उपत चलाई ॥ उप० ॥ खाया है कर्जा वहोत, हमसे उमाई ॥ राचा भोग विलास, मन वच काया ॥ म० ॥ घाटा नफा नहिं जाना, कर्जा चढाया ॥ जब हम मंगण गये, तबे घबराणा ॥ त० ॥ तु० ॥ ७ ॥ हाजर खडे गवाही, हाल सुणाया ॥ हा० ॥ तब चेतन दे उत्तर, सुणो जी महाराया ॥ इमानदार है सच्चे, मेरे गवाही ॥ मे० ॥ जाणत सबे जहान, झूठ कछु नांही ॥ छुडा दीनी मेरी वतन, अखुट धन नाणां ॥ अ० ॥ तु० ॥ ८ ॥ करम फरेबीदार, वहोत दुःखदाना ॥ ब० ॥ लूट मचाई बहुत, किया हेराना ॥ लक्ष चौरासी मांहे, वहोत भमाया ॥ ब० ॥ वहोत कराया स्वांग, किया मुझ काया ॥ लूटे हरि हर इंद्र चंद्र नरराणा ॥ चं० ॥ तु० ॥ ९ ॥ लूट केई विद्वान, बडे पंडितकुं ॥ ब० ॥ मेले नरकके बीच, वहोत से नितकुं ॥ कहा पुण्यका नाम, पाप करवाया ॥ पा० ॥ कर कर हिंसा काम, धर्म बतलाया ॥ वहोत फेलाया जाल, जिससे ललचाणा ॥ जि० ॥ तुम० ॥ १० ॥ एसा करो इन्साफ, चेतन दरसावे ॥ चे० ॥ अब करमों की अपील, होणे नहिं पावे ॥ जन्म मरण दुःख रोग शोक मिट जावे ॥ शो० ॥ ज्ञान दरसण मुनसफी, करके समझावे ॥ चेतनका कर्जा करो अदा, भया फरमाणा ॥ भ० ॥ तुम० ॥ ११ ॥ असल कर्ज जो देना, होता कर्मोंका ॥ हो० ॥ चेतन से दिलवा दो, मिटे सब धोका ॥ तपका नाणां रोक, दिलवाया जहारी ॥ दि० ॥ शुद्ध संजम जमानत, करी है तब सारी ॥ भया कर्जासे अदा, मना सुखियाणा ॥ म० ॥ तु० ॥ १२ ॥ अदल न्याय किया नाथ, हटाया तस्कर ॥ ह० ॥ चेतनकुं मिली फारगती, रहा हंस हंसकर ॥ उगणीसें अडतीस साल, चोडसदी लस्कर ॥ ना० ॥

कीनी लावणी एह, समज दिल ठसकर ॥ तिलोकरिख कहे सार, समझो कछु स्याणा ॥ स० ॥ तु० ॥ १३ ॥ इति॥

॥ अथ कर्मपचीसीकी लावणी ॥

॥ चैत पिछले पाख, रामनवमीको जन्म लियोरे ॥ ए देशी ॥ करमकुं मत बांधे भाई रे ॥ क० ॥ करम रेख नां टले करो कोई, लाखों चतुराई ॥ ए टेक ॥ श्रीआदीश्वर अंतरायसुं, वर्ष अहार पाया ॥ वर्द्धमान प्रभु कर्म जोगसुं, ब्राह्मणी कुखें आया ॥ बात यह इंद्र जब जाणी ॥ बा० ॥ हरण कराय मेल्या क्षत्री कुलमें, त्रसलादे राणी ॥ भयो ये अचरज जगमांही रे ॥ भ० ॥ क० ॥ १ ॥ बारा वर्ष छमास संजममें, करि दुक्कर करणी ॥ नर सुर तिर्यंच दिया परीसा, वेदना हद बरणी ॥ उपसर्ग गोसालक दिया रे ॥ उ० ॥ लोहीठाण छ मास प्रभुके, केवल मांहे रह्या ॥ खुलासा सूत्र के मांही रे ॥ खु० ॥ क० ॥ २ ॥ कपट प्रभावें मल्लिजिनेश्वर, वेद धरयो नारी ॥ सागरचक्री के साठ सहस्र सुत, गंगा लावण धारी ॥ काठादवीने तोड नाख्यो रे ॥ का० ॥ सबही मरण पाया इक साथें, बाकी नहीं राख्यो ॥ नृप सुण चिंता अति आई रे ॥ नृ० ॥ क० ॥ ३ ॥ सनतकुमार चक्रीके तनमें, रगतपित्ती छाई ॥ संजमले कियो मास मास तप, सातसे वर्ष तांई ॥ आठमो चक्री मान ल्यायो रे ॥ आ० ॥ सातमो खंड साधवा चडियो, करम उदय आयो ॥ मरयो सो सागरमें जाई रे ॥ म० ॥ क० ॥ ४ ॥ राम लक्ष्मण सीता सतिसंगें, विपत सही वनमें ॥ संबुक सूर्य हंस खङ्ग साध्यो, साग्यो गयो छिनमें ॥ बाप चढ आयो हरि सामे रे ॥ बा० ॥ खर दूषण त्रिशिर रण लडतां, तीनूं मरण पामे ॥ कुमतमति गर्भी बण आई रे ॥ कु० ॥ क० ॥ ५ ॥ साहसक तारासुं मुरछो, विद्या मोन लीधी ॥ लंकपति महाविक कर्मसें, सीताहरण

कीवी ॥ रामजी लंका चढ आया रे ॥ रा० ॥ लक्ष्मणवीर महावलवंता, दश मस्तक घाया ॥ विभीषण राजगादी पाई रे ॥ वि० ॥ क० ॥ ६ ॥ श्रीमुनिसुव्रत शिष्य आज्ञा विन, खंधकादिकजाणी ॥ पांचसे रिख गया दंडक देशमें, पीलाणा घाणी खंधकजीके आयो क्रोध भारी रे ॥ खं० ॥ डंडकी देशके वाल्या असुर भव, विराधिक पद धारी ॥ वारसो चक्री नरक जाइ रे ॥ वा० ॥ क० ॥ ७ ॥ पांडव पांच महा वलवंता, हारी द्रोपदी नारी ॥ बारे वर्ष लग वन वन भटक्या, विपता सहि भारी ॥ कीचकको कीचो कर नाख्यो रे ॥ की० ॥ कौरवसुं कियो युद्ध जोरावर, आपणो राज राख्यो ॥ द्रोपदी लेगयो सुर आई रे ॥ द्रौ० ॥ क० ॥ ८ ॥ पांडव कृष्ण गया खंड धातंकी, पद्मोत्तर आयो सामें ॥ कर्मजोग पांडव महावालिया, रणमें हार पामें ॥ नृसिंह रूप धारयो गिरिधारी रे ॥ नृ० ॥ द्रोपदी लाया गंगा उतरिया, रुस्या है मुरारी ॥ दिसोटो दियो पांडव तांई रे ॥ दि० ॥ क० ॥ ९ ॥ कैद के मांहि जाया कृष्णजी वध्या गोकुल-गामें ॥ कंस पछाड सोरिपुर छोडी, रह्या द्वारकाठामें ॥ जरासंध मारया है महावंका रे ॥ ज० ॥ तीन खंडमें आण मनाई, दिया जीत डंका ॥ द्विपायण रीसज भराई रे ॥ द्वि० ॥ क० ॥ १० ॥ द्वारकानगरीमें दाहज दीनो, मात पिता तांई ॥ रथमें बेठाय चल्या हरि हलधर, द्वार पड्यो आई ॥ गया चल कसंबी वन दोई रे ॥ ग० ॥ मृग भरोसे जरा कुमरकें, बाण मारयो जोई ॥ पानी विन हरि मृत्यु पाई रे ॥ पा० ॥ क० ॥ ११ ॥ नल राजा दमयंती राणी, पाई दुःख भारी ॥ हरिचंद्रराय नागदे नीच घर, माथभरयो वारी॥ कुकडो चंदराजा कियो ॥ कु० ॥ गयचंद फिर वीरसनी को, रणमें प्राण लियो ॥ करणी फल छुटे नहिं कांई रे ॥ क० ॥ क० ॥ १२ ॥ नागश्री धर्मरुचि मुनिकुं, कडुवो तुंबो

दीयो ॥ हुई फजीती नरक सिधाई, अनंत दुःख लियो ॥ भई सुकुमालिका सालारी रे ॥ भ० ॥ पंच भरतारी हुई कर्मसुं, लियो अपयश भारी ॥ समझो ये मतलब मनमांही रे ॥ स० ॥ क० ॥ १३ ॥ काचराकी खाल उतारी पूरवभव, हर्ष धर्यो मनमें ॥ तेरह क्रोड भव पाछे खंधकजीकी, खाल उतारी वनमें ॥ पुंडरिक शेष वर्ष संजम पाली रे ॥ पुं० ॥ डगियो तीन दिवस में मर कर, नरक गयो चाली ॥ कर्मको ख्याल अजब भाईरे ॥ क० ॥ क० ॥ १४ ॥ महापापनको राय प्रदेशी, संच्या नरक खाता ॥ केशी मुनि उपदेश सुणीने, श्रावक व्रत राता ॥ तपस्या बेल बेल कीवी रे ॥ त० ॥ दिन गुणचालीस मांही सुकृत कर, सुरगति जिण लीवी ॥ विचित्रगति कर्माकी गाई ॥ वि० ॥ क० ॥१५॥ वीरप्रभुको कुशिष्य, कहिये गोसालक जाणो ॥ अष्टांग निमित्त छे बोल प्ररूप्या, जिन ज्यों सो युं जाणो ॥वडाई करी मुखसें भारी रे ॥ व० ॥ मरणसमें जिण कर्मजोगसुं, आतमा धिक्कारी ॥ बारमे स्वर्ग उपज्यो जाई रे ॥ बा० ॥ क० ॥ १६ ॥ महावैराग्य परिणामें संजम, लीधो उलसाई ॥ क्षत्री राजकुमर जमाली, वीरजीका जमाई ॥ करम वस कुमरधा राच्यो रे ॥ क० ॥ श्रीजिनवचन उत्थापन कर के, खोटा मत खांच्यो ॥ समझायो समझ्यो कछु नांई रे ॥ स० ॥ क० ॥ १७ ॥ वसुदेव सरखा जो पिता और, देवकी जेसी माता ॥ नेम प्रभु शिष्य गजमुनिवरके, हा हलधर भ्राता ॥ देख सुसराकुं रीश आई रे ॥ दे० ॥ सिरपर बांधी पाल माटीकी, खीरा दिया ठाई ॥ मुगत्यां विन छूटे कछु नांई रे ॥ मु० ॥ क० ॥ १८ ॥ चंदनराय मलयागिरि राणी, सायर नीर भाई ॥ चोर ज्यों छाने निकल्या घरसें, दिक्कत बहु पाई ॥ कर्मवस चारूंही विछडीया रे ॥ क० ॥ राने चोर आय धन हरियो, वन वन रडवडिया ॥ वणझारो ले गयो माई रे

॥ व० ॥ क० ॥ १९ ॥ जातिमदसूं मेहतरके घर, जन्म लियो जाई ॥ पुत्रपणे रह्या साहुकार घर, आठ कन्या व्याही ॥ परण्या फिर श्रेणिककी वेटी रे ॥ प० ॥ सुनार घरे मेतारज रिख शिर, वांध वांधी सैंठी ॥ वेदना पाई अधिकाई रे ॥ वे० ॥ क० ॥ २० ॥ मयणरेहा वश मोह्यो माणिरथ, छलपणा विचारयो ॥ रण जीती आयो सुण पापी, जुगवाहु मारयो ॥ आधिनिश निकल्यो डर आणी रे ॥ आ० ॥ सर्प डस्यो मरियो वनमांही, नरकगति ठाणी ॥ मयणरेहा वनमें पुत्र जाई रे ॥ म० ॥ क० ॥ २१ ॥ भगवंत भक्त श्रेणिक के कोणिक, पिंजरामें दीयो ॥ तालपुट खाईने मरिया, नरकवास कियो ॥ कोणिक लेणे हार हाथी तांई ॥ को० ॥ एक क्रोड ने अस्मी लाख नर, मरिया रणमांइ ॥ सार पण निकल्यो कछु नांई रे ॥ सा० ॥ क० ॥ २२ ॥ मृगापुत्र सगड़ अभंग सेण, चिलाती चोर जाण्यो ॥ दुःख अनंता पाया कर्मसुं, सूत्रमें वखाण्यो ॥ केई तो कथामांहे जहारी रे ॥ के० ॥ जिनचक्री हरि हर इंद्रादिक, कोईसुं नहिं यारी ॥ छोटा तो किशी गिणन मांई रे ॥ छो० ॥ क० ॥ २३ ॥ चार ज्ञान चउदे पूरवधर, छठा चारित्र पाई ॥ पढ कर सो गया नरक अनंता कह्या सूत्रमांहि ॥ इंद्र जीव उपजे थावर जाई रे ॥ इं ॥ ऐसी समज कर भूला कर्मसूं, शंका कछु नांही ॥ वात ये जिनवर फरमाई रे ॥ वा० ॥ क० ॥ २४ ॥ उगणीशे अडतीस वैशाख शुदि छठ, दक्षिण देश जाणी ॥ सेवा काल रह्या सिरिगामम, भविजन हित आणी ॥ कर्मफल दृष्टांत वताया रे ॥ क० ॥ तिलोकरिख कहे तोड्या कर्म सब, सो शिवसुख पाया ॥ धर्म है सदाहि सुखदाई रे ॥ ध० ॥ क० ॥ २५ ॥

॥ अथ मूर्ख उपर लावणी ॥

॥ बालक संगत कर सो मूरख, काम विना पर घर जाय ॥ मात पितादिक वडे जो उनसें, दंत गालि नहिं शरमाय ॥ विना

कामें सो वडेके सामे, बार बार इत उत फिरता ॥ विना हुंकारे बात करे शठ, परकुंइ दान ना करता ॥ प्रच्छन्न बात कहे त्रिया के आगे, नीच निगुणा नरसुं यारी ॥ ऐसे मूरखसें दूर रहो तुम, जो चाहते शोभा सारी ॥ ए टेक ॥ १ ॥ धर्मकथासें चित्त न राखे, के उंघे के बात करे ॥ आपसे अधिक उससें अकडाइ, नरपतिका विश्वास धरे ॥ डरके ठिकाने जावे अकेला, गुरुका अवगुण वाद कहे ॥ अपणी पहुंच न देखे जरासर, वडे वडेकी होड चहे ॥ सहज बात पर हाथ चलावे, विन मतलव देवे गाली ॥ ऐ० ॥ २ ॥ विण जाणेसें करे मस्करी, देन लेन घर साथ करे ॥ शुकन वर्जता जावे अगाडी, वदल जाय जब गरज सरे ॥ भरी सभामें मीसर दाखे, विना दोष कडवुं बोले ॥ परनुकसानी देखि आणंदे, सत्य झूट पक्ष नहिं टोले ॥ अपनी वडाइ करे पंडित विच, भली शिक्षा लागे खारी ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ अजीरण पर जमे रसोइ, लकड फाडे जहां खडा रहे ॥ चाडि चूगल अहि सोनीका दिल, विश्वास धरि मन मांहे चहे ॥ धर्मी पुरुष की करे निंदना, सज्जन रुस्यो नहिं मनावे ॥ पाणी पीतां हसे मूढ नर, रस्ते चलतां रोटी खावे ॥ लडका चेला रखे लाडसें, निरर्थक तोडे तरु डारी ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ दान दे के मगरुरी करे ओर किया उपगार न माने रती ॥ हलकी वोली वोले परकुं, संताप दुःखी साधु सती ॥ सुलटी कहतां उलटी माने, हांसी की वात पर रीस भरे ॥ छती शक्ति उपगार करे नहिं, दया दानमें शर्म मरे ॥ विनां सुहातो गायन गावे, बात करे विन विचारी ॥ ए० ॥ ५ ॥ विश्वास दे के वदल जावे ओर, झूटा झूठा सोगन खावे ॥ अपना धर्म की करे हीनता, पाप कर के दिल पोमावे ॥ दो नर वात करे उसि ठामें, कान त्रीजो नर लगावे ॥ प्रच्छन्न वात करे प्रगट परकी, त्रिया पर हाथ उठावे ॥ रांड भांडसुं करे अती ओर, वद परेजी करे विमारी ॥

ऐ० ॥ ६ ॥ गर्व करे तन धन जोवन का, बुद्धि भली नहिं फैलावे ॥ ज्ञान ध्यान को करे न उद्यम, विकथामें दिल रमावे ॥ तप जप करतां आलस अधिको, पाप कर्ममें अगवानी ॥ नर भव रतन फोकटमें खोवे, ये सब है मूरख प्राणी ॥ तिलोकरिख कहे सत संगतसुं, वेगें तरो भवजल पारी ॥ ऐ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ कक्का वत्तीसी ऊपर लावणी ॥

॥ कक्का कर्मकी अजब गती है, मत करनां तुम नर नारी ॥ हंसते हंसते बांधे जीवडा, भुगते तब मुशकिल भारी ॥ छिनमें रावका रंक बणावे, छिनमें रंकको राय करे ॥ लक्ष चोराशी चार गतीमें, नाना विध जीव रूप धरे ॥ इंद्र चंद्र नरेंद्र सुरासुर, किस सुं नहिं रक्खे यारी ॥ क० ॥ १ ॥ खक्खा खजाना संगी धर्मका, आगेकुं सुखदायक है ॥ धर्म मूल क्षमा अगवानी, जगतपतिका वायक है ॥ गग्गा गर्व मत करो सयाना, गुरु कहेणी करो निःशंका ॥ गर्व किया राजा रावणने, खोय दीनो दम में लंका ॥ गर्व रह्या नहिं किसका जगमें, सगरूरी है दुःखकारी ॥ क० ॥ २ ॥ घग्घा तु घर जो मानत मेरा, सो नहिं है संगी तेरा ॥ तूं परदेशी चार दिनों का, क्यों, करता मेरा मेरा ॥ नन्ना नरमाई रखना दिलमें, नरमाई जगमें प्यारी ॥ करडा निलरडा बाज जगमें, पावे भव भव दुःख भारी ॥ एरंड वृक्ष फल उपमा उसके, धर्मी शक्स सुं नहिं यारी ॥ क० ॥ ३ ॥ चच्चा चर्चा तुम कर लो धर्मकी, कर्म भर्मकी खबर पडे ॥ मूढसुं बात करो मत बंदे, राग द्वेष और क्लेश बढे ॥ छच्छा छिन छिन छीजे उमर सब, किसके भरोसे तूं अकडे ॥ काल अचानक एकदम अंदर, जैसे बाज तित्तर पकडे ॥ एसी समझके छोड दे ममता, सतगुरु कहे रख हुशियारी ॥ क० ॥ ४ ॥ जज्जा जरासी कहुं हकीगत, जरा आया जोबन जावे ॥ जोर हटे जर जोरु जमी जन, तेरे संग कोई नहिं आवे ॥ एसी जाण

करो जैनधर्मकुं, जीवजत्ना विन है ख्वारी ॥ झझ्झा झूठ मत बोलो बंदे, झूठी हे समता माया ॥ झूठा लेणां झूठा देणां, झूठा झूठसें ललचाया ॥ आगे का डर रख कर भैया, झूठ वात दे नीवारी ॥ क० ॥ ५ ॥ नन्ना नियम व्रत कर लो पहले, जब लग बुढापा नहिं आवे ॥ रोग वदन में आवे नहिं और इंद्रिका पूरण बल पावे ॥ टठ्ठा टेक तुम रखो धर्मकी, जब लग जीव रहे तनमें ॥ पापकी टेक करो मत कबहुं, मिले बदनामी जगजनमें ॥ सुभूमचक्री रावण चक्री, खोटी टेक लह्या दुःख भारी ॥ क० ॥ ६ ॥ ठठ्ठा ठाठ दुनीयां का बंदे, इंद्र धनुप बादल जैसा ॥ ठग पांचोंका संग न करनां, परभवका रख अंदेशा ॥ डड्डा डंक मत रखो दिलमें, साफी की सुधेर करणी ॥ जिसकी बुराई जिसकुं पछाडे, जाय पडेगा नर्क वैतरणी ॥ बाप मारणकी दिलमें विचारी, नंदिवर्धन कुमर गयो मारी ॥ क० ॥ ७ ॥ ढढ्ढा ढूंढ ले सार वस्तुकुं, देव निरंजन जसवंता ॥ गुरु निर्ग्रंथ और धर्म दयामें, तीन रत्न ये शिव कंता ॥ नन्ना नमो नित अरिहंत सिद्धकुं, आचारज उवज्झाय सदा ॥ साधु साध्वी संजमी सरणो, लेतां दुःख नहिं आवे कदा ॥ इनसुं जो ख्येव करदाई, वे दुःख पाते गति चारी ॥ क० ॥ ८ ॥ तत्ता तत्त्व नवका करो निर्णय, त्रणकुं जाणो त्रणकुं छंडो ॥ संवर निर्जरा मोक्ष ये तीनुं, इनकुं शुद्ध मनसुं मंडो ॥ थथ्था थिर नहिं दुर्ग चंद्र, अरु अस्थिर ग्रह नक्षत्र तारा ॥ थिर नहिं इंद्र चंद्र हरि चक्री, सकल चराचर संसारा ॥ जन्मे सो मरे फूले सो कुमलावे, रखो धर्मकी हुशियारी ॥ क० ॥ ९ ॥ दद्दा दया नित पालो सबासा, दान देनां दिल हरखाई ॥ विपय कषाय इंद्रीकुं दमन कर, ये करणी हे सुखदाई ॥ धध्धा धर्मका सोदा कर लो, ज्ञान ध्यान तप जप सच्चा ॥ ये करणी है स्वर्ग मोक्षकी, इस बिन सब सोदा कच्चा ॥ नन्ना नाम लो प्रभुका हरदम, जो चहाते

आतमा तारी ॥ क० ॥ १० ॥ पप्पा पुण्यसें पाया नर भव, आरजदेश उत्तम कुलसें ॥ लंबो आउखो जोग मुनिको, क्यों तुं पड़ा हे जग भुलसें ॥ फफ्फा फूल मत तन धन देखी, चार रोज चटको मटको ॥ आखरसें सब जाना छोड़ के, ऐसी समझके दिल हटको ॥ बब्बा बड़ाई जिनकी खलसें, रखे धर्मकी तैय्यारी ॥ क० ॥ ११ ॥ भभ्भा भलाई कर लो भैया, पुण्य पाप संग आवेगा ॥ धरा रहेगा माल खजाना, जस अपजस रह जावेगा ॥ मम्मा मान ले मुनिवर कहेणी, मन बंदर कुं कर वशसें ॥ मान माया मोह ममत मेट दे, आयु छीजे ज्यों जल पमसें ॥ मित्रपणुं कर छःकायासुं, अभयदान हे सुखकारी ॥ क० ॥ १२ ॥ यय्या याद रख चर्चा धर्मकी, या देही मुश्कल पाया ॥ ऐसी वखतमें धर्म किया नहिं सो अब भवमें पछताया ॥ ररो रोप मत करो किसीकुं, रोप किया तप फल हारे ॥ खंधक द्वीपायन रोप कियासुं, अनेक कोटि प्राणी मारे ॥ जन्म मरण दुःख लहेगा जगमें, तपकरणी सो गया हारी ॥ क० ॥ १३ ॥ लल्ला लोभकी लाय बुरी है, लालच वश दुःकृत करते ॥ हत्या करे बोले मुख झूठा, थापण दावे परधन हरते ॥ वव्वा वाणी वीतराग प्ररूपी, सच्चि जाणि मत आदरना ॥ विनय धर्मको मूल जमा कर, आठ कर्म वशमें करनां ॥ शश्शा सत्य हे सार सकलमें, साचकुं आंच न लगारी ॥ क० ॥ १४ ॥ षष्षा करो षट् कायकी रक्षा, निज आतम सम सब प्राणी ॥ दुःख मरण नो कोई न चहाते, दया भगवती सुखदाणी ॥ मस्सा ये संसार समुंदर, विषय भोग कीचड़ जाणी ॥ अब थव आठ कर्मका इससें, अनंत वर्णगाका पाणी ॥ धर्म जहाजमें बेठ सयाना, उतर जाओ भवजल पारी ॥ क० ॥ १५ ॥ हहा हाल ये मन के हियामें, हरदम श्रीजिन हुं भजना ॥ हेत रखो छःकाय जीवमें, दुःख हतासी हठ तजनां ॥ हरो क्रोध

पाया मद तृष्णा, पाप करतां दिलमें लजनां ॥ दया दान सत्य-शील अभ्यस, धर्म क्रिया करतां गजनां ॥ इण भव में तन धन जन संपति, परभव में लहो जयकारी ॥ क० ॥ १६ ॥ उगनीशें अडतीस वैशाख उज्वल पक्ष, तिथि बारस दिन बुधवारे ॥ तिलोकरिख कहे कक्कावत्तीसी, सुणके भविजन अवधारे ॥ तो उनकुं सुमति शुद्ध आवे, मिथ्या भर्म सो भग जावे ॥ जाने अथिर संसारकी रचना, जैनधर्म शरणो चहावे ॥ कर्म भर्मको मर्म विचारी, परम पद होय अविकारी ॥ क० ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ कैदी उपर भावदृष्टांतनी लावणी ॥

॥ दोहा ॥

॥ इस दुनियामें जीव सो, भूल रहे भर्ममांय ॥ समझानेके वास्ते, कहु दृष्टांत बणाय ॥ १ ॥ प्रथम नमुं जिनराज चरणकुं, ए देशीमें छे ॥ इस दुनियाके अंदर भैया, कैदी खाना भयंकार ॥ जिसमें कैदी पडे अपार ॥ एक रोजका जिक्र सुनो सब, सफील गीरी महाभार ॥ कैदी कोई जागे सो उसवार ॥ उसी वखतमें बिजली चमकी, देखे दृष्टि पसार ॥ पहेरायत सोते नींद मझार ॥ दोहा ॥ कैदी कहे सुणो यार, अब बखत मिला श्रीकार ॥ जेज करो मत पलककी, निकलो सुरंगके बहार ॥ गफलत से होवेंगे ख्व ख्वार, समझके निकल चलो हुशियार ॥ ए टेक ॥ १ ॥ कोई कहे तब ननक नींद ले, फेर चलेगे यार ॥ इरादा हैगा हमारा सार ॥ लेट रहे सो रहे कैदमें, पछतावे दिल सोच ॥ गुजारे राज सबे रोय रोय ॥ जो निकले सो पहोंचे घरकुं, माने मोज अपार ॥ मिला जिनकुं अपना परिवार ॥ दोहा ॥ इस दृष्टांतें पड रहे, मोह सुरंगके मांय ॥ जगतवासी सब दुःख सहे, लक्ष चोराशी मांय ॥ रस्ता है जैनधर्म सुखकार ॥ स० ॥ २ ॥ मोह कर्मकी

भींत पडे कभी, विजली दमक अवतार ॥ इसीसें चेते भवि नर नार ॥ छूटे मोहके कैद खानासे, जावे मुक्ति मझार ॥ मिले निज गुण संपत परिवार ॥ अजर अमर अविनाशी निरंजन, सिद्ध सदा जयकार ॥ जिनोंके नाम लियां निस्तार ॥ दोहा ॥ कर्म भर्म दूरे रहे, परम पद निराकार ॥ धर्मपंथ साधन किया, वरते मंगलाचार ॥ आराधो समदृष्टि नर नार ॥स० ॥ ३ ॥ विषय कषायसें मस्त रहे केई, दिलमें रखे अहंकार ॥ नहीं है हमसो कोई सरदार ॥ टेडी टेडी पगडी रखले, चले निरखतो छांय ॥ मरोडे मूछ रहे अकडाय ॥ कर्मगतिका अजब तमासा, छिनकमांहि विरलाय ॥ कोटिध्वज भीख मांग कर खाय ॥ दोहा ॥ गर्व करो मत चातुरा, हरि हर चक्री राय ॥ मर कर उपजे नरकमें, पड्या पड्या विललाय ॥ भुक्ते वे परवश जमकी मार ॥ स० ॥ ४ ॥ मेरी मेरी कर दिवाना, जर जोरु जमी परिवार ॥ संगी नहिं है कोई तेरे यार ॥ ऐसी साइत फिर मिलणी मुश्किल, उत्तम कुल अवतार ॥ कठिण है तरणा भव जल पार ॥ चेत चेत रे चेत सयाना, धर्म दया दिलधार ॥ सेवो गुरु पंच महाव्रत धार ॥ दोहा ॥ सुगुरु शीख मान हिये, सुधरे सघला काज ॥ इस भवमें शोभा लहे, परभव अविचल राज ॥ तिलोकरिख कहता पर उपगार ॥ समझ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ लावणी मराठी भाषामां ॥

॥ येउं द्याचें नाव देवाचें. अष्ट प्रहरा जप जिनवर ॥ दे टाकुनि हे धंद चातुरे. फंद विषयेंची काय मजा. प्रभु नामाची लावी ध्वजा. असार हा संसार त्यजा, शांति गुणाला द्या रजा, रजकर्माची दूर भजा. भाव विमलची करी पूजा. क्षमा शांति मन धरी तजा ॥ पंच महाव्रत सुमति गुप्ति, भिक्षा मागे घर घर चर ॥ येउं दे० ॥ १ ॥ परोपकारा शरीर झिजावे. जसा मलयागिरी

चंदन, करी सज्जन चरणीं वंदन, काम शत्रुचे निकंदन, गृह वैभव वाजी स्यंदन, अशाश्वती ह्याहो धुंदन, आठवी मनी सिद्धारथ नंदन, तिलोक ह्मणे धर्म करुनी सविका ॥ लवकर शिव सुंदर वर वर वर ॥ येउं दे वाचे० ॥ २ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ गणधर सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ धन धन आज दिवस भलो उग्यो ॥ ए देशी ॥ चउदासें बावन गणधर वंदो, भवदुःख दूर निकंदो रे ॥ निज आतम अवगुण ते निंदो, मोहजाल सत फंदो रे ॥ च० ॥ १ ॥ ऋषभ जिणंदजी के पुंडरीक आदि, चोराशी गणधर जाणो रे ॥ अजितनाथजी के सिंहसेन धुर, कह्या पंच्याणुं परमाणो रे ॥ च० ॥ २ ॥ एक सो दोय संभव जिनवरके, चारुजी मुख्य कहीजे रे ॥ अभिनंदनजी के वज्रनाभादिक, एक सो सोला लहिजे रे ॥ च० ॥ ३ ॥ सुमतिप्रभुजी के, चरम नाम धुर, एक सो पूरा कहिया रे ॥ प्रद्योतन पहला पद्मप्रभुजी के, एक सो सात सव गहिया रे ॥ च० ॥ ४ ॥ विदर्भि नाम सुपारसजी के, पंच्याणुं गुणवंता रे ॥ दिन आदिक श्रीचंदाप्रभुजी के, त्राणुं थया शिवकंता रे ॥ च० ॥ ५ ॥ वराहक आदि सुविधिनाथजी के, गणधर कह्या अठ्याशी रे ॥ नंद आदिक शीतल जिनवर के, जाणो सर्व इक्याशी रे ॥ च० ॥ ६ ॥ कच्छप्पादिक श्रेयांसप्रभु के, छिहोंतर गुणराशी रे ॥ सुभूमादिक छासठ वासुपूज्य के, पाया पद अविनाशी रे ॥ च० ॥ ७ ॥ सत्तावन श्रीविमलप्रभुजी के, मंदिर रिष धुर नासो रे ॥ अनंतजी के पचास जस आदिक, पाया शिवपुर ठासा रे ॥ च० ॥ ८ ॥ तीन चालिश श्रीधर्मप्रभु के, अरिष्ट नाम जस धारी रे ॥ शांतिजिनंद के चक्रायुधादिक, छत्रिस वरी शिवनारी रे ॥ च० ॥ ९ ॥ सांब आदिक पेंतीस कुंथुजिन के, आगमसें दरसाया रे ॥ कुंभ प्रमुख तेतीस अर प्रभु के, नवहीं मोक्ष सिधाया रे ॥ च० ॥ १० ॥ मल्लिनाथजी

के अभिक्षे आदि, अठाविश फरमाया रे ॥ अटारा मुनिसुव्रतस्वामी, मल्लि आदिक शिव पाया रे ॥ च० ॥ ११ ॥ नामिनाथजी के गणधर सतरा, शुभ नामें शुभकारी रे ॥ रिष्टनेमजी के वरदत्त आदि, इग्यारा सुविचारी रे ॥ च० ॥ १२ ॥ आर्यदिन्नादिक पार्श्व-प्रभु के, दस कह्या सूत्र मझारो रे ॥ महावीरजी के इंद्रभूति प्रमुख, इग्यारा गणधारो र ॥ च० ॥ १३ ॥ त्रिपदी ज्ञान पुर्वधर सारा, सिद्ध पदवी सहु पाई रे॥ तिलोकरिख कहे मन वचन तन, वंदना होजो सदाई रे ॥ च० ॥ १४ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ सौधर्म स्वामीनी सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ जमींकंद में रे जीव जाइ उपनो ॥ ए देशी ॥ वीर जिनेश्वर पट्टोधर नमुं, श्री श्री सोधर्मा स्वामी ॥ मगध देश रे को राज्गी पुर भलो, सोहे सुरतरु आराम ॥ वी० ॥ १ ॥ पिता धार्मिल रे माता धारिणी, रूपें काम-कुमार ॥ चारु बुद्धि रे धीरजता घणी, पूरण भण्या वेद चार ॥ वी० ॥ २ ॥ पुराण अढार छ शास्त्र वली, चउदे विद्या निधान ॥ सोमिल ब्राम्हण यज्ञके कारणें, बुलाया देई सन्मान ॥ वी० ॥ ३ ॥ तिण अवसरमें रे त्रशलानंदजी घनघातिक कर्म टाल ॥ केवल पाया रे आया तिणपूरे, जग नायक जगपाल ॥ वी० ॥ ४ ॥ चोसठ इंद्र आया तिणपुरमें, वली सुर सुरि अपार ॥ रच्यो त्रिगडो रे महिमा विस्तरी, आण्यो सो अहंकार ॥ वी० ॥ ५ ॥ चर्चा करवा र गया उमंगशुं, रचना देखी सो नयण ॥ गर्वज उतरयो र संशय टालियो, प्रभुनां अमृत वयण ॥ वी० ॥ ६ ॥ दीक्षा धारी रे परम वैरागशुं, पंचसया परिवार ॥ त्रिपदी ज्ञानें रे लब्धि ऊपनी, चौदे पूरव धार ॥ वी० ॥ ७ ॥ मति श्रुति अवधि रे मनःपरयव वली, उपनां ज्ञान ए चार ॥ निशिदिन उद्यम रे करे तप जप घणो. भावना भावे सो चार ॥ वी० ॥ ८ ॥ वर्ष पचासें रे रह्या गृहवासमें,

त्रीश वर्ष लग जाण ॥ सेवा कीनी रे जगनायक तणी, प्रभु पहुंता निर्वाण ॥ वी० ॥ ९ ॥ आचारज पद बारा वर्ष लगें, दीपायो जैनधर्म ॥ अपूर्व करण शुक्ल ध्यानथी, हणियां घातिक कर्म ॥ वी० ॥ १० ॥ केवल पाया रे सोहम स्वामीजी, रचना जाणी रे सर्व ॥ शिष्य थया बीजा रे जंबु सारिखा, नन्याणुं कोडी रे द्रव्य ॥ वी० ॥ ११ ॥ रातें परण्या रे आठ कामिनी, पांचशें सत्तावीश लार ॥ दिन उगंता रे संजम आदर्यो, धन धन तस अवतार ॥ वी० ॥ १२ ॥ आठ वर्ष लग रे केवल पद रह्या, पहोता सुगति मझार ॥ अजर अमर सुख रे पाया सासतां, नामथकी निस्तार ॥ वी० ॥ १३ ॥ संवत् ऊगणीशें रे उगणचालीस का, पौष शुद्ध आठम जाण ॥ केलपिप्पल गाम में रे कीधी सज्झाय एह, दक्षिण देश वखाण ॥ वी० ॥ १४ ॥ तिलोकरिख दाखे रे पाटवी शिष्यना, चरण शरणना आधार ॥ जिम तिम करिने रे पार उतारजो, विनंति ए अवधार ॥ वी० ॥ १५ ॥

॥ अथ ग्यारा गणधर की सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ पास जिनेश्वर रे सामी ॥ ए देशी ॥ गणधर समरो रे भाई ॥ दिनादिन अधिक संपत सुखदाई ॥ विघन न व्यापे रे कोइ, ह्रीँ श्रीँ मनवंछित लहे सोई ॥ ग० ॥ १ ॥ वीरप्रभु केवलरे पाया, वादकरणने अधिक उमाया ॥ भर्म निवार्यो रे स्वामी, संजम प्रभुपे लियो शिर नामी ॥ ग० ॥ २ ॥ छठ छठ तपस्या रे कीनी, तेजो लेश्या सो वश कर लीनी ॥ सब शिष्य मांही रे पहिला, इंद्रभूति प्रणमूं अलबेला ॥ ग० ॥ ३ ॥ अग्नीभूति रे बीजा, वायुभूति प्रणमूं नित्य त्रीजा ॥ ए त्रिहूं सगा रे भ्राता, तोड़ दिया मोहनी दुःख दाता ॥ ग० ॥ ४ ॥ वसुभूति चोथा रे जाणो, पंचमा सुधर्मास्वामी वखाणो ॥ वीरजीके पाटे रे सोहे, निरखत भविजननां मन मोहे ॥ ग० ॥ ५ ॥ जंबू जेसा चेला रे थया, कोडि नन्याणुं त्याग

सोनैया ॥ रातें परण्या रे नारी, दिन उगां लियो संजम धारी ॥ ग० ॥ ६ ॥ मंडितपुत्र छट्ठा रे कहिये, मौर्यपुत्रजी जपतां सुख लहियें ॥ अकंपित आठमा रे वंदो, भव भव दुःकृत दूर निकंदो ॥ ग० ॥ ७ ॥ नवमा अचलजी रे गावो, भव भव दुःकृत दूर नसावो ॥ मेतारज दशमा रे ध्यावो, कर्म भर्म भय दूर पलावो ॥ ग० ॥ ८ ॥ प्रभासजी ग्यारमा रे सेवो, प्रात उठी नित नामज लेवो ॥ चउदे पूरव रे धारी, पूछ्या प्रश्न विविध प्रकारी ॥ ग० ॥ ९ ॥ तप किया दुःकर रे कारी ॥ तारया बहु भवियण नर नारी ॥ समता सागर रे पूरा, कर्मरिपुना करया चकचूरा ॥ ग० ॥ १० ॥ सहु जण केवल रे पाया, होय अजोगी मुक्ति सिधांया ॥ ते सव प्रणमूं रे भावे, जनम मरण भय जिम मिट जावे ॥ ग० ॥ ११ ॥ उगणीसें छत्तिस रे साल, चोमासें रह्या घोड़नदी वरसाल ॥ गणधर मुनिवर रे गाया, तिलोकरिख प्रणमे नित पाया ॥ ग० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ देशी केरवासें ॥ गणधर ग्यारा वंदियेजी, जिनने कीनो महा उपगार ॥ भला रे मुनि कीनो० ॥ ग० ॥ १ ॥ मान धरी गया वाद करणकूं, दियो है भर्म निवार ॥ भ० ॥ दि० ॥ ग० ॥ २ ॥ इंद्रभूतिजी लियो संजम प्रभुपे, छठ छठ तप लियो धार ॥ भ० ॥ छ० ॥ ग० ॥ ३ ॥ तेजोलेश्या वश कर लीनी, भाणिया अंगप्रभु चार ॥ भ० ॥ भ० ॥ ग० ॥ ४ ॥ अग्निभूति वायुभूति भ्रांजाजी, ए तीनुं बंधव विचार ॥ भ० ॥ ए० ॥ ग० ॥ ५ ॥ वसुभूति चौथा नित्य प्रणमुं, शूरवीर सरदार ॥ भ० ॥ शू० ॥ ग० ॥ ६ ॥ वीर पट्टाधर स्वामी सुधर्मा, रूप अनूप उदार ॥ भ० ॥ रू० ॥ ग० ॥ ७ ॥ मंडितपुत्रजी ने मोर्यपुत्र, अकंपित सुखकार ॥ भ० ॥

अ० ॥ ग० ॥ ८ ॥ अचल वली प्रणमूं मेतारज, सब गया मुक्ति मझार ॥ भ० ॥ स० ॥ ग० ॥ ९ ॥ परभासजी इग्यारमा प्रणमुं, शिवसंपति ना दातार ॥ भ० ॥ शि० ॥ ग० ॥ १० ॥ तिलोकरिख कहे गणधरजी कूं, नित नित होज्यो नमस्कार ॥ भ० ॥ नि० ॥ ग० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ देशी प्रभाती ॥ प्रात उठि प्रणमो भवि भावें, नित नित गणधर ग्यारा ॥ ए टेक ॥ इंद्रभूति अग्निभूति वंदूं, वायुभूति सुखकारा ॥ वसुभूति सुधर्मास्वामी, नाम लियां निस्तारा ॥ प्रा० ॥ १ ॥ मंडितपुत्र मौर्यपुत्र अकंपित, अचल अचल अविकारा ॥ मेतारज आरजबुद्धिवंता, प्रभासजी प्राण पियारा ॥ प्रा० ॥ २ ॥ ग्यारा गणधर सहा गुणसागर, चम्मालिश सें परिवारा ॥ वीरप्रभु के पासे एक दिन में, व्रत किया अंगिकारा ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ चउदा पूरव धारक तारक, वारक सर्व विकारा ॥ विमल केवल कमलाधारी, करगया सो खेवा पारा ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ इण समरंतां संकट नासे, रहे अखूट भंडारा ॥ तिलोकरिख कहे चरण शरण मुझ, कीजो भव निस्तारा ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ देशी फागणका ख्यालमें ॥ समरो नित समरो नित, ग्याराई गणधर कूं ॥ स० ॥ इंद्रभूति अग्निभूति वंदो, वायुभूति वंदो जोडी कर कूं ॥ स० ॥ १ ॥ वसुभूति सुधर्मास्वामी वंदो, मंडितपुत्र छोडी जगहर कूं ॥ स० ॥ २ ॥ मौर्यपुत्र अकंपित अचलजी, मेतारजजी छोड्या सात डरकूं ॥ स० ॥ ३ ॥ ग्यारमा श्रीपरभासजीकूं वंदो, छोड दिया हे सजन घरकूं ॥ स० ॥ ४ ॥ चउदाई पूरव धारक सारा, उपदेश दिया हे धर्मका परकूं ॥ स० ॥ ५ ॥ ग्याराई तप संजम

शुद्ध पाली, टाल दिया आठ कर्म अरिकूं ॥ स० ॥ ६ ॥ चम्मालिशशे एकदिनमें दीक्षा धारी, ग्याराई गया शिवमंदिरकूं ॥ स० ॥ ७ ॥ उगणीशें अठ्तीस आंबोरी पेठमें, तिलोकरिख प्रणमें सदा मुनिवरकूं ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचम सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ दया धर्म दिलमांही भावे रे ॥ ए देशी ॥ वंदो नित गणधर ग्यारा रे, मिटे जिस भर्म अंधारा रे ॥ ए टेक ॥ चउदा सहस्र अणगारमें जी, ज्येष्ठ शिष्य जशवंत ॥ इंद्रभूति सुख कारणा जी, रचिया ज्यां सर्व सिद्धांत ॥ वं० ॥ १ ॥ अग्निभूति स्वामी दूसरा जी, वायुभूति त्रीजा जाण ॥ ये तीनूं सगा बंधवा जी, गौतम गोत्र वखाण ॥ वं० ॥ २ ॥ वसुभूति चौथा मुनिजी, नाम लिया निस्तार ॥ सूत्र भगवतीमें चालियो जी, परशनना अधिकार ॥ वं० ॥ ३ ॥ वीरजी रे पाटे दीपता जी, धन धन सुधर्मास्वाम ॥ श्रीजिन धर्म दीपायने जी, सारया वंछित काम ॥ वं० ॥ ४ ॥ शिष्य थया जंबू सरिखा जी, राते ते परण्या नार ॥ कोड़ि नन्याणुं त्यागिने जी, लिधो संजम भार ॥ वं० ॥ ५ ॥ मंडितपुत्र मोर्यपुत्र दीपता जी, अकंपित जस धार ॥ अचलजीने जपतां थकां जी, तरियें भवजलपार ॥ वं० ॥ ६ ॥ मेतारज आरजमति जी, निज कारज किया सिद्ध ॥ इंदुं प्रभासजी ग्यारमा जी, जांका नाम लियां नवनिध्द ॥ वं० ॥ ७ ॥ ए इग्यारा गणधरु जी, चउदा पूरव धार ॥ शिष्य थया श्रीवीरना जी, चम्मालिशशे परिवार ॥ वं० ॥ ८ ॥ इण दुःखम आरा विषे जी, सूत्र तणो छे आधार ॥ ते सव जाणो भविजना जी, गणधरजी उपगार ॥ वं० ॥ ९ ॥ तिलोकरिख कहे जगतमें जी, श्री जिनमारग सार ॥ गणधर ग्यारा गाइये जी, नित नित जय जयकार ॥ वं० ॥ १० ॥

॥ अथ श्री दशवैकालिक सूत्र दश अध्ययन प्रत्येक उद्देशा पीठिका संयुक्त पन्नर सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम पीठिकासज्झाय प्रारंभः ॥

॥ मेरी मेरी करतां जन्म गयो रे ॥ ए देशी ॥ जय जिनराया, जय जिनराया, जय सतगुरु जिन ने धर्म बताया ॥ जय० ॥ १ ॥ भवजन तारक शिवसुख दाणी, प्ररूपी द्वादश अंगकी वाणी ॥ जय० ॥ २ ॥ श्रुति सागर गणधरजी झेली, सूत्ररचना रची नवरस केली ॥ जय० ॥ ३ ॥ सौधर्मास्वामी पट्टोधर पहला, तस शिष्य प्रथम केवली छेहेला ॥ जय० ॥ ४ ॥ श्री श्री जंबू गुणनिधि अंबू, भव ताप हरण दृढ स्वच्छ सुतंबू ॥ जय० ॥ ५ ॥ तस शिष्य सफल कियो नर भव जी, पर भव सुधारयो श्री प्रभव जी ॥ जय० ॥ ६ ॥ महागुण संभव सिय्यंभव भारी, तस पुत्र मनक भया अणगारी ॥ जय० ॥ ७ ॥ पूर्वके मांही गणिवरजी विचारी, अवस्था थिति रही खट मासकी सारी ॥ जय० ॥ ८ ॥ तव तिणें मनमांही कियो विचारो, किणविध होयगा भव निस्तारो ॥ जय० ॥ ९ ॥ ग्रंथ लघु निर्ग्रंथ महंतो, मार्गसिद्धांत रचनेकी करी खंतो ॥ जय० ॥ १० ॥ आतम प्रवादथी धर्म पन्नत्ति उचारयो, कर्म प्रवादथी पिंडपणा सारयो ॥ जय० ॥ ११ ॥ वचनसुधी सत्य प्रवादथी धारो, शेष अध्ययन सात सुविचारो ॥ जय० ॥ १२ ॥ पूर्व नवमो आचार वत्थु त्रीजी जाणो, वेयालु समे सूत्र थयाई परिमाणो ॥ जय० ॥ १३ ॥ दशवैकालिक दियो नाम उच्चारो. तीन मंगल इणमें सुखकारो ॥ जय० ॥ १४ ॥ आदि मंगल प्रभुने नमस्कारो, निर्विघ्न शास्त्र भणी दूजी धारो ॥ जय० ॥ १५ ॥ अंत मंगलिकथी लहो सुख मुक्ति, शास्त्र मंगल पद सुणो आगे युक्ति ॥ जय० ॥ १६ ॥ धम्मो मंगल मुक्किट्टं आदि जाणो. नाणं दंसण संपन्नं मध्य ठाणो ॥ जय० ॥ १७ ॥ निक्खम्ममाणाय बुद्धवयणे, अंत मंगलिक सोचो दीर्घनयणे ॥

जय० ॥ १८ ॥ प्रथम अध्ययनमें धर्म प्रशंसा, द्वितीयाध्ययनें धीरज पर अंसा ॥ जय० ॥ १९ ॥ अनाचीरन को त्रीजामें विस्तारो, चौथे छकाय तणो हितकारो ॥ जय० ॥ २० ॥ पंचमें विशुद्ध भिक्षा शिक्षा आणी, छट्ट मुनिगुण क्रिया वखाणी ॥ जय० ॥ २१ ॥ वचन शुद्धि सातमे परधानो, आठमो विचारो आचार निधानो ॥ जय० ॥ २२ ॥ नवम अध्ययने विनय मूल दाखे, दशमे अध्ययने भिक्खुगुण भाखे ॥ जय० ॥ २३ ॥ समुच्चय नाम कह्या इहां संतो, अनंत नयातम वचन महंतो ॥ जय० ॥ २४ ॥ सूत्र समुद्रपारकुण पावे, गगन शशी शिशु देख उमावे ॥ जय० ॥ २५ ॥ तैसें हूं आलसी महा अल्पबुद्धि, जिनागमकी नहिं पूरण शुद्धि ॥ जय० ॥ २६ ॥ प्रत्येक अध्ययन उद्देशा विचारो, कहुं निज भाषामें गुरु उपगारो ॥ जय० ॥ २७ ॥ पाले आराधे भाव शुद्ध आणी, तिलोकरिख कहे सो वरे शिवराणी ॥ जय० ॥ २८ ॥ इति पीठिका सज्झाय ॥

॥ अथ प्रथम दुमपुष्फियाध्ययन सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ भावपूजा नित कीजीये ॥ ए देशी ॥ धर्म मंगल उत्कृष्ट छे, शाश्वतो ए त्रिहुं कालो जी ॥ अहिंसा लक्षण धर्मनो, भाख्यो छे दीनदयालो जी ॥ १ ॥ धर्म आराधो जी भावशुं, संजम सतर प्रकारो जी ॥ बारे भेदे तपस्या करे, द्रव्य भाव सुविचारो जी ॥ ध० ॥ २ ॥ चार जातिका देवता, हरि हर चक्री उदारो जी ॥ धर्म विषे सदा मन रहे, तिणने नमे वारंवारो जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ जिम तरु फूले अलि चित्त रली, पीवे सो मकरंदो जी ॥ पीडा नहिं देवे कुसुमने, पावे तृप्ति आणंदो जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ तिम मुनि लोक विषे कह्या, आरंभ परिग्रह निवारो जी ॥ भ्रमर भिक्षा एषणिक ग्रहे, जो देवे शुद्ध दातारो जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ संजम भार निभाववा, छ कारण करे आहारो जी ॥ हर्ष शोक आणे नहिं, छंडे छ प्रकारो

जी ॥ ध० ॥ ६ ॥ दुःख नहिं देवे परप्राणीने, नव कोटी सुविचारो जी ॥ गृहस्थ करे निज कारणे, असर ज्युं ग्रहे अणगारो जी ॥ ध० ॥ ७ ॥ मुनिवर मधुकर सम कह्या, उत्तम अवसर जाणो जी ॥ द्रुम्मपुष्फिया अध्ययनमें, जगगुरु क्रिया वखाणो जी ॥ ध० ॥ ८ ॥ सूत्र प्रमाणे विधि ग्रहे, शूरवीर सरदारो जी ॥ तिलोकरिख कहे नित जे भणी, प्रणमुं मैं वारंवारो जी ॥ ध० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय सामान्यपूर्वी अध्ययन सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ मगधाधिप श्रेणिक सुखकारी ॥ ए देशी ॥ ए संसार भयंकर जाणी, अहिकंचुक जिम छंडो ॥ श्रीजिनधर्म परम सुखदाता, संजम सुं चित मंडो के ॥ सुगुणा. अनुभव ज्ञान विचारो ॥ होवे ज्यूं भव निस्तारो के ॥ सु० ॥ १ ॥ त्रिविधें त्रिविधें त्याग करीने, कामभोग अभिलापे ॥ पगले पगले विषवाद उपावे, संकल्प वश चित्त राखे के ॥ सु० ॥ २ ॥ वस्त्र भूषण ने भामिनी आदि, नहिं जिणने वशमांही ॥ भोगवे नहिं पण ते नहिं त्यागी, जगतारक दरसाइ के ॥ सु० ॥ ३ ॥ रिद्धि घणी जिणने वशमांही, पण ते नहिं अनुरागी ॥ ते त्यागी जगदीश परूपे, जाणो महावडभागी के ॥ सु० ॥ ४ ॥ इम सोची समता करता कदाचित्, निकले चित्त संजम घरथी ॥ सोचे वस्तु नहिं हे गहनो, क्यों करे ममता अपरथी के ॥ सु० ॥ ५ ॥ भोग रोग दुःखदायक जाणी, काया कोमल पणुं छंडो ॥ शीत उष्ण परिसह सब खमिया, शिववधूसुं प्रीति मंडो के ॥ सु० ॥ ६ ॥ राजमती सती रहनेमी नां, विकल वचन सुणि जंपे ॥ अति जाज्वल्य धगधगतो अग्नि, सपरिताप तन कंपे के ॥ सु० ॥ ७ ॥ अगंधन कुल जातिनो फणिधर, जाय पडे तिणमांही ॥ वम्यो जहर नहिं ने वंछे, ममत्त्रो त्याय लगाई के ॥ सु० ॥ ८ ॥ धिक्कार हो तुझ अपयश कामी, असंयम जीवित चहावे ॥ वम्यो भोग वंछणो नहिं जुगतो, मरणं भलो तुझ भावे के ॥ सु०

॥ ९ ॥ जिहां जिहां तुं देखिस त्रिया नयण, अथिर भाव तुझ थासी ॥ हडवृक्ष जिम पड़े पवन प्रतापें, तिम तुझ संजम जासी के ॥ सु० ॥ १० ॥ अंकुशथी जिम गज वश थावे, जिम सती महावत जेमो ॥ ज्ञान अंकुश करीने वश लाई, उन्मत्त गज रहनेमो के ॥ सु० ॥ ११ ॥ धर्म खुंट मुनि थिर करि थाप्यो, दोतुं लह्यो शिव वासो ॥ इम जाणी मुनि मन वश करि राखे, छूटें तस गर्भवासो के ॥ सु० ॥ १२ ॥ सामान्यपुर्वि अध्ययन छे दूजो, वृझो भविजन भावें ॥ तिलोकरिख कहे सुझो जिनमारग, सो इम मन समझावे के ॥ सु० ॥ १३ ॥ इति सामान्यपूर्वि अध्ययनं ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय खुड्डियाराध्ययन सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ थें करज्यो शाणा धर्म त्योहार आखा तीजको ॥ अथवा ॥ आ रस सेलडी आदि जिनेश्वर कियो पारणो ॥ ए देशी ॥ संजम धार ममत निवार, छकाया प्रतिपाल ॥ ते बावन अनाचीरण वरजे, जिन आणा उजमाल हो ॥ थें सुणो भवि प्राणी, धन जे परमेश्वर वाणी आदरे, आज्ञा आदरे ॥ १ ॥ आरंभ करी कियो आहार उद्देशिक, मोल आण्यो मुनिकाज ॥ नित्य पिंड वली साहामो आण्यो, सो नहिं ले रिखराज हो ॥ थें० ॥ २ ॥ रात्रिभोजन स्नान सुगंध तज, पहरे नहिं वली माल ॥ न करे विंजणो रात्र स्निगंध दे, गृहस्थ पातर टाल हो ॥ थें० ॥ ३ ॥ दानशाला नो अहार न लेवो, मर्दन नहिं करे तेल ॥ दांतण मिम्मी गृहस्थसें शाता, तजे चौपडादिक खेल हो ॥ थें० ॥ ४ ॥ मुख नहिं जोवे दर्पणमांही, छत्र धरे नहिं शीश ॥ सावद्य औषधि वर्जे पगरखी, माचा जह सुनीश हो ॥ थें० ॥ ५ ॥ तेउ आरंभ तजे आहार सिज्यातरो, बैठे न मांचे पलंग ॥ विण कारण गृहस्थ घर नहिं बैठे, टाले उवटणा अंग हो ॥ थें० ॥ ६ ॥ वैयावच्च गृहस्थकी

करे नहीं रिखजी, जाति जणाई आहार ॥ मिश्र पाणी वली दुःख आयां, सरणो न वंछे परिवार हो ॥ थें० ॥ ७ ॥ मूलो आदुं खंड सेलड़ी, कंद मूल फल बीज ॥ संचलादिक पंच लूण आदि दे, तजे सचेत सब चीज हो ॥ थें० ॥ ८ ॥ शोभा कारण वस्त्र धूप धोवण, वमन वस्तीकर्म जेह ॥ विरेचन अंजण दंत पखालण, शरीर शुश्रूषा तेह हो ॥ थें० ॥ ९ ॥ इत्यादिक अनाचीरण टाले, निर्ग्रंथ संजम धार ॥ उग्रविहारी आश्रव वर्जे, खटकाया सुख कार हो ॥ थें० ॥ १० ॥ उष्ण कालें आतापना लेवे, शीतकालें सहे ठंड ॥ चोमासे थिर तन तप धारे, जैन धर्मका मंड हो ॥ थें० ॥ ११ ॥ सहे परिसह मोह हटावे, दुष्कर किरिया धार ॥ केइक पावे स्वर्ग तणां सुख, केइक मुक्ति मझार हो ॥ थें० ॥ १२ ॥ खुडियार नामाध्ययन तीसरो, दाख्यो मुनि आचार ॥ जे पाले शुद्ध तिलोकरिख तस, प्रणमे वारं वार हो ॥ थें० ॥ १३ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ छज्जीवणीयाध्ययन सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ मानव जनम, जनम रतन तेंने पायो रे ॥ ए देशी ॥ श्री जिनधर्मको सारो रे, खट काया उगारो ॥ श्री० ॥ ध्रु० ॥ पट्टोधर श्री सुधर्मास्वामी, जंबु पूछे तिणसुं शिर नामी रे ॥ चोथा अध्ययन मझारो, किस्यो छे अधिकारो ॥ कहो तस विस्तारो ॥ श्री० ॥ १ ॥ इम सुणी कहे जिम प्रभु फरमायो, तिम कहूं तुझनें सुण वायो रे ॥ पृथवी वली पाणी, तेउ वाउ वखाणी ॥ वनस्पति तस ठाणी ॥ श्री० ॥ २ ॥ निज आतम सम कह्या छकाया, सुखवंछक प्रभु दरसाया रे ॥ सब जीवणो चहावे, दुःखसुं थरावे ॥ आगम दरसावे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इम जाणी त्रिविध त्रिविध भव प्राणी, छकायरक्षा सुखदानी रे ॥ क्रोध लोभ भय हास्या, वश मन बोले भाषा ॥ सत्यवच मुख राखा ॥ श्री० ॥ ४ ॥ ग्राम नगर वन अल्प बहु छोटा मोटा, जाणो अदत्त सब खोटा रे ॥ सुर नर

तिरयंचो, मैथुनथकी वंचो ॥ त्यागो यह परपंचो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अल्पवहु छोटो मोटो सचित्तो, मिश्र वली अचित्तो रे ॥ परिग्रह दुःखकारो, भरमावे संसारो ॥ करियें परिहारो ॥ श्री० ॥ ६ ॥ असणादिक जे कह्या चउ आहारो, निशिभोजन परिहारो रे ॥ एह खटव्रत सुखकारो, पाल्यां भव निस्तारो ॥ इम जाणीने धारो ॥ श्री० ॥ ७ ॥ वस्त्र पात्र उपगरण सारा, ते पूंजो पलेवो वार वारा रे ॥ त्रस थावर प्राणी, करो यत्न पहचाणी ॥ इम आगम वाणी ॥ श्री० ॥ ८ ॥ अजयणा सुं चाले तथा उभा रहेवे, बैठे सुवे खावे मुख केवे रे ॥ प्राणीनी हिंसा थावे, पापकर्म बंधावे ॥ अति कटु फल पावे ॥ श्री० ॥ ९ ॥ शिष्य पूछे तव किणविध करीये, गुरु कहे जयणा आदरीये रे ॥ पाप कर्म न लागे, रूंधे आश्रव सागे ॥ अविचल सुख आगे ॥ श्री० ॥ १० ॥ प्रथम ज्ञान पछे दया थाणी, कांई जाणे जे पाप अज्ञानी रे ॥ सूत्र सुण्यां वोध आवे, आश्रव छिटकावे ॥ संजम पद पावे ॥ श्री० ॥ ११ ॥ धारे उत्कृष्ट संजम भारो, कर्म भर्म करे छारो रे ॥ केवल पद पावे, शिवपुरमें सिधावे ॥ शाश्वता सुख पावे ॥ श्री० ॥ १२ ॥ इम जाणी वृध्द पणे पण किरिया, धारी अनंताही तरिया रे ॥ छज्जीवणीया अधिकारो, शुद्ध पाले नर नारो ॥ तिलोकरिख सोही सारो ॥ श्री० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचम पिंडपणाध्ययनस्य प्रथम उद्देश सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ सोवन सिंहासण रेवती ॥ ए देशी ॥ शास्त्रविधि किरिया शुद्ध आदरे, द्रव्यक्षेत्र विधि जाण रे ॥ गजगति जिम जति संचरे, देखी धुसरा प्रमाण रे ॥ १ ॥ हुं वलिहारि जाउं रिखचरणकी, त्रस थावर प्रतिपाल रे ॥ कोयला रंख भस्मी पुंज पर, चाले

नहिं शंका निहाल रे ॥ व० ॥ २ ॥ वेश्यावाससें नहिं संचरे, नवी प्रसूत श्वानिनि गाय रे ॥ उन्मत्त वेल हय गज जिहां लडे, मुनि दूर वर्जीने जाय रे ॥ व० ॥ ३ ॥ धम धम चाल चाले नहिं, हस चाले नहिं पंथ रे ॥ चाले नहिं महेल देखतो, अंधारु घर ने तजंत रे ॥ व० ॥ ४ ॥ दुगंछनिक अप्रतीति कारीयो कुल, तिहां मुनि नहिं जाय रे ॥ पडदो किवाड आज्ञा विना, खोले नहिं रिखराय रे ॥ व० ॥ ५ ॥ दोष बयालिस टालने, सुझतो ले भिक्षु आहार रे ॥ उपरंत दोष विधि पिंडनो, सुणजो कांइक अधिकार रे ॥ व० ॥ ६ ॥ दो जणा सामिल आहार ते, निमंत्रे एक तिन वार रे ॥ ते मुनीसर वर्जे सही, विहरे जुगहामी जेवार रे ॥ व० ॥ ७ ॥ गर्भिणी अर्थे भोजन कियो, जिम्या पहिली परिहार रे ॥ उठेसरके बेरावण भणी, पूरण मास गर्भयुत नार रे ॥ व० ॥ ८ ॥ बालक धवरावती जुवती, छोडावतां रोवे ज बाल रे ॥ दान पुण्य मंगत अर्थे जे, कियो ए सहु देखि टाल रे ॥ व० ॥ ९ ॥ अल्प खाणो बहु नाखनो, मुनिजन ते वर्जंत रे ॥ तृषा बुझे नहिं जिन जलें, ते नहिं वहोरे गुणवंत रे ॥ व० ॥ १० ॥ उपयोग विना लेवाणो कदा, परठवे तेह एकंत रे ॥ अणासक्ति स्थानकें आणनी, गृहस्थ घरे आज्ञा ग्रहंत रे ॥ व० ॥ ११ ॥ विधिशुद्ध आहार करतां कदा, काष्ठ कांकरो निकलंत रे ॥ हाथसें ग्रही मूके तदा, पण मुखसुं नहिं थूकंत रे ॥ व० ॥ १२ ॥ जो निजस्थान आवे मुनि, निस्सही शब्द कहंत रे ॥ करे काउस्सग्ग इरियावही, अतिचार सहु ते चिंतंत रे ॥ व० ॥ १३ ॥ आलोवे शुद्ध विधिगुरु कने, जिणवर जिणविधि आहार रे ॥ सज्झाय करी विश्रामो लेइ, आमंत्रे जे अणगार रे ॥ व० ॥ १४ ॥ शाक सहित रहित तथा, अरस विरस जे आहार रे ॥ मधु घृत जिम मुनि भोगवे, स्वाद न करे लगार रे ॥ व० ॥ १५ ॥ दुच्छहा उ सुहा दाइ कया, सुहा

जीवि इस जाण रे ॥ दोई जावे शुभ गति दिपे, अनुक्रमें लहे निर्वाण रे ॥ व० ॥ १६ ॥ पंचमु अध्ययन पिंडेषणा, प्रथम उद्देशा मझार रे ॥ तिलोकरिखजी कहे वर्णवी, पाले ते धन अणगार रे ॥ व० ॥ १७ ॥ इति पिंडेषणाध्ययन प्रथमउद्देश सज्झाय ॥

॥ अथ पंचम पिंडेषणाध्ययन द्वितीयोद्देश सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ प्राणी आदरो दयाले, बांधो को नहीं ॥ ए देशी ॥ पात्रा विषे जे मुनि वहोरीया रे, दुर्गंध सुगंध जे कोई आहार रे ॥ भोगवे जिम भुजंग बिलसें पेसे रे, पण परठवे नहिं सो लगार रे ॥ प्रभु आज्ञा आराधो मुनिवर भावशुं रे ॥ १ ॥ जो चाहो भवोदधि पार रे ॥ अलपकालना दुःख देहलि रे, सुख अनंत अपार रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ कालोकाल सुक्रिया विधि साचवो रे, अणमिलिया थी शोच न कोय रे ॥ चुगो जो लेवे जिहां पंखीया रे, वली भिक्षुक मांगता होय रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ ते देखी मुनि नांहिं संचरे रे, जिहां परप्राणी नहिं दुहवाय रे ॥ जो करे गृहस्थी आदर वंदणा रे, नलि नालि निंदे घर नहिं जाय रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ वंदे तो हर्ष आणे नहिं रे, विन वंद्यांसुं नहिं कुमलाय रे ॥ कठिण वचन रिख बोले नहिं रे, समता सागर मुनिराय रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ विन वताया मुन्देवले रे, भोगवे नहिं सो लगार रे ॥ किंचित छानो नो राखे नहिं रे, कपट न करे अणगार रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ नवा काढिन अचार नहिं भोगवे रे, निराधर्थी संजम हाण रे ॥ परसगुन दोष छोटो नहि रे, आरयांथी होवे कल्याण रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तप वय रूप आचार वलि भावना रे, चोर कह्या पंच प्रकार रे ॥ ते पावे किल्विषी देवता रे, कह्यो दुर्गति अवतार रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ मूल त्यहां पण होवे निहांनी मरी रे, नरक तिर्यंच गति जाय रे ॥ समकित धर्म दुर्लभ

कह्यो रे, इस जाणी छोडे मुनिराय रे ॥ प्र० ॥ ९ ॥ शिक्षा भिक्षा शुद्ध ग्रहणनी रे, दूजा उद्देशानी मांय रे ॥ तिलोकरिख कहे जे व्रतें क्रिया रे, तिणानें हुं वंदुं शीश नमाय रे ॥ प्र० ॥ १० ॥

॥ अथ षष्ठ ... क्षुल्लकामाध्ययन सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ आज भलो दिन उग्यो जी, श्रीसीमंधर स्वामी जिन वंदस्यां ॥ ए देशी ॥ ज्ञान दरसणे संपूर्ण छे हो कर्मगिरि चूरण कारणें, मुनि तप संजम वज्रधार ॥ मु० ॥ एहवा गुणमणि गणिवर हो मुनिसर आइ समोसरया, कांई कोइक उद्यान मझार ॥ राय प्रधान जो आवे हो उमावे क्षत्री माहणा, कांई पूछे प्रश्न विचार ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ जगतारक सुखकारक हो उद्धारक धर्म किस्यो कह्यो, कांई सो दाखो अणगार ॥ सो सुनिसुणी इम बोले हो कांई खोले हो आगम संघले, कांई भिन्न भिन्न करि विस्तार ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ जे धर्मार्थ कामी हो शिवगामी कामी आगमे, मुनि वर्जे स्थानक अढार ॥ परथम थानक दाखे हो अभिलाखे जीवदया भली, मुनी सब जीवां हितकार ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ सहु जीव जीवणो चहावे हो मरण विसारिने, कांइ प्राणवध भयंकार ॥ इम जाणी मुनिराया हो मन काया वचन जोगथी, त्रिकरण हिंसा परिहार ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ निजपर अर्थ सावद्य हो क्रोधादिक वश मृषा गिरा, कांई निंदीसहु अणगार ॥ अविश्वासनुं कारण झूठज हो ते ओंठ समुं जाणी करी, करो अलिक सोभा परिहार ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ तुष तरणादिक चोरी हो दुःख ओरी दोरी नरकनी, करे स्वर्ग सुख संहार ॥ प्रमाद तणी या हेतु हो कांइ केतु अपकीर्ति तणी, कांइ कुशील दुःशील आचार ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ कृष्ण वली विगय पांचो हो नाचे ... ..., ... जगतार ॥

वस्त्र पात्र धारे हो ते संजम लज्जा कारणें, रिख करे मूर्च्छा परिहार ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ अहोनिश तप जे कहीये हो कांइ हिये समता भावने, कांइ एक भक्त परिहार ॥ पृथवी पाणी तेउ वाउ हो वनस्पति त्रस जाणिये, कांइ छह काया जीव उगार ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ एकेकी काय तयाने हो हणाने तिहां प्राणी घणा, कांइ गोचर अगोचर धार ॥ दुःख दुर्गति वधारण हो भवारण्य कारण जाणिने, कांइ हिंसा सर्व निवार ॥ ज्ञा० ॥ ९ ॥ छ व्रत वली छकाया हो पाले त्रिकरण जोगसुं, कांइ ए अथवा स्थानक वार ॥ पिंड शैय्या वस्त्र पात्रा हो चतुर मुनि लेवे सूझता. कांइ दोष न करे अंगीकार ॥ ज्ञा० ॥ १० ॥ कांस्यादिक पात्रमांही हो नहिं भोगवे आहार पाणी कदा, कांइ भ्रष्ट थाय आचार ॥ पलंग मांचादि आसण हो सिंहासण पर बेसे नहिं, कांइ पडिलेहण दुःकरकार ॥ ज्ञा० ॥ ११ ॥ जावे गोचरी काजे हो विराजे नहिं गृहस्थी घेर, कांइ उपजे दोष अपार ॥ वृद्ध रोगी तपस्वी राया हो जस कायामें शक्ति नहिं, कांइ कल्पे त्रिहुं अणगार ॥ ज्ञा० ॥ १२ ॥ स्नान वर्ज्यो जिनराया हो बहु काया थाये विराधना, कांइ व्रतमें लागे अतिचार ॥ सुगंधादिक चंदन केशर हो परमेश्वर वर्ज्या साधने, कांइ दृढ कर्म बंधणहार ॥ ज्ञा० ॥ १३ ॥ जे शम दम उपशम सागर हो रतनागर रिख बहु गुण तणा, कांइ कर्म खपावण हार ॥ पापपुंज खपावे हो तन तावे तप जप साधणा, करे कपट क्रोध परिहार ॥ ज्ञा० ॥ १४ ॥ ज्ञान ध्यान रंग राता हो जगना नाता तोडणें. कांइ शशिरस जस निर्मल धार ॥ तिलोकरिख कहे धर्मार्थे सिद्धी हो आराधी साधी कांइ स्वर्गमें, कांइ उपजे शार्यी अणगार ॥ ज्ञा० ॥ १५ ॥ इति धर्मार्थाध्ययनं ॥

॥ अथ सप्तम वाक्यशुद्धध्ययन सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ भंभव बोल माना रा ॥ ए देशी ॥ चउभाषा जिनवर कही,

जाणे रिख बुध बुद्धिवंता हो ॥ दो सीखे दो वर्जित करे, जे चतुर महंता हो के ॥ १ ॥ मुनिवर वचन ... हो. जिहां सावद्य तिहां सत्य नहीं, इस अनुभव ... हो के ॥ मु० ॥ २ ॥ सत्य विहार समाचरे, झूठ ... हो ॥ निरवद्य अकर्कश असंदेह सो, बुद्धिवंत गिरा ... हो के ॥ मु० ॥ ३ ॥ अतीत अनागत वर्तमानमे, एकांत नहिं ताणे हो ॥ निःसंदेह निश्चय तजे, जे अंतरमें जाणे हो के ॥ मु० ॥ ४ ॥ निःसंदेह साची वली, जिणथी जीवणा हो ॥ ते पण रिख वर्जे सही, जिहां पाप बंधावे हो के ॥ मु० ॥ ५ ॥ काणो न कहे एकलत्रीनि, पंडग पंडगरोगी हो ॥ चोरने चोर कहे नहिं, जे मुनि उपयोगी हो के ॥ मु० ॥ ६ ॥ मूरख गोलो कूतरो, कोधी कपटी भिखारी हो ॥ वर्जे इत्यादिक भाषा जे, लागे परने खारी हो के ॥ मु० ॥ ७ ॥ दादी पडदादी माता, भुया सखी चोरी ठकुराणी हो ॥ इत्यादिक बोले प्रकारनी, वर्जे रिख वाणी हो के ॥ मु० ॥ ८ ॥ नाम गोत्र जिन तेहनां, निमहीज वतलावे हो ॥ तिमहीं पुरुष नाम सह, वर्जे वतलावे हो के ॥ मु० ॥ ९ ॥ मनुष्य पशु पंखी अही, गाय बैल तरु खेती हो ॥ भोजनादिकने सहू, दुखी बोले सो चेती हो के ॥ मु० ॥ १० ॥ ... विवाह किया ..., भली निपजी रसोई हो ॥ चारु ... शाक शालो ... दाग नहिं रिख जोई हो के ॥ मु० ॥ ११ ॥ भलुं ... द्रव्य ..., भलुं गयुं धन गहनो हो ॥ ... कन्या ... इस वचन न कहणा हो के ॥ मु० ॥ १२ ॥ रूडो कीधो तप ..., ... नानो हो ॥ पंडित मरण कोधादिक हरयो, भलो कार्यो निपजावो हो के ॥ मु० ॥ १३ ॥ भलो थयो ... खाली थयो, ... भलेरा हो ॥ इत्यादिक भाषा वर्जे ..., जिनने ... हो के ॥ मु० ॥ १४ ॥ आवो जावो नहीं ..., ऊठो बेठो ... हो ॥ इत्यादिक मुनि

जंपे नहिं, जाके अनुभव दीवो हो के ॥ सु० ॥ १५ ॥ करजो सामायिक पडिक्कमणां, सुणजो सूत्र प्राणी हो ॥ पालो दया देवाणुप्रिया, बोलो मृदु सत्यवाणी हो के ॥ सु० ॥ १६ ॥ देव मनुष्य तिर्यंचमें, होवे युद्ध लडाई हो ॥ हार जीत अमुक तणी, चिंते नहिं सतजांई हो के ॥ सु० ॥ १७ ॥ वायु वर्षा शीत उष्णता, वंछे नहिं वृद्धि हाणी हो ॥ क्रोध लोभ भय हास्य कारिणी, रिख बोले न वाणी हो के ॥ सु० ॥ १८ ॥ सुवाक्य सूधी विचारीने, भाषा दोष निवारे हो ॥ कषाय टाळे पाले दया, कर्मशत्रु प्रहारे हो के ॥ सु० ॥ १९ ॥ केवळ लेइ शिवपुर लहे, सुवाक्य शुद्धि प्रभावे हो ॥ तिलोकरिख कहे आराधिक, सदा तस शीश नमावे हो के ॥ सु० ॥ २० ॥ इति सुवाक्यशुद्धिअध्ययनं ॥

॥ अथ अष्टाचाराध्ययन सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ दया धर्म दिलमांही भावे रे ॥ ए देशी ॥ मुनिजन आज्ञा आराधो रे, निजातम कारज साधो रे ॥ ध्रु० ॥ आचार निधान ने पामीने जी, वरते तिस अणगार ॥ सुण जंबु क्रिया भली जी, जंपी परम दातार ॥ मु० ॥ १ ॥ पृथवी पाणी तेउ वायरो जी, वनस्पति त्रसकाय ॥ तीन करण तीन जोगसुं जी, हिंसा वर्जे मुनिराय ॥ मु० ॥ २ ॥ सूक्ष्म तृण फूल कंथुवा जी, किडी नागरादिक उत्तंग ॥ फूलण ग्वसखसादिक बीज सो जी, उगता अंकुर अंग ॥ मु० ॥ ३ ॥ इंडा कालादिकनां वल्या जी, ए अष्ट सूक्ष्म जाण ॥ दया पाळो भाळो उपयोगसुं जी, पडिलेहणा परिमाण ॥ मु० ॥ ४ ॥ घर घर फिरे निरदोषणी जी, देख सुणे बहु कान ॥ थिर राखे निज आतमा जी, नय सजम सावधान ॥ मु० ॥ ५ ॥ थोडो थोडो ग्रहे आहार त्यो जी, कहे सुनि अणगार ॥ ऊणोदरी आहार करता गो जी, क्रोध न करे लगार ॥ मु० ॥ ६ ॥ देहे दुःख

दीधां संपजे जी, महासुख कह्यो वीतराग ॥ चंचल नहिं तीन जोगसुं जी. निर्मल चित्त महाभाग ॥ मु० ॥ ७ ॥ अथिर जिवित जाणिने जी, धर्म धारे नाजि भोग ॥ अवसर जाणि मुनीश्वरु जी, संजम मांही आयोग ॥ मु० ॥ ८ ॥ जिहां लगें जरा पीडे नहिं जी, व्याधि न अंग वढंत ॥ इंद्रिय बलहीण होवे नहिं जी, तिण पहेली धर्म चढंत ॥ मु० ॥ ९ ॥ क्रोधसुं नाश प्रीति तणा जी, मानथी विनय गुण जाण ॥ मायाथी नाश मित्राइनो जी, लोभें सकलगुण हाण ॥ मु० ॥ १० ॥ क्षमाथी क्रोध जावे सही जी, विनयथी मान हणाय ॥ कपटाई सरल स्वभावशुं जी, लोभ संतोषथी जाय ॥ मु० ॥ ११ ॥ चउगति वृक्ष पुष्टि होवे जी, कषायको जल सिंचाय ॥ इम जाणी चारे निवारजो जी, श्री गुरुभक्त मनाय ॥ मु० ॥ १२ ॥ निंदा हास्य विकथा तजो जी, सज्झाय ध्यान धरंत ॥ बहुसूत्री सेवा करो जी, गुरुविनय अधिक साधंत ॥ मु० ॥ १३ ॥ निंदा करे नहिं कोइनी जी, बोले विचारी बोल ॥ द्वादश अंगी खल विकदाई जी, नहिं करे हास्य कुतोल ॥ मु० ॥ १४ ॥ ज्योतिष निमित्त भांखे नहीं जी, रहेवे निरवद्य स्थान ॥ स्त्री पशु वर्जित सहीजी. नारीकथा सुणे नहिं कान ॥ मु० ॥ १५ ॥ कुकडीका बाल बिलायशुं जी, डरे जिम नारीथी संत ॥ चित्राम न देखे तेह तणुं जी, ब्रह्मचारी गुणवंत ॥ मु० ॥ १६ ॥ हस्त पाय कर्ण नासिका जी, छेदाणां वृद्ध नार ॥ तेहवी पण ब्रह्मचारी तजे जी, वली शोभा सरस आहार ॥ मु० ॥ १७ ॥ जिन सरधावें निकले जी, पाले तिम जावजीव ॥ साहसिंघ सिंह जेहवा जी, कर्मसुं जुझे अतीव ॥ मु० ॥ १८ ॥ अग्निसुं धर्मो निर्मल करे जी, रूपाने जिम सोनार ॥ तिम कर्म ग्वार करे वेगलो जी, तपस्या अग्नि प्रचार ॥ मु० ॥ १९ ॥ केवल लइ शिवपद ग्रहे जी, चंद्र ज्युं सोहे आकाश ॥ आचार निधान अध्ययनमें जी, तिलोक-

रिख कहे खुलास ॥ मु० ॥ २० ॥ इति आचाराध्ययन ॥ ८ ॥

॥ अथ नवम विनयसमाधिअध्ययनस्य प्रथम उद्देशक सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ श्रीजिन मुझने पार उतारो ॥ ए देशी ॥ रे भाई विनय धर्म सुखदाई ॥ तिणसुं कमी रहे नहिं कांई रे भाई ॥ विन मान क्रोध छल लोभसुं प्राणी, विनयनहिं सीखे गुरु पासे ॥ ज्ञान भणे तोई विपत सवाई, फल आया वास विनासे रे भाई ॥ वि० ॥ १ ॥ मंद प्रकृति अल्पश्रुत वय छोटा, हिलणाथी आशातना लागे ॥ आचारवंत वर श्रुतगुण सागर, तिणनांही विनय कोइ त्यागे रे भाई ॥ वि० ॥ २ ॥ तिणने जिम अग्नि भस्म करे वस्तु, तिम ज्ञानादिक गुण नासे ॥ सर्प छोटो तोइ डस्या प्राण खोवे, अविनीत दुर्गति दुःखि पासे रे भाई ॥ वि० ॥ ३ ॥ आशीविष प्राण लेवे एक भवमें, गुरु आशातना भव भवमें ॥ दुःख देवे बोधवीज नहिं आवे, जाय पड़े दुःखदवमें रे भाई ॥ वि० ॥ ४ ॥ अग्निने पग करीने जो चाहे, सर्पने कोप चड़ावे ॥ जीवितअर्थे खावे जहेर हलाहल, पर्वत शिरथी हटावे रे भाई ॥ वि० ॥ ५ ॥ सूतो सिंह जगावे बोला कर, बरछी पर हथेली प्रहारे ॥ इण दृष्टांते अशातना करे गुरुनी, वली मुख चित्त विचारे रे भाई ॥ वि० ॥ ६ ॥ देवजोगे जो वरते सुखदायी, अशातना फल टले नांई ॥ विनयविमोखी गुरुहिलणियो, जननायक फरमाई रे भाई ॥ वि० ॥ ७ ॥ तिण कारण शिवसुखना अर्थी, अग्नि जिम गुरु ने सरीजे ॥ धर्मपद एक शीखे जिण पासे, तिणनो पण विनय करीजे रे भाई ॥ वि० ॥ ८ ॥ लज्जा दया संजम शील ए चार, अर्थी पुरुष शिवगामी ॥ करे गुरुभक्ति तो कर्म पलावे, नम [illegible] ज्युं दिनस्वामी रे ॥ वि० ॥ ९ ॥ जिम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], तिम आचारज पण

छाजे ॥ विनीत शिष्य रत्नाकर जेहवो, सुक्तिके मांही विराजे रे भाई ॥ वि० ॥ १० ॥ विनयसमाधि प्रथम उद्देशासें, एह वर्णन कह्यो सारो ॥ तिलोकरिख कहे विनय जो आराधे, सोही लहे भवपारो रे भाई ॥ वि० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ नवम विनयसमाधिअध्ययनस्य
द्वितीय उद्देशक सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ देशी केरवामें छे ॥ जिम वृक्षने मूल खंद पके शाखा, पान फूल विस्तार ॥ भलां रे ज्ञानी ॥ पा० ॥ विनयवर धर्म आराध जो कांइ, जो चाहो भवनिस्तार ॥ भलां रे ज्ञानी ॥ जो० ॥ विन० ॥ १ ॥ तिम धर्म तरु विनय मूल परुप्यो, जगतारक जसधार ॥ भ० ॥ ज० ॥ वि० ॥ २ ॥ क्रोधी अज्ञानी मानी दुष्ट भाषक, कपटी धूर्त नर नार ॥ भ० ॥ क० ॥ वि० ॥ ३ ॥ संसार सागरमें तणावे ऐसा दुष्टी, काठ नदीपूर मझार ॥ भ० ॥ का० ॥ वि० ॥ ४ ॥ भली शीख देतां उलटी धारे ज्यूं, शिर अति दंड प्रहार ॥ भ० ॥ शि० ॥ वि० ॥ ५ ॥ अविनीत भवदंड दुःख पावे, सदा दारिद्र घर चार ॥ भ० ॥ स० ॥ वि० ॥ ६ ॥ विनीत नर नारीने इण भव सुखसंपत, परभवमें जय जयकार ॥ भ० ॥ प० ॥ वि० ॥ ७ ॥ सुर भवपद विचार कर होवे, अविनीतपणुं दुःखकार ॥ भ० ॥ अ० ॥ वि० ॥ ८ ॥ विनीत गुरु अभिप्रायनो जाणक, नमन करे वारंवार ॥ भ० ॥ न० ॥ वि० ॥ ९ ॥ शीखे सूत्र अर्थ धर्म धन धारक, उतरे भवजल पार ॥ भ० ॥ उ० ॥ वि० ॥ १० ॥ तिलोकरिख कहे अध्ययन नवमासें, दूजे उद्देशे अधिकार ॥ भ० ॥ दू० ॥ वि० ॥ ११ ॥ इति द्वितीय उद्देश सज्झाय ॥

॥ अथ नवम विनय समाधि अध्ययनस्य तृतीय
उद्देशक सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ नुमानि सदा दिलमें धरो ॥ ए देशी ॥ श्री गुरु आज्ञा शिर

धरो, जो गुरुपदकी चहाय ॥ विवेकी ॥ अग्निहोत्री जिम अग्निनें, सेवे तिम सशे पाय ॥ वि० ॥ श्री० ॥ १ ॥ अंगचेष्टा जाणे गुरु तणी, करो शुश्रूषा वारंवार ॥ वि० ॥ वय छोटा दीक्षा करि वडो, साधो तस विनय व्यवहार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ २ ॥ दोष वयालास टाळने, लेवतो सुझतो आहार ॥ वि० ॥ संथारो शय्यासन भोगवो, हर्ष शोक परिहार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वचन कांटा दुर्धर कह्या, खमे मुनि समताधार ॥ वि० ॥ पर अवगुण वैरीपणुं, अप्रिय वचन परिहार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ लोलुपी कौतुकी माइ- पणो, वर्जे विनीत अणगार ॥ वि० ॥ चुगल नहिं दीनवृत्ति नही, निजप्रशंसा निवार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ ज्ञानादिक गुणें साधु हुवे, कामार्थी गुणर्थी असंत ॥ वि० ॥ इम जाणी गुण संग्रह करो, राग द्वेष दोउ हणंत ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जिम कन्या भणी तात देवे, देखी घर वर ठाम ॥ वि० ॥ तिम गुरु सुशिष्यने भली, शिक्षा देई देवे शिवधाम ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ सुशिष्य माने गुरु आज्ञा, जावे मुक्तिने मांय ॥ वि० ॥ त्रीजो उद्देशो नवमा- ध्ययनना, तिलोकरिख कहे वखाय ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ नवमविनय समाधि अध्ययनस्य चतुर्थ उद्देशक सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ चार पहरको दिन होवे रे ॥ ए देशी ॥ सोधर्मास्वामी कहे रीतसुं रे, आर्य जंबु तुं [illegible] ॥ [illegible] मुझशुं कह्या रे, दाखूं हूं तुझपकी तेम रे ॥ च० ॥ चार समाधि चित्त धरो रे ॥ १ ॥ प्रथम विनय विचार रे ॥ च० ॥ गुरुशिक्षा सुणो खंतसूं रे, वरनो सम व्यवहार रे ॥ च० ॥ चा० ॥ २ ॥ सूत्रमें क्रिया करणी कही रे, साचवो काळो काळ रे ॥ च० ॥ मन अ- भिमान आणो मति रे, हुई सुविनीत विशाल रे ॥ च० ॥ चा०

॥ ३ ॥ सूत्र समाधि दूजी चिंतवे रे, जाणसुं सूत्र विचार रे॥ च० ॥ सूत्र शीख्यायकी आहेरा रे, रहेशे चित्त थिरकार रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ४ ॥ थापसुं आतमा धर्ममें रे, समझावसुं भवि लोक रे ॥ च० ॥ मान वरजी चिहुं कारणें रे, संग्रह करे सूत्र थोक रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ५ ॥ त्रीजी समाधि तपस्या तणी रे इह लोक लब्धि आदिक काज रे ॥ च० ॥ परलोक सुर सुख कारणें रे, नहिं करे तप मुनिराज रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ६ ॥ सर्व दिशा कीर्त्ति भणी रे, भली मानसी घणा जन रे ॥ च० ॥ एम उवर्जी निर्जरा भणी रे, मुनि धारे तपस्या रतन रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ७ ॥ चौथी आचार समाधि सी रे, तप कारण जे कह्या चार रे ॥ च० ॥ ते वर्जी शिवकारणे रे, पाले क्रिया आचार रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ८ ॥ चौथो उद्देशो विनय समाधिनो रे, दाख्यो वीर जिणंद रे ॥ च० ॥ तिलोकरिख कहे तिस आदरे रे, पामे परमानंद रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ९ ॥ इति नवम विनय समाधि अध्ययनस्य चतुर्थोद्देशकः ॥४॥

॥ अथ दशम भिक्खुनामाध्ययन सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ कुविश्न मारगमाथे धिकधिक ॥ ए देशी ॥ तजत आश्रव घर, भजत संवर वर, श्रीजिनवाणी धार हो ॥ चित्त समाधि, नित्य आराधी, त्रिया वशमें न लगार हो ॥ १ ॥ धन एसा संत करुणा रस सागर, गुणरत्नागर पूर हो ॥ ज्ञान उजागर नागर पंडित, संजम क्रियामें शूर हो ॥ ध० ॥ २ ॥ पृथ्वी न खणे न खणावे ऋषिश्वर, पीये न पावे सचित्त नीर हो ॥ जलन जलावे, तेउ महा शस्त्र, विंजणे न करे समीर हो ॥ ध० ॥ ३ ॥ छेदे न छेदावे वनस्पतिने, न करे सचित्त आहार हो ॥ नव कोटि शुद्ध ग्रहे रिख भिक्षा, प्रभु वाणी अवधार हो ॥ ध० ॥ ४ ॥ आतमा सम जाणे छइकाया, पंच महाव्रतवंत हो ॥ आश्रव संध कषाय

के टाले, ध्रुवजोगी धनव्रत हो ॥ ध० ॥ ५ ॥ वर्जे जोग सावद्य समदृष्टि, अर्थिज्ञान तप चरण हो ॥ पाप प्रहारे थिर जोग धारे, जे मुनि तारण तरण हो ॥ ध० ॥ ६ ॥ चार आहार वासी नहिं राखे, भोगवे साधर्मिकी आमंत्र हो ॥ सज्झाय ध्यान मेली नहिं रहे नित आतमा, निज राखे स्वतंत्र हो ॥ ध० ॥ ७ ॥ विग्रहकारिणी दुःख वधारणी, न करे विकथा प्रबंध हो ॥ न करे राग द्वेष क्षमा धारक, संजम तप ध्रुव बंध हो ॥ ध० ॥ ८ ॥ पंच इंद्रीने कंटके सम लागे, अक्रोश वचन परिहार हो ॥ अट्टह हास्य शद्ध परम भयंकर, सम सुख विचार हो ॥ ध० ॥ ९ ॥ पडिमाधारक साते भय वारक, समता नहिं तन तुच्छ तोल हो ॥ पृथवी समान उप-धान आराधे, वर्जे नियाणो किलोल हो ॥ ध० ॥ १० ॥ सहते परिसह लडत अरिसें, दुर्गतिसें आतम टालंत हो ॥ जनम मरण भव वर्जण कारण, संजम तपस्या साधंत हो ॥ ध० ॥ ११ ॥ हाथ पाय वांह इंद्रिय संजय, सज्झायरक्त सूत्र जाण हो ॥ भंड उपकरण मूर्च्छा नहिं राखे, जे भिक्खु चाहे कल्याण हो ॥ ध० ॥ १२ ॥ अज्ञात कुलें गृह अल्प आहार लिये, न करे विणज वेपार हो ॥ छोडे कुसंग सूंछे नहीं भोजन, नहिं वंछे पूजा सत्कार हो ॥ ध० ॥ १३ ॥ कोप वशें कुभाषा न जंपे, छंडे छल अभिमान हो ॥ पुण्य पाप फल प्रत्यें विचारे, जे भिक्खुआगम जाण हो ॥ ध० ॥ १४ ॥ धर्मदेव धर्मदेशना दायक, नायक या गुरु जेम हो ॥ श्रीजिन धर्मने धीर धरावे, वरजे कुशील लिंग प्रेम हो ॥ ध० ॥ १५ ॥ देहको वास अशुचि दुर्गंधक, अशाश्वतो विदुत्संज्ञावान हो ॥ ममता त्यागी अनुरागी मुक्तिका, निजपर आतम सुखदान हो ॥ ध० ॥ १६ ॥ जनम मरण रण उरग सिदाड, चरण करण उद्धार हो ॥ चरण सरण धर तरण तारण पो, केवल कमला भरतार हो ॥ ध० ॥ १७ ॥ मुक्ति मोहल्की महल अचल पद, अजर अमर

अविकार हो ॥अलख निरंजन भविमन रंजन, वरते जय जय कार हो ॥ ध० ॥ १८ ॥ दशमुं अध्ययन भिक्खु मारगनुं, जे कर्मभेदनहार हो ॥ आराधना करे शम दम परिणामें, पावे भव निस्तार हो ॥ ध० ॥ १९ ॥ संवत् पंदरेंश एकातिस संवत्सर, उतर्यो भस्मग्रह क्रूर हो ॥ श्रीजिनसासण उदे पूजा प्रगटी, समकित जोत सनूर हो ॥ ध० ॥ २० ॥ गुर्जर देश विशेष प्रसिद्धता, अहमदाबाद सझार हो ॥ शुद्ध श्रद्धाधारक श्रावक लुंकाजी, किनो जास उपगार हो ॥ ध० ॥ २१ ॥ ततदेशना सुणि एकदिनमांही, मुख्य भाणा जी वखाण हो ॥ पंतालिस जणा संगें संजम धार्यो, चित्त दृढता अति आण हो ॥ ध० ॥ २२ ॥ दुःकर दुःकर करणी धारी, दयाधरम थयो परकाश हो ॥ सातसे पाटें सत्तेरसें पूज, पद धारक विमास हो ॥ ध० ॥ २३ ॥ श्री श्री कहानजी रिख महाराया, दीपायो जैनधर्म हो ॥ चालीस सहस्र ग्रंथ आगम कंठागर, टाल्यो अज्ञान को भर्म हो ॥ ध० ॥ २४ ॥ तत् पाटोधर पूज्य ताराखिजी, कालारिखजी गुणवंत हो ॥ बगसू रिखजी तस पाट विराज्या, शूरवीर महसंत हो ॥ ध० ॥ २५ ॥ तत् अंतेवासी पूज्य धनजी, शम दम उपशम धार हो ॥ तत् शिष्य श्रीअयवंता रिखजी, चरण करण दातार हो ॥ ध० ॥ २६ ॥ चरण सरण तस ग्रहण करीने, चार ख्याल जिम जाण हो ॥ प्रत्येक अध्ययन उद्देशाकी किंचित, रची रचना हित आण हो ॥ ध० ॥ २७ ॥ हीण अधिक पद अर्थ जो दीसे, बुध जनसुं अरदास हो ॥ शुद्ध करि लीजो हास्य न कीजो, जयणा शुद्ध भणजो उल्लास हो ॥ ध० ॥२८॥ संवत् उगणीशें चालीस संवत्सर, चैत्र शुक्र बीज जाण हो ॥ वार चंद्र देश दक्षिणमांही, अहमदनगर प्रमाण हो ॥ ध० ॥ २९ ॥ तिलोकरिख कहे धन जिनागम, सर्धे जो भविक मन संत हो ॥ अनंत संसार परित कर देवे, पाले सो होय शिव कंत हो ॥ ध० ॥ ३० ॥ हीण अधिक जे आज्ञानी

बाहिर, जो कोइ जोड़ाणो होय हो ॥ देव गुरु धर्म आतमा साखे, मिच्छामि दुक्कड़ सोय हो ॥ ध० ॥ ३१ ॥ अरिहंत सिद्ध धर्म ए चारी, होजो सदा शरण चार हो ॥ रिद्धि सिद्धि सुख संपत अविचल, दीजो परम दातार हो ॥ ध० ॥ ३२ ॥ कलश ॥ जिनराज वाणी, सुखदाणी, भविक प्राणी, सुख भणी ॥ सप्त भंगी, कही चंगी, भविक रंगी, रुचि घणी॥जे पाले भावें, कर्म घावे, केवल पावे, सार ए ॥तिलोक रिख इम, सीख गुरुगम, ए रची सज्झाय, सुखकार ए ॥ ध० ॥ ३३॥ इति भिक्खुअध्ययनम् ॥ इति दशवैकालिकसूत्रजी की पीठिका सहित अध्ययन उद्देशा प्रत्येक पन्नार सज्झाय संपूर्ण ॥ सर्व गाथा ॥२३२॥

॥ अथ गुरुगुण सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ देशी केरवामें छे ॥ प्रणमुं गुरु गुणवंत नगीना, रिद्ध सिद्ध दातार ॥ भलां रे ज्ञानी ॥ रिद्ध० ॥ गुरुगुण हिरदे बस रह्या, महारे जीवन प्राण आधार ॥ गु० ॥ १ ॥ गुरुगुण सागर परम उजागर, नागर नवल व्रतधार ॥ भ० ॥ ना० ॥ गु० ॥ २ ॥ ज्ञान को अंजण दे मनरंजण, भंजण भर्म अंधार ॥ भ० ॥ भं० ॥ गु० ॥ ३ ॥ धीरज मंदिर सोम ज्युं चंद्र, धरता धुरंधर धार ॥ भ० ॥ ध० ॥ गु० ॥ ४ ॥ कर्मके गंजन अलख निरंजन, शिवपदके दातार ॥ भ० ॥ शि० ॥ गु० ॥ ५ ॥ आप तरे पर तारण हारा, राग द्वेष परिहार ॥ भ० ॥ रा० ॥ गु० ॥ ६ ॥ मात तात सुत भ्रात कामिनी, सगपण सर्व असार ॥ भ० ॥ स० ॥ गु० ॥ ७ ॥ गुरु सम नहिं को हित कारक छे, विपत्त विदारणहार ॥ भ० ॥ वि० ॥ गु० ॥ ८ ॥ चित्रवेल चिंतामणि पारस, इण भवमें सुखकार ॥ भ० ॥ इ० ॥ गु० ॥ ९ ॥ सत गुरु इणभव परभवमांही, दे सुखसंपत सार ॥ भ० ॥ दे० ॥ गु ॥ १० ॥ सोनिता सहीत खांडसा खारा, आतमा समअधिकार ॥ भ० ॥ आ० ॥ गु० ॥ ११ ॥ गुरु कृपासें रायसंजती, लीयो संजम भार ॥ भ० ॥ ली० ॥ गु० ॥ १२ ॥

पापी पूरो परदेशी राजा, दीयो सुर अवतार ॥ भ० ॥ दी० ॥ गु० ॥ १३ ॥ चार हत्या करी दृढ प्रहारी, पायो मोक्ष द्वार ॥ भ० ॥ पा० ॥ गु० ॥ १४ ॥ गुरु विण जुगत मुक्ति नहिं पावे, गुरु विन घोर अंधार ॥ भ० ॥ गु० ॥ गु० ॥ १५ ॥ इत्यादिक अनंतहि तरिया, कियो सतगुरु उपगार ॥ भ० ॥ कि० ॥ गु० ॥ १६ ॥ पुज्य कहानजी रिखजी वरतायो, दयाधरम विस्तार ॥ भ० ॥ द० ॥ गु० ॥ १७ ॥ पूज्यनारा रिखजी तस पाटें, कालाजी रिख गुणधार ॥ भ० ॥ का० ॥ गु० ॥ १८ ॥ तस पाटें श्रीविगसू रिखजी, धनजी रिख हितकार ॥ भ० ॥ ध० ॥ गु० ॥ १९ ॥ तस शिष्य श्रीअयवंता रिखजी, वाल जति ब्रह्मचार ॥ भ० ॥ वा० ॥ गु० ॥ २० ॥ श्रीगुरु मुझ पर परम मया कर, दीनो संजम भार ॥ भ० ॥ दि० ॥ गु० ॥ २१ ॥ तिलोकरिख गुरुगुणकी महिमा, सरस्वती पावे नहिं पार ॥ भ० ॥ स० ॥ गु० ॥ २२ ॥ गुरुगुण गावे मन शुद्ध करिने, वरते मंगल चार ॥ भ० ॥ व० ॥ गु० ॥ २३ ॥

॥ अथ बार भावनागर्भित उपदेशछत्रीशी सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ प्राणी कर्म समो नहिं कोइ ॥ ए देशी ॥ रे प्राणी जगमाया सब काची ॥ थें किम करी मानी छे साची रे ॥ प्राणी० ॥ ए टेक ॥ श्रीजगदीश के शीश नमाइ, कहं उपदेशी रसालो ॥ भवि प्राणी सुणो थिर चित्त करिने, मिथ्या भर्म थें टालो रे ॥ प्रा० ॥ १ ॥ गढ मढ मंदिर हाट हवेली, वाग वगीचा निवाणो ॥ दुपद चउपद वस्तर गहेणां, हिरण्य सुवर्णादिक नाणो रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ देहसुं नेह करे किम विरथा, पुद्गल शोभा छे सारी ॥ पर वस्तु विना लागे भयंकर, देखो ज्ञान विचारी रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ मात पिता सुत नारी सहोदर, स्वजन कोटुंबिक सारा ॥ अनंत वार सगपण सब जोड्या, तोड्या अनंतही वारा रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ दुश्मन मर कर सज्जन होवे, सज्जन दुश्मन थावे ॥ राग द्वेष

करमाको वंधण, क्यों निज माल गमावे रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ मरण रोग दुःख आवे जो तनमें, शरणागत नहिं कोइ ॥ तेरो सहायक जैन धर्म है, इण भव पर भव जोइ रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ प्रभु सरणा विना चउगति भटक्यो, पायो दुःख अनंता ॥ ते वेदना निज आतमा जाणे. के जाणे भगवंता रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ जन्म लियो जव कोइ न साथी, मरतां पण नहिं लारी ॥ वंधी मुठीयें जन्मज लीनो, जवे हाथ पसारी रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ जायो जायो कहे जनमतां, बाहर पडियो रोवे ॥ जन्मतांही अपशकुन जो लीधा, रेणो किस विध होवे रे ॥ प्रा० ॥ ९ ॥ सुख दुःख करता आतमा जाणो, भुगते आप अकेलो ॥ इम जाणी दुःकृत परिहरिये. सुकृत किया सो झेलो रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ धन कुटुंब रिद्ध संपत पाइ. सो निज पुण्य प्रभावें ॥ जिण समे पुण्यको छेडोज आवे, देखतमें विरलावे रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ जिम तरुवर पर आवे पंखरु, निज निज स्वारथ कामें ॥ पान झडे पंखी उड जावे, वैठे हरया वृक्षठामें रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ बाजीगर जव ख्याल रचावे, लोक होवे बहु भेला ॥ बाजी भयासुं सव भग जावे, जेसा जीव अकेला रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ ग्वालके संगे गायको टोलो, कहे धेनु सव म्हारी ॥ जव आवे सो अपने घरसे, रहे अकेलो दंडधारी रे ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ देह अपावन परम घिनापन, मल मूत्रकी या क्यारी ॥ अशुचि आहार करी ए. तन निपज्यो. चर्मकी शोभा छे जहारी रे ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ सागर जल करी जो नित धोवे, तो पण शुचि नहिं थावे ॥ हाड करंडिया भंड मट्टीकी. इणिपर क्यों तुं पासोच रे ॥ प्रा० ॥ १६ ॥ सहस्र दिनारको एक कवो लयो. जीमे एम सदाही ॥ तो पण दे दगो एक पलमें. काढे जोवनें माही रे ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ रोग सोग भय दुःख उचाटण, जनम मरण घर काया ॥ कोड जतन करतां पण जावे, इण पर क्यों तुं लोभाया रे ॥

प्रा० ॥ १८ ॥ दिन दिन चलनो नेडोज आवे, शंका नहिं छे लगारो ॥ श्वासोश्वासें ए तन छीजे, अंतमें होसी या छारो रे ॥ प्रा० ॥ ॥ १९ ॥ उंडी उंडी नींव लगावे, उंची मजला चढावे ॥ साडा तीन कर हे घर तेरो, क्यों तु पाप कमावे रे ॥ प्रा० ॥ २० ॥ हरि हर इंद्र सुर असुर नर, जे जगमें देह धारी ॥ काल व्याल सवी ने गटकावे, चेतो चेतो नर नारी रे ॥ प्रा० ॥ २१ ॥ कुरंग पतंग भ्रमर मत्स्य मरे, एक इंद्रिय वशें प्राणी ॥ जे पांचु इंद्रिय वश पडिया, तेणें दुर्गति खाणी रे ॥ प्रा० ॥ २२ ॥ ए तन पाय महा तप कीजें, लीजें श्रीजिन नामो ॥ दीजें अभय दान सकलने, सीझे वंछित कामो रे ॥ प्रा० ॥ २३ ॥ भोग हलाहल जहरसुं जादा, फल किंपाक समानो ॥ भोगवतां लागे मन गमता, पाछें महा दुःख दानो रे ॥ प्रा० ॥ २४ ॥ संवर मारग तारक सांचो, नवा कर्म सव टाले ॥ हाट कपाट समान ए जाणो, आगम साख देखाले रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ गया कालमें कर्मज कीनां, तेह हठावण कामें ॥ तपस्या द्वादश भेद करीजें, राखी सम परिणामें रे ॥ प्रा० ॥ ॥ २६ ॥ अनंत अनंत मेरु परिमाणं, मिथ्थीद्रिक वस्तु सारी ॥ अनंत वार इण भक्षण कीनी, दीजें समत सब सारी रे ॥ प्रा० ॥ २७ ॥ जननी दूध पियो इण चेतन, सप्त सागर जल वारी ॥ तो पण तृष्णा रंच न बुझी, समझो सुगुणा नर नारी रे ॥ प्रा० ॥ २८ ॥ लोक स्वरूप संठाण विचारो, पुण्य पाप फल देखो ॥ करमवशें पडिया सब जगमें, ज्ञानी बताया के लेखो रे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥ देव निरंजन गुरु निर्लोभी, धर्म दयामांही जाणो ॥ ए तीनुं तत्त्व सार पदारथ, निश्चल श्रद्धा ठाणो रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ जिहां लग नहिं आवे वृद्धपणुं तन, रोग सोग नहिं आवे ॥ इंद्रिय पंच सो हाणी न होवे, उद्यम पहेली मगावे रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥ धरम ध्यान करो एक चित्तें, कीजो सफल जमारो ॥ इण विन चउगतिमें

दुःख पायो, आगममें विस्तारो रे ॥ प्रा० ॥ ३२ ॥ रत्न चिंतामणी नरभव पायो, उत्तम कुळ अवतारो ॥ तप जप सुकृत उद्यम कर लो, बाटी साटे मत हारो रे ॥ प्रा० ॥ ३३ ॥ अनंत जीव तरया धर्म प्रभावें, वली अनंताही तरसी ॥ इम जाणी प्रभु आज्ञा आराधे, सो शिव सुंदर वरसी रे ॥ प्रा० ॥ ३४ ॥ सत्गुरु तो कहेणका है गरजी, परउपगारी थें जानो ॥ जो नहिं मानो तो मरजी तुम्हारी, ये घोडा ये मैदानो रे ॥ प्रा० ॥ ३५ ॥ उगणीशें अठ्ठातिश जेठ शुद्ध सातम, गाम खरोंडीके मांही ॥ तिलोकरिख उपदेश छत्तीसी, भावना शुद्ध वणाइ रे ॥ प्रा० ॥ ३६ ॥ इति ॥

॥ अथ अनित्य भावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ संत चरणारी जाउं बलिहारी ॥ ए देशी ॥ ए संसार अनित्य भयकारी, नित्य जैनधर्म लो धारी ॥ ए० ॥ ए टेक ॥ गढ मढ मंदिर हाट हवेली, जाली झरोंका तिवारी ॥ जो वंध्या सो सकल ढल जावे, महेल गवाक्ष अटारी ॥ आरंभ मत करजो लगारी ॥ ए० ॥ १ ॥ पाट पीतांबर शाल दुशाला, हीर चीर जर तारी ॥ जो वणिया सो सकल विनाशक, रेशमी थान किनारी ॥ करो कोई जतन हजारी ॥ ए० ॥ २ ॥ बाजुबंद भुजदंड चोकडा, हार कडा पोंची भारी ॥ घडिया सडिया जडिया सुवर्णसें, हीरा रत्न झलकारी ॥ संग नहिं आवेगा थारी ॥ ए० ॥ ३ ॥ हरि हर इंद्र चंद्र सुर मानव, बाल तरुण जराधारी ॥ राव रंक नीरोगी सरोगी, अथिर सकल संसारी ॥ देखो भवि दृष्टि पसारी ॥ ए० ॥ ४ ॥ कूवा बावडी बाग बगीचा, वृक्ष विचित्र मनोहारी ॥ न रहे वस्तु न रहे करता, करतां क्रोड प्रकारी ॥ वात ए जगमांहे जहारी ॥ ए० ॥ ५ ॥ जग पैदल दल रथ तुरगम, सेना चार प्रकारी ॥ म्याना पालखी अस्तर शस्तर, रहेवे नहीं नरनारी ॥ चराचर है गतचारी ॥ ए० ॥ ६ ॥ मात पिता बंधव अरु भगिनी, काका

काकी सुत नारी ॥ न्याती गोती सज्जन सनेही, सचल सकल परि. वारी ॥ मरे जिणे देही जो धारी ॥ ए० ॥ ७ ॥ धरति अकन कुंवारी सदाही, वर किया अनंत अपारी ॥ भूमि भुजंग जो सवी गिलजावे, तो पण कहे रिद्ध म्हारी ॥ देखो ये अचरिज भारी ॥ ए० ॥ ८ ॥ नित्य श्री जैनधर्म निरंतर, दृढमन लो इम धारी ॥ भरत नरिंद्र ज्युं केवल कमला, पावोगा नर नारी ॥ तिलोकरिख कहे सुविचारी ॥ ए० ॥ ९ ॥इति

॥ अथ असरण भावना अधिकार सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ स्वामी सुण और सुंदरी भांखे ॥ ए देशी ॥ सरणागत नहिं कोई इण जगमें, मात पिता सुत नारी रे ॥ न्याती गोती मित्र सनेही, हे सब स्वार्थकी यारी रे ॥ स० ॥ १ ॥ हीरा माणक माल खजाना, रथ पेदल गज घोड़ा रे ॥ काल रिपु जब आवे चलाई, धरया रहे सब तोड़ा रे ॥ स० ॥ २ ॥ असंख्य कोटि सुर नायक इंद्र, रत्न जड़ित घर जाणो रे ॥ आतमरक्षक सुर सेवे निरंतर, तो पण जम करे घाणो रे ॥ स० ॥ ३ ॥ लक्ष चोरासी हय गय रथ जस, पायदल छन्नवे कोड़ी रे ॥ नवनिधि चउदे रतन घर पण तस, काल ले जावे दोड़ी रे ॥ स० ॥ ४ ॥ द्वारकानाथ श्रीकृष्ण कहाया, छप्पन कोड़ी परिवारो रे ॥ दुःख आयां कोइ आडो नहिं आयो, अंतर्ज्ञान विचारो रे ॥ स० ॥ ५ ॥ वज्र कोट डोट परकोटो, कंगुरे कोड़ि सिपाइ रे ॥ सात भुयरामें राखे तोही पण, काल ले जावे सांही रे ॥ स० ॥ ६ ॥ दो दो तरकस तीर जो बांधे, चाल चले अति अकड़ी रे ॥ जाणे में न मरशुं कदा पण, काल लेजावे जकड़ी रे ॥ स० ॥७ ॥ धन कुटुंब सज्जन जे जगमें, शरणागत मत मानो रे ॥ मृगतृष्णा जिम सत्य न होवे, भांख्यो है त्रिजगभानो रे ॥ स० ॥ ८ ॥ को नवि स्मरणं को नवि सरणं, तिम

अनाथी इम जाणी रे ॥ रिख तिलोक कहे धर्म शरण कर, पाया पद निर्वाणी रे ॥ स० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ संसार भावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ सिद्धचक्रजी ने पूजो रे भविका ॥ ए देशी ॥ ए संसार चलाचल इणसें, भमियो चउगति प्राणी ॥ चोविश दंडक लक्ष चोरासी, पायो दुःख अज्ञाणी ॥ संसार महादुःख खाणी रे, भविका, धर्म सदा सुखदाणी ॥ ए टेक ॥ १ ॥ नरक विषे गयो वार अनंती, क्षेत्रवेदना जिहां भारी ॥ परमाधामी महानिर्दयी, मारे विविध प्रकारी रे ॥ भ० ॥ २ ॥ पल सागर थिति भोगवे परवश, आरत अधिकी आणे ॥ के तो तिणगे जीवज वदे, के परमेश्वर जाणे रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ तिहांथी मरी तिरगंच गतिसें, निगोदपणामें संचरियो ॥ साडी पेंसट हजार छत्तिस भव, मुहूर्त एकमें मरीयो रे ॥ ॥ भ० ॥ ४ ॥ सत्त्वाविकलेंद्री संज्ञी असंज्ञी, भमतां नरभव पायो ॥ देश अनारज नीच उंच कुल, दुःखमें जन्म गमायो रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ अज्ञान कष्ट अकाम निर्जरासुं, सुरगतिमें अवतरीयो ॥ नाटक करकें रीझाया अपरनें, मरण समे दुःख धरीयो रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ औदारिक वैक्रिय तैजस कार्मण, सास उसास मन भाषा ॥ पुद्गल परावर्त सातुंहि कीधा, अनंत वार इम आखा रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ द्रव्य क्षेत्र काल भाव ए चारे, सूक्ष्म बादर कहीये ॥ ए पण वार अनंतही जाणो, सूत्र वचन सद्दहीये रे ॥ भ० ॥ ८ ॥ रोग सोग संजोग विजोग वली, सुख दुःख अनुभव्या सारा ॥ नाता सैन जोड्या वार अनंती, पण रह्या धर्मसें न्यारा रे ॥ भ० ॥ ९ ॥ खाया पीया पहेरया ओढ्या, सब मणगारज कीनो ॥ ठाकर चाकर पद सब पायो, मुनि दरसण नहिं भीनो रे ॥ भ० ॥ १० ॥ पाप सूत्र सब भणीयां सो भिन्न भिन्न, कर्म ध्यान सब धाया ॥ पाप

दान पण दीया घणेरा. सुपात्र दान नहिं चहाया रे ॥ भ० ॥ ११ ॥ तीन वेद पण अनुभविया सारा. सर्व जातिमांहि जायो ॥ सर्व पाखंडसें सरणज कीनां, जैनधर्म नहिं धायो रे ॥ भ० ॥ १२ ॥ जन्म समे गुल दे बालकने, ते गुल मेरु अनंता ॥ भक्षण कीया एक एक प्राणी, भांखे श्री भगवंता रे ॥ भ० ॥ १३ ॥ जैनधर्म विना संपर्ग करिया, भटक्यो सब कुल कोड़ी ॥ बालाग्रमात्र भूमि नहिं राखी, मिथ्या संगति जोड़ी रे ॥ भ० ॥ १४ ॥ धन्ना शालिभद्र भद्र पणासुं, मनमांही एसी विचारी ॥ तिलोकरिख कहे जग छट्टकाई, वेगें वरी शिवनारी रे ॥ भ० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ एकत्वभावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ जमीकंदमें रे जीव जाई उपनो ॥ ए देशी ॥ रे चेतन तुं रे जगमें एकलो, अनुभव दृष्टि विचार ॥ काया माया रे ममता कारमी, कारमो सब परिवार ॥ रे० ॥ १ ॥ वर्णज पांचुं रे गंध दोई वली, आठ फरस रस पांच ॥ जोगज तीनुं रे आठुं करम तिका, जगमें नचावे रे नाच ॥ रे० ॥ २ ॥ कर्मावश कर फस रह्यो प्राणीयो, मोहणी भर्म विशेष ॥ ममता प्रभावें रे चउगतिने विषे, पायो अधिक किलेश ॥ रे० ॥ ३ ॥ जिहां जिहां जायो रे तिहां तिहां एकलो, एकलो परभव जाय ॥ हरि हर इंद्र सुर असुर सहु, मरण समे पछताय ॥ रे० ॥ ४ ॥ रिद्ध नहिं जावे रे साथे प्राणीने. जावे हाथ पसार ॥ निज निज करणी रे फल सब भोगवे, शंका नहिं रे लगार ॥ रे० ॥ ५ ॥ जिम बाजीगर बाजी करे सदा. आवे बहु नर नार ॥ ख्याल मयासुं रे जावे दह दिसे. तिम सहु पुण्य परिवार ॥ रे० ॥ ६ ॥ जिम तरुवर पर आवे पंखीयां, निज निज स्वारथ काम ॥ फल फुल अर्दीया रे सो सब खेचर, जावे हर नर ठाम ॥ रे० ॥ ७ ॥ पाणी विना जिम साछलो दुःख लहे, धर्म विना

तिम जीव ॥ लक्ष चोरासी रे जीवा योनिमें, दुःख यों पायो अतीव ॥ रे० ॥ ८ ॥ इणविध हो सोची रे नमी रायजी, छंडी राज भंडार ॥ तिलोकरिख दाखे रे संजम आदरी, पाया भवजल पार ॥ रे० ॥ ९ ॥

॥ अथ अन्यत्व भावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ पास जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ निज गुण ओलख रे प्राणी, मान मान श्रीजिनजीकी वाणी ॥ निजपणो निजमें रे आणो, परद्रव्य सो अपणा मत जाणो ॥ नि० ॥ १ ॥ सिद्ध स्वरूपज रे तेरो, आंख मीच क्यों करत अंधेरो ॥ कस्तूरी मृगमें रे पावे, दोड दोड निज प्राण गमावे ॥ नि० ॥ २ ॥ तिम मत होवो रे भाई, तुं निरंजन निराकार सदाई ॥ कर्मसुं काया रे बंधी, श्रीजिन आगमसें कही संधी ॥ नि० ॥ ३ ॥ क्यों करे तनने रे मातो, झूठो खोटो ए तन नातो ॥ इणसुं ममता रे टालो, अनुभव करी आतम अजुवालो ॥ नि० ॥ ४ ॥ ए तन तेरो रे नांहिं, या तो जड तुं चेतन सांई ॥ इणसें शंका रे नांइ, ममत कियासुं अधिक दुःख दाई ॥ नि० ॥ ५ ॥ नित नित भाडा रे दीजें, नित नित सार संभाल करीजें ॥ तोही न होवे रे या तेरी, क्यों कहे निरर्थक मेरी या मेरी ॥ नि० ॥ ६ ॥ एकपखी प्रीती रे झूठी, या तो तुझ पर भव भव रूठी ॥ कायासुं ममता रे कारण, क्यों तुं दुःख देवे जीव अपरणे ॥ नि० ॥ ७ ॥ जो जाणे मुझ तणी रे काया, सो तो मूढ गंवार कहाया ॥ इणसुं भव भव रे वीती, दुश्मन प्रीति अंत फजीती ॥ नि० ॥ ८ ॥ मृगापुत्र एह विध रे जाणी, संजम ले गया पद निर्वाणी ॥ तिलोकरिख दाखे रे जाची, ज्ञान दर्शन किरिया सदा साची ॥

॥ अथ अशुचि भावना सज्झाय प्रारंभः

॥ साधुजी सदाहि सुहामणा ॥ ए देशी ॥ देहसुं नेह न कीजीयें, देह अशुचिनुं गेह हो ॥ भविषण ॥ मल मूत्र रुधिर भरी,

रात्रे मूरख जेह हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ १ ॥ माता रुधिर पिता शुक्रनो, कीधो प्रथम आहार हो ॥ भ० ॥ गर्भवेदना सही आकरी, ते जाणे किरतार हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ २ ॥ मास सवा नव झूलीयो, उंधे मुख गर्भवास हो ॥ भ० ॥ जन्म थयो दुःख वीसरयो, भुलि गयो दुःख रास हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ३ ॥ दिन दिन तन मोटो थयो, करे शुश्रूषा अपार हो ॥ भ० ॥ दुगंच्छा आणे अपर तणी, निज उत्पत्ती तो संसार हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ४ ॥ सात धातु इण देहीसें, सात कही उपधात हो ॥ भ० ॥ सातुं मिल निशिदिन झरे. तन ऊपर त्वचा कही सात हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ५ ॥ सातशें सर इणमें सही, तीनसें हाड करंड हो ॥ भ० ॥ वात पित्त कफ दोष जो, अधिक घिनापन भंड हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ६ ॥ सागरजलसुं पखालीयें, तोहि विमल नहिं थाय हो ॥ भ० ॥ मान करण किण कारणें, चर्मकी शोभा देखाय हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ७ ॥ काचा कुंभ तणी उपमा. संझा फूलवो जेम हो ॥ भ० ॥ इंद्र धनुष जल मोतिको. नास होणेको नहिं नेम हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ८ ॥ आहार आधारं ए देह, रोग तणो भंडार हो ॥ भ० ॥ तप जप रत्न संग्रह करो, इणसें एहीज सार हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ९ ॥ जो जाणे शुचि कायने. ते तो मूढ गंवार हो ॥ भ० ॥ चिंतामणि भवहारणो, खावे नरकमांही मार हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ १० ॥ चक्री सनतकुमार जी. जाणी काया असार हो ॥ भ० ॥ तिलोकरिख कहे तप करी, पाया भवजल पार हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ११ ॥

॥ अथ आश्रव भावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ संभव बोल मानो हो ॥ ए देशी ॥ आश्रव करमांको बंध छे, जगजीवने जाणो हो ॥ शुभ अशुभ नय भेद दो. सिद्धांत पहचाणो हो के ॥ सुगुणा आश्रव टालो हो ॥ १ ॥ ए टेक ॥

जिम जलधर सरोवर भरे, तिम कर्मज आवे हो ॥ अथवा नावा छिद्रमें, जल भरीयां डूबावे हो के ॥ सु० ॥ २ ॥ अधिक आश्रव कर्मवधसुं, नरकगति जावे हो ॥ दीर्घस्थितिसु निगोदमें, अनंतकाल गमावे हो के ॥ सु० ॥ ३ ॥ इंद्रिय कषाय अव्रत वली, तीन जोग कहीजें हो ॥ पच्चीश क्रिया भेद जोड़तां, बयालिस लहीजें हो के ॥ सु० ॥ ४ ॥ श्रुतइंद्री वशें मृगला, वनमें मृत्यु पावे हो ॥ नयन वश पतंग सो, निज अंग दजावे हो के ॥ सु० ॥ ५ ॥ घ्राण अली रस माछलो, वश प्राण गमावे हो ॥ स्पर्श वश कुंजर मरे, मन माहिष हणावे हो के ॥ सु० ॥ ६ ॥ एक एक इंद्री वश मरया, जगजीव अनंता हो ॥ जे छेही वशमें पड़या, भवभवमें मरंता हो के ॥ सु० ॥ ७ ॥ होतो सात लव आउखो, तो मोक्ष सिधाता हो ॥ अनुत्तरवासी अव्रतवशें, फिर भव दुःख पाता हो के ॥ सु० ॥ ८ ॥ शुभ आश्रव शुभ जोगथी, पुण्य बंधन जाणो हो ॥ पुण्यानुबंधी पुण्यसो, सुकृत सुख दाणो हो के ॥ सु० ॥ ९ ॥ समुद्रपाल इम जाणीने, छेडी जगमाया हो के ॥ तिलोकरिख कहे धन सो भवि, आश्रव छिटकाया हो के ॥ सु० ॥ १० ॥इति॥

॥ अथ संवरभावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ सोवन सिंहासन रेवती ॥ ए देशी ॥ सार संवर क्रिया आदरो, दादरो ए शिववाट रे ॥ हाट कपाट सम जाणीयें, आश्रव रज देवे दाट रे ॥ सा० ॥ १ ॥ त्याग करी आश्रव नालाने, रोकियें मन वच काय रे ॥ कर्म जाल सो कीये तप करी, धोकियें श्रीजिन राय रे ॥ सा० ॥ २ ॥ अष्ट प्रवचन मत आदरो, जीतो परिसह बावीश रे ॥ धर्म दश विध साधु तणे, भावना बार जगीश रे ॥ सा० ॥ ३ ॥ पंच चारित्र समाचरो, भेद सत्तावन एह रे ॥ अनुभव ज्ञान दिशा करी, जाण संवर सुख

गेह रे ॥ सा० ॥ ४ ॥ संवर अंवर ओडियें, सोधीयें भवदुःख ताप रे ॥ विषय रूप शीत सो लागे नहिं, चिपके नही आश्रव आप रे ॥ सा० ॥ ५ ॥ जीव तलाव जलकर्म ते, आश्रव नालां करो वंध रे ॥ अंध होवो [illegible] मोहसें, ए जिन आगम संध रे ॥ सा० ॥ ६ ॥ वश करो चार कषायनें, छोडदो पंच प्रमाद रे ॥ आदरो शुद्ध समकित क्रिया, मेटजो भर्म अनाद रे ॥ सा० ॥ ७ ॥ श्रीजिन आज्ञा आराधियें, पालीयें संजम भार रे ॥ जन्म मरण विपता टले, उतरो भवजल पार रे ॥ सा० ॥ ८ ॥ एसी भावना मनसें ग्रही, धन हरिकेशी अणगार रे ॥ रिख तिलोक कहे धन जिका धारे संवर सुखकार रे ॥ सा० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ निर्जराभावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ सुरीजन सांभलिजो सव कोय ॥ ए देशी ॥ श्रीजिन मारग ओलखो, कांई निर्जरा भाव विचार ॥ शुके सर जल तापथी, कांइ तिम छिजे कर्मको वार ॥ चतुर नर ॥ अनुभव दृष्टि निहार ॥ ए टेक ॥ १ ॥ देही भाजन जीव घृत छे, कांइ कर्म ते छाछ समान ॥ तप हुताशन भिन्न करे, कांइ हेम कीट इम जाण ॥ च० ॥ २ ॥ ते तप वारे प्रकारनु, कांई अणसण उणोदरी नाम ॥ भिक्षाचरी रस त्यागणो, कांई जाणी निर्जरा ठाम ॥ च० ॥ ३ ॥ काय क्लेश संलीनता, कांई वाह्य तप खट प्रकार ॥ प्रथम प्रायश्चित तप कह्यो, कांई विनय वेयावच्च धार ॥ च० ॥ ४ ॥ सज्झाय ध्यान काउस्सग्ग भलो, कांई ए अभ्यंतर सुविचार ॥ इह लोक पर-लोक किर्ति विना, कांई सो निर्जरा तप सार ॥ च० ॥ ५ ॥ कर्म पहाड भेदण भणी कांई करणी या वज्र समान ॥ पुद्गल ममता त्यागीयें, कांई शुद्ध भाव सुख दान ॥ च० ॥ ६ ॥ क्षण अगनि क्षण नीरसे कुहार स्याणसी जेम ॥ पुण्य पाप

फल भोगवे, कांई दोनुई बंधन तेम ॥ च० ॥ ७ ॥ जिहां लगें मोक्ष न सर्वथा, कांई तिहां लगें निर्जरा जाण ॥ सर्वथा निर्जरा होय तदा, कांई लहीयें पद निर्वाण ॥ च० ॥ ८ ॥ इम जाणी शम दम भावसुं, कांई करी अर्जुन अणगार ॥ तिलोकरिख कहे छमास में, कांई पाया भवजलपार ॥ च० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ लोक स्वभाव तथा लोक संठाण भावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ सुमति सदाई दिलमें धरो ॥ ए देशी ॥ लोक स्वरूप विचारीयें, मूल भेद कह्या तीन ॥ सुग्यानी ॥ ऊर्द्ध अधो तिर्यग् सही, व्यवहार नयें इम चीन ॥ सु० ॥ लो० ॥ १ ॥ ऊर्द्ध शनीचर उपरें, मृदंगके संठाण ॥ सु० ॥ कांईक कम सात राजुनो, दाखीयो त्रिजगभाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ २ ॥ तिणमें कल्प द्वादश कह्या, नव लोकांतिक जाण ॥ सु० ॥ नवग्रिवेक तिण उपरें, पंच छे अनुत्तर विमाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ३ ॥ तीन किल्विर्षी वली तेहमें, बासठ प्रतर ठाण ॥ सु० ॥ लक्ष चोरासीके उपरें, सत्ताणुं सहस्र विमाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ४ ॥ तवीश वली अधिका कह्या, रत्न जडित झलकंत ॥ सु० ॥ तप संजम जिणें आदर्यो, सो सुरगति उपजंत ॥ सु० ॥ लो० ॥ ५ ॥ सर्वार्थसिद्ध विमाणसुं, बारा योजन प्रमाण ॥ सु० ॥ सिद्ध शिला चित्ता छत्र ज्यों, पूरण चंद्र संठाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ॥ ६ ॥ पैंतालिस लक्ष योजन कही, लंबी पहोली सो जाण ॥ सु० ॥ अष्ट योजन जाडी विचें, अर्जुन सुवर्णमय वखाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ७ ॥ योजन भाग चोविशमो, उपरें सिद्ध अनंत ॥ सु० ॥ अनंतसुखां मांही झिल रया, अष्ट कर्म करी अंत ॥ सु० ॥ लो० ॥ ८ ॥ नीचें शनिचरं विमाणनुं, अढारसें योजन जाण ॥ सु० ॥ तिर्छो लोक श्री जिन कह्यो,

झलरीके संठाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ९ ॥ समय क्षेत्र अछे सासतो, लक्ष पेंतालीश मांय ॥ सु० ॥ दीप अढाइ समुद्रसों, भाख्या श्री-जिनराय ॥ सु० ॥ लो० ॥ १० ॥ पंच महाविदेह मांही शाश्वतां, जघन्यपदें जिन वीश ॥ सु० ॥ दोय कोडी केवली कह्या, दोय कोडी सहस्र मुनीश ॥ सु० ॥ लो० ॥ ११ ॥ ते सव प्रणमुं भावसुं, थापे तीरथ चार ॥ सु० ॥ भरत इरवत दश क्षेत्रमें, छ आरानो व्यवहार ॥ सु० ॥ लो० ॥ १२ ॥ अकर्मभूमिनां वली, क्षेत्र कह्या प्रभु त्रीश ॥ सु० ॥ अंतर द्वीप छप्पन अछे. भोगवे पुण्य जगीश ॥ सु० ॥ लो० ॥ १३ ॥ द्वीप असंख्याता बाहिर, सागर पण सुविचार ॥ सु० ॥ जंबूद्वीप पूर्ण चंद्रसो, अवर सो वलयाकार ॥ सु० ॥ लो० ॥ १४ ॥ अधोलोक व्यंतर तले, वेत्रासन सात राज ॥ सु० ॥ सात नरक दुःख दोहिलुं, पाप तणा एह साज ॥ सु० ॥ लो० ॥ १५ ॥ ओगणपचास छे पाथड़ा, सातुंही नरक मिलाय ॥ सु० ॥ नरकवास गिणतां थकां, लाख चोराशी सो थाय ॥ सु० ॥ लो० ॥ १६ ॥ परथम नरक बारे अंतरा, खाली छे उप-रला दोय ॥ सु० ॥ दशमांह दश भवनपति शंका मन राखजो कोय ॥ सु० ॥ लो० ॥ १७ ॥ सात क्रोड भवन तहमें, अधिक बोहोंत्तर लाख ॥ सु० ॥ देव असंख्याता छे तेहमें छे सूत्र तणी साख ॥ सु० ॥ लो० ॥ १८ ॥ धर्माधर्म आकाशास्ति, पुद्गल जीव अने काल ॥ सु० ॥ ए ख्ट द्रव्य सदा लोकमें, दाखी दीनदयाल ॥ सु० ॥ लो० ॥ १९ ॥ जिण सुकृत करणी करी, ते उपन्या शुभठाम ॥ सु० ॥ जिणें दुःकृतपणुं आदर्युं, ते पाया दुःख धाम ॥ सु० ॥ लो० ॥ २० ॥ शिवराज रखि इस भावना, भव्या श्रीवर्द्धमान ॥ सु० ॥ त्रिलोकरिख कहे ध्येयध्यानसुं, लहीयें शिव-पुर थान ॥ सु० ॥ लोक स्वरूप विचारीयें ॥ इति लोक स्वभाव तथा लोक संठाण भावना सज्झाय ॥

॥ अथ बोधबीज भावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ सीमंधर साहिब, दिल वसो ॥ ए देशी ॥ समकित रत्न चिंतामणि, वंछित सुखनी दातारो जी ॥ जतन करी अति राख जो, टालो पंच अतिचारो जी ॥ स० ॥ १ ॥ पुण्यजोगें मानव भव लह्यो, उत्तम कुलमें अवतारो जी ॥ समकित सरधा छे दोहेली, कोथले भरणो वायरो जी ॥ स० ॥ २ ॥ अनंतानुबंधि की चोकडी, मोहणी तीन प्रकारो जी ॥ सातुं प्रकृति उपशमे तदा, उपशम समकित धारो जी ॥ स० ॥ ३ ॥ कांइक क्षय कांइक उपशमे, क्षयोपशम कहे जगभाणो जी ॥ सास्वादन पडता थकांथी, वेदे सो वेदक जाणो जी ॥ स० ॥ ४ ॥ सातुं क्षयथी क्षायिक होवे, दाखी श्रीजिनराया जी ॥ क्षायिक आइ जावे नही, आगम भेद बताया जी ॥ स० ॥ ५ ॥ ए निश्चें समकित तीका, ते तो केवली जाणे जी ॥ छद्मस्थ तो व्यवहारथी, द्रव्य क्रियासुं पहचाणे जी ॥ स० ॥ ६ ॥ देव अरिहंत निर्ग्रंथ गुरु, धर्मजिन आज्ञा प्रमाणो जी ॥ ए तिहुं तत्त्व समाचरे, सो व्यवहार वखाणो जी ॥ स० ॥ ७ ॥ छे आवलिका प्रमाणही, फरसे समकित प्राणी जी ॥ अर्ध पुद्गलमें सो शिव लहे, भांखी केवलनाणी जी ॥ स० ॥ ८ ॥ समकित समकित सब कहे, कठिन छे समकित भावो जी ॥ निश्चय व्यवहार ने ओलखे, तारक भवजल नावो जी ॥ स० ॥ ९ ॥ तप संजम किरिया करे, जो समकित विना कोइ जी ॥ छार उपर जिम लींपणुं, अंक विना शून्य होइ जी ॥ स० ॥ १० ॥ इण कारण सुणो बुध जना, समकित दृढ करी राखो जी ॥ मिथ्या भर्म निवारिने, जो शिवसुख अभिलाखो जी ॥ स० ॥ ११ ॥ मास मास तपस्या करे, कुश अग्र जल आहारो जी ॥ समकित साहित नोकारसी, तुल्य न आवे लगारो जी ॥ स० ॥ १२ ॥ श्रेणिक

कृष्ण नरेश्वर, ऋषभ जिनंदजीका नंदो जी ॥ समकित विशुद्ध प्रभावना, टाल्या भवदुःख फंदा जी ॥ स० ॥ १३ ॥ समकित किया विना जगतमें, नहिं कोई तारणहारी जी ॥ तिलोकरिख कहे इम सद्दहो, जे सुणो नर नारी जी ॥ स० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ अथ धर्म भावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ देशी कडखाकी ॥ सेव नित्यमेव, जैनधर्म सुरतरु सदा, धीरजकी धरती, संतोष पाणी ॥ ज्ञानको बीज, तस मूल समकित किया, कंद विनय स्कंद, दया वखाणी ॥ से० ॥ १ ॥ सत्य शाखा सहा, सेद प्रतिशाख नम, मधुर वचन दल, अधिक सोहे ॥ कुसुम शुभध्यानके, कीर्तिसौरभ्य अति, मोक्ष फल मधुर सुख, स्वाद सोहे ॥ से० ॥ २ ॥ चिदानंद पर्था, सुखानंद छायमें, निजानंद पणेथिर, भाव सेरी ॥ कषाय भव ताप, संताप दूरे हटे, बलिहारी ए कल्पतरु, धर्म केरी ॥ से० ॥ ३ ॥ एह संसारमें, धर्म आचारथी, रिद्धि सिद्धि संपदा, अनंत पाया ॥ बापडा जीव केइ, भर्म कर्मवशें, कल्पवृक्ष छोडी, बांबुल लोभाया ॥ से० ॥ ४ ॥ केइ हिंसा करे, पाप पिंडज भरे, दयाधर्म उपरें, द्वेष राखे ॥ भर्मिष्ट कुगुरु तणा, कर्म बांधे घणा, राज परे निजशिरें धूल नाखे ॥ से० ॥ ५ ॥ हार नर भव करे, क्षार चिंतामणि, सो स्नेह परवशें, खत्र धारा ॥ विश्वमें चउगति, जीव जे दुर्मति, धारे नहिं धर्मके, धिक् गिमारा ॥ से० ॥ ६ ॥ धर्म विन स्वरण नहिं, धर्म विन तरण नहिं, धर्म विना नहिं कछु, सुखदाता ॥ मात पिता सुत, भ्रात धन धान वित्त, मरण वेदनी समे, नहिं हे त्राता ॥ से० ॥ ७ ॥ दौड रे दौड, जैनधर्म तरु ग्रहणकुं, छोड रे छोड, भवताप नांहे ॥ दौड रे पोर तुं, उपशम छायमें, टाढ रे टाढ ए कुख दाहे ॥ से० ॥ ८ ॥ अटक दे जटक दे, कर्मकी रेणुका, पटक दे पटक दे, पाप भारा ॥

हटक दे हटक दे, जोग विपरीत पण, गटक ले धर्म, अमृत आहारो ॥ से० ॥ ९ ॥ गाल रे गाल, अष्टमद त्रिहुंगर्वने, टाल रे टाल, प्रमाद घांटी ॥ पाल रे पाल, छकाय प्रतिपाल तू, वाल रे वाल कुभर्म टाटी ॥ से० ॥ १० ॥ दया उपरांत नहिं, धर्म कोई जगत में, ग्यानको सार, एहीज वखाणी ॥ दया रुचि विना, सर्व किरिया वृथा, कंत विन कामा ज्यों, वल्लु थाणी ॥ से० ॥ ११ ॥ साठ नामें करी, सूत्रमें वर्णवी, दया भगवती अति, सुख दाणी ॥ धर्म रुची मुनि. देह ममता तजी, किडियां परें करुणा सो, अधिक आणी ॥ से० ॥ १२ ॥ कडुवा तुंबा तणो, आहार अमृत समो, कर लियो सम, परिणामें स्वामी ॥ तीक्षण वेदना, खेद नहिं आण मना, सर्वार्थ सिद्ध लही, मोक्ष पामी ॥ से० ॥ १३ ॥ मात मरुदेवी, सेवी जिन धर्मके, भाव चारित्र करी, कर्म घाया ॥ ध्यान शुकल धर्यो, ज्ञान केवल वर्यो, होय अजोगी, मुक्ति सिधाया ॥ से० ॥ १४ ॥ धर्म परभावना, जो कोई भावशा, पावशा सो शिव, गढ निःशंका ॥ रिखतिलोक कहे, धर्म परभावथी, इह भवें परभवें, जीत डंका ॥ से० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ तेरे काठियानी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ श्रीजिनमारग पाईजी कमाई कीजो धर्मनी, कांई तेरे काठीया टाल ॥ ए आंकणी ॥ प्रथम आलस जाणोजी दारिद्र मूल पिछाणिये, कांई धरम करणकी जेज ॥ हाल वखत छे नाहिं जी सामायिक पोसा वखाणकी, कांई काल गमावे सेज ॥ श्री० ॥ १ ॥ मात पिता सुत भाईजी कायाने साथ कारमी, कांई भोग्यो ने जिनराज ॥ निगमे ममता बांधेजी नहीं साधे आतम काजने, कांई मोह काठियो दुःखदाय ॥ श्री० ॥ २ ॥ देव गुरु धर्म तांईजी कम्याट राखे जीवडो, कांई लोक वडाई गीत ॥ नरके नाई वोल्याजी नहिं

तोले हिरदे न्यावनें. कांइ अविनय विपरीत ॥ श्री० ॥ ३ ॥ जाणे सें हुं शाहाणो जी अकल बलरूपे जातिमें, कांइ सघलामें शिरदार ॥ परनी करे बुराइजी वडाइ करे आपनी. कांइ राखे मन अहंकार ॥ श्री० ॥ ४ ॥ कोइक देवे तुंकारोजी देवे शिक्षाधर्मनी, कांइ आणे अधिको क्रोध ॥ लालनेत्र करी बोले जी वली बोले मर्मज पारका. कांइ होवे धर्मविरोध ॥ श्री० ॥ ५ ॥ प्रमाद घणो अंग छावे जी नहिं भावे धर्मनी वातडी. कांइ समरे नहिं नवकार ॥ नरभव एल गमावे जी नहिं चहावे जप तप साधना. कांइ धिक तिणरो अवतार ॥ श्री० ॥ ६ ॥ पाप करी धन जोडे जी जीवे दोडे देश प्रदेशमें. कांइ तृष्णा अपरंपार ॥ घर छोड्यो नहिं जावे जी किम थावे धर्म तिण जीवसुं. कांइ लोभ महादुःखकार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ सिंह सर्प सुर दणो जी वली घरको खर्च निभावणो, कांइ डर आणे मनमांय ॥ धर्म किसविध थाये जी नहिं लावे धीरजता हिये. कांइ साचो ज्ञान लगाय ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इष्ट तणो संजोगो जी विजोगज होवे इष्टनो. कांइ रागादिक तनमांय ॥ शोक घणेरो लावे जी घबरावे निशदिन प्राणियो. कांइ पासे धर्म अंतराय ॥ श्री० ॥ ९ ॥ जीव अजीव नहिं जाणे जी वली समझे नहिं पुण्यपापसें, कांइ लीनो श्रीजिनधर्म ॥ अज्ञान पणामें गचे जी वली खांचे खोटी रूढीने. कांइ अधिका बांधे कर्म ॥ श्री० ॥ १० ॥ विकथा करे पराइ जी कमाइ टोटा खरचकी, कांइ काम भोग अधिकार ॥ हाथ कांइ नहिं आवे जी गमावे निजगुण जीवडा. कांइ भटके अनंत संसार ॥ श्री० ॥ ११ ॥ देखे ख्याल तमाशाजी वली बोले सारा हांसीनी. कांइ करे कुतूहल वात ॥ लाभ घणो नहीं खोवेजी विगोवे भव चिंतामणी. कांइ लावे धर्मकी घात ॥ श्री० ॥ १२ ॥ निशदिन निशदिन खाणोजी वखाणो ताणो खेलणो. कांइ नहाणो धोणो अंग ॥ तिणमें काल गमावेजी

नहिं ध्यावे श्री जगदीशनें, कांइ होय धर्मसे भंग ॥ श्री० ॥ १३ ॥ काठीया ए दुःखदायी जी लागा छे संग अनादिका, कांइ धर्म रतनका चोर ॥ इणसुं बहु दुःख पाया जी नहिं आयो नेडो धर्मने, कांइ कीधो कर्म कठोर ॥ श्री० ॥ १४ ॥ उगणीसें गुण चालिशजी वदि मास आसाढतिथि चोथमें, कांइ पूना शहेर मझार ॥ तिलोकरिख कहे टालो जी ए काठिया तेरे भावशुं, कांइ उतरो भवजल पार ॥ श्री० ॥ १५ ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ ग्रंथानुसारसें एकसोबत्तीशबोल अथवा कर्मविपाक माला सज्झाय प्रारंभः॥

॥ देशी चलत चालमें ॥ चिंतामणि सम नर भव पाइ, निरर्थक जनम गमावेगा ॥ नानाविध जीव करम करीने, नानाविध दुःख ठावेगा ॥ सुण भाइ रे उदे भयां पछतावेगा ॥ सुण भाइरे तेरा किया तुंही पावेगा ॥ १ ॥ फूलबीजके बिंद बिंदके, गजराहार बणावेगा ॥ इण करणीथी परभवमांइ, एक नेत्र नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ २ ॥ त्रस थावर प्राणीने जो तुं, जलके मांही डुबावेगा ॥ इण करतबसें परभवमांइ, जनम अंधपण आवेगा ॥ सु० ॥ ३ ॥ माखी मालका छाता तोडे, धूवे करीने घबरावेगा ॥ इण पातकसूं ते परभवमें, आंधा बहेरा थावेगा ॥ सु० ॥ ४ ॥ रूप रंग देखी तिरियाको, खोटी दृष्टि लगावेगा ॥ सतगुरु देखी होवे दुमणो, जलमल तो ताम दिखावेगा ॥ सु० ॥ ५ ॥ एकेंद्रिय जीवांको कर जो चूरण, सलिया धान्य पिसावेगा ॥ इण अनर्थसुं परभवमांइ, कुबडा पणो सो पावेगा ॥ सु० ॥ ६ ॥ बैल घोडादिक चोपद उपर, अधिको भार भरावेगा ॥ चांदी पडिया पण नहिं छोडे, गडगुंबड अंग आवेगा ॥ सु० ॥ ७ ॥ पंखेरूकी पांख उखाडे, वृक्षकी डाल कटावेगा ॥ इण करणीसूं परभवमांही, टूटा पग हो जावेगा ॥ सु०

॥ ८ ॥ एकेंद्रियकी जड़ उखाड़े. पशु जीव संतावेगा ॥ छते मारग लीलोतरी चांपे. पंगुला पग हो जावेगा ॥ सु० ॥ ९ ॥ संजमी शीलवंत जन केरी, निंदा कर हरखावेगा ॥ इण करणीसूं परभव मांही, गुंगो बोबडो थावे ॥ सु० ॥ १० ॥ करे वैदक औषध मात्रा. हिंसा करि निपजावेगा ॥ इणकरणीसूं परभवमांड, खोजापण सो पावेगा ॥ सु० ॥ ११ ॥ वनस्पतिको छेदन भेदन, हाथसूं कर पोसावेगा ॥ इण करणीसूं परभव प्राणी, वहेरो पांगुलो थावेगा ॥ सु० ॥ १२ ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, जिनका अवगुण गावेगा ॥ इण करणीसूं परभव मांड, गुंगो वहेरो हो जावेगा ॥ सु० ॥ १३ ॥ हिरण्य सुवर्णादिक धातु जे, जिनका आगर खोदावेगा ॥ इण अनरथसूं परभवमांही, गलत कोढ अंग आवेगा ॥ सु० ॥ १४ ॥ सावद्य औषध सेजज केरो, अधिको संजोग मिलावेगा ॥ तिणसूं जस करतां पर उपर, अपजस कमावेगा ॥ सु० ॥ १५ ॥ खारी लूणका आगर खोदावे, लूणको विणज करावेगा ॥ इण करणीसूं परभवमांहे, आंख वावणी थावेगा ॥ सु० ॥ १६ ॥ सौम्य सुंदर नेत्र जे परनां, रूपथी मंद कर देवेगा ॥ तिनकरणीसूं परभवमांहिं, आंख मांजरी रहवेगा ॥ सु० ॥ १७ ॥ म्होटी काया देखि आपणी, अहंकार मन लावेगा ॥ इण करणी सूं परभवमांही, वावनी काया पावेगा ॥ सु० ॥ १८ ॥ डंड आकरो करे औरकूं, अधिको त्रास बनावेगा ॥ इण करणीसूं परभव मांही. रुंड मुंड अंग थावेगा ॥ सु० ॥ १९ ॥ पंचेंद्रिय जीव हणे निज हाथे. मुखसूं अधिक सरावेगा ॥ तिणकरणीसें परभवमांही. रोग भगंदर थावेगा ॥ सु० ॥ २० ॥ दुसराके धन आतो देखी, बीच अनराय लगावेगा ॥ तिण कर्मे धन इच्छा राखे, पण लक्ष्मी नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ २१ ॥ तीव्रभावे मैथुन सेव्यां, पथरीका रोगज आवेगा ॥ कांटाने विंधि माछला मारे. कंठमाल रोग थावेगा

॥ सु० ॥ २२ ॥ धूणी घाली जीव संतावे, हरस रोग दुःख आवेगा ॥ जुवारा वोवे वेलडी तोडे, लाल वहू पड़जावेगा ॥ सु० ॥ २३ ॥ लांच लेइने झूठू बोले, सच्चाकूं घवरावेगा ॥ तिणसूं रोग घणो दुःख अंगमें, लोकक नहिं देखावेगा ॥ सु० ॥ २४ ॥ कृतघ्न पणुं कपट घणेरो, मित्रसूं छलपणु लावेगा ॥ तिणसूं सुख संजोग मिलावे, विजोग आय पड़ जावेगा ॥ सु० ॥ २५ ॥ फल तोड़ी दोरामें प्रोइ, अधिको रूप दिखावेगा ॥ इण करणीसें परभवमांहि, खोटो वर्णज पावेगा ॥ सु० ॥ २६ ॥ कूवा वावड़ी सरवर जलका, बणावे पाल फोड़ावेगा ॥ इण करतव्यसें परभवमांइ, रोग पाठाको आवेगा ॥ सु० ॥ २७ ॥ कोटवालको करम करे कोइ बहोत प्राणी डर पावेगा ॥ तिणसूं डरपगपणो घणो अंगमें, भार घणेरी पावेगा ॥ सु० ॥ २८ ॥ जूं मांकड़ादिक त्रेंद्रिय प्राणी, तावड़े नाखीने धावेगा ॥ तिणसूं खाज फूरणी अंगमें, पीड़ा अधिकी थावेगा ॥ सु० ॥ २९ ॥ क्रोध घणेरो करे और पर, झूठा आल लगावेगा ॥ तिणसूं मिथ्या सरधा करकें, झूठी बात जमावेगा ॥ सु० ॥ ३० ॥ घृत तेल मधु आदिकका वासण, उघाड़ा राखे रखावेगा ॥ सूत्र भणावे करे वेयावच्च, उलटा सो अवगुण गावेगा ॥ सु० ॥ ३१ ॥ कपट करिने परधन लेवे, मांगे तव नट जावेगा ॥ तिण करणीसूं परभवमांहे, स्त्री नपुंसक थावेगा ॥ सु० ॥ ३२ ॥ पृथवीको करे खांडण पीसण, आरंभ अधिक करावेगा ॥ तिण करणीसूं होवे कोढ़ीयो, भव भव गोता खावेगा ॥ सु० ॥ ३३ ॥ माछलाको करे आहार घणेरो, जुवा अधिक संतावेगा ॥ तप जप मद करे तिण करमें, तप अंतरायज आवेगा ॥ सु० ॥ ३४ ॥ अविश्वासी कृतघन दुष्टी, मित्रद्रोही पणो लावेगा ॥ ज्ञान ध्यान तप जप करे बहुलो, पण परने नहिं सुवावेगा ॥ सु० ३५ ॥ वचन कला मधुरता बोली, जिणको गर्भेज लावेगा

॥ तिणसें परभवमांही वचन सो, परकूं नहिं सुहावेगा ॥ सु० ॥ ३६ ॥ रूपको मद कर मनमांही, रूप भयंकर पावेगा ॥ कूडा कलंक देवे परजनकूं, खोटा आलज आवेगा ॥ सु० ॥ ३७ ॥ भाइ भोजाइ देराणी जेठाणी, सासूकी इर्ष्या लावेगा ॥ तिण करणीसें परभव मांहे, अणाकिधो अपजस आवेगा ॥ सु० ॥ ३८ ॥ आपणी थापे परकी उथापे,वे भरोसो मन लावेगा ॥ तिण करसें जिहां बेठ रहेवे, अणआदर पणुं आवेगा ॥ सु० ॥ ३९ ॥ लालच लोभ जो राखे घणेरो, क्रोध हिये नहिं मावेगा ॥ परका लाभमें धक्को देवे. अलाभपणो तस थावेगा ॥ सु० ॥ ४० ॥ मुंदा सुंदी फांसी देवे, परप्राणनि धावेगा ॥ हीणा शब्द अटकती बोली बोलतां अति घबरावेगा ॥ सु० ॥ ४१ ॥ सुस्वर कंटको गर्व कियासें. कराइ करावेगा ॥ निर्वेद मीठी वाणी बोल्यांथी, सुस्वर शब्द सुहावेगा ॥ सु० ॥ ४२ ॥ तीव्रभावें मांस भक्षणथी, इंद्रिय बलहीण पावेगा ॥ तीव्रभावें मद्य पीयांथी, निंद्रा घणी संतावेगा ॥ सु० ॥ ४३ ॥ संजोगतणो विजोग पाड्यांथी, वंछित वस्तु न पावेगा ॥ कूकडादिक मांस भक्षणसेती, तनशक्ति घट जावेगा ॥ सु० ॥ ४४ ॥ भाखमीमांही रूंधी प्राणी, उपर ग्वार भुरकावेगा ॥ इण करणीसें परभवमांही सुको बोलो थावेगा ॥ सु० ॥ ४५ ॥ अनंतकाय कंद मूल भक्षणथी. रोगा घणाज आवेगा ॥ असन्नी पंचेंद्रिय जीव हण्यांथी. हांसी नहिं समावेगा ॥ सु० ॥ ४६ ॥ तरुण पंचेंद्रिय मनुष्य घातसें, साधुने नहिं सुहावेगा ॥ विकलेंद्रियकी विराधना कीधां, सज्जनने नहिं सुहावेगा ॥ सु० ॥ ४७ ॥ प्रेम धरीने भोग भोगव्या, जोबनमें नार मर जावेगा ॥ स्त्री पुरुष संजोग मिलायां, नारी पुरुष मर जावेगा ॥ सु० ॥ ४८ ॥ दारु पियांथी दुर्गंध प्रसवे, कुडी साख भरावेगा ॥ काम करे सब चित्त लगाई, परने प्रतीत न आवेगा ॥ सु० ॥ ४९ ॥ दान पुण्य

दया नहिं पाले, दारिद्रपणो तस आवेगा ॥ देव गुरु धर्म खोटा सरध्या, प्रिय कुटुंब मरजावेगा ॥ सु० ॥ ५० ॥ गुणसीत्तर कोड़ा कोड़ी सागर, मोहणी थिति क्षय जावेगा ॥ तव इण चेतनकूं अंतसमें, धर्म करण मन थावेगा ॥ सु० ॥ ५१ ॥ एक कोड़ी सागर उपर, मोहणी थिति बढ जावेगा ॥ तव उण प्राणीने धर्म ध्यानकी, किंचित्त रुचि नहिं आवेगा ॥ सु० ॥ ५२ ॥ तीव्रभावें कुशील सेवावे, मनमें अधिक हर्षावेगा ॥ तिणसूं परधन संपति देखी, निःश्वास नाखि मरजावेगा ॥ सु० ॥ ५३ ॥ निलिका कुंड करावे तिण कर्मे, छमोछम थानकमें जावेगा ॥ शिलावट कर्म तिणकर्मे, रक्तापित्त कीड़ा पड़ जावेगा ॥ सु० ॥ ५४ ॥ खेत्र खेड़ावे हल हंकावे, क्षुधा घणी उपजावेगा ॥ लीला झाड़की डाली कटायां, आंगुलि ओछी पावेगा ॥ सु० ॥ ५५ ॥ रंगरेज पणाका कर्म कियांथी, बोलतां जीभ अटक जावेगा ॥ लुहार कर्म वली तीव्र रोषसूं, मृगीको झोलो आवेगा ॥ सु० ॥ ५६ ॥ गोबर सड़ावे उकरडी बंधावे, छाणां थापे थपावेगा ॥ थूक लाल चुवे मुखसेंती, मुख दुर्गंध भभकावेगा ॥ सु० ॥ ५७ ॥ मात्रामांही करे मातरो, पायखानामें दिसा जावेगा ॥ तिणसूं नदी समुद्रमांही, अचकं नाव डूब जावेगा ॥ सु० ॥ ५८ ॥ पायखानां झाड़े तिण कर्मे, बाल मरण मन चावेगा ॥ निवाण सुकावे तिणसूं नाकको, खेल मुंढामें आवेगा ॥ सु० ॥ ५९ ॥ शुल्या धान्य सेकावे भिंजावे, लिपणे रोगी थावेगा ॥ झूठा सोगन खाया पृथवीमें, ओछे आउखे जावेगा ॥ सु० ॥ ६० ॥ हांसीमें झूठो वचन बोले, झूठोइज आल लगावेगा ओछे आउखे प्राणीमांही, उपजी बहु दुःख पावेगा ॥ सु० ॥ ६१ ॥ वनकाटी जे करावे प्राणीं, कृत नपुंसक थावेगा ॥ कपास लोढावे घाणी करावे, सो वेश्याभव पावेगा ॥ सु० ॥ ६२ ॥ नरम वनस्पति फल फूलादिक, जो कोइ चूंटे

चूंटावेगा ॥ जोवन में धोला केसज आवे दांत दाढ झट जावेगा ॥ सु० ॥ ६३ ॥ फलचोरि सगालो आगिमांइ. भड़नीगल गुंवड़ा थावेगा ॥घणा दिवसको ब्रणी नपावे, दासी भवमांही सिधावेगा ॥ सु० ॥ ६४ ॥ कसाइपणां कर्म कियांथी नासुर तन पड़ जावेगा ॥ रसोइदार का पाप प्रभावें, अन्न करतां बूराइ थावेगा ॥ सु० ॥ ६५ ॥ थोडो अपराधी नर के तिण पर, खार ल्रण भुरकावेगा ॥ कीडीनांगरा उपजे तिण करसें. अधिक दुःख घवरावेगा ॥ सु० ॥ ६६ ॥ बाग वाड़ी वगीचा वणाइ. फल फुलादिक तोड़ावेगा ॥ स्त्रीपणाका भवके मांहि, योनिशूल अंग थावेगा ॥ सु० ॥ ६७ ॥ फल चोरीने करे अथाणो, कुल्लण जीव सतावेगा ॥ तपस्या करे घणी दुःकर कारी, लोक प्रतीत न लावेगा ॥ सु० ॥ ६८ ॥ हरिया फल मंगाइने छेदे. दया घटसें नहिं लावेगा ॥ तिणसूं वस्तु चोरीने दूजो. उण उपर आल लगावेगा ॥ सु० ॥ ६९ ॥ सांटा पिलावे नगरने बाले. नोलो रोग समकाल आवेगा ॥ कसाइ कर्मका हांसल लेवे, तो गर्भमें आडे कटावेगा ॥ ॥ सु० ॥ ७० ॥ झूठो आल देवे साधु ने. असूजतो आहार वहोरावेगा ॥ ओछे आउखे नरभव पाइ. गर्भमांही गल जावेगा ॥ सु० ॥ ७१ ॥ आखो रातको नाखो भेलो, कारिने फेर टालावेगा ॥ तिणसूं छोड़पणे नारीभवसें. बाल वर्ष रह जावेगा ॥ सु० ॥ ७२ ॥ फुलमाला करावे कोइ, अंगपर मर्दन करावेगा ॥ नवत रोग उपजे तिण कर्मे. वलन वकन उठ जावेगा ॥ सु० ॥ ७३ ॥ किंचित् पुण्यकी करणी थोरे. लोनाका आगर करावेगा ॥ धनवंतके घर जनम पायके. भीख मांग कर खावेगा ॥ सु० ॥ ७४ ॥ तीव्र भावे मैथुन सेवे. दूजाने ताळ लगावेगा ॥ छोड़ मर्ग ने छोड़में उपजे. चोरासि वर्ष दुःख पावेगा ॥ सु० ॥ ७५ ॥ नानाविधका फूल तोड़ांथी, वेसा नारी थावेगा ॥ उगता अंकुर जो

कोइ चूंटे, मतबंझा सो कहावेगा ॥ सु० ॥ ७६ ॥ बीजकी मिंझी कढाइ शेके, निर्बीज पुरुष सो थावेगा ॥ हलालखोरका कर्म कियां सूं, चोर जूगारी थावेगा ॥ सु० ॥ ७७ ॥ वनस्पतिको सिरको करावे, आप पियो पर पावेगा ॥ अनेक स्त्री परणें तो पण, सकल बंझा रहजावेगा ॥ सु० ॥ ७८ ॥ बकरा भैंसादिक चौपद मारे, गलफांसी सो पावेगा ॥ तरुण वनस्पति छेदन कियां, जन्म मरण दोइ साथें आवेगा ॥ सु० ॥ ७९ ॥ उगती कूंपल तोडे तोडावे, मुखसूं अधिक सरावेगा ॥ तिणपातकथी बालपणामें, मात पिता मरजावेगा ॥ सु० ॥ ८० ॥ दान तणी अंतराय जे देवे, मरमकी बात दरसावेगा ॥ मुनि पडिलाभणकी घणी इच्छा, अंतराय रहे जावेगा ॥ सु० ॥ ८१ ॥ सोनारकी धमण धमावे तिणसूं, रोग जलोदर थावेगा ॥ गर्भ पाडिने छानो राखे, गेब धसकें मरजावेगा ॥ सु० ॥ ८२ ॥ अनंतकाय कंद मूलकों छेदी, जिणका चूरण करावेगा ॥ धन संपत पाइने ते नर, चोरंगीयो हुइ जावेगा ॥ सु० ॥ ८३ ॥ उलट परिणामें दान देइने, फिर पाछें पछतावेगा ॥ धन संपत्तको लाभ घणेरो, भोग अंतराय बंध जावेगा ॥ सु० ॥ ८४ ॥ हिंसा करे झूठ मुख बोले, मुनिका अवगुण गावेगा ॥ लंबो आउखो रहे दरिद्री, झूर झूरने मर जावेगा ॥ सु० ॥ ८५ ॥ देव गुरु धर्मशास्त्र उथापे, निंदा कर हरखावेगा ॥ सो किल्विषी हूइ होयगा बक्कर, जैनधर्म नाहिं पावेगा ॥ सु० ॥ ८६ ॥ ज्ञानको वैरी निंदक, द्वेषी, आशातना अंतराय लगावेगा ॥ तिणसूं ज्ञानावरणी बंधना, ज्ञान कवहु नहीं आवेगा ॥ सु० ॥ ८७ ॥ दर्शनवंतको वैरी निंदक, न्याय अन्याय बतावेगा ॥ दर्शनावरणी बंधनेंसती, नव प्रकृति उपजावेगा ॥ सु० ॥ ८८ ॥ दान शियल तप भाव क्षमा गुण, परजीवने शाता उपजावेगा ॥ तिणसूं इणभव, परभवमांहे, शाता वेदनी पावेगा ॥ सु० ॥ ८९ ॥ धाडा पाडे करे परनिंदा,

परप्राणी संतावेगा ॥ तिणसूं इणभव परभव मांही, अशाता वेदनी आवेगा ॥ सु० ॥ ९० ॥ देव गुरु संघ सूत्र धरमकी, निंदा कर हरखावेगा ॥ दर्शनमोहनी बंधे जिणसें, जैनधर्म नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ ९१ ॥ तीव्रकषाय हिंसादिक कर्तव्य, पोतें करिने सो करावेगा ॥ चारित्र मोहणी बंध पड्यांथी, संजम पद धसकावेगा ॥ सु० ॥ ९२ ॥ पंचेंद्रिय घात करे आहार मांसको, आरंभ परिग्रह बढ़ावेगा ॥ ए चारों बोल धारीयांथी चेतन, नरकगति दुःख पावेगा ॥ सु० ॥ ९३ ॥ माया गुढ माया मृषावाणी, तोला मापा खोटा चलावेगा ॥ ए चारी बोले सो परभवमें, तिर्यंच गति दुःख आवेगा ॥ सु० ॥ ९४ ॥ भद्रिक परिणामी सरल स्वभाविक, विनीतपणे दया लावेगा ॥ ए चारी बोले मनुष्यमें उपजे, पुण्यथकी रिद्ध पावेगा ॥ सु० ॥ ९५ ॥ अज्ञान कष्ट अकाम निर्जरा, साधु श्रावकपणो ठावेगा ॥ ए चारी बोले पुण्य संचके, देवगति में जावेगा ॥ सु० ॥ ९६ ॥ जिनमारग रागी दया परीणामी, शिवपुर पदवी चहावेगा ॥ ए तिहूं बोले नाम कर्मसुं, बंधणथी सुख पावेगा ॥ सु० ॥ ९७ ॥ मिथ्या उपदेशें दान न देवे, धर्म दाय नही आवेगा ॥ इत्यादिक अनुभव परिणामें, अशुभ नाम बंध जावेगा ॥ सु० ॥ ९८ ॥ जाति कुलादिक आठ मद कियां, नीचवस्तु सो पावेगा ॥ मद त्यागयांथी ऊंच गोत्रको, बंधण ऊंच सो थावेगा ॥ सु० ॥ ९९ ॥ दान लाभ अंतराय पांचसो, दियांथी अंतराय रह जावेगा ॥ अंतराय तोड्यां वस्तु मिले सो, सुख संपत्त रिद्ध आवेगा ॥ सु० ॥ १०० ॥ भाद्रिक भाव वली अल्पआरंभी, माइतकी भक्ति मनावेगा ॥ तिण करमसूं ओ नर मरिने, युगलीया मनुष्यमें जावेगा ॥ सु० ॥ १०१ ॥ देव गुरु शुद्ध धर्म आराधी, उत्कृष्ट भाव चढ जावेगा ॥ गोत्र तीर्थंकर बंध पड़ियासूं, त्रिजग पूजनिक सो आवेगा ॥ सु० ॥ १०२ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्तर तपस्या, करके

घनघातिक थावेगा ॥ केवलज्ञान ने केवल दरिसण, सब जग जाणक थावेगा ॥ सु० ॥ १०३ ॥ मन वचन काया त्रिजोग रोकके, शैलेशी परिणाम चढावेगा ॥ अजर अमर अविकार, निरंजन सिद्धकी पदवी आवेगा ॥ सु० ॥ १०४ ॥ जैसा जैसा कर्म करेगा, तैसा तैसा पावेगा ॥ मात पिता धन कुटुंब कबीला, पांत कोइ न पड़ावेगा ॥ सु० ॥ १०५ ॥ हलूकर्मी भवि प्राणी जिन के, जिणवाणी हिए सुहावेगा ॥ भारीकर्मी अनंत संसारी, हांसीमें बात उड़ावेगा ॥ सु० ॥ १०६ ॥ कर्मविपाक सुण सरधे कोइ, पाप कर्म घटावेगा ॥ तिलोकरिख कहे सो भवि प्राणी, अजर अमर पद पावेगा ॥ सु० ॥ १०७ ॥ कलश ॥ उगणीशें गुण चालीशवर्षे, माघशुकल त्रयोदशी ॥ देश दक्षिण पेठ मनचर, सूत्रवाणी शशितम वसी ॥ एकसो बत्तीस बोले नीरणो, करी तिलोकरिख कहे ॥ धन जिनागम आराधतो लहे, शिवासिरी निँ श्री लहे ॥ १ ॥ इति कर्म विपाकमाला सज्झाय संपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेश सवैया, गाम उपर लिख्यते ॥

अमदानगर पाई, करज गाम जावे मती, कूडगाम वसियासुं, तले गाम जावेगा ॥ रस्तापुर वासी तुं तो, हियडामें सोच कर, सो नई विचारेगा तो बेलापुर पावेगा ॥ कांगुणीके काज तुं तो, फिरत लाखण गाम, पुना विना कोरे गाम, छडा होय जावेगा ॥ कहत तिलोक तुं तो, सदरको पंथ धार, वाकी कीजो वाट, लिया धुले गाम आवेगा ॥ १ ॥ राय गाम छोड़ मती, लाम गाम दुर राख, जाम गाम लिया विना, घुमरी लगावेगा ॥ देव गढ चहाय करो, छोड़ दे वाबल वाड़ो, भाण गाम सोध कर, निरालो सिधावेगा ॥ मनवाड़ कर ले तो, कोल गाम वास मिले, घाटसरस मिल्यो तोय, जाते पछतावेगा ॥ कहत है तिलोकरिख, सांइ खेडो ध्यान कर, कुंदेवाड़ी छोड़ कर, समपुरी पावेगा ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ चउद नियम सज्झाय प्रारंभः ॥

श्रीसिद्धचक्रजीने पूजो रे, जिनमारग जाणो ॥ सुधो ज्ञान विचारो, जासूं जनम सुधारो ॥ चउदे नियम चितारो, संवरमारग धारो रे भविका, चउद नियम चितारो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ श्रीजिनमारग तारक जगमें, अनुभवज्ञान विचारो ॥ जो संयमपदकी नहीं शक्ति, तो निरर्थक पाप निवारो रे भविका ॥ च० ॥ सं० ॥ २ ॥ लूण पाणी हरि बीजादिक वस्तु, सचित्त होवे जो कोइ ॥ तिनरी मर्यादा संख्या करी लीजें, तृष्णा रोक्यां सुख होइ रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ ३ ॥ स्वाद वले सो अलग द्रव्य लेखो, रोटी पुरीदिक जाणो ॥ सचित्त अचित्त दोइ अणगणतीमें. उपरांतर पच्चक्खाणो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ ४ ॥ दूध दही घी तेल गोल संकर, पांच विगय परमाणो ॥ धार विगय खंद दो भेद इणसें, इच्छा रोक व्रत ठाणो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ ५ ॥ पगरखी मोजा पावडी आदिक, तीकी मरजादा कीजें ॥ आपकी परकी गणती करीजें, अधिकी नही पहेरीजे रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ ६ ॥ लूंग इलाइची पान सुपारी खावे मुख शोधन काजे ॥ तेल तंबोलकी संख्या करीजे, उपरांत नहीं खाजे रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ ७ ॥ पहरण ओढन कारण वस्त्र, शिरपाव संख्या करीजे ॥ कारण विशेषें जो संगटो लागे, सोचिने त्याग करीजे रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ ८ ॥ जाइ जुइ आदिक फुलसुगंधी, अत्तर विविध प्रकारो ॥ इच्छा उपरांतका त्याग करीजे, भांगा कारण विचारो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ ९ ॥ बैल घोडा रथ दंती पालखी, इत्यादिक वाहन कांइ ॥ गिणती संख्या करो स्ववश, धारजो व्रतविध जोइ रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ १० ॥ खाट पाट पाटला चौकी, सुवो बैठो बीछावो ॥ ते सज्यानी संख्या करवी मनमें, अधिका त न लगावो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ ११ ॥ केशर चंदन कुंकु आदिक जे, विलेपणमें गणाइ ॥ गिनती कीजें मन

तृष्णाको, विरथा अवर टालो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ १२ ॥ दिवस तथा निशिपेरकी संख्या, त्यागो कुशील नर नारी ॥ औरदिन त्याग करो मन भाखे, विरथा पाप टालो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं०॥ १३ ॥ उंची नीची तिरछीदिशि करी, कर परिमाण सीयाणो ॥ पांच आश्रव त्याग कर लीजो, पालो श्रीजिन आणो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ १४ ॥ हाथ पाव मुख धोवणसो, देश स्नान कहावे ॥ सबस्नान सरब अंगधोवण, त्याग करी सुख होइ रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ १५ ॥ भोजन पाणीका वजनकी संख्या, उनमानसु त्याग करिये ॥ मनशुद्ध राखो निर्मल पालो, अविरतिशुं अति डरीये रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ १६ ॥ इणविध नित सांज सवेरे, आदि करो नित्य त्यागो ॥ नाम नेम प्रमाद छोड़ीने, मोहनिंद्राथकी जागो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ १७ ॥ उगणीसें गुणचालीश फागण, शुकल पख छठ जाणो ॥ तिलोकरिख कहे जिन आण आराधो, लेशो पद निर्वाणो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ धर्मपर्व तथा लौकिक पर्व तथा अध्यात्म स्वाध्याय लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ पर्युसणपर्व स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ सिद्ध चक्रने पूजो ॥ ए देशी ॥ पर्वपजूसण कीजो रे भविका, नर भव सफल करीजें ॥ ए टेक ॥ पजूसण सम परव नहिं दूजो, जैन धरम थंभ साचो ॥ इणने जो कोई साधे भावशुं, मिटे कषाय की आंचो रे ॥ भ० ॥ प० ॥ १ ॥ आठ करमदल वरण कारण, आठ मदके सव छोडो ॥ अष्ट प्रवचन रचन अष्टासिद्धि, अष्ट गुणातम जोड़ो रे ॥ भ० ॥ प० ॥ २ ॥ अष्ट दिवस अष्ट जाम निरंतर, धर्मध्यान चित्त ध्यावो ॥ वैर विरोध जो होवे अपरशुं, उपतिने

जाय खमावो रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ३ ॥ क्रोध क्लेश विकथा सव वरजो, डरजो आश्रव करणी ॥ अष्टम तप तो अवश्य करीजे, दुःख टल जाये वेतरणी रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ४ ॥ इण दिन त्रस थावर केरी जतना, चार खंध शुद्ध पालो ॥ आश्रव टालि इंद्रिय पंच जीतो, पंच प्रमादके टालो रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ५ ॥ विणज व्यापार करो मत तृष्णा, अपर गामें नहीं जाजे ॥ स्नान मंजण हजामत नहिं कीजें, सुकृतेंमें चित्त लगाजे रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ॥ ६ ॥ पर्व निमित्तें लीपण छावण, न्हावण धोवण वरजो ॥ खांडण पीसण रांधण सीधण, हिंसा करतव सुं डरजो रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ७ ॥ सामायिक पडिक्कमणो, वखत वखत नित्य साधो ॥ देव गुरु धर्म तत्त्व ए तीनुं, भाव भगतिशुं आराधो रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ८ ॥ सहस्रकाम संसारका छोडो, गुरुमुख सुत्र सुणीजे ॥ हिरदा में धारजो एक मने शुद्ध, उंघ आलस सो तजीजे रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ॥ ९ ॥ सार पासा चोपड मत खेलो, खेलो धर्म वागमांही ॥ संवत्सरीको उपवास म छोडो, प्राण रहे जब तांई रे ॥ भ० ॥ प० ॥ १० ॥ इण विध करणी करजो उछंग, जिन आगममें जो वरणी ॥ तिलोकरिख कहे सुगुणा जनसेंती, भवजल तरणी करणी रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ११ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयअध्यात्मपर्व दशहरा स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ लावणीकी चालमें, ॥ विजय दशमी दिन विजय करो तुम, ज्ञानदृष्टि करनारी ॥ धर्म दशहरा कर लो उमंगसें, मिथ्यामोह रावण मारी ॥ ए टेक ॥ ए संसार सागरके अंदर, कर्मरूप अब थब पानी ॥ भर्म रूप पडे भरतडर इसीमें, डूब जाता जहां जग प्राणी ॥ तीन दंड त्रीकूट द्वीप है, लालच लंक वंक वणी ॥ महामोह रत्नश्रवा नामक, राक्षस राजा इसमें

धणी ॥ क्लेश केकसी राणी है उसकी, अकलदार समजो जहारी ॥ धर्म० ॥ १ ॥ मिथ्यामोहनी उसका फर्जंद, दश मिथ्या दश आनन है ॥ बीस आश्रवकी भुजा है उसके, कपट विद्या की खानन है ॥ सम्यकत्व मोहनी बिभीषण दूजा, नंदन सो कुछ है न्यायी ॥ मिश्रमोहनी कुंभकर्ण ए, लचापिच वातमें अधिकाई ॥ महामोहके ए तिहं नंदन, समझो सुगुणा नर नारी ॥ धर्म० ॥ २ ॥ परपंच नाम मंदोदरी नामें, मिथ्यामोह रावन राणी ॥ विषय इंद्रजीत अहं मेघवाहन, मिथ्या रावणके सुखदाणी ॥ कुमति नाम चंद्रनखा बहन है, कठिन क्रोध खरके व्याही ॥ दूषण दूषण तीन शल्य-त्रिशिरा, ए दोनुंहि उसके भाई ॥ संज्वलातिक चंद्रनखा संबुक, कछु एक आयो हुशियारी ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ ज्ञानरूप सूर्यहंस खड्गकूं, साधनकी दिलमें आइ ॥ मात पिताका हुक्म न माना, रह्या वो उपशम रणमांइ ॥ उसी बखतमें राय राजगृहि, दश लक्षण दशरथ राया ॥ संवर भावना राणी कौशल्या, धर्मराम पुत्र जाया ॥ समकित सुमित्रा राणी दूसरी, सत लक्षमणकी महतारी ॥ धर्म० ॥ ४ ॥ सुमति सीतासे धर्मरामका, वहोत ठाठसें विवाह भया ॥ एक दिवस वो पिता हुकुमसें, तिनुंही संजम बनमें गया ॥ सत लक्षमण वो खड्ग पकड़ कर, संजल संबुकका शिर घाया ॥ कुमति चंद्रनखा कही पतिसुं, खर दूषण त्रिशिरा धाया ॥ सतलक्ष-मण तब चढ़े सामने, उन तीनुंकुं लिया मारी ॥ धर्म० ॥ ५ ॥ मिथ्यामोह रावणके पास वो, सुमति सीता की बड़ाइ ॥ करी वहोत तब लालच वश वहां, चल आया लंका सांई ॥ छल विद्याका नाद सुना कर, सुमति सीताकी किवि है चोरी ॥ राम लक्षमण जब जाना भेद ए, सोचे अब लानी है दोरी ॥ झूठ साहीसक्त दृष्टि है उसकी, सतलक्षमणनें करी खुवारी ॥ धर्म० ॥ ६ ॥ संतोषसुग्रीव जब भया पक्षपर, वहोत भूप उसकी संगें ॥ जाम जांबुवाहन नील

नलादिक, सुमन नाम हनुमंत अंगें ॥ खवर लाया वो सुमति सीताकी, बहुत जोरावर दुनियामें ॥ दान शीयल तप भावकी सेना, ले के गया लका ठामें ॥ मिथ्यारावण सुनी बात ए, किवी आपकी हुशियारी ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ चार कषाय राक्षस दल भारी, कुध्यान धजाके फरावे ॥ अपकीर्त्तिका वजे नगारा, विकथाका कड़खा गावे ॥ कुशील रथमें वैठा हुशियारी, सात व्यसन शस्तर धारे ॥ राग द्वेष उमराव जोरावर, सहेज सुभटसें नहिं हारे ॥ नय नेजा सज्झाय घोष दे, राम आय चढ तिनवारी ॥ धर्म० ॥ ८ ॥ सत लक्ष्मण तव धीरज धनुप ले, वैठे शीलरथके मांइ ॥ अरू वरू जव मिले आन कर, मिथ्यारावणकूं रीश आइ ॥ अज्ञानचक्र मेला लक्ष्मण पर, जोर चला नहिं लीगारे ॥ ज्ञानचक्र जव मेला हरि ने, एकदम में रावण मारे ॥ राम लक्ष्मणकी जीत भइ जव, जगमें भया जय जय भारी ॥ धर्म० ॥ ९ ॥ सुमति सीताकु ले कर आये, मुक्ति अयोध्या राज करे ॥ जन्म मरण भय दुःख मिटे जिहां, राम राजा सो जगमें खरे ॥ संवत उगणीसें साल अडातिसका, पेठ आंवोरी दक्षिणमांइ ॥ विजयदशामी दिन कीवि लावणी, समझदारके दिल भाइ ॥ तिलोकरिख कहे सत्यरामायण, धर्म पर्व यों सुखकारी ॥ धर्म० ॥ १० ॥ इति ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय धनतेरश अध्यात्मस्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ मुख देख्यो हम पारसको ॥ ए देशी ॥ देशी केरवामें छे ॥ एसी धनतेरश कर लीजो, जो चाहो थें धनको भंडार रे ॥ भलां रे ज्ञानी ॥ चा० ॥ ए० ॥ ए टेक ॥ १ ॥ कातक कहे थें कांतक रहिया, धन तेरस सुविचार ॥ भलां रे ज्ञानी, धनतेरश सुविचार रे ॥ ए० ॥ ॥ २ ॥ अहिंसा सत्य दत्त व्रम्ह अममत्व, पंच माहाव्रत सार ॥ भ० ॥ पं० ॥ ए० ॥ ३ ॥ ईर्जा भाषा एषणा आदिक, समिति छे पंच प्रकार

॥ भ० ॥ स० ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ मन वचन काया तीन गुप्ति, ए तेरस सुखकार ॥ भ० ॥ ए० ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ खंति मुत्ति अज्जव मद्दव, त्रीजे अंगें कह्या द्वार ॥ भ० ॥ त्री० ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ ए चउ द्वार खुला शिवमंदिर शिवलक्ष्मी है तैयार ॥ भ० ॥ शि० ॥ ऐ० ॥ ७ ॥ पाप कीयासुं लक्ष्मी जावे, शंका नहिं है लगार ॥ भ० ॥ शं० ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे शिवधन थिर है, खरचतां आवे नहिं पार ॥ भ० ॥ ख० ॥ ऐ० ॥ ९ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ रूपचउदश अध्यात्मस्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ धन धन आज दिवस भलें उग्यो, पर्व दीवाली केरो रे ॥ ए देशी ॥ ऐसी रूपचउदश नित नित कीजें, निजरूप प्रगट करीजें रे ॥ इंद्रिय मन मुंडन करी लीजें, जप तप स्नान करीजें रे ॥ ऐ० ॥१॥ पापको मैल पखालन कीजें, सुमन साबु लगाजें रे ॥ धीरज धोती सुव्रत बाधो, संवरपाग शिर छाजे रे ॥ ऐ० ॥ २ ॥ दया दुप्पटो किरियाको अत्तर, धर्मध्यान सोला भेदो रे ॥ ए सोला शिणगार सजणकी, चित्तमें राखो उमेदो रे ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ सत्यवचन तंबोल सुहावे, तत्त्वको तिलक करीजें रे ॥ ज्ञानको दीपक भर्मकी बाती, कर्मको तेल पूरीजें रे ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ उगणीसें अडातिश रूपचउदश दिन, एह सज्झाय वणाई रे ॥ तिलोकरिख कहे रूप जो चाहो, तो इम करो भाई बाई रे ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम दीपमालिका अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ मानवजन्म मानवजन्म रे रतन तैने पायो रे ॥ए देशी ॥ दीपमाला दीपमाला परव ऐसो करीयें रे, सिद्ध लक्ष्मी वरीयें रे ॥ दी० ॥ ए टेक॥ द्रव्यातम घर निर्मल करियें, कषायकी धूल परहरियें रे ॥ आश्रव खाड पूरावो, त्याग लींपण लींपावो, गुण रंग लगावो रे ॥ दी० ॥ १ ॥ पुण्य पापको लेखो लगावो, पापको खातो घटावो रे ॥ सुमति

गादी बिछावो, गुप्ति तकिया बैठावो, शल्य धूल उडावो रे ॥ दी० ॥ २ ॥ करुणाको दीपक धर्मकी वाती, समकित ज्योति सुहाती रे ॥ कर्मतेल पूरावो, मिथ्यातम सो नसावो, सुज्ञान दीपावो रे ॥ दी० ॥ ३ ॥ सत्यको कुंकु विनयको पिंगाणी, किरियाकी केसर घसाणी रे ॥ पूजो वही जिन वाणी, शुद्ध न्याय वताणी, भविजन सुखदाणी रे ॥ दी० ॥ ४ ॥ क्षमाका खाजा ने प्रेम पतासी, समता का गुंजा विमासी रे ॥ संवर देरणी बनावो, आश्रव मैल छटावो, अति रुचि करि खावो रे ॥ दी० ॥ ५ ॥ तत्त्वको तिलक लिलाडे लगावो, संजमको शिरपाव वणावो रे ॥ तप शीयलको गेणो, पान मधुगिरा लेणो, मानो सतगुरु केणो रे ॥ दी० ॥ ६ ॥ उगणीसें अडतीस साल बखाणो, दीपमालिका दिन जाणो रे ॥ तिलोकरिख दरसावे, भविजन मन भावे, दया धर्म दिढावे रे ॥ दी० ॥७॥ इति ॥५॥

॥ अथ पंचम दीपमालिका द्वितीय अध्यात्मस्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी प्रभाती ॥ मंगलमाला पर्व दीवाली, भविजन भावें करजो रे ॥ मंगलमाला० ॥ ए टेक ॥ मोहणीजाला कर्मको कचरो, संवर बुहारीसुं हरजो रे ॥ भर्मकी खाड मिटावो आगनसुं, शुद्ध उत्तर ठस भरजो रे ॥ मं० ॥ १ ॥ शुक्ललेश्या खडी भावना भींतके, चित्त लगाई ओसरजो रे ॥ पंच आचारका रंग लगावो, ज्ञानको दीपक करजो रे ॥ मं० ॥ २ ॥ कर्मको तेल कुध्यानकी वाटी, समकित ज्योतिसुं सरजो रे ॥ समताको ढक्कण भावना फाणस, तृष्णा वायुके वरजो रे ॥ मं० ॥ ३ ॥ क्षमाकी गादी सुमतिका तकीया, गुप्ति मिठाई आचरजो रे ॥ धर्मको नाणो जीव कोथली, मिथ्या चोरसुं डरजो रे ॥ मं० ॥ ४ ॥ ननरा संजम पूजा रचावो, मेटो पापको करजो रे ॥मोक्षनगरकी हुंडी चलावो, सदा सरापी गरजो रे ॥ मं० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे सुगुणा नरने. पापदीवाली वरजो रे

॥ धर्मदीवाली शिवसुखदाता, सो नित नित आदरजो रे ॥ मं० ॥ ६ ॥ इति ॥ ५

॥ अथ षष्ठ अनुभव संक्रांतिपर्व स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ न्यालदेकी देशीमें ॥पर्व संक्रांति मनावियें जी २ कांइ, अनुभव दृष्टि लगाय ॥ जिस संघाति लहे शाश्वती जी २ कांइ, कमी रहे नहिं कांय ॥ प० ॥ १ ॥ ज्ञानरवि वृद्धि होवे जी २ कांइ, कुमति रयणी घटंत ॥ समकित किरण पसरे घणी जी २ कांइ, मिथ्या है मालो गलंत ॥ प० ॥ २ ॥ तृष्णाजलहानी होवे जी २ कांइ, संतोष भूमि देखाय ॥ धर्मदिवस म्होटो हुवे जी २ कांइ, भविजनने सुखदाय ॥ प० ॥ ३ ॥ तपस्यातिल संग्रह करो जी २ कांइ, समता सक्कर मिलाय ॥ प्रेमकी पापड़ी बणावजो जी २ कांइ, धीरजकी थाली बनाय ॥ प० ॥ ४ ॥ क्षमाको खीच बनावजोजी २ कांइ, दयारूपी दूध बनाय ॥ मेवो मिलावो शुभ मन तणो जी २ कांइ, हिरदे हांडीके मांय ॥ प० ॥ ५ ॥ तत्त्वका तंदुल शुद्ध करो जी २ कांइ, इंद्रिय मनरूपी दाल ॥ खिचड़ी इण विध रांधजो जी २ कांइ, धर्मरुचि घृत डाल ॥ प० ॥ ६ ॥ दान अभय नित दीजीये जी २ कांइ, पालो शीयल अखंड ॥ बारेई भावना भावजो जी २ कांइ, छोड़ो मिथ्या अफंड ॥ प० ॥ ७ ॥ उगणीसें गुणचालीसकी जी २ कांइ, पौष शुध्द पंचमी जाण ॥ तिलोकरिख कहे पूना शहरमें जी २ कांइ, धर्म संक्रांति बखाण ॥ प० ॥ ८ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम वसंतपंचमी अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी वसंतमें छे ॥ सदा वसंतपंचमी ऐसी कर रे ॥ स० ॥ ए टेक ॥ काया नगर मनमहेलके मांही, भावनाचित्र अंदर रे ॥ केवल भूप सुमति पट्टराणी, धर्म नामें मंत्रीसर रे ॥ स० ॥ १ ॥ चोकस चपरासी दान हलकारा, समकित कर तलवार रे ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, तीर्थसभा रही भर रे ॥ स० ॥ २॥ मन मांदल

गादी बिछावो, गुप्ति तकिया बैठावो, शल्य धूल उडावो रे ॥ दी० ॥ २ ॥ करुणाको दीपक धर्मकी बाती, समकित ज्योति सुहाती रे ॥ कर्मतेल पूरावो, मिथ्यातम सो नसावो, सुज्ञान दीपावो रे ॥ दी० ॥ ३ ॥ सत्यको कुंकु विनयकी पिंगाणी, किरियाकी केसर घसाणी रे ॥ पूजो वही जिन वाणी, शुद्ध न्याय बताणी, भविजन सुखदाणी रे ॥ दी० ॥ ४ ॥ क्षमाका खाजा ने प्रेम पतासी, समता का गुंजा विमासी रे ॥ संवर सेरणी बनावो, आश्रव मैल छटावो, अति रुचि करि खावो रे ॥ दी० ॥ ५ ॥ तरका तिलक लिलाडे लगावो, संजमको शिरपाव बणावो रे ॥ तप शीयलको गेणो, पान मधुगिरा लेणो, मानो सतगुरु केणो रे ॥ दी० ॥ ६ ॥ उगणीसें अडतीस साल वखाणो, दीपमालिका दिन जाणो रे ॥ तिलोकरिख दरसावे, भविजन मन भावे, दया धर्म दिढावे रे ॥ दी० ॥७॥ इति ॥५॥

॥ अथ पंचम दीपमालिका द्वितीय अध्यात्मस्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी प्रभाती ॥ मंगलमाला पर्व दीवाली, भविजन भावें करजो रे ॥ मंगलमाला० ॥ ए टेक ॥ मोहणीजाला कर्मको कचरो, संवर बुहारीसुं हरजो रे ॥ भर्मकी खाड मिटावो आगमसुं, शुद्ध उत्तर ठस भरजो रे ॥ मं० ॥ १ ॥ शुक्ललेश्या खडी भावना भींतके, चित्त लगाई ओसरजो रे ॥ पंच आचारका रंग लगावो, ज्ञानको दीपक करजो रे ॥ मं० ॥ २ ॥ कर्मको तेल कुध्यानकी वाटी, समकित ज्योतिसुं सरजो रे ॥ समताको ढक्कण भावना फाणस, तृष्णा वायुके वरजो रे ॥ मं० ॥ ३ ॥ क्षमाकी गादी सुमतिका तकीया, गुप्ति मिठाई आचरजो रे ॥ धर्मका नाणो जीव कोथली, मिथ्या चोरसुं डरजो रे ॥ मं० ॥ ४ ॥ सतरा संजम पूजा रचावो, मेटो पापको करजो रे ॥मोक्षनगरकी हुंडी चलावो, सदा नरापी गरजो रे ॥ मं० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे सुगुणा नरने, पापदीवाली वरजो रे

॥ धर्मदीवाली शिवसुखदाता, सो नित नित आदरजो रे ॥ मं० ॥ ६ ॥ इति ॥ ५

॥ अथ षष्ठ अनुभव संक्रांतिपर्व स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ न्यालदेकी देशीमें ॥पर्व संक्रांति मनावियें जी २ कांइ, अनुभव दृष्टि लगाय ॥ जिस संघति लहे शाश्वती जी २ कांइ, कमी रहे नहिं कांय ॥ प० ॥ १ ॥ ज्ञानरवि वृद्धि होवे जी २ कांइ, कुमति रयणी घटंत ॥ समकित किरण पसरे घणी जी २ कांइ, मिथ्या है मालो गलंत ॥ प० ॥ २ ॥ तृष्णाजलहानी होवे जी २ कांइ, संतोष भूमि देखाय ॥ धर्मदिवस म्होटो हुवे जी २ कांइ, भविजनने सुखदाय ॥ प० ॥ ३ ॥ तपस्यातिल संग्रह करो जी २ कांइ, समता सक्कर मिलाय ॥ प्रेमकी पापड़ी बणावजो जी २ कांइ, धीरजकी थाली बनाय ॥ प० ॥ ४ ॥ क्षमाको खीच बनावजोजी २ कांइ, दयारूपी दूध बनाय ॥ सेवो मिलावो शुभ मन तणो जी २ कांइ, हिरदे हांडीके मांय ॥ प० ॥ ५ ॥ तत्त्वका तंदुल शुद्ध करो जी २ कांइ, इंद्रिय मनरूपी दाल ॥ खिचड़ी इण विध रांधजो जी २ कांइ, धर्मरुचि घृत डाल ॥ प० ॥ ६ ॥ दान अभय नित दीजीये जी २ कांइ, पालो शीयल अखंड ॥ बारेई भावना भावजो जी २ कांइ, छोड़ो मिथ्या अफंड ॥ प० ॥ ७ ॥ उगणीसें गुणचालीसकी जी २ कांइ, पौष शुध्द पंचमी जाण ॥ तिलोकरिख कहे पूना शहरमें जी २ कांइ, धर्म संक्रांति वखाण ॥ प० ॥ ८ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम वसंतपंचमी अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी वसंतमें छे ॥ सदा वसंतपंचमी ऐसी कर रे ॥ स० ॥ ए टेक ॥ काया नगर मनमहेलके मांही, भावनाचित्र अंदर रे ॥ केवल भूप सुमति पट्टराणी, धर्म नामें मत्रीसर रे ॥ स० ॥ १ ॥ चोकस चपरासी दान हलकारो. समकित कर तलवार रे ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, तीर्थसभा रही भर रे ॥ स० ॥ २॥ मन मादल

शुद्धध्यानकी भेरी, सुगुण वाजा विचित्र रे ॥ पंच सज्झाय सूत्र अनुरागें, धर्मकथासुं उच्चर रे ॥ स० ॥ ३ ॥ संवर अंबके ज्ञान मंजरी ले, सत्यवचन पत्तर रे ॥ वंदरमाल कर त्याग डोरमें, बांधले अपने घर रे ॥ स० ॥ ४ ॥ शील शिरपाव शरमको भूषण, सुजस गुलाल अवर रे ॥ हिरदेको हौद संतोषको पाणी, शुभ लेश्या रंग भर रे ॥ स० ॥ ५ ॥ साधर्मी अंग रंग छिटकावो, दीजें अति आदर रे ॥ इण भवें शोभा परभव संपत, हिंसापर्व परिहर रे ॥ स० ॥ ६ ॥ उगणीसें अड़तीस वसंत पंचमी दिन, अहमद नाम नगर रे ॥ तिलोकारिख कहे ऐसी करे जो पंचमी, सो वसंतपंचमी गत नर रे ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम अध्यातम स्वाध्यायफाग प्रारंभः ॥

॥ देशी फागकी छे ॥ ऐसो खेलजो हांरे ॥ भविका ॥ ऐ० ॥ फाग सदा सुख पावो ॥ ऐसो खेलजो० ॥ ए टेक ॥ धर्म बाग फूली समकित सरध्दा, विरति कोयलनाद करे ॥ ऐ० ॥ १ ॥ कुमति होलिका ने दीजो मंगलायने, कर्मकी धूल उड़ावो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ २ ॥ समता सरोवरमें स्नान करो सुगुणा, पापको मैल पखालो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ धीरजको धोतियो थें पहेरो घणा प्रेमसुं, जयणा को जामो थें पहेरो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ परमारथ पागड़ी अपोगकी उपरणी, शीलको शिरपेच थें बांधो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ क्षमारूप होगो मेली धाटो बांधो सांचको, तप रूपी तुर्रो झूकावो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ करुणाका कुंडल चोकसीका चोकड़ां, भक्तिकी भमरकड़ी पहेरो ॥भ० ॥ ऐ० ॥७॥ दशविध धर्मको हार हिये पहेरजो, दान मान कड़ा हाथ पहेरो ॥भ०॥ऐ०॥८॥ वयावच्च विंटी दश आंगुलीमें पहेर लो, किरियाको कंदोरो थें पहेरो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ९ ॥ भावकी भांगकुं थें घोंट घोंट पीवजो, संतोषकी सक्कर मिलावो ॥

॥ भ० ॥ ऐ० ॥ १० ॥ धरम कुटुंब संग सुमति सोहागण, हिल मिल गेर खूब खेलो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ११ ॥ सज्झायको ढफ लो ने झांझ लो भजनकी, प्रभुगुणि ख्याल खूब गावो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ १२ ॥ लोभरूप इलोजी महानिर्लज जगमें, जिणके थें खुब निरसावो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ १३ ॥ जिनवाणी पाणी वैराग रंग घोलजो, उपदेशकी पिचरकी भर मारो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ १४ ॥ शुक्कलेश्याकी झोली गुलाल शुभध्यानकी, भर भर मुट्ठा उडावो ॥ भ० ऐ० ॥ १५ ॥ विनय विवेकका थें बाजा रे बजावजो, नेमका निसाण थें फरावो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ १६ ॥ संवरकी सूखडीने गोठ करो ज्ञानकी, गेर काढो चार तीरथ ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ १७ ॥ तेरे क्रियाको थें न्हावण करजो, दयाकी दुकान मांड बेठो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ॥ १८ ॥ ऐसो फाग रमो साल दर साल थें, सिद्धपुर पाटणमें वसो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ १९ ॥ भारी करमा जाके दाय नहिं आवसी; हलुकरमी सो हरखावे ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ २० ॥ जो नहिं मानसो तो आगे पछतावसो, सतगुरु ज्ञान बतायो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ २१ ॥ उगणीशें सेंतीस फागण वदिमें, बीज बुधवार दिन आयो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ २२ ॥ तिलोकरिख कहे सिरज गाममें, धर्मको फाग सरसायो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ २३ ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ अथ नवम शीलासप्तमी अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ भावपूजा नित्य कीजियें ॥ ए देशी ॥ पूजो जिनवाणी माता शीतला, शीतल चित्त करो भावें जी ॥ संसार दावानल उपशमे, भविजन सुणी उलसावे जी ॥ पू० ॥ १ ॥ चतुराई चूलो थापजो, कर्म इंधन करो भावे जी ॥ तप अग्नि सें धूंकजो, काया कडाई चढावो जी ॥ पू० ॥ २ ॥ करुणारस घृत पूरजो, निर्ममता करो मेंदो जी ॥ क्षमारूप खाजा करो, सुगुण गुंजा उमदो जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ परमारथ पूडी करो, पुण्य पापड खीच जाणो जी ॥ संतोष

रूप करो लापसी, समता सक्कर वखाणो जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ धर्म मोदना मोदक करो, जयणा जलेबी वणावो जी ॥ प्रतीति रूप पेडा करो, प्रेमका घेवर आणो जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ दयाको दूध ओटाव जो, दानको दहि जमावो जी ॥ सुबुद्धिरूप वरफी भली, अपोग का ओला वणावो जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ वड़ा करो विज्ञानका, गुलगुला गुप्ति रसालो जी ॥ भावना रूप भुजीया करो, हेतु दृष्टांत मसालो जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ गुरुसेवा रूप सेवा सीरे, तत्त्वको तेवन ठावो जी ॥ भजन पकोड़ी चरपरी, सुकथा कचोरी सरावो जी ॥ पू० ॥ ८ ॥ चोकसी चोखा आणीने, रूप रुचराई करीजो जी ॥ घाट राव करवो करो, हिरदे हांडीमें धरजो जी ॥ पू० ॥ ९ ॥ स्नान करो उपशम जलें, पापको मैल पखालो जी ॥ शीलशणगार सजो शिरें, कषाय अग्निके टालो जी ॥ पू० ॥ १० ॥ सुगुरु केण कलशा विषे, ज्ञानको जल भर लेवो जी ॥ मेंदी ग्रहो अनुमोदना, सुमति सोपारी सो ठेवो जी ॥ पू० ॥ ११ ॥ थिरपारिणाम थाली करो, विवेककी वाटकी जाणो जी ॥ विनय पिंगाणी वणावजो, सत्यको कुंकु घोलाणो जी ॥ पू० ॥ १२ ॥ अक्षय गुण आखा चढ़ाईयें, प्रश्नका पान विचारो जी ॥ कीर्तिफूल शुभ वासना, ध्यानकी धूप उदारो जी ॥ पू० ॥ १३ ॥ शुक्ल लेश्याकी रुइ करो, नेम का नैवेद्य लीजो जी ॥ अव्रतरज परिटालवा, त्यागको गरणो ढांकीजो जी ॥ पू० ॥ १४ ॥ परमेष्टी गुण शुद्ध दाखिया, गावजो गीत रसालो जी ॥ पूजा करो इम सासती, सकल करम हाय टालो जी ॥ पू० ॥ १५ ॥ धर्म पुत्र चोखो रहे, रिद्धसिद्ध वहु थावे जी ॥ शिवरमणी वर सासती, दुःख कदे नहिं आवे जी ॥ पू० ॥ १६ ॥ उगणीसें अड़तिस शीतला दिने, किधी एह सज्झायो जी ॥ तिलोक रिख कहे अध्यातमपणो, भविजन के मन भायो जी ॥ पू० ॥ १७ ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ अथ दशम अध्यात्मगिणगोर स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी तीजकीमें छे ॥ शिवरमणीका साहेबा, थें तो देखोने एह गिणगोर ॥ सुगतिका साहेबा थें तो, राचो ने एह गिणगोर ए टेक ॥ धीरजको करो सरावलो जी कांई, क्षमामिटी अनुभव नीर ॥ सत्यको बीज थें बोवजो कांइ, सुख अंकूरा वृद्धि थीर ॥ शि० ॥ १ ॥ केवलज्ञान सरोवर तणो जी कांई, जल हिरदे कलश मांय ॥ श्रद्धा नारी सोहागणी कांई, तिण सिर दीजो चढ़ाय ॥ शि० ॥ २ ॥ भावना नार सोहासिणी कांइ, भूषण सुअध्यवसाय ॥ गीत गुणी गुण गावणां कांइ,सुजसका बाजा बजाय ॥ शि० ॥ ३ ॥ इम काढ़ो कलशा भणी कांई, नित नित अधिक आणंद ॥ धर्म तत्त्व तीज तिथि दिने कांइ, तीज शणगारो गुणिवृंद ॥शि०॥४॥ सुमति विरति गोर बणाय लो कांइ, द्वादश अंग शरीर ॥ उपांग बारेइ दीपता कांइ, शीलको ओढावो थें चीर ॥ शि० ॥ ५ ॥ लज्जाको लेंगो पेरावजो कांइ, किरियाकी कंचुकी पहेराय ॥ महमद मारद माथा तणो जी कांइ, राखड़ी रुचिकी बणाय ॥ शि० ॥ ६ ॥ समझकी बिंदी शिरें कही कांइ, अपोगका ओगन्यां कान ॥ पुण्यकी पानड़ी झगमगे कांइ, तपस्याको तिलक वखाण ॥ शि० ॥ ७ ॥ विनय को बोर विचारजो कांइ, तत्त्वकी टोटी ने झाल ॥ झुमरा पहेरावो विवेक का कांइ, झेलो जयणाको रसाल ॥ शि० ॥ ८ ॥ चोंप जड़ावो चोखा वचनकी कांइ, मिष्ट वचन मसी जान ॥ निरवद्य सत्य वचन तणां कांइ, मुख तंबोल वखाण ॥ शि० ॥ ९ ॥ शरमको काजल आंजवो कांई, नेमकी नथ सुखकार ॥ ज्ञानकी गलसीरी कंठ में कांइ, दशाविध धर्मको हार ॥ शि० ॥ १० ॥ ठुस्सी संतोषकी जाणजो कांइ, तेड़्यो परतीतको जाण ॥ तिमणयो देव गुरु धर्मको कांइ, चेतना चंपकली ठाण ॥ शि० ॥ ११ ॥ चंद्रहार सौम्यता पणो

कांई, बाजूबंध विवेक ॥ लुंबा फूंदा तरंगका कांइ, जबल्यो करो शतटेक ॥ शि० ॥ १२ ॥ करमदी करो शुभ करणकी कांइ, सुकला कंकण सार ॥ चूडो बत्तीस जोग संग्रहको जी कांइ, मणगठा सुमन विचार ॥ शि० ॥ १३ ॥ वेयावच्च वींटी पहेरावजो कांइ, अनुमोदना मेंदी लाल ॥ सुनय सांकलां पायमें कांइ, साहस कडा सुविशाल ॥ शि० ॥ १४ ॥ तोडा सज्झायका बाजणा कांइ, नीति नेउर झणकार ॥ हथपान पगपान प्रेमका कांइ, विद्याका विंछिया सार ॥ शि० ॥ १५ ॥ ईर्याका अणवट सासता कांइ, प्रीतिकी पोलरी जाण ॥ भंग तरंगकी सांकली कांइ, घुघरी प्रश्न बखाण ॥ शि० ॥ १६ ॥ चेतनजी ईश्वर दीपता जी कांइ, चार तीरथ परिवार ॥ धर्मबाग मांही संचरो कांइ, स्तवन गीत उच्चार ॥ शि० ॥ ॥ १७ ॥ विज्ञानका बाजोठ पर थापिने कांइ, ज्ञानादिक चार प्रकार ॥ फेरा फरावो तेहशुं कांइ, होमजो कर्मविकार ॥ शि० ॥ ॥ १८ ॥ ध्यानकी धूप लगावजो कांइ, प्रीतिका फूल चढाय ॥ सुकृत नैवेद्य चढावजो कांइ, थापो शिवमंदिर मांय ॥ शि० ॥ १९ ॥ ऐसी तीज मनावसी कांइ, जे भवियण नर नार ॥ ते सुख पावे सासता कांइ, शंका नहिं छे लगार ॥ शि० ॥ २० ॥ पाप तहेवार मनावतां कांइ, कर्मको बंधन थाय ॥ रूले चउगतिमें जीवडा कांइ, विष ए महा दुःखदाय ॥ शि० ॥ २१ ॥ अनुभव ज्ञान लगावजो कांइ, सुगणा मनावो तहेवार ॥ तिलोकरिख कहे सुख पावशो कांइ, वर्त्तसी जय जयकार ॥ शि० ॥ २२ ॥ इति ॥१० ॥

॥ अथ एकादश आखात्रीज अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ या रस सेलडी, आदि जिनेश्वर कियो पारणो ॥ ए देशी ॥ थें कर ल्यो स्याणा. धर्म तहेवार आखात्रीजको ॥ थें० ॥ ए टेक ॥ आखात्रीज तहेवार भलेरा, कर लो धर्मविचार ॥ इण

सरखो नहिं और जगतमें, बारा मासको सार रे ॥ थें० ॥ १ ॥ दान पुण्य सुकृतकी करणी, करजो मनशुद्ध चहाय ॥ सदा तृप्त रहो भूख न लागे, मिलसी सुख सवाय रे ॥ थें० ॥ २ ॥ अक्षय गुणका आखा लीजें, ऊखल धीरज धार ॥ मूसल लीजें ज्ञानको सो कांइ, मोहणी तुष निवार हो ॥ थें० ॥ ३ ॥ शुद्धभावको सूपड़ो करिने, झटको पापरज दूर ॥ क्षमा चूलो संतोषकी हांडी, कर्म इंधन भरपूर हो ॥ थें० ॥ ४ ॥ तपकी अगनि सलगावजो जी कांइ, विनयको जल सुविचार ॥ ऊरो आखा खीच बणावो, समता सक्कर रस सार हो ॥ थें० ॥ ५ ॥ करुणा कुडछी थिरमन थाली, जीमो सुगुणा लोक ॥ सदा तृपत रहो सुख अनंता, मिलसी सारो थोक हो ॥ थें० ॥ ६ ॥ ज्ञान दरिसण चारित्र निजगुण, अखे आशा तनमांय ॥ इनमें शंका रंच न आणो, शोधो श्री जिनवाय हो ॥ थें० ॥ ७ ॥ उगणीसें अड़तिस आखातीज दिन, मिरी गासके मांय ॥ तिलोकरिख कहे सुगुणा नरने, ऐसो पर्व सुखदाय हो ॥ थें० ॥ ८ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ द्वादश राखीपर्व अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ मेरी मेरी करतां जनम गयो रे ॥ ए देशी ॥ राखी तहेवार करो धर्म राखी, मिथ्यादुर्मति द्यो दूर नाखी ॥ रा० ॥ १ ॥ सत रुपी बंधन महासुखकारी सुबुद्धी नाम बहन गुणधारी ॥ रा० ॥ २ ॥ भावकी डोर रक्षा हीर जाणो, मन गुप्तिको ल्यो मोतिको दाणो ॥ रा० ॥ ३ ॥ भावको मोडल लेश्या शुभरंगी, धर्मरिद्धिकी राखी शुभ चंगी ॥ रा० ॥ ४ ॥ त्यागकी गांठ दे कर मांही बांधो, समताकी सेवां भली विध रांधो ॥ रा० ॥ ५ ॥ करुणा कंसार करो भलि भातें, समताको श्रीफल देवणो हाथे ॥ रा० ॥ ६ ॥ ध्यानको नाणो सो रोकड़ो दीजें, किरियाकी कंचूकीको खंड दीजें ॥

रा० ॥ ७ ॥ समकित कुंकुम ज्ञानको पाणी, घोलो विवेक सुं विनय पिंगाणी ॥ रा० ॥ ८ ॥ तपको तिलक चोकस गुण चोखा, ऐसा तहेवारसुं सुख अनोखा ॥ रा० ॥ ९ ॥ तिलोकरिख कहे राखी पर्व करियें, सुखें सुखें भवजल निधि तरियें ॥रा०॥१०॥इति॥ १२॥

॥ अथ त्रयोदश वारमासनी सज्झाय प्रारंभः ॥

देशी माचका दोहाकी ॥ चैत कहे तुं चेत चतुर नर, पायो अवसर सार ॥ सुकृत करणी भवजलतरणी, वरणी शिवदातार रे ॥ या वारे मासकी, शिक्षा थें लीजो हिरदे धारिने ॥ ध्रु० ॥ १ ॥ वैशाख कहे वे साख सुधारो, सूत्र चारितर जाण ॥ दोइ साख जो जासी हातसुं, रेसी मन पछताण रे ॥ या० ॥ २ ॥ ज्येष्ठ कहे करो ज्येष्ट जो करणी, तो पावो पद ज्येष्ट॥ ज्येष्ट थान पर वास मिलेगा, अजर अमर सुखश्रेष्ठ रे ॥ या० ॥ ३ ॥ आषाढ कहे नसाड पापने, करलो श्रीजिनधर्म ॥ तप जप खप कर पावो केवल, तोडो आठों कर्म रे ॥ या० ॥ ४ ॥ श्रावण कहे सुणो सूत्र श्रवणसें, उंघ आलस परिहार ॥ मिथ्या भर्म टले हिरदाको, प्रगट समकित सार रे ॥ या० ॥ ५ ॥ भाद्रव कहे भाद्रवकी चर्चा, निरणो करो नर नार ॥ निजगुण ओलख परगुण छोडो, तो उतरो भवपार रे ॥ या० ॥ ६ ॥ आसोज कहे नासोज पारका, अवगुण तुं मनमांय ॥ निजगुण खोज सोज ज्ञान उर, कर्मा रहे नाहिं कांय रे ॥ या० ॥ ७ ॥ कातिक कहे थें कहां तक राहिया, धर्म रतन ले संग ॥ अनंत काल गयो तकतां तकतां, सह्या कष्ट अभंग रे ॥ या० ॥ ८ ॥ मृगशीर कहे जो मृग शिर उपर, सिंह तणो भय जाण ॥ तुझ शिरपर ज्यों काल जोरावर, परभवको डर आण रे ॥ या० ॥ ९ ॥ पोस कहे तुं पोष छे काया, नव निज प्राण पोषाय ॥ इनमें शंका रंच न कीजें, श्रीजिन गया फरमाय रे ॥ या० ॥ १० ॥

साहा कहे महा शत्रु कर्म है, इनसें फरक न कोय ॥ धर्म राजा है निपट जोरावर, सरणासुं सुख होय रे ॥ या० ॥ ११ ॥ फागण कहे थें खेलजो फागण, कुमति होलिका बाल ॥ कर्म धूल उडाय दीजीयें, गावो धर्मका ख्याल रे ॥ या० ॥ १२ ॥ बारे मास कहे बारे अव्रत, छोडो सुगुणां लोक ॥ बारे भेदें तप बारे भावना, धारयासुं शिवथोक रे ॥ या० ॥ १३ ॥ मधुमास उगणीसें अडतिस पूनमतिथि गुरुवार ॥ तिलोकरिख कहे परउपगारें, पेठ आंबोरी मझार रे ॥ या० ॥ १४ ॥ बारे मास इम सुन कर सरधे, भविजन मन उल्लास ॥ कर्मभर्म सब दूर निवारी, पासी शिवपुर वास रे ॥ या० ॥ १५ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ चतुर्दश पन्नर तिथि अध्यातम स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी साचका दोहाकी ॥ पडवा कहे एक निश्चें राखो, धर्मथकी सुख होय ॥ छे आवलिका फरस्यां सुगति, अर्ध पुद्गलके मांय हो ॥ १ ॥ इम पंदरा तिथिको, अनुभव थें विचारो सूत्र न्यावसुं ॥ ध्रु० ॥ दूज कहे दो विध है बंधन, राग द्वेष दुःखकार ॥ तप जप करिने काटो इणने, पामो भवजलपार रे ॥ इ० ॥ २ ॥ तीज कहे तीन तत्त्व आराधो, साधो गुप्ति तीन ॥ तीन शल्य तीन दंड तजीने, अनंत प्राणी शिव लीन रे ॥ इ० ॥ ३ ॥ चौथ कहे चौभेद सुगतका, आराधो भविलोक ॥ चार कषायकी लाय बुझाई, लहो अविचल शिवथोक रे ॥ इ० ॥ ४ ॥ पंचमी कहे पंचमीगति इच्छा, तो पंच महाव्रत पाल ॥ पंच समिति शुद्ध भाव आराधो, पंच प्रमाद द्यो टाल रे ॥ इ० ॥ ५ ॥ छठ कहे छकाय वंचावे, छे व्रत लीजो धार ॥ बाह्य अभ्यंतर छे छे तप कर, उतरो भवजल पार रे ॥ इ० ॥ ६ ॥ सातम कहे नित सात बार थे, सात व्यसन दो छोड ॥ सात भय सब दूर निवारो, पामो अविचल ठोर रे ॥ इ० ॥

॥ ७ ॥ आठम कहे छोड़ो आठूं मदके, आठुं प्रवचन आराध ॥ आठुं कर्म सब दूर निवारी, राखो चित्त समाध रे ॥ इ० ॥ ८ ॥ नौमी कहे नव तत्त्वनिरणो, करजो भिन्नभिन्न शोध ॥ नवनियाणां दूर करीजें, नव समकित करो बोध रे ॥ इ० ॥ ९ ॥ दशमी कहे दश भेद धर्मका, पालजो आणी प्रेम ॥ दश प्रकारें मुंड थयासूं, पासो अविचल खेम रे ॥ इ० ॥ १० ॥ इग्यारस कहे इग्यारे बोलको, जाणपणो करो सार ॥ ग्यारे पडिमा शुध्द आराधो, सीखो अंग इग्यार रे ॥ इ० ॥ ११ ॥ बारस कहे बारा व्रत पालो, भावना भावो बार ॥ बारा प्रकारें तप करीने, करो करमकी छार रे ॥ इ० ॥ १२ ॥ तेरस कहे तेरे किरियाको, निरणो करो नर नार ॥ छोड़वा जोग सो छोड़ दीजियें, पामो केवल सार रे ॥ इ० ॥ १३ ॥ चउदस कहे चउदे गुणठाणां, राखो चढ़ता भाव ॥ चउदा भेद कह्या जीवका प्रभुजी, तिणको करो बचाव रे ॥ इ० ॥ १४ ॥ पूनम कहे पूनम ज्युं निर्मल, पंद्रा भेद सिद्ध जाण ॥ जिणने करो नित नित उठ वंदन, पावो पद निर्वाण रे ॥ इ० ॥ १५ ॥ अमावस्या कहे कर्मराहुसूं, जे वश पड़िया जीव ॥ पंद्रा परमाधामी जिणने, देवे दुःख अतीव रे ॥ इ० ॥ १६ ॥ पंद्रा तिथिको ज्ञान विचारी, जो कोइ होय हुसियार ॥ इणभवनें पासी सुख संपत, परभव जय जयकार रे ॥ इ० ॥ १७ ॥ मधुमास उगणीसें अड़-तिस, पेठ आंबोरी मझार ॥ तिलोकरिख ए जोड़ी जुगतिसुं, करवा परउपगार रे ॥ इ० ॥ १८ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ पंचदश सातवार अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी माचका दोहाकी ॥ रविवार कहे ज्ञान रवि जिम, जगमें परगट भाण ॥ मिथ्या भर्म हरणनो कारक, सीखो हितगुण जाण रे ॥ शुद्ध सात वारकी, कहणी परमाणें सुगुणा चालजो ॥ १ ॥

चंद्रवार कहे चंद्र ज्यों शीतल, राखो सम परिणाम ॥ चार कषाय को ताप निवारो, लहेशो शिवसुख धाम रें ॥ शु० ॥ २॥ मंगल-वार कहे मंगल चारू, उत्तम सरणा चार ॥ धर्मको मंगल हिरदे धारो, जिम होवे भवपार रे ॥ शु० ३ ॥ बुधवार कहे बुद्धि पाय के, खरचो धर्म मझार ॥ पाप घटावो पुण्य बधावो, बुद्धिको एहिज सार रे ॥ शु० ॥ ४ ॥ गुरुवार कहे गुरुपद सेवो, जो गुरुपदकी चहाय ॥ गुरुबिन जुगति मुगति न पावे, सेवो श्रीगुरु पाय रे ॥ शु० ॥ ५ ॥ शुक्रवार कहे सुकृत कर ले, ज्ञान ध्यान मनरंग ॥ तप जप साधो धर्म आराधो, करो कर्मसुं जंग रे ॥ शु० ॥ ६ ॥ स्थावर कहे थिर मन तन करिने, थापो समकित नींव ॥ पाप पराल ढाल दे छिनमें, लहेशो सुख अतीव रे ॥ शु० ॥ ७ ॥ सातुंवार वार वार चेतावे, वारेई सब कर्म ॥ वार वार नहिं आवे जगतमें, ए जिन आगम मर्म रे ॥ शु० ॥ ८ ॥ उगणिसें अडतिस चैतकी पूनम, पेठ आंवोरीमांय ॥ तिलोकरिख कहे गुरुसुपसायें, आसी भविजन दाय रे ॥ शु० ॥ ९ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ षोडश अध्यात्मबाग स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी केरवामें छे ॥ बाग बगीचा देखण किम भटके, कर्म-बंधण दुःखकार ॥ भला रे ज्ञानी ॥ क० ॥१॥ धर्मका बाग बनाय लेना, तेरी कायामें गुलजार ॥ भ० ॥ ते० ॥ ध० ॥ २ ॥ मनका रे माली कर ले स्याणा, उपशम सरोवर सार ॥ भ० ॥ उ० ॥ ध० ॥ ३ ॥ ज्ञानको पाणी निर्मल शीतळ, धीरजकी धरती सुधार ॥ भ० ॥ धी० ॥ ध० ॥ ४ ॥ कपट लोभकी खाड दूर दे, पावडी संतोष समार ॥ भ० ॥ पा० ॥ ध० ॥ ५ ॥ ठूंठ उडा दो क्रोध मानका, क्षमा कुदाली करो त्यार ॥ भ० ॥ क्ष० ॥ ध० ॥ ६ ॥ किरियाकी क्यारी खात क्रोधका, समझकी धोरण धार ॥ भ० ॥ स० ॥ ध० ॥ ७ ॥

निश्चय व्यवहार का बैल जोत दे, उपदेश चड़स भर वार ॥ भ० ॥ उ० ॥ ध० ॥ ८ ॥ थिर भावको थालो बांधी, जतन सुपुण्यकी पाल सुधार ॥ भ० ॥ ज० ॥ ध० ॥ ९ ॥ संवरको बंगलो करो मनमोहन, सातूं नय खिड़की विचार ॥ भ० ॥ सा० ॥ ध० ॥ १० ॥ करुणाकी खुरची मेज मयाका, शुभ मन पंखो कर डार ॥ भ० ॥ शु० ॥ ध० ॥ ११ ॥ सरलभावकी सड़क वणाय लो, विनयकी वेलू तुं संचार रे ॥ भ० ॥ वि० ॥ ध०॥ १२ ॥ वाड़का कोट विवेककी फाटक, प्रेमकी महेंदी परचार ॥ भ० ॥ प्रे० ॥ ध० ॥ १३ ॥ शीयलकी केलि संतोष सीताफल, जयणाका जाम विचार ॥ भ० ॥ ज० ॥ ध० ॥ १४ ॥ दृष्टांत लिंबू चोज आमली, दानको वड़ विस्तार ॥ भ० ॥ दा० ॥ ध० ॥ १५ ॥ आतम अनुभव करो अंबराई, गुण गुल विविध प्रकार ॥ भ० ॥ गु० ॥ ध० ॥ १६ ॥ विनयकी वनराई छाई घटमें, सुकृत फल श्रेयकार ॥ भ० ॥ सु० ॥ ध० ॥ १७ ॥ कीर्त्ति सुगंध अधिक महकावे, भविजन भ्रमर गुंजार ॥ भ० ॥ भ० ॥ ध० ॥ १८ ॥ उगणिसें अड़तिस चेत शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि रविवार ॥ भ० ॥ पं० ॥ ध० ॥ १९ ॥ अहमदनगरसुं विहार करी आया, सिद्धेश्वर बाग मझार ॥ भ० ॥ सि० ॥ ध० ॥ २० ॥ तिलोकरिख कहे धर्म बागमे, खेलजो भवि नर नार ॥ भ० ॥ खे० ॥ ध० ॥ २१ ॥ ज्ञानकी गोठ ने सुखड़ी तप जप, चार तीरथ परिवार ॥ भ० ॥ चा० ॥ ध० ॥ २२ ॥ इणभव रोग सोग नहिं आवे, परभव जय जय कार ॥ भ० ॥ प० ॥ ध० ॥ २३ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ सप्तदश अनुभव सुखशय्या स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी गिणगोरका गीतकी॥ऐसी सुखसेजमें सोवजो, मानो मानो रे चतुर आतम ज्ञानी ॥ दान शीयल तप भावना, ए चारु पाया चंग ज्ञानी ॥ उपशम संवर ऊपलां कांइ, तप जपकी इस रंग ज्ञानी ॥ ऐ०

॥ १ ॥ वाण बणावजो ज्ञानको जी कांइ, संतोष सेज रसाल ज्ञानी ॥ संजम दुलाई तुम पाथरो कांइ, विनय ऊसीसो लाल ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ २ ॥ समकित गालमशुरीया जी कांइ, विंजणो ल्यो व्रत बारे ज्ञानी ॥ क्षमाको खाट पछेवड़ो कांइ, लेश्या उज्ज्वल सुविचार ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ धरम सरिख भली ओढजो जी कांइ, पड़पाया शुभध्यान ज्ञानी ॥ दश पच्चक्खाणकी दावणी जी कांइ, सरधानां बंधणां जाण ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ ज्ञान दीपक रुचि चंद्रवो जी कांइ, किरिया कसीदो कढ़ावो ज्ञानी ॥ मच्छरदानी धीरज तणी जी कांइ, मिथ्या मच्छर भगावो ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ काया नगर मनमहेलमें जी कांइ, ऐसी सेज बिछावो ज्ञानी ॥ विरति किवाड़ लगावजो जी कांइ, जिनशिक्षा सांकल लगावो ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ समता नींदमें सोवजो जी कांइ, कुमति नार भगावो ज्ञानी ॥ जो चाहो निशदिन संपदा जी कांइ सुमति सुहागण चहावो ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ७ ॥ ऐसी सुखसेजमें पोढिनेजी कांइ, पाया छे सुख अनंत ज्ञानी ॥ तिलोकरिख कहे ते सही जी कांइ, सो होसी भगवंत ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ श्री अध्यात्मभवानी स्वध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी भेरूजीका गीतरी ॥ या दया भवानी माता रे, देवे श्री संघने शाता रे ॥ या समता देवल छाजे रे, या विनय सिंहासण राजे ॥ १ ॥ यो सीयलको लेंगो जाणो रे, लज्जाको चीर वखाणो ॥ या क्रियाकंचुकी सोहे रे, शिर तत्त्वतिलक मन मोहे ॥ २ ॥ करुणाका कुंडल झलके रे, संवर मुख अधिको मलके ॥ तीन गुप्ति त्रिशूल ज्युं सोवे रे, या शत्रु सर्व नमावे ॥ ३ ॥ मूलथानक श्रीजिन पासें रे, स्थापना निजहिरदे भासे रे ॥ जात्री चउ तीरथ आवे रे, सो निरख निरख हरखावे ॥ ४ ॥ नियमव्रत नैवेद्य सो चढ़ावे रे,

तो जात्रा सफल कहावे ॥ रिद्ध सिद्ध सुख संपत देवे रे, जो इणविध माता सेवे ॥ ५ ॥ उगणीशें अड़तिस जाणो रे, वैशाख पूनम परमाणो ॥ गाम वासणी दक्षिणमांइ रे, तिलोकारिख दयासाई गाइ ॥ ६ ॥

॥ अथ श्रीदसोट्टण कविता लिख्यते ॥

॥ श्रीवर्द्धमान जिनेश्वर केरो, कहुं दसोटण भाव भलेरो ॥ सिद्धारथ नृपकुलमें आया, त्रिशलादे राणीजी जाया ॥ १ ॥ चैत्र शुदि तेरस तिथि जाया, छप्पनकुमारी मंगल गाया ॥ इंद्र मिल कर मोच्छव कीयो, वीर जिनेश्वर नामज दीयो ॥ २ ॥ दिन उगा नृप मोच्छव कीना, जाचकलोक अजाचक चीना ॥ त्रीजे दिन चंद्र सूरज दिखावे, छट्ठ दिन सो रात जगावे ॥ ३ ॥ ग्यारमे दिन अशुचि टाले, वारमे दिन भोजन उजमाले ॥ भोजनशाला अधिक विशाला, चित्रविचित्र सुरंग रसाला ॥ ४ ॥ जरी जरनार चंद्रवा सोहे, मुक्ताफल जुमणुं मन मोहे ॥ वनात कनात मखमलकी चंगी, सोहत सुंदर नव नव रंगी ॥ ५ ॥ वाजोठ चोकी पाट मंगाया, थाल सुवर्ण रूपाकी लाया ॥ रतनकटोरा चाटकी छालया, मांहे भोजन वहुविध घाल्या ॥ ६ ॥ आया क्षत्री राजा ताजा, अति आडंवर वाजा गाजा ॥ केइक हाथी केइक घोड़े, पालखी आगल पेदल दोड़े ॥ ॥ ७ ॥ केइ दुंदाला झाक झमाली, दीसे केश भमरा जिम काली ॥ जिमणने आव उजमाला, केइक सुसरा ने केइक साला ॥ ८ ॥ केइ जमाई माहाजोधाला, नव नव भूषण रूप रसाला ॥ केईक भाई साढू भासा, मामा दायती व्याही खासा ॥ ९ ॥ छत्तिस कुलका नोत्या क्षत्री, वुलवाया देइ मंगलपत्री ॥ वर्जा मानने अणनोत्या आवे, तेड्या तो कहो क्यूं नहिं आवे ॥ १० ॥ जीमण खारा किणने लागे, ले लोटीने आगे भागे ॥ सरसां भोजन आदर सारो, कोण निर्भागी करे नकारो ॥ ११ ॥ जीमण आया अधिक उमाया,

पंक्तिबंध बैठा सब डाह्या ॥ गंगोदक कंचनकी झारी, बैठा जिमण सब हुशियारी ॥ १२ ॥ जब लग भोजन होवे त्यारी, मेवा परोसे सुंदर नारी ॥ पहली किसामिस द्राख मनुक्का, केला कतली देश कोकनका ॥ १३ ॥ पिंडखजूर गुठली करी न्यारी, काजू कली बदाम सुप्यारी ॥ चिरोंजी अंजीर पिस्ता भलेरा, अंगूर दाडिम खोपरा गहेरा ॥ १४ ॥ चटका करके सक्कर मिलाइ, भर भर मुठ्ठा मेले उमाइ ॥ रूपपाट सोवनकी थाली, पक्वान्नकी मनवारां चाली ॥ १५ ॥ लाड्डु सिंह केसरिया नीका, मोतिचूर चोगणीका नीका ॥ चुंटिया चूरमा लाड्डु दालका, मगद मनोहर राय सालका ॥ १६ ॥ वेसण और बाटीका जाणो, मूंग दालका सरस बखाणो ॥ सक्कर चासणी उड़द दालका, जुवार मक्की सो ततकालका ॥ १७ ॥ कंसार किटीयां जुवार धाणीका, बत्तीसा संधाणा साणीका ॥ चावल और ओलाका भारी, राजठारा तिल्लिका जहारी ॥ १८ ॥ सूंठ गुंदका और पिस्ताई, बदाम चिरोंजी सक्कर मिलाई ॥ इत्यादिक बावन्न प्रकारा, कब लग नाम कहुं मैं न्यारा ॥ १९ ॥ दूधपेड़ा कुंदाका ताजा, घी सुकोमल खांड ने खाजा ॥ चरपरा गांठिया सक्कर पारा, दुध रावड़ी मांही छुहारा ॥ २० ॥ बरफी केसरिया पिस्ताई, कीनी मेवा अधिक मिलाई ॥ सरस जलेबी गरमा गरमी, छोड़े नहिं कोइ शरमा शरमी ॥ २१ ॥ कलाकंदमें मेवा झाजा, होय खुशी देखी सब राजा ॥ असल चिरोंजी सेव सिंगोड़ा, छावां भर भर मेली गोड़ां ॥ २२ ॥ सूत्तरफेणी और चिरोंजी दाणा, सांपसाई की अधिक रसाना ॥ अकबरी और अदरकभाणा, नुक्तिदाणा मध्य दरसाणा ॥ २३ ॥ घेवर सुरसा खांडका फीका, मुरकी पतासा पेठा नीका ॥ दहिंथड़ा और सूंठ ने खुर्मा, घी सक्कर मेवाका चुर्मा ॥ २४ ॥ दरावो दोठा पूरी कचोरी, मालपुवा और सेवड़ी सोरी

॥ सीरो साकुणी सीठी छुंवाली, तिलकी पापड़ी सक्कर घाली ॥ ॥ २५ ॥ कुडला पुडला और घणाई, कहेतां छाल अधिक वधि जाई ॥ गुंदफलीका लीट भलेरा, [illegible] छेडने कीना गहेरा ॥ २६ ॥ अंदरसा गुंजा गणी धारे, ठूंची [illegible] और सहु छाले ॥ गुलधाणी गुंदपाक अलका, दूध ओटाई मेल्या थ[illegible] ॥ २७ ॥ खारी सेव और वक्का दाली, कुलकुला वडा सुजिया छावे[illegible]ली ॥ दहीकी जावणी मेली आई, खाटा मीठाको मेल सदाई ॥ २८ ॥ आंव फलवती साख आमकी, जांबु निंबु कलमी जामकी ॥ सीताफल रामफल खड़बूजा, एरंडकाकड़ी और तर्बूजा ॥ २९ ॥ खिरणी चकोत अरु देशी केली, जंबीर बिजोरा अकरोट मेली ॥ फूट काचरा काचरी न्यारी, फणस रताळु तलसा त्यारी ॥ ३० ॥ कालो पोड़ाकी साकी गांठा, काट छील कर मेल्या सांठा ॥ टिंवरू करोंदा पाका अलेली, सरस खजूर धामण्या मेली ॥ ३१ ॥ कवीट आंवली पेमली बोरां, श्रीफल काचा मीठा घणेरां ॥ गुंदा फुंदा रायण आदी, नानाविध फलव्रात जांखादी ॥ ३२ ॥ अव भोजन की भई तय्यारी, कळु एक नाम सुणो नर नारी ॥ अतलस गादी वाजोठ सुरंगी, थाल सुवर्ण हीरा जड़ी चंगी ॥ ३३ ॥ रतन कचोला नानी कटोरी, मांजि धोय पूंछी करि कोरी ॥ गहुं मैदाकी रोटी धोली, मीठी रोटी पूरणपोली ॥ ३४ ॥ काठी कनककी रोटी छोटी, दुपड़ी सतपुड़ी साठाकी मोटी ॥ वाटी वाफला फलका गोला, रेलमालुचा दशमी ओला ॥ ३५ ॥ चरपरी पूरण रोटी खीरकी, गुंदकी रोटी विना नीरकी ॥ पोटा वासा कोरमाकी पूड़ी, मुंग मोठ हरवरा की रूड़ी ॥ ३६ ॥ लूण मिरच भर गरम मसाला, खाखरा तालमा रोटी रसाला ॥ फीका मीठा चोखा सुगंधी, भात केसरिया अधिक सुगंधी ॥ ३७ ॥ राम खीचड़ी मवाकी सांधी, मुंग तुवर मिलवा कई रांधी ॥ दूधराबड़ी थूली ढोली, काठी थूली जावरगी

ढीली ॥ ३८ ॥ घृतगायको नवो तपाई, घिलोड़ी मुख आड़ि नमाई ॥ ल्यो ल्यो करता मुंढो थाके, कुण जोरावर जो फिर हांके ॥३९॥ सक्कर बूरो गोल न मिशरी, काकब मेलन रंचज बिसरी ॥ सेव रबीच और खीर बणाई, खिचडो घुघरी राब सवाई ॥ ४० ॥ खीचीया पापड़ मुंग उड़दका, चणा बटला रुयर विधविधका ॥ सेक्या तालिया पतला मोटा, थालीपीठ बाजरी मोटा ॥ ४१ ॥ मक्की मालक गुनी जब जाणी, रालोबरटी कुलथ बखाणी ॥ जालरो तिवड़ो सामो जाणो, कोद्रा बरटी रोट बखाणो ॥४२॥ कर चतुराई भरया मसाला, धान्य चोवसिकी जिनस रसाला ॥ रसोइदार केइ देश देशका, अनेक रसोइ बहोत भेदका ॥४३॥ मिरची पकोड़ी चरपरी भावे, तलण वड़ी बड़ा अरवि आवे ॥ दाल मुंग और मोठ मसुरकी, उड़द चणा बटला विध तुवरकी ॥ ४४ ॥ पतली काठी सीस बांतलीया, मसाला नानाविध भेलिया ॥ कढी छाछ अमचूरकी जाणो, आंवला भाजीकी पण मानो ॥ ४५ ॥ बेलां डबका रेलमाचूरकी, अमटी अमरत्यो भाजी मुरकी ॥ वड़ी झोलकी और कोरडी, निपजायो अति चतुर गोरडी ॥ ४६ ॥ द्राख वड़ी भाजीको रायतो, अमल-पाणी बघार चायतो ॥ ऊनी छाछ बघारी सारी, लूण मिरंच राई छमकारी ॥ ४७ ॥ दहिको खीखरण मेथी दाणा, सक्कर खामल अमल बाणा ॥ खारावड़ी छाछवड़ी गलेरी, पेडा वडी और चिणी बहुतेरी ॥ ४८ ॥ पापड़वड़ी खीचावड़ी जाणो, पतला पताड़की अधिक रसाणो ॥ पाठवड़ी पताड़ कुडलाई, रसो ठावो दक्षिण मांही ॥ ४९ ॥ अमृत्यो रसको छमकारयो, सुरंबो अंबाको सूधारयो ॥ करपटा नीला चणा करेला, टोडोरी और काचा केला ॥ ५० ॥ नीलां वेर केर खरबूजा, फूट काकड़ी फणस तरबूजा ॥ कलिंगड़ा और गिलकी तराई, वंगा काचरी सुहिमातोड़ ॥ ५१ ॥ भिंडा झिंडा कोठकी कोडा, खलरा टिंडसी करलदा ओडा ॥ कोलां

चकीआल तुंवड़ा, सूरजणा कांचरा और झूमड़ा ॥ ५२ ॥ वालोल फल्ली चंवलाकी भारी, गवारफली सांगरी छमकारी ॥ कमलगट्टा वेंगण रताल्लु, सकरकंद मूला पिंडाल्लु ॥ ५३ ॥ सुवो वाथलो खाटी भाजी, मेथी चणा वथुवाकी ताजी ॥ अमलमूला और चंदलोई, पालको ढिमरो पोचो जोई ॥ ५४ ॥ अंवाड़ी करडी अजमाकी, रालरो लुण्यो पुवाड़ सभाकी ॥ घोड्या घोल पोकली जाणो, चिपाडी ठाक चुका करिमाणो ॥ ५५ ॥ फांदिसेंपा और परजणकी, सरूखरुड़वा और सिंधवणकी ॥ चिलरी राई राजगरारी, करंजरो और हेसरखारी ॥ ५६ ॥ चणा छोल वाहिगकी भाजी, जीमे लोक झड़ा झड़ राजी ॥ कूवी सूवी और घणेरी, कहां लग नाम कहुं में हेरी ॥ ५७ ॥ लोंजी आंव आंवली केरी, गरम मसाले धुंगारी गहेरी ॥ चटणी कोथमीरकी जाणो, कविट आमकी अधिक रसाणो ॥ ५८ ॥ श्रीफल तिल्ली लूण मिरचकी, हवडीरोड मासरसुंचिंचकी ॥ गरम मसालाकी केइ चटणी, भांत भांतकी वटणी छठणी ॥ ५९ ॥ अथाणो वली आम वखाणो, लिंवु मिरची आदी जाणो ॥ वांसाढा और भिंडी तरोइ, गिलकी वालोल फलीकी जोई ॥ ६० ॥ चंवला वटला मेथी दाणाको, करमदा खारक कैर चणाको ॥ गवारफली सुरजणाकी जाणो, भांत चौरासी अधिक रसाणो ॥ ६१ ॥ पुडियां भर भर आगे मेले, जिमणवाला लेतां ठेले ॥ वालक वूढ़ा तरुणा रोगी, वणी रसोइ सो सवजोगी ॥ ६२ ॥ नाम न आवे पूरा जिणसूं, थोड़िक रचना कहि में तिणसूं ॥ जीमे सघला होंसे होंसे, किंचित मात्र कोई न रोसे ॥ ६३ ॥ हम न पीरसी कोई न वोले, रह्यो नहिं कोई भाले भोले ॥ जीमता जीमता थाक्या पूरा, एक कवो लवण नहिं सूरा ॥ ६४ ॥ सघला वोले नाजी नांजी, कोई न वोले मेलो हांजी ॥ पीरसणवाला अधिक मनावे, जीमण

वाला करडा थावे ॥ ६५ ॥ मेले शुभ सुगंधिक पाणी, हाथ धोया सब हट अधिकाणी ॥ हलवे हलवे पूंठे पूंठे, गोडे हाथ देईने ऊठे ॥ ६६ ॥ पेट भराणां तंग मतंगा, सहु अघाणा छाड उमंगा ॥ सघला हलवे हलवे चाले, उतावला फिर कोइ न हाले ॥ ६७ ॥ बोले धीरे धीरे चालो, भोजन जिम लिन बैठो थालो ॥ एसी रीतें चल कर आया, जाजम गादी तकिया बिछाया ॥ ६८ ॥ तीन अहारको कियो वखाणो, मुखशोधन मुखवास सुहाणो ॥ जायपत्री और लौंग सुपारी, दालचिणी इलायची प्यारी ॥ ६९ ॥ काली मिरच सूंठ सवादी, कबाबचीणी पीपर हरे व्याधि ॥ कपूर सुवासिक कत्थो चूनो, नागरवलीको दल दूनो ॥ ७० ॥ बीडो वाल कें देवे आई, लेवे सघला चित्त हरखाई ॥ लिंडीपीपर सरसो अजमो, चूरण सवादी आहार हजमो ॥ ७१ ॥ पहेराई फूलनकी माला, देवे पचरंगी जरी दुसाला ॥ केइने दुपट्टावर जोडी, केइने चीरा पाग पिछोडी ॥ ७२ ॥ पंच पोशाक पेरावे चंगी, जामो अंगरखी वर पचरंगी ॥ दीधि मंदिल वालाबंदी, देखत तन मन होय आणंदी ॥ ७३ ॥ केइने कंठी हारज दीना, केइने कुंडल अधिक नवीना ॥ बाजुबंध अंगूठी चंगी, सिर सिरपेच दीना मनरंगी ॥ ७४ ॥ हाथी घोडा रथ पालखी, केइने दीना नाल मालकी ॥ यथायोग सबने सन्माने, द्वादशमे दिन महोत्सव ठाने ॥ ७५॥ सिद्धा-रथ नृप सहुने बोले, कुंवर नाम थापणने खोले ॥ जिण दिन राणी कूखें आया, तिण दिनथी कुल बल सवाया ॥ ७६ ॥ दिन दिन वृद्धि कारण मानो, वर्द्धमान कुंवर इम ठाणो ॥ सहु सुणी हरखाणा गोती, नाम यथागुण कुंडल जोती ॥ ७७ ॥ घर घर मंगलमाल बंधावे, गोरडियां मिल मंगल गावे ॥ तिडाकिड तिनाकिड तांसां बाजे, धिं धिं धिं धिं नौबत गाजे ॥ ७८ ॥ दों दों थप थप मादल रंगी, कुण कुण कुण कुण करे सारंगी ॥ झालर बाजे झण झण झण झण,

घुघरी घमके खग खण खण खण ॥ ७९ ॥ तुंतुनो करे तुन तुन तुन तुन, करतालो करे छुन छुन छुन छुन ॥ घणणण घंटानाद उच्चारे, नरसिंगो धु धु धु धुकारे ॥ ८० ॥ धनिकट धनिकट वजे नगारा, इत्यादिक गुणपच्चास प्रकारा ॥ नाचे पातर सभा मझारी, दियो दसोट्टण हर्ष अपारी ॥ ८१ ॥ तिलोकरिख कहे प्रभु पुण्य भारी, नाम लियां हरखे नर नारी ॥ जो कोइ दसोट्टण को गावे, खावे नहिं तो मन हरखावे ॥ ८२ ॥ श्रीजिनराज की कथा विस्तारे, करे अनुमोदन प्रेम अपारे ॥ तो पण निर्जरा पुण्य है भारी, इम जाणी सुणजो नर नारी ॥ ८३ ॥ संवत उगणीसें सेंतिस साले, अहमदनगर दक्षिण वरसाले ॥ भाद्रव कृष्ण चवदस तिथि जाणो, वार शुक्र शिवजोग वखाणो ॥ ८४ ॥ श्रीवर्द्धमान दसोट्टण केरी, कीनी कविता एह भलेरी ॥ श्रीजिन पुण्य प्रशंसा जाणो, सुण कर आरंभ नहिं वधाणो ॥ ८५ ॥ एसा भोजन वार अनंती, कीना पण तृष्णा न बुझंती ॥ इणमें शंका रंच न मानो, केवलज्ञानी कहि ह वाणो ॥ ८६ ॥ इम जाणी तप जप आदरजो, चितमें समता भवकी करजो ॥ अनुभव ज्ञानी दिशारस आसो, सदा तृप्त रहशो पद पासो ॥ ८७ ॥ अधिको ओछो जोड्यो कोइ, मिच्छामि दुक्कडं तस होइ ॥ सूत्र वचन प्रमाण सदाइ, पाले सो धन धन जगमांहा ॥ ८८ ॥ इति श्री माहावीर स्वामीनी दसोट्टणनी स्वाध्याय समाप्त ॥

॥ अथ माहावीर स्वामिनुं चोढालियुं लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ सासणनायक सुरतरु, वर्द्धमान सुखकंद ॥ प्रणमी कहुं तिणनीचरी, सुणतां परमानंद ॥ १ ॥ समकित आई जिहांथकी, भव सत्तावीश मूल ॥ पंच कल्याणिक वरणवुं, आगम वयण कबूल ॥ २ ॥

॥ ढाल पहली ॥

॥ धर्म पावेतो कोइ पुण्यवंत पावे ॥ ए देशी ॥ जय जय शासण स्वामी दयाला, परमपति उपगारी जी ॥ नयसार प्रथम भवमांही, उपशम समकितधारी जी ॥ ज० ॥ १ ॥ तिहांथी सुरभव थिति क्षय करिने, थया भरतजीका नंदो जी ॥ मिरियच नाम कहाणो तिण भव, संजम मंद स्वछंदो जी ॥ ज० ॥ २ ॥ तापस व्रत पाली भव चौथे, लीनो सुर अवतारो जी ॥ तिहांथी तापस निर्जरभव, वली तापस व्रतधारो जी ॥ ज० ॥ ३ ॥ तिहांथी अंबर तापस किरिया, वली गया देव विमाणे जी ॥ तिहांथी तापस सुरपद पाया, तापसनाकले ठाणे जी ॥ ज० ॥ ४ ॥ ए सोला भव म्होटा करीने, रुलीयो बहुसंसारो जी ॥ विश्वभूति भवें करे नियाणो, तिहांथी सुर अवतारो जी ॥ ज० ॥ ५ ॥ उगणीशमे भवें हरिपद पाया, नाम त्रिपृष्ठ कहाणो जी ॥ सातमी पृथवी निकली तिहांथी, सिंह तणो भव जाणो जी ॥ ज० ॥ ६ ॥ नरक गया तिहांथी कर्मावश, चक्रवर्त्ति पद पाया जी ॥ संजम पाल्यो कोड़ि वरस लग, अंते अणसण ठाया जी ॥ ज० ॥ ७ ॥ तिहांथी सातमे स्वर्ग सिधाया, चोविशमा भवमांय जी ॥ तिहांथी पच्चिशमा भवमांइ, हुवा नंद महाराय जी ॥ ज० ॥ ८ ॥ संजम ले कर तप आदरियो, मास मास तप ठाया जी ॥ एकसठ सहस्र न लाख इग्यारा, दोसें अधिक दरसाया जी ॥ ज० ॥ ९ ॥ वीश बोल सेवन कर बांध्यो, गोत्र तीर्थंकर तामो जी ॥ तिहांथी दशमे स्वर्ग सिधाया, वीश सागरथिति ठामो जी ॥ ज० ॥ १० ॥ तिहांथी भवथिति क्षय करी स्वामी, मास आषाढ मझारो जी ॥ शुकलपक्ष छठ मध्यनिशामें, फाल्गुणी उत्तरा विचारो जी ॥ ज० ॥ ११ ॥ खत्रीकुंड सिद्धारथ राजा, त्रिशलादे राणी सुजाणी जी ॥ चउदे स्वपना देइने उपना, पुण्य तणे परमाणो

जी ॥ ज० ॥ १२ ॥ चैतशुद्ध तेरश अध रयणी, जनम्या अंतरयामी जी ॥ चोसट इंद्र मिल महोत्सव करकें, मेल गया शिर नामी जी ॥ ज० ॥ १३ ॥ सिद्धारथ नृप महोत्सव कीधो, निज सहु जाति जमाई जी ॥ नाम दियो वर्द्धमान कुमर जी, दिनदिन अधिक वडाइ जी ॥ ज० ॥ १४ ॥ त्रीस वरस ग्रहवासमें वासिया, पुत्री एकज जाणो जी ॥ मात पिता पहोंता सुरलोके, अभिग्रह ताम पूराणो जी ॥ ज० ॥ १५ ॥ वरसीदान दियो नित्य साहिब, भाव संजमका आया जी ॥ तिलोकरिख कहे पहेली ढालमें, भव सत्ताविश दरसाया जी ॥ ज० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मागशिरवदि दशमी तिथि, छठ तपस्या प्रभु धार ॥ एकाकी साहसपणे लीनो संजमभार ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ देशी हमीरियाकी ॥ धन धन त्रिशलानंद जी, सिद्धारथ कुलचंद ॥ जिनेश्वर ॥ तप तप्या प्रभु आकरा, ताड्या कर्मना वृंद ॥ जि० ॥ ध० ॥ १ ॥ नव चोमासी तप कीया एक करी छ मास ॥ जि० ॥ अभिग्रह दूजी छमासीमें, तेरा बोल विमास ॥ जि० ॥ ध० ॥ ॥ २ ॥ एकसो पंचोतेर दिवशमें, चंदनबाला हाथ ॥ जि० ॥ जोग मिल्यो कोसंबीमें, पारणो कियो जगनाथ ॥ जि० ॥ ध० ॥ ३ ॥ मास खमण द्वादश कीया, पक्ष बहोतेर कीध ॥ जि० ॥ आसण विविध प्रकारनां, सूत्तरमें सहु विध ॥ जि० ॥ ध० ॥ ४ ॥ अढाइमासी तीनमासी दोय, दोयमासी खट जाण ॥ जि० ॥ देढ मासी वली दो करी, दोसे गुणतीस बेला मान ॥ जि० ॥ ध० ॥ ॥ ५ ॥ भद्र माहाभद्र शिवभद्र तपे, सोला दिन इम जोय ॥ जि० ॥ भिक्खुपडिमा अष्टम तणी, कीनी द्वादश सोय ॥ जि० ॥ ध० ॥ ॥ ६ ॥ साढी ग्यारा वर्षनी उपरें, पच्चास दिन तप भार ॥ जि० ॥

एक कम साडातीनसें, पारणे तारया दातार ॥ जि० ॥ ध० ॥ ७ ॥ देश अनारज विचरिया. सह्या परिसह कठोर ॥ जि० ॥ कुत्ता लगाया डरावणां, वध बंधण कह्या चोर ॥ जि० ॥ ध० ॥ ८ ॥ श्रवणे खीला खोभीया, पग पर रांधी खीर ॥ जि० ॥ डंक दीयो चंडकोशिये, रह्या अचलगिरि धीर ॥ जि० ॥ ध० ॥ ९ ॥ अभव्यसंगमो देवता, आणी दुष्ट परिणाम ॥ जि० ॥ छमास लगें दुःख दीयो, राखी समता स्वाम ॥ जि० ॥ ध० ॥ १० ॥ नर सुर तिर्यंचना सहु, सह्या परिसह सर्व ॥ जि० ॥ शम दम उपशम भावशुं, रंच न आण्यो गर्व ॥ जि० ॥ ध० ॥ ११ ॥ चउविहार तपस्या सहु, निद्रा मुहूरत एक ॥ जि० ॥ तिणमांही स्वपनां दश लह्या, गोदूज आसण टेक ॥ जि० ॥ ध० ॥ १२ ॥ धन धीरज प्रभुजी तणी, धन करणी करतूत ॥ जि० ॥ धन कुल जिहां प्रभु जनमिया, धन जाया एहवा पूत ॥ जि० ॥ ध० ॥ १३ ॥ मावडी जायो एहवो, दूजो नहिं संसार ॥ जि० ॥ क्षमाशूरा अरिहंतजी, उपमा सूत्र मझार ॥ जि० ॥ ध० ॥ १४ ॥ करम भरम चकचूरिया, दूजी ढालमझार ॥ जि० ॥ तिलोकरिख कहे धन प्रभु, प्रणमुं वार वार ॥ जि० ॥ध० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुक्लदशमी वैशाखनी, दिन ऊगत परमाण ॥ वीर जिनेश्वर पामिया, निर्मल केवल ज्ञान ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ कर्मसमो नहिं कोइ ॥ ए देशी ॥ जाणी लोकालोककी रचना, खटद्रव्य गुणपरजायो ॥ चौतिस अतिशय पेंतिस वाणी, जग तारक जिनरायो रे ॥ भविका ॥ श्रीजिन पर उपगारी ॥ तारया बहु नर नारी रे ॥भ०॥१॥ चौसठ इंद्र आया तिण अवसर, त्रिगडो रच्यो तिण वारें ॥ स्फटिक सिंहासन उपर विराजे, अमृतवेण उच्चारे रे ॥ भ० ॥२॥ मध्य पापापुरिमें तिणवेला, यज्ञ रचाणो छे भारी ॥ बहु पंडित

नों थयो समागम, जावे सुर गगन विहारी रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ महिमा देखी मानविशेषें, पंचसया परिवारें ॥ इन्द्रभूति चल आया प्रभुपें, संशय गर्व निवारी रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ संजम ले गणधर पद लीनो, अग्निभूति चल आवे ॥ ते पण संशय दूर भयासुं, संजमसुं चित्त लावे रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ इम इग्यारा गणधर रचना, चम्मालिशसें संख्या जाणो ॥ एकण दिनसें लीनी ज्यां दीक्षा, गुण रत्नागर खाणो रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ तीनसें चौदा पुरवधारक, तेरशें रिख ओहिनाणी ॥ पांचशें मनःपरयव मुनि जाणो, बोले यथातथ वाणी रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ सातशें वैक्रिय लब्धिना धारक, चारसें चर्चावादी ॥ आठशें अनुत्तरविमानें विराज्या, सातसें रिख शिव साधी रे ॥ भ० ॥ ८ ॥ चउदा सहस्र रिख संपदा सारी, ज्येष्ट गोतम गणधारी ॥ चंदनबालादिक सहस्र छत्तिसी, थइ रमणी सुविचारी रे ॥ भ० ॥ ९ ॥ एक लाख गुणसठ सहस्र श्रावक, आणंदादिक व्रतधारी ॥ अठारा सहस्र तीन लाख श्राविका, सुलसादिक अधिकारी रे ॥ भ० ॥ १० ॥ विचरया गाम नगर पुर पाटण, तारया बहु नर नारी ॥ प्रथम चोमासो अस्थिग्राममें, दूजो प्रष्टचंपा मझारी रे ॥ भ० ॥ ११ ॥ त्रीजो चंपा चतुर्थ सावत्थी, विशाला वाणिय कह्या वारा ॥ चउदा चोमासा राजगृहीमे, मथुरामें खट सारा रे ॥ ॥ भ० ॥ १२ ॥ भद्दलपुरीमें दोय दिपाया, आलतीस एम जाणो ॥ एक आलंबिका एक सावत्थी, एक अनारज थाणो रे ॥ भ० ॥ १३ ॥ तारया बहु भवियण नर नारी, विचरता श्रीजिनराया ॥ अनुक्रमें आया पावापुरीमें, हस्तिपाल जिहां गाया रे ॥ भ० ॥ १४ ॥ कर जोडी प्रभुसुं करे अरजी, रथशालाने मझारो ॥ अबके चोमासो इहां करो प्रभुजी, विनति ए अवधारो रे ॥ भ० ॥ १५ ॥ क्षेत्र फरसना जाणी दयानिधि, कीनो चरम चोमासो ॥ धरम दिवाकर धर्म दीपायो. पूरी भविजन आशो रे ॥ भ० ॥ १६ ॥ तिलोकरिख

कहे त्रीजी ढालें, धन धन अंतरयामी ॥ गुण रतनागर परम उजागर, वंदु नित शिर नामी रे ॥ म० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोथो मास वरसातनो, पक्ष सातमो ठाण ॥ तेरश आधी रातसुं, अणसण धारयो जाण ॥१॥देश अढारना भूपति, छठ तप पौषध कीध ॥ सोला प्रहर लग देशना, स्वामी निरंतर दीध ॥ ॥ २ ॥ सूत्र विपाकज उचरयो, उत्तराध्ययन छत्तिस ॥ भविजीवां हितकारणें, पूरी एह जगीश ॥ ३ ॥ गौतम मोहिणी टालवा, जोई अवसर सार ॥ पर उपगारी परमगुरु, शिवसुखना दातार ॥ ॥ ४ ॥ कार्तिक वदि अमावस्या, कहे गौतम सुं स्वाम ॥ देवशर्मा विप्र बोधवा, जावो तिणने ठाम ॥ ५ ॥ तहत्ति करी तिहां संचरया, पीछें दीन दयाल ॥ जाय विराज्या मोक्षमें, भवफेरा दिया टाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ क्षमावंत जोय भगवंतनो रे ज्ञान ॥ए देशी ॥ श्रीजिन शिवपुर संचरया जी, थयो जगमें अधकार ॥ गौतमस्वामी जाणीयो जी, आरत आइ अपार ॥ जिनेश्वर ॥ हवे मुज कवण आधार ॥ १ ॥ ए टेक ॥ धसकी पड्या धरणी तदा जी, शुद्धि न रही लगार ॥ धिक धिक मोहनी कर्मने जी, देखो कर्मविकार ॥ जि० ॥ ह० ॥ ॥ २ ॥ एक महूरतने आंतरे जी, आइ चेतना ताम ॥ मोहवशें करे झूरणा जी, छोडी गया केम स्वाम ॥ जि० ॥ ह० ॥ ३ ॥ अंतेवासी हुं आपको जी, रहेतो जिम तन छाय ॥ छेले समे कियो आंतरोजी, ए तुम जुगतुं नाय ॥ जि० ॥ ह० ॥४॥ हुं पल्लो नहिं झालतो जी, जातां मोक्ष मझार ॥ जागा पण नहिं रोकतो जी, किम आयो तुम खार ॥ जि० ॥ ह० ॥ ५ ॥ बाल ज्यों आडो न मांडतो जी, भाग न मांगतो ज्ञान ॥ अणख न करतो आपशुं जी, लागो तुमशुं ध्यान ॥ जि० ॥ ह० ॥ ६ ॥ कारमो राग होतो नहिं जी, तुमशुं माहरो नाथ

॥ तुम सम माहरे दुसरी जी, होती नहीं कोई आथ ॥ जि० ॥ ह० ॥७॥ एकपखी जे प्रीतडी जी, पार पड़े नहिं तेह ॥ आज जाणी में परतिख जी, इणमें नहिं संदेह ॥ जि० ॥ ह० ॥ ८ ॥ गोयम गोयम नाम ले जी. कुण बोलावसी सोय ॥ कुणकने लेशुं आज्ञा जी, चिंता मुझने सोय ॥ जि० ॥ ह० ॥ ९ ॥ जो मुझ मन शंका होतो जी, पूछतो सहु तत्काल ॥ भर्म सहु तुमें टालता जी, प्रत्यक्ष दीन दयाल ॥ जि० ॥ ह० ॥१०॥ तुम दरिसण अविलोकतां जी, रोमरोम हुलसंत ॥ हवे दरिसण किहां आपना, जी, भयभंजण भगवंत ॥ ॥ जि० ॥ ह० ॥ ११ ॥ तुम वाणी अमृत समी जी, साकर दूध सवाय ॥ हवे किणनी सुणशुं गिरा जी, जगतारक जिनराय ॥ जि० ॥ ह० ॥ १२ ॥ वली मनमांही चिंतवे जी, धिक धिक मोहनी कर्म ॥ धन धन श्रीजिनरायने जी, साध्यो आतमधर्म ॥ जि० ॥ ह० ॥१३॥ तुष कर्म परभावथी जी, रुलियो चउगतिमांय ॥ एकाकी तिहुं काल में जी, ए जिनशासन राय ॥ जि० ॥ ह० ॥ १४ ॥ वीतराग प्रभुनी दिशा जी, शंका नहिं लगार ॥ तुं किम भूल्यो भर्मसें जी, शम दम उपशम धार ॥ जि० ॥ ह० ॥ १५ ॥ ध्यान शुक्ल तिहां ध्याइयो जी, दीनां कर्म खपाय ॥ केवलज्ञान प्रगट थयो जी, आरत रहि नहिं कांय ॥ जि० ॥ ह० ॥ १६ ॥ केवल महोत्सव सुरपति कीयो जी, निर्वाण पण तिण ठाम ॥ चार तीर्थ मली थापीया जी, पाटें सुधर्मा स्वाम ॥ जि० ॥ ह० ॥ १७ ॥ शिष्य थया जंबु जिसा जी, राते परणीया नार ॥ कोड़ि नव्वाणुं त्यागिने जी, दिन ऊगां व्रत धार ॥ जि०॥ ह० ॥१८॥ तीन पाट थया केवली जी, श्रीजिन आगम वयण ॥ जे धारे भवि प्राणीया जी, उघडे अंतर नयण ॥ जि० ॥ ह० ॥ १९ ॥ रहियो जिन धर्मने जी, पूरव वर्ष हजार ॥ हवे तो सूत्र व्यवहार छे जी, हवणां परम आधार ॥ जिनेश्वर ॥ हवे प्रवचन आधार ॥ ए टेक ॥ २० ॥ इण परमाणे चालसी जी, टालसी आतमदोष ॥ तो भवि प्राणी

जीवड़ा जी, अनुक्रमें जासी मोक्ष ॥ जि० ॥ ह० ॥ २१ संवत उगणीशें जाणीयें जी, सैंतिस वर्ष मझार ॥ दीपमाला दिने ए कथ्यो जी, तिलोकरिख सुविचार ॥ जि० ॥ ह० ॥ २२ ॥ अहमदनगर देश दाक्षिणें जी, सुखें रहिया चोमास ॥ भणशे गुणशे भावशुं जी, लहेशे शिवसुख वास ॥ जि० ॥ ह० ॥ २३ ॥ कलश ॥ समकित पाया, भव घटाया, सत्ताविश थुल, जाणिया ॥ तेह वरणव, भवि कहे ते, चार ढाल, बखाणिया ॥ शासण नायक, सुखदायक, प्रणमुं वार वार ए ॥ तिलोकरिख कहे, नाथ अरजी, करजो भव, निस्तार ए ॥ प्रभु दीजो जय जय कार ए ॥ १ ॥ इति श्रीवर्द्धमान जिनेश्वर नुं चौढालीयुं संपूर्ण ॥ सर्वगाथा ॥ ८२ ॥

॥ अथ खंधकजी को चोढालीयो लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणमुं जगनायक सदा, भयभंजण भगवंत ॥ आचारज उवज्झाय जी, गौतमादिक सव संत ॥ १ ॥ श्रीगुरुचरणांबुज नमुं समरुं सरस्वति माय ॥ खंधक मुनिगुण गावशुं, सुणजो चित्त लगाय ॥ २ ॥

॥ ढाल पहली ॥

॥ रे प्राणी कर्म समो नहिं कोइ ॥ ए देशी ॥ सावत्थि नामें नगरी भलेरी, गढ मठ पोल प्रकारो ॥ हाट हवेली महेल मालीयां, शोभा विविध प्रकारो रे ॥ प्राणी धर्म सदा सुखदायी ॥ १ ॥ कनककेतु तिहां भूपति जाणो, धर्मकेतु गुणवंतो ॥ शूरवीर महीमंडल मांही; प्रजा जनक जसवंतो रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ मलया राणी पति सुखदाणी, वाणी मधुर गजगमणी ॥ चंद्रवदन मृगनयणी शाणी, शीलरूप गुणरमणी रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ तस नंदन सुखकंद सकलने, खंधक नामें कुमारो ॥ गुण तस वंदक चंद ज्यों शीतल, शूरवीर शिरदारो रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ वोहोंतेर कलामांही अधिक विचक्षण, दिन दिन कीर्त्ति सवाई ॥ मात पिताकी भक्ति कारक;

भद्रक भाव सदाइ रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ तिण अवसर मुनि विजयसेण रिख, गुणरतनाकर भारी ॥ परम वैरागी आश्रवत्यागी, धर्म रागी तपधारी रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ श्रीसंघ मंडण भर्म विहंडण, बहु शिष्यने परिवारें ॥ ग्राम नगर पुर पाटण विचरे, भवि प्राणी बहु तारे रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ अनुक्रमें आया तिण पुरमांही, उतरया बाग मझारो ॥ श्रावक सुणके अधिक आनंदे, वंदण गया अणगारो रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ भूपति निजसंपति सव लेइ, मुनिवंदन परवरिया ॥ अवसर देखी देशना देवे, ज्ञानगुणका सो दरिया रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ९ ॥ ए संसार सुपनवत माया, देखतमें विरलावे ॥ धन संपत सब कारमी जाणे, ज्यों बादलदल छावे रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ नीठ नीठ एह नरभव पायो, रोटी साटे मति हारो ॥ धर्मरतन राखो अतिजतने, परभव खाचि या लारो रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ कर्म निवारो धर्मज धारो, वारो विषय विकारो ॥ केवल पावो मुक्ति सिधावो, उतरो भवजल पारो रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ इत्यादिक उपदेशना दीनी, प्रथम ढालके मांही ॥ तिलोकरिख कहे भविजन प्राणी, सुणके हरख्या घणाइ रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ खंदक कुमर तब वीनवे, जोडी दोनुंइ हाथ ॥ सत्यवाणी प्रभु ताहरी. धर्म बोळावु साथ ॥ १ ॥ आथ नहिं इण सारखी, में जाणी निर्धार ॥ मात पिता आज्ञा लेई, लेशुं हुं संजमभार ॥ २ ॥ मुनिवर कहे जिम सुख होवे, तम करो ततकाल ॥ धर्म ढील नें कीजियें, भांखी ए दीन दयाल ॥ ३ ॥ मुनि वंदी घर आविया, खंधक नाम कुमार ॥ किणविध मांगे आज्ञा, ते सुणजो अधिकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ नंदन जमधारी. हुवा छे देवकी मायना ॥ अथवा माचको दोहामें देशी छे ॥ कुमर कहे करजोडिने सो कांइ, यह संसार असार ॥

धन संपत सब कारमी स कांइ, शंका नहीं लगार हो ॥ माताजी मोरां, आज्ञा देवो तो संजम आदरुं ॥ १ ॥ ए टेक ॥ वचन सुणी इम पुत्रका स कांइ, मूर्छाणी तत्काल ॥ शुद्ध बुद्ध सघली वीसरी स कांइ, मोहकी म्होटी झाल हो ॥ मा० ॥ २ ॥ शीतल नीर समीर प्रभावें, कांइक थई हुसियार ॥ करुणा स्वरें नयणां जल वरसे, ज्युं श्रावण जलधार हो ॥ मा० ॥ ३ ॥ तुं मुझ नंद एकाकी कुलमें, जीवन प्राण आधार ॥ उंबर फूल सम दरिसण थारो, मत ले संजमभार हो ॥ सुण नंद हमारा, जोबन ढलिया सुं लीजें जोगने ॥ ए टेक ॥ ४ ॥ विनय करीने कुमर पयंपे, काल व्याल विकराल ॥ हरि हर इंद्र चंद्र नहिं छोडे, छिनमें करे वेहाल हो ॥ मा० ॥ ५ ॥ जिणने हेत होय कालरिपुसें, भाग जाणे की पहोंच ॥ अथवा जाणे हुं कदी न मरशुं, उणके तो नहिं सोच हो ॥ मा० ॥ ६ ॥ राजलक्ष्मी संपत बहुली, हय गय दल बल पूर ॥ ए भोगव फिर संजम लीजे, मान केणी जरूर हो ॥ सु० ॥ ७ ॥ धन दोलत ओर माल खजीना, ज्यों विजली झबकार ॥ चोर अग्नि सज्जन भय धनमें, नरकगति दातार हो ॥ मा० ॥ ८ ॥ कोमल काया कंचन वरणो, तरुणीसुं सुख भोग ॥ वृद्धपणो जब आवे तनमें, तब आदरजे जोग हो ॥ सु० ॥ ९ ॥ काया माया बादल छाया, मल मूत्र भंडार ॥ रोग शोकनो भाजन इणमें, तप जप संजम सार हो ॥ मा० ॥ १० ॥ भोग हलाहल जहेरसुं जादा, फल किंपाक समान ॥ अल्प सुखसुं दुःख अनंता, सेहतछुरी जिम जाण हो ॥ मा० ॥ ११ ॥ रतन पिंजरे शुक नहिं राजो, तिम हुं इण संसार ॥ जनम मरण दुःख मोहनो बंधण, कहेतां न आवे पार हो ॥ मा० ॥ १२ ॥ मोह ताता वश माता बोले, तुं वत्स अति सुकुमाल ॥ पंच महाव्रत मेरु समाना, तोड़णो मोह जंजाल हो ॥ सुण पुत्र पियारा, संजम लेणो जी

दुक्करकार छे ॥ ए टेक ॥ १३ ॥ पग अणत्राणे चालणो स कांइ, लोचम सोच अपार ॥ बाविश परिसह जीतणा स कांइ, चलणो खांडाधार हो ॥ सु० ॥ १४ ॥ घर घर भिक्षा मांगणी स कांइ, दोष बयांलीस टाल ॥ कोइक देशे उलट प्रणामें, कोइक देशे गाल हो ॥ सु० ॥ ॥ १५ ॥ वाय भरेवो कोथलो स कांइ, दुक्कर छे जगमांय ॥ शिला अलूणी चाटणी स कांइ, दीक्षा अति दुःखदाय हो ॥ सु० ॥ १६ ॥ कुंवर पयंपे सत्य कही सब, कायर नरने जाण ॥ शूरवीरने सहेज छे संजम, शंका रंच न आण हो ॥ मा० ॥ १७ ॥ तिलोकरिख केहे दूजी ढालें, लीनी दृढता धार ॥ मात पिता थाका समजातां, आज्ञा दी तिणवार हो ॥ सु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कियो महोत्सव दीक्षा तणो, सूत्रमांहे विस्तार ॥ पंच महाव्रत आदरया, धन खंधक अणगार ॥ १ ॥ मात पिता मोहनी वशें, पंचसया परिवार ॥ राख्या रक्षा कारणें, सुभट बड़ा हुसियार ॥ २ ॥ जिहां जिहां मुनिवर संचरे, तिहां तिहां रहे सो लार ॥ नृप चुकावे नोकरी, जाणे नहिं अणगार ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ आज आणंद घण जोगीसर आया ॥ ए देशी ॥ खंधकमुनी गुणवंदक जगमें, पंचमहाव्रत पाले रे लो ॥ पांच समिति तीन गुप्ति आराधे, पंच प्रमाद मद टाले रे लो ॥ खं० ॥ १ ॥ छ काया प्रतिपाल दयानिधि, पांचु क्रिया परिहारी रे लो ॥ सतरा भेदे संजम पाले, द्वादश तपस्याधारी रे लो ॥ खं० ॥ २ ॥ चाकर ठाकर शत्रु सज्जन, सम जाणे रिखराया रे लो ॥ क्षमासागर गुणरत्नागर, त्यागी जगतकी माया रे लो ॥ खं० ॥ ३ ॥ सहे परिसह शूर परिणामें, चार कषाय निवारी रे लो ॥ मास मास तप करत निरंतर, शम दम उपशमधारी रे लो ॥ खं० ॥ ४ ॥ ज्ञान प्रबल

मुनि ध्यानमें शूरा, एकाकी पडिमा विहारी रे लो ॥ ग्राम नगर पुर पाटण विचरे, तारे बहु नर नारी रे लो ॥ खं० ॥ ५ ॥ एकदा मासखमण तप करतां, कुंति नगरीमें आया रे लो ॥ सुभट विचारे इहां मुनिवरनां, बहेन बनेवी राया रे लो ॥ खं० ॥ ६ ॥ इहां डर कारण नहिं जरा भर, उतरया बाग मझारो रे लो ॥ लागा सहु भोजन करवाने, ते मुनिवर तिणवारो रे लो ॥ खं० ॥ ७ ॥ प्रथम पहेरमें सूत्र चितारे, दुर्जामें ध्यानज ठाया रे लो ॥ त्रीजी पहेरसी पारणा कारण, मुनि गोचरीयें सिधाया रे लो ॥ खं० ॥ ८ ॥ कोमल काया पग अणुवाणे, परसेव भींज्यो शरीरो रे लो ॥ खड़ खड़ बाजे हाड़ मुनिनां, चाल चलै अति धीरो रे लो ॥ खं० ॥ ९ ॥ चल आवे नृप महेलनी पासें, राजाजी तिणवारो रे लो ॥ राणीसंघातें चोपड़ खेले, हर्षवदन हुसियारो रे लो ॥ खं० ॥ १० ॥ राणीकी दृष्टि पड़ी रिख उपर, मनमें ताम विचारी रे लो ॥ मुझ बंधव पण संजम लीधो, सहेतो होसी दुःख भारी रे लो ॥ खं० ॥ ११ ॥ ऊणारत आणी अति राणी, आंसु ततक्षण आया रे लो ॥ नृप पूछे सो कांइ न बोली, नीचें देख्यो तव राया रे लो ॥ खं० ॥ १२ ॥ मुनिवर देखी वेरज जाग्यो, अधिको क्रोध भराणो रे लो ॥ ए मोडो इण पंथें क्यों आयो, चाकरसुं कहेवाणो रे लो ॥ खं० ॥ १३ ॥ पकड़ ले जावो जंगलमांही, सब तन खाल उतारो रे लो ॥ छोडो मत एह कोइ प्रकारें, मानो हुकम ए माहरो रे लो ॥ खं० ॥ १४ ॥ आघो पाछो कांइ न सोची, पुरव वैर प्रभावें रे लो ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालें, राय हुकम फरमावे रे लो ॥ खं० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुभट आया तत्क्षण तदा, ते मुनिवरनी पास ॥ ग्रहवा लाग्या कर भणी, तब पूछे मुनि तास ॥ १ ॥ सो कहे आज्ञा रायनी,

खाल उतारण काज ॥ ले जावां श्मशानमें, तब बोल्या रिख राज ॥ २ ॥ हाथ ग्रहो मत माहरा, हुं आवुं तुम लार ॥ मुनि पहुंता श्मशानमें, मनमें साहस धार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चौथी ॥

॥ बलती द्वारिका देखिने रे ॥ ए देशी ॥ खंधकमुनि श्मशान में रे, आलोयणा शुद्ध कीध ॥ नमोत्थुणं सिद्धने दियो, दुजो अरिहंताने दीध रे ॥ धन धन मुनिराय ॥ १ ॥ पाप अठारा त्यागीया रे, जावजीव चोविहार ॥ काया माया ममता तजी कीयो, पादोपगमन संथार रे ॥ ध० ॥ २ ॥ उभा मुनि निश्चलपणे रे, ज्यों काष्ठो छोले सुतार ॥ राय सुभट लीया पाछणां भाइ, तीखो छे तिणरी धार रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ खाल उतारी देहनी रे, चरड़ चरड़ तिण वार ॥ तरड़ तरड़ रुधिर वहे भाइ, दया न आणी लगार रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ शिरसुं लगाइ पग लगें रे, छोली मुनिवर खाल ॥ नाकें सल लाया नहिं भाइ, मेटी क्रोधकी जाल रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ उजली वेदना ऊपनी रे, कहेतां न आवे पार ॥ के दुःख जाणे आतमा भाइ, के जाणे किरतार रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ मुनिवर मनमें चिंतवे रे, उदे थया तुझ कर्म ॥ समपरिणाम राख्या थकां भाइ, निपजसी आतम धर्म रे ॥ ध० ॥ ७ ॥ अज्ञानपणे अति हरखसुं रे, बांध्या निकाचित पाप ॥ भुक्तयां विण छूटे नहिं भाइ, भोगवे आपो आप रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ तुं पुद्गलसुं भिन्नछे रे, अजर अमर अविकार ॥ नाश नहिं त्रिहुं कालमें भाइ, मनमांही साहसधार रे ॥ ध० ॥ ९ ॥ थिरपरिणामें मुनिवरु रे, ध्यायो शुक्ल ध्यान ॥ अंतगड़केवल पायने, भाइ, पाया पद निर्वाण रे ॥ ध० ॥ १० ॥ धन जननी जिणें जनमिया रे, धन धन ते अणगार ॥ पाछें देही पड़ी भू परें भाइ, पहेली लह्यो भवपार रे ॥ ध० ॥ ११ ॥ हवे वीतक सुणो पाछलुं रे, सुभट जे मुनिवर लार ॥ देख्या नहिं रिख नयणसुं

भाइ, शोधे नगर मझार रे ॥ ध० ॥ १२ ॥ तिणसमे दासी रावली रे, ओलखिया असवार ॥ पूछयुं कारण तिणे दाखीयुं भाइ, राणीथी कह्या समाचार रे ॥ ध० ॥ १३ ॥ राणी कहयुं निज कंथसुं रे, सुण राजा मुरझाय ॥ वीतक वात कही तदा भाइ, राणी पडी मूर्च्छाय रे ॥ ध० ॥ १४ ॥ फिट फिट कंता शुं कियो रे, म्होटो एह अकाज ॥ मुझवीरो हीरो गुण तणो भाइ, महा म्होटो रिखराज रे ॥ ध० ॥ १५ ॥ क्षण एक तो धरणी ढले रे, क्षण एक नाखे निसास ॥ क्षणएक दे ओलंभडा भाइ, रुदन करे अति त्रास रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ रोवे राणी रावली रे, कानें सुणी नहिं जाय ॥ रोतां सहु रोवाडीयां भाइ, हाहाकार पुरमांय रे ॥ ध० ॥ १७ ॥ झूरे सुनंदा वेनडी रे, झूरे पुरिससेण राय ॥ म्होटुं अकारज ए थयुं भाइ, घात करी मुनिराय रे ॥ ध० ॥ १८ ॥ तिणसमे केवल धारणा रे, समोसरया मुनिराय ॥ राय गयो वंदण भणी भाइ, पूछे शीश नमाय रे ॥ ध० ॥ १९ ॥ निरपराधी महामुनि रे, किम उपनो मुझ द्वेष ॥ पूरव वैर कांइ हुतो भाइ, ते दाखो कर्म रेख रे ॥ ध० ॥ २० ॥ मुनिवर कहे सुण भूपति रे, पूरव भव मझार ॥ काचरानो जीव तुं हतो भाइ, नृपनंद खंदकुमार रे ॥ ध० ॥ २१ ॥ ॥ छाल उतारी हरखशुं रे, आणंद अग न मांय ॥ कीधी सरावणा तिण तिह भाइ, वार वार मन वाय रे ॥ ध० ॥ २२ ॥ कर्म निकाचित बांधियो रे, तेर क्रोड भव मांय ॥ काचरानो जीव तुं थयो भाइ, ते तो थयो मुनिराय रे ॥ ध० ॥ २३ ॥ वैर जाग्यो रिख देखीने रे, कर्म न छोडे कोय ॥ जिन चक्री हरि हर भणी भाइ, हिरदे विमासी जोय रे ॥ ध० ॥ २४ ॥ कर्म समो शत्रु नहिं रे, कर्म करो मत कोय ॥ रखवाला पांचशें सुभट था भाइ, आडो न आयो कोय रे ॥ ध० ॥ २५ ॥ राणी राय अने सुभटां रे, सांभली ए अधिकार, संजम लेइ मुक्तें गया भाइ, वरत्यो जयजयकार रे ॥ ध०

॥ २६ ॥ संवत उगणीशें गुणचालिशमें रे, ज्येष्टशुक्ल दूज जाण ॥ लश्कर घोड़नदी विषे भाइ, गुणि गुण कीया वखाण रे ॥ ध० ॥ २७ ॥ खंदक जिम क्षमा करो रे, तो उतरो भवपार ॥ तिलोकरिख कहे चौथी ढालमें भाइ, धर्म सदा श्रीकार रे ॥ध०॥२८॥इति॥

॥ अथ मेतारज मुनिनुं चोढालियुं लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजिन समरुं भावशुं, सतगुरु लागुं पाय ॥ कथा अनुसारें गावशुं, मेतारज मुनिराय ॥ १ ॥ पूरवभव दो मित्र था, व्राम्हण केरी जात ॥ देशना सुणि रिखराजकी, संजम लियो संघात ॥ २ ॥ संजम पाले भावशुं, तपस्या करे करूर ॥ एक दिन मनमें चिंतवे, पूरवपाप अंकूर ॥ ३ ॥ जैनधर्म श्रीकार छे, शंका नहिं लगार ॥ स्नान नहिं इण मार्गमें, एतो कहि आचार ॥ ४ ॥ कुलमद दुगंछा भावथी, नीच कुलबंधन कीन ॥ आलोयणा विण सोचवी, सुरगति दोनुं लीन ॥ ५ ॥ दोय मित्र तिहां देवता, बोले आपसमांय ॥ जो पहेलो नरभव लहे, घालीजें धर्ममांय ॥ ६ ॥ संजम लेवाणो तिण भणी, करि कोइ दाय उपाय ॥ इम संकेत कीधो उभे, सुरभव आपस मांय ॥ ७ ॥ कुलमद जिन कीनो हुंतो, ते पहेलो चव्यो तेथ ॥ मातंगकुलमें अवतर्यो, उदय कर्मके हेत ॥ ८ ॥ शेष पुण्यप्रतापथी, पायो संपति सार ॥ किणविध तिण संजम लियो, ते सुणजो अधिकार ॥ ९ ॥

॥ ढाल पहली ॥

॥ सोवन सिंहासण रेवती ॥ ए देशी ॥ शहर राजग्रही दीपतुं, राज करे श्रेणिक राय रे ॥ शेठ युगंधर दीपतो, लक्ष्मीवंत कहाय रे ॥ श० ॥ १ ॥ श्रीमती नार सुलक्षणी, रूप गुणें अधिकाय रे ॥ अवगुण कर्म प्रभावथी, मृतवंझणी ते थाय रे ॥ श० ॥ २ ॥

एकदा गर्भ रह्यो तेहने, चिंतवे ते मनमांय रे ॥ जीवे नहिं बालक माहरे, धन रखवालक नांय रे ॥ स० ॥ ३ ॥ जिम संतति रहे कुल विषे, तिम करुं कोइ उपाय रे ॥ एटले आवी मातंगणी, गर्भवती सा देखाय रे ॥ स० ॥ ४ ॥ तिणने एकांतें लेई करी, दीयो घणो सन्मान रे ॥ संपति छे मुझ घर घणी, जीवे नहिं मुझनी संतान रे ॥ स० ॥ ५ ॥ जो तुझ होवे नंदन कदा, गुप्तपणे घर मोय रे ॥ मेलजे तुं निशिने समे, ठीक पडे नहिं कोय रे ॥ स० ॥ ६ ॥ द्रव्य देशुं तुझ सामटुं, होसी सुखी तुझ पूत रे ॥ प्रेम हुं राखशुं अतिघणो, रहेसी मुझ घरतणो सूत रे ॥ स० ॥ ७ ॥ राजी थइ तिणे मानीयो, जनमीयो नंद जिणवार रे ॥ प्रच्छन्नपणे तिणें मोकल्यो, ठीक नहिं पुर नर नार रे ॥ स० ॥ ८ ॥ जनम महोत्सव सवही कियो, दिवस थया जब बार रे ॥ दीयो दशोट्टण जातमें, वरतिया मंगल चार रे ॥ स० ॥ ९ ॥ नाम मेतारज थापीयुं, प्रतिपालण करे पंच धाय रे ॥ पूरव पुण्य प्रभावथी, रूपगुणें अधिकाय रे ॥ स० ॥१०॥ कुलमद कियो तिण कर्मथी, महेतर घर अवतार रे ॥ बीज शशी परें दिन दिने, वधे तस जश विस्तार रे ॥ स० ॥ ११ ॥ बहोंतर कलासें पंडित थयो, आवियो यौवन मांय रे ॥ तिलोकरिख कहे पहेली ढालमें, पुण्यथी सुख सवाय रे ॥ स० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ यौवन वय जाणी करी, कन्या परणाइ सात ॥ पंच इंद्रिय सुख भोगवे, आणंदसें दिन रात ॥ १ ॥ हवे तिण अवसरने विषे, पूर्वें कीनो करार ॥ ते सुर आई उपदिशें, ले तुं संजम भार ॥२॥ तलालीन ते भोगवे, माने नहिं लगार ॥ कीनी सगाइ वली तिणें, ते सुणजो अधिकार ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ इण सरवरीयारी पाल, उभी दोय रावली ॥ माहारा लाल उ०॥

एआंकणी ॥ आठमी कन्या तेह, परणवा उम्माह्या ॥ माहारालाल परणवा०॥ कीनी सझाइ जान, जानी भेला थया ॥ मा० ॥ जा०॥ केशरीयो जामो पहेर, मुकुट शिरपर धर्यो ॥ मा० ॥ मु० ॥ माथे बांध्यो मोड़, बींदनो वेश कर्यो ॥ मा० ॥ बीं० ॥ १ ॥ शिरपर शिरपेच जडाव, तुर्रो झगझगे सही ॥ मा० ॥ तु० ॥ कलंगी तिण उपर जाण, अधिक भलकी रही ॥ मा० ॥ अ० ॥ झगमगे कुंडल कान, हार झगझग करे ॥ मा० ॥ हा० ॥ बाजुबंद भुजदंड, पोंची कडा कर सिरे ॥ मा० ॥ पों० ॥ २ ॥ मुंद्री अंगुलीके मांय, झलके हीरातणी ॥ मा० ॥ झ० ॥ कमर कंदोरो जड़ाव, सुवर्णकी खिंखणी ॥ मा० ॥ सु० ॥ अत्तर अंग लगाय, तिलक भाले कर्यो ॥ मा० ॥ ति० ॥ कियो उत्तरासण तेण, सुरथकी सो नहिं डर्यो ॥ मा० ॥ सु० ॥ ३ ॥ बेठो होय असवार, लाडो वण्यो सो सही ॥ मा० ॥ ला० ॥ गावे मंगल नार, अधिक उच्छावही ॥ मा० ॥ अ० ॥ धप मप मादल नाद, के साद सुहामणो ॥ मा० ॥ के० ॥ धड़िंदा धड़िंदा ढोल, तिड़ किड़ त्रांसा तणो ॥ मा० ॥ ति० ॥ ४ ॥ चाल्या अधिक उत्साह, व्याह करवा भणी ॥ मा० ॥ व्या० ॥ आय मध्य बजार, बणी शोभा घणी ॥ मा० ॥ ब० ॥ तिणसमे सो सुर कीध, बात कौतुक तणो ॥ मा० ॥ वा० ॥ मातंग मन दियो फेर, हर अवसर अणी, ॥ मा० ॥ ह० ॥ ५ ॥ लीनो हाथमे लट्ठ, धट धींटो घणो ॥ मा० ॥ ध० ॥ आयो जानकेमांय, धरी कुलंट पणो ॥ मा० ॥ ध० ॥ माने नहिं कछु शंक, बंक एको जणो ॥ मा० ॥ बं० ॥ आयो सो बींद हजूर, काम नहिं दूर तणो ॥ मा० ॥ का० ॥ ६ ॥ सघलाही स्या देख, बोले सुणो नंदना ॥ मा० ॥ बो० ॥ हुं छुं सगो तुझ बाप, जाणे मन फंदना ॥ मा० ॥ जा० ॥ सात कन्या व्याहि वणिक, परणाई एक माहरी ॥ मा० ॥ प० ॥ पकड़ी अश्व लगाम, कोई नहिं बाहरी ॥ मा० ॥ को० ॥ ७ ॥ बदलायो चित्त

लोक, धोको सबने पड्यो ॥ मा० ॥ धो० ॥ साची दीसे ए बात, जोग इसड़ो घड्यो ॥ मा० ॥ जो० ॥ लोक गया सब ठाम, बींद रह्यो एकलो ॥ मा० ॥ बीं० ॥ अधिक खीसियाणो होय, दखे सो भुंइ तलो ॥ मा० ॥ दे० ॥ ८ ॥ तिणसमे सो सुर वेण, कहे शरवण विषे ॥ मा० ॥ क० ॥ ले हवे संजम ताम, कहे सो भूंडो दीसे ॥ मा० ॥ क० हवे पाछो होय सुजस, परणुं कन्या वणिकनी ॥ मा० ॥ प० ॥ नवमी परणुं भूप, धूया श्रेणिकनी ॥ मा० ॥ धू० ॥ ९ ॥ बारा वर्ष गृहवास, रहुं तदनंतरे ॥ मा० ॥ र० ॥ लेशुं पछे संजम भार, वचन ए नहिं फिरे ॥ मा० ॥ व० ॥ एम सुणी सुर वेण, सेण मन फेरियो ॥ मा० ॥ से० ॥ झूठी मातंगनी वात, बींद वली हेरियो ॥ मा० ॥ बीं० ॥ १० ॥ हुइ सजाइ सर्व, तिहां वली व्याहनी ॥ मा० ॥ ति० ॥ आया सोही बजार, वात थइ न्यातनी ॥ मा० ॥ वा० ॥ महेतर आयो सो चाल, जानमांही दोडिने ॥ मा० ॥ जा० ॥ उण मादिरा पीध, बोले कर जोड़िने ॥ मा० ॥ बो० ॥ ११ ॥ ए नहिं माहरो नंद, खोटो हुं बोलियो ॥ मा० ॥ खो० ॥ माफ करो अपराध, कह्यो बे तोलीयो ॥ मा० ॥ क० ॥ भर्म टल्यो सहु लोक, कन्या परणी सही ॥ मा० ॥ क० ॥ तिलोकरिख कहे दूजी ढाल, दुग्धा राखी नही ॥ मा० ॥ दु० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजसुता परणावणी, सुर सोचीने तास ॥ दीनी बकरी रूयडी, उगले रतन उजास ॥ १ ॥ रत्नराशि झगमग करे, देखे बहु नर नार ॥ पुरमें पसरी वारता, मेतारज पुण्य सार ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वेदर्भीशुं मन वस्यो ॥ ए देशी ॥ राय सुणी इम वारता, मनमें विस्मय थाय हो लाल ॥ बकरी लावो वेगशुं, जज करो

मति कांय हो लाल ॥ रा० ॥ १ ॥ सुभट सुणी चल आवीया, युगंधर ने गेह हो लाल ॥ मांगे बकरी शेठथी, उगले रत्न जेह हो लाल ॥ रा० ॥ २ ॥ शेठ वदे सुभटां भणी, मैं नहिं मालक तास हो लाल ॥ मेतारजने पूछिने, लेइ जावो थें उल्लास हो लाल ॥ रा० ॥ ३ ॥ कुमर कने जाची तिका, सो बोले तिण वार हो लाल ॥ बकरी जीवन प्राण छे, रत्नपुंज दातार हो लाल ॥ रा० ॥ ४ ॥ सुभट गया फिर रायपें, दाख्या सहु समाचार हो लाल ॥ सुणि क्रोधातुर बोलियो, जेज न करो लगार हो लाल ॥ रा० ॥ ५ ॥ हलकारया सुभटां भणी, धमधस करता जाय हो लाल ॥ छाली लाया छोडिने, पूछ्यो तिणसुं नाय हो लाल ॥ रा० ॥ ६ ॥ राय कचेरी लाविया, क्षणअंतरनी मांय हो लाल ॥ बकरी छेरा तिण समे, दुर्गंध रहि फेलाय हो लाल ॥ रा० ॥ ७ सभा सहु व्याकुल थइ, उठि चाल्या सहु लोक हो लाल ॥ पूछे भूप कारण किस्युं, वात थइ ते फोक हो लाल ॥ रा० ॥ ८ ॥ सुभट कहे झूठी नहिं, एही रत्न दातार हो लाल ॥ पूछे कारण कुमरशुं, सुभट गया तिण वार हो लाल ॥ रा० ॥ ९ ॥ पुछ्यो कारण कुमरथी, किण कारण दुर्गंध हो लाल ॥ उगले नहिं किम रत्न ते, दाखो तेह प्रबंध हो लाल ॥ रा० ॥ १० ॥ सो कहे मुझ राजी करे, रत्न उगळे श्रीकार हो लाल ॥ नहिं तो ए छे रे बुरी, शंका नहिं लगार हो लाल ॥ रा० ॥ ११ ॥ राय कहे जे छालिका, देवे रत्न श्री मांय हो लाल ॥ मुख मांगी वस्तु तिका, देशुं हुं खुशी होय हो लाल ॥ रा० ॥ १२ ॥ सो कहे कन्या तुम तणी, द्यो मुझने परणाय हो लाल ॥ रत्न उगलसी ए भला, हाम भरी तब राय हो लाल ॥ रा० ॥ १३ ॥ गुणमंजरी कन्या भली, कीधो व्याह उत्साह हो लाल ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालमें, कुमरनो पुग्यो उमाह हो लाल ॥ रा० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नव कन्या परणी भली, नवनिधि पति जिम तेह ॥ भोगवे सुख संसारनां, दिन दिन वधते नेह ॥ १ ॥ बारा वर्ष इम वीतिया, सो सुर आयो चाल ॥ कहे ले हवे तुं वेगशुं, संजम चित्त उजमाल ॥ २ ॥ नहिं तो देउं संकट घणो, इणमें फेर न फार ॥ सियालपरें श्रीवीरपें, लीधो संजमभार ॥ ३ ॥ मनमें ताम विचारीयो, धिक धिक कामविकार ॥ पायो हीनता लोकमें, महेतर घर अवतार ॥ ४ ॥ हवे करणी दुःकर करुं, कर्म करुं सब छार ॥ मास मास तप धारीयो, नीरंतर चोविहार ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ जमिकंदमें रे जीव जाइ उपनो ॥ देशी ॥ नित नित प्रणमुं रे मेतारज मुनि, तारण तरण जहाज ॥ परम वैरागी रे रागी धर्मना, साधे आतमकाज ॥ नि० ॥ १ ॥ थिविरांपासें रे शीख्या थिर मनें, नव पूरवको रे ज्ञान ॥ ग्राम नगर पुर पाटण विचरतो, ध्यावे निर्मल ध्यान ॥ नि० ॥ २ ॥ कोइसमे आया रे राजगृही वली, पारणो आयो रे ताम ॥ प्रभुआज्ञा लेइ गोचरी पांगुरया, भिक्षा निरवद्य काम ॥ नि० ॥ ३ ॥ मारग जातां रे सुवर्णकार कें, ओलखिया रिखराय ॥ एह जमाइ रे थाय श्रेणिक तणा, गोचरी कारण जाय ॥ नि० ॥ ४ ॥ आवो पधारो रे अम घर साधु जी, कृपा करो मुनिराय ॥ वहोरो सूझतो आहार छे माहरे, बोले ते एम उमाय ॥ नि० ॥ ५ ॥ इम सुणि मुनिवर तिहां वहोरण गया, उभा रहिया रे बार ॥ सोनी घरमें रे आयो वेगसुं, वहोरावण भणी आहार ॥ नि० ॥ ६ ॥ सुवर्ण जव था रे राय श्रेणिकना, कुर्कुट आयो रे चाल ॥ सो जव चुगिने रे गयो ते शीघ्रशुं, मुनिवर रहिया रे भाल ॥ नि० ॥ ७ ॥ बाहिर आयो रे आहार वहेरायने, जव नहिं दीठा रे नयण ॥ कहो किण लीधा रे कुण आयो इहां, कहे रोषें भरयो वयण ॥

नि० ॥ ८॥ मुनिवर सोचे रे देखिया ना कहुं, झूठज लागे रे मोय ॥ कुकुट चुगिया रे इम उच्चारतां, हिंसा पातक होय ॥ नि० ॥ ९ ॥ दख्यो अदख्यो रे कांइ न बोलणो, निश्चय कियो अणगार ॥ मौनज पकड़ी रे आण अराधवा, धन्य सो करुणा भंडार ॥ नि० ॥ १० ॥ मोनज जाणी रे सुवर्णकार ते, आइ रीस अपार ॥ इणनो भेदमें थइ चोरी सही, पूछे वारं वार ॥ नि० ॥ ११ ॥ मार चपेटा रे कहे वलि चोर तुं, किम नहिं बोले रे साच ॥ मुनिवर क्षमा रे धारी तन मनें, बोले नहिं मुख वाच ॥ नि० ॥ १२ ॥ तिम तिम अधिको रे सो क्रोधे भरयो, सोचे ए अतिधीठ ॥ कूट्या विण रस ए देवे नहिं, मूरख चोल मजीठ ॥ नि० ॥ १३ ॥ मुनि कर पकड़ी रे ले गयो वाड़ामें, शिरपर आलो रे चर्म ॥ खेंचीने बांध्या रे तावडे राखिया, वेदना उपनी परम ॥ नि० ॥ १४ ॥ लोचन छटकीरे बाहिर नीकल्या, तड़ तड तूटी रे नाड़ ॥ मुनिवर थिर मन दृढ करी राखियुं, जेम सुदर्शन पहाड़ ॥ नि० ॥ १५ ॥ केवल पाइ रे मुगत सिधाविया, अजर अमर अविकार ॥ देव वजावे रे दुंदुभि गगनमें, बोले जयजयकार ॥ नि० ॥ १६ ॥ तिणसमे मोली रे एक कठियारडे, नाखी धमकसूं ताम ॥ बींटज कीनी रे कुर्कुट भयवशें, जव पड़िया तिण ठाम ॥ नि० ॥ १७ ॥ सोनी देखी रे थर थर धूजीयो, कीधो महोटो अकाज ॥ में मूढ़भावें रे निरअपराधिया, घात करी रिखराज ॥ नि० ॥ १८ ॥ राजा श्रेणिक भेद ए जाणशे, करशे कुटुंब संहार ॥ एम जाणीने रे सहु श्रीवीरपें, लीधो संजम भार ॥ नि० ॥ १९ ॥ तप जप करणी रे कीधी सहु जणा, पाया सुर अवतार ॥ अनुक्रमें जासी रे कर्म खपाइने, सहु ते मोक्ष मझार ॥ नि० ॥ २० ॥ नव कोटी धन नव कन्या तजी, नव विध ब्रह्मचर्य धार ॥ नव पूरवधर नव संवर करी, पाया भवजल पार ॥ नि० ॥ २१ ॥ एहवा मुनिवर क्षमासागरु, तस गुण

गाया उमाय ॥ तिलोकरिख दाखे रे चोथी ढाल ए, सुणतां पातक जाय ॥ नि० ॥ २२ ॥ संवत उगणीशें रे गुणचालीशमें, आषाढ वदि पडवा वखाण ॥ दक्षिणदेशें रे पूना शहेरमें, नानाकी पेठ में जाण ॥ नि० ॥ २३ ॥ जोड़ जमात्री रे विपरीत जो कथ्यो, मिच्छामिदुक्कड़ मोय ॥ भणशे गुणशे रे विधि शुद्धभावशुं, तस घर मंगल होय ॥ नि० ॥ २४ ॥ इति मेतराजमुनिनुं चोढालीयुं संपूर्ण ॥

॥ अथ आणंदजी श्रावकनुं चोढालीयुं लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

प्रणमुं परमातम प्रभु, शासनपति वर्धमान ॥ तास ज्येष्ठ श्रावक भला, आणंद आणंदधाम ॥ १ ॥ नाम ठाम शुभ काम जिण, कीना व्रत अंगीकार ॥ सप्तमे अंगें वर्णव्या, ते सुणजो विस्तार ॥ २ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ देशी न्यालदेमें ॥ तिण कालें तिण अवसरें जी २ कांइ, वाणिय गाम मझार ॥ राय जितशत्रु जाणीयें जी २ कांइ, प्रजा भणी हितकार ॥ १ ॥ सुणो अधिकार सुहामणो जी २ कांइ, सूत्र तणे अनुसार, समकित व्रत होवे निर्मलो जी २ कांइ, होवे ज्युं भवनिस्तार ॥ सु० ॥ २ ॥ तिणपुर आणंद नामथी जी २ कांइ, गाथापति धनवान ॥ बारे कोडी सुनैयाजी २ कांइ, कह्युं तस धन परिमाण ॥ सु० ॥ ३ ॥ दश सहस्र गायां तणो जी २ कांइ, एक गोकुल इम चार ॥ धेनुवर्ग वखाणीयें जी २ कांइ, शिवानंदा तस नार ॥ सु० ॥ ४ ॥ पंच विषय सुख भोगवे जी २ कांइ, माने वहुजन वाय ॥ इम करतां वहुज दिन गयाजी २ कांइ, कोइक अवसर मांय ॥ सु० ॥ ५ ॥ द्युतिपलाश नामें भलो जी २ कांइ, चैत्य मनोहर जाण ॥ समोसरया जगगुरु तिहांजी २ कांइ, जगनायक जगभाण ॥ सु० ॥ ६ ॥ भूप सुणी वंदण गयो जी २ कांइ, आणंद श्रावक ताम ॥ पाय विहारें संचरया जी, २ कांइ, भेट्या त्रिभुवन स्वाम ॥ सु० ॥ ॥ ७ ॥ प्रभुजी दी उपदेशना जी २ कांइ, यो संसार असार ॥ तन धन

जोबन कारिमो जी २ कांइ, कारिमो सहु परिवार ॥ सु० ॥ ८ ॥ ए जीव आयो एकलो जी, २ कांइ, परभव एकलो जाय ॥ धर्मरत्न संग्रह करो जी २ कांइ, जो शिवसुखतणी चहाय ॥ सु०॥९॥ इत्यादिक उपदेशना जी २ कांइ, प्रथम ढाल मझार ॥ तिलोकरिख कहे आगलें जी २ कांइ, सुणजो श्रेय अधिकार ॥ सु० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे आणंद सुणि देशना, बोले वयण विचार ॥ सत्य कहेणी प्रभु ताहरी, यह संसार असार ॥१॥ धन्य जे राजराजेश्वरु, लेवे संजम भार ॥ मुझ शक्ति ए छे नहीं, आदरशुं व्रत बार ॥ २ ॥ प्रभु कहे जिम सुख तिम करो, जेज न करो लगार ॥ हवे व्रतकरणी सांभलो, सूत्र तणे अनुसार ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ या रस शेलडी, आदिजिणंद कियो पारणो ॥ ए देशी ॥ प्रथम व्रतसें धारीयो जी कांइ, त्रस प्राणी जगमांय ॥ जाणी प्रीच्छी निर अपराधी, सो सब हणवा नांय हो ॥ जगतारक पासें, श्रावक आणंदजी व्रत आदरे ॥ १ ॥ दुजो व्रत थूल मृपावादको, भू कन्या पशु काज ॥ झूठ न बोलुं ओलुं न थापण, नहिं लुं भोले व्याज हो ॥ ज० ॥ २ ॥ त्रीजो थूल अदत्त निवारुं, खात्र खणी गांठ छोड़ ॥ पडकूंची देइ न करुं चोरी, त्यागुं विरुद्ध जे खोड़ हो ॥ ज० ॥ ३ ॥ चोथो थूल मेहुण व्रतमें, सेवानंदा निज नार ॥ वर्जीने त्यागी सकल कांइ, ममता दीनी मार हो ॥ ज० ॥ ४ ॥ व्रत पंचमो इच्छा परिमाणे, चार क्रोड़ भूमांय ॥ चार कोड़ि वखखरी राखी, एतोही व्याज कहाय हो ॥ ज० ॥ ५ ॥ गोकुल चार धेनुका राख्या, खेतु वत्थु जाण ॥ पांचसें हलकी संख्या धरणी, गाड़ा गाड़ी सहस्र प्रमाण हो ॥ ज० ॥ ६ ॥ चार म्होटी चार छोटी जहाजां, राख्या

वाहण आठ ॥ उपभोग परिभोग व्रतकी विधि, कहुं जिम सूत्र पाठ हो ॥ ज० ॥ ७ ॥ स्नान कियां पीछें अंग लूवणनो, रातो वस्त्र जाण ॥ दातण कारण आलुं जेठीमध, अवरवीर आमलफल ठाण हो ॥ ज० ॥ ८ ॥ शतपाक हजार औषधको, तेलमर्दन ने काज ॥ सुगंध सहित गोधूमकी पीठी, ए उवट्टणां साज हो ॥ ज० ॥ ९ ॥ आठ लोटी प्रमाण घडो एक, स्नान करणने नीर ॥ क्षौमयुगल कपासको निपनो, राख्यो ओढण चीर हो ॥ ज० ॥ ॥ १० ॥ अगर कुंकुम बावनाचंदन, विलेपन मरजाद ॥ धोलो कमल मालती कुसुम, सुंघणो नहिं तस वाद हो ॥ ज० ॥ ॥ ११ ॥ कुंडल अने नामाकृत मुद्रा, राख्या आभरण दोय ॥ अगर शेलारस धूपादिक सो, राखे इच्छा जोय हो ॥ ज० ॥ १२ ॥ घृत तेल तल्या तंदूल पहुवा, दूधकी रावडी जाण ॥ पेज विधि परिमाण कह्यो ए, उपरंतका पचक्खाण हो ॥ ज० ॥ १३ ॥ घृत पूरित घेवर मन गमता, खांड खाजा आगार ॥ कमल साल तंदुल उपरंत सब, ओदनको परिहार हो ॥ ज० ॥ १४ ॥ मूंग उडद मसूर ए तीनुं, उपरंत त्यागी दाल ॥ नितको निपज्यो घृत शरद ऋतु ते, प्रातसन्याको काल हो ॥ ज० ॥ १५ ॥ तिण वेलाको घृत जिण राख्यो, उपरांत को कियो त्याग ॥ अगथीयो स्वास्तिक रायडोडी, और नहिं खाणो साग हो ॥ ज० ॥ १६ ॥ आमलारस युत पालक सालणो, अवर तणो सब त्याग ॥ मूंग दालका वडा कचोरी, उपरंत नहिं अनुराग हो ॥ ज० ॥ १७ ॥ टांकाको नीर सो पीणो राख्यो, झल्यो जेह आकाश ॥ कंकोल जायफल लविंग एलायची, कपूर ए पंच मुखवास हो ॥ ज० ॥ १८ ॥ चार अनरथा दंडका सोगन, इम अठम व्रत धार ॥ शक्ति मुजब शिक्षा व्रत चारुं, हरि हर देव परिहार हो ॥ ज० ॥ १९ ॥ ज्ञानका चौदे पंच समकितका, पंच्योत्तर व्रत बार ॥ पांच संलषणा ए सवि टालुं, नन्याणुं अतिचार हो ॥ ज० ॥ २० ॥

पार्श्वसंतानीया गोशालकसें, जिम ते मिलीया जाय ॥ तिम अन्य तीर्थी ग्रहिया साधु, तिणने हुं वंदु नाय हो ॥ ज० ॥२१ ॥ वतलाउं नहिं पहेलां उयति, धर्मबुद्धि सुविचार ॥ चार आहार नहिं देउं तिणने, छ छंडी आगार हो ॥ ज० ॥ २२ ॥ समण निर्ग्रंथने देउं सुझतो, चउदे प्रकारनु दान ॥ इम व्रतधारी प्रभुने वंदी, आव्या ते निज थान हो ॥ ज० ॥ २३ ॥ निजपत्नीसुं कहे प्रभु पासें, में धार्यां व्रत बार ॥ तुमें पण जाइ करो प्रभु वंदण, सफल करो अवतार हो ॥ ज० ॥ २४ ॥ कंत वचन सुणी रथमें बेठी, वांद्या श्री जगदीश ॥ तिण पण श्रावक व्रतज धार्युं, पूरी मन जगीश हो ॥ ज० ॥ २५ ॥ छे छे पोसा करे मासमे, नव तत्त्व का जाण ॥ तिलोकरिख कहे ढाल दूसरी, श्रावक करणी वखाण हो ॥ ज० ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बारे व्रत पाले भलां, चउदा नियम विचार ॥ तीन मनोरथ चिंतवे. धारे शरणां चार ॥ १ ॥ निश्चल समकित दृढधर्मी, एकविश गुणका धार ॥ चउदे वर्ष एम वीतिया, करतां धर्म उदार ॥ २ ॥ पंदरसुं वर्ष वर्ततां, एक दिन आधी रात ॥ जागरणा करे धर्मकी, ते सुणजो विख्यात ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ आज भलो दिन उग्योजी, सीमंधर स्वामीने वंदसां ॥ ए देशी ॥ आणंदजी विचारी हो सुखकारी किरिया धर्मनी, कांइ भवजल तारण हार ॥ वाणिय ग्राममुजमांइ हो प्रभुनाइ ठावी माहरी, कांइ बहु नरने आधार ॥ मुज पर समन सवाइ हो समरथाइ नांइ माहरी, कांइ दुःकर संजम भार ॥ आ० ॥ १ ॥ जब थावे दिन उगाइ हो निपजाइ चारी आहारने, कांइ बुलाइ निज परिवार ॥ सयण सजन जीमाइ हो समझाइ कासज घर तणां, कांइ धारणी पडिमा ग्यार ॥ आ० ॥ २ ॥ यइ दिनकर उगाई हो कराई सहु विध

चिंतवी, कांइ ज्येष्ठपुत्र घरभार ॥ सोंपी सीधाइ आया हो, कांइ कोलागनाम संनिवेशें, कांइ वाणिय पुरने वार ॥ आ० ॥ ३ ॥ कोलाग संनिवेशने मांइ हो जिहां मित्र घणा कुलघर घणां, रहे पोषधशाला मझार ॥ तिणशालाने प्रतिलेखी हो, कांइ देखीं परठवण भूमिका, वली कीनो दर्भसंथार ॥ आ० ॥ ४ ॥ केवली भाख्यो धर्मज हो ते पाले परम आणंदशुं, कांइ प्रथम पडिमा मझार ॥ समकित निर्मल पाले हो कांइ वंदे नहिं कोइ अन्य भणी, कांइ छे छंडि परिहार ॥ आ० ॥ ५ ॥ दूजी पडिमामांइ हो अधिकाइ बारा व्रतमें, कांइ पाले निरअतिचार ॥ त्रिजीमें शुद्ध सामायिक हो चित्त लाई पाले शुद्धपणे, कांइ बत्तिस दोष निवार ॥ आ० ॥ ६ ॥ चोथी पडिमामांइ हो चउदश ने आठम पूर्णिमा, कांइ अमावस्या तिथि धार ॥ मास मास खट पोसा हो धारे ते शुद्ध निश्चलपणे, कांइ वर्जित दोष अढार ॥ आ० ॥ ७ ॥ पंचमी पडिमा पाले हो ते टाले स्नान शोभा वली, कांइ दिवसें अब्रह्म निवार ॥ जे भाणे भोजन आवे हो नहिं खावे आप संगायने, करे काउस्सग्ग पोषा मझार ॥ आ० ॥ ८ ॥ छठी पडिमा लेवे हो नहिं सेवे ते कुशीलने, कांइ नारीकथा परिहार ॥ सातमी पडिमा जाणो हो प्रासुक ते खाणो मोकलो. कांइ नहिं करे सचित्त आहार ॥ आ० ॥ ९ ॥ आठमीसें आरंभ छंडे हो ते मंडे प्रीति छे कायसूं, कांइ तविशके भांगे विचार ॥ नवमीमें इम भाखे हो नहिं राखे दासी दासने, कांइ पोते काम विचार ॥ आ० ॥ १० ॥ दशमी दुःकरकारी हो निज अरथें भोजन जे करयो, कांइ ते वरजे निरधार ॥ शिरपर मुंड करावे हो पचंप मापा दो भली, कांइ सत्य अने व्यवहार ॥ आ० ॥ ११ ॥ इग्यारमी पडिमा लेवे हो नहिं सेवे आश्रवद्वारने. कांइ वरते जिम अणगार ॥मस्तक लोच करावे हो फरमावे हुं साधू नहिं, कांइ भरव मुनिनो धार ॥ आ० ॥

१२ ॥ पहेले मास एकांतर हो कांइ दुजी पडिमा दो मासनी, कांइ छट छट तपस्या धार ॥ त्रीजी तीन मासमें तेलां हो चोथी ते चारज मासनी, कांइ चोले चोले आहार ॥ आ० ॥ १३ एक एक मास वधावे हो वढावे तप इम एमही, कांइ इम पडिमा इग्यार ॥ करतां सुके भुक्खे हो लूखो अंग पड़ियो तदा, कांइ तन थयो पिंजराकार ॥ आ० ॥ १४ ॥ श्रावक सो विचारे हो नहिं सारे माहरी देहड़ी, कांइ शक्ति नहिं लगार ॥ आलोवि निंदी आतम हो निःशल्य थया शूरापणे, कांइ प्रणमी जगकिरतार ॥ आ० ॥ १५ ॥ पाप अठारा त्यागे हो कांइ वली जागे मोहनी नींदसें, कांइ थागे संवरद्वार ॥ धर्मध्यान चित्त ध्यावे हो कांइ त्यागे चारी आहारनें, कांइ जावजीव सुविचार ॥ आ० ॥ १६ ॥ इम निश्चल मन थापी हो तिण कापी ममता जालने, कांइ धार्‍यो अणसण सार ॥ तिलोकरिख कहे साची हो नहिं काची जाची भावमें, कांइ सफल कियो अवतार ॥ आ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिण अवसर आणंदजी, विशुद्ध लेश्या शुभध्यान ॥ ज्ञानावरणी क्षयोपशमे, उपन्युं अवधिज्ञान ॥ १ ॥ पूरव लवण समुद्रमें, पंचसें योजन जाण ॥ एतोही दक्षिण पश्चिमें, उत्तर हिमवंत प्रमाण ॥ २ ॥ जाणे देखे ऊपरें, परथम स्वर्ग विचार ॥ नीचे जाणे रत्नप्रभा, स्थित चोरासी हजार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ कीधां रे कर्म न छूटीयें ॥ ए देशी ॥ न्यायमारग जिनराजनो, भवःदुख भंजणहार लाल रे ॥ रिपुगंजण दृग अंजणो, शिव पदनो दातार लाल रे ॥ न्या० ॥ १ ॥ तिणकालें तिण अवसरें, समोसर्‍या जगदीश लाल रे ॥ गौतम छठतप पारणो, प्रभुने नमायो शीश लाल रे ॥ न्या० ॥ २ ॥ कहे मुझ छठतप पारणो,

जो तुम आज्ञा थाय लाल रे ॥ वाणियगाम नगर विषे, गोचरी जाऊं चलाय लाल रे ॥ न्या० ॥ ३ ॥ अहासुहं प्रभुजी कह्यो, गौतम जी तिण वार लाल रे ॥ आज्ञा लेइने संचर्या, जोवतां ईर्याविहार लाल रे ॥ न्या० ॥ ४ ॥ गोचरी करतां सांभल्यो, आणंद अणसण लीध लाल रे ॥ चिंतवे हुं देखुं जई, इम निश्चें मन कीध लाल रे ॥ न्या० ॥ ५ ॥ पोषधशाला तिहां आविया, देखी आणंद सोय लाल रे ॥ रोम रोम हर्षित थया, बोले अवसर जोय लाल रे ॥ न्या० ॥ ६ ॥ शक्ति नहिं प्रभु माहरी, आवणरी तुम पास लाल रे ॥ उरहा पधारो नाथजी, मानो मुझ अरदास लाल रे ॥ न्या० ॥ ७ ॥ चरणपें शीश नमाइने, प्रणम्या तीनज वार लाल रे ॥ पूछे उपजे के नहिं, अवधि गृहवास मझार लाल रे ॥ न्या० ॥ ८ ॥ गौतम सुणि हामी भणी, तब सो कहे सुविचार लाल रे ॥ मुझ पण अवधि उपनो, कह्यो छए दिशि विस्तार लाल रे ॥ न्या० ॥ ९ ॥ इम निसुणी गोयम वदे, ओहि उपजे गृहवास लाल रे ॥ पण एतो दीर्घ न उपजे, ए निश्चें वात विमास लाल रे ॥ न्या० ॥ १० ॥ ए स्थानक तुमें आलवो, ल्यो तप प्रायश्चित्त अंगीकार लाल रे ॥ तब आणंद वलता कहे, प्रभु सांभलो मुझ समाचार लाल रे ॥ न्या० ॥ ११ ॥ सत्य छतां यथाभाव ते, कहेतां नहिं दोष लगार लाल रे ॥ ए स्थानक तुमें आलवो, सुणि शंका पडी तिण वार लाल रे ॥ न्या० ॥ १२ ॥ आई पूछे प्रभुशुं तदा, आणंद कह्यो जे विचार लाल रे ॥ नाथ कहे ते साची कहे, थें लो प्रायश्चित्त तप सार लाल रे ॥ न्या० ॥ १३ ॥ जाय खमावो तिण प्रत्यें, इम सांभली गौतम वाच लाल रे ॥ प्रायश्चित्त लीनो प्रभु कने, खमावाने गया उमाय लाल रे ॥ न्या० ॥ १४ ॥ बीश वर्ष श्रावकपणो, धारी पडिमा अग्यार लाल रे ॥ एक मास अणसण कह्यो, सौधर्मकल्प मझार लाल रे ॥ न्या० ॥ १५ ॥ सौधर्मावतंसक विमानथी,

कूण ईशाणने मांय लाल रे ॥ अरुणविमानमें ऊपना, चार पल्योपम आय लाल रे ॥ न्या० ॥ १६ ॥ सुख भोगवी त्यांथकी चवी, महाविदेहक्षेत्र मझार लाल रे ॥ संजम ले करणी करी, कर्म करी सहु छार लाल रे ॥ न्या० ॥ १७ ॥ केवलज्ञान लेई करी, जावसी मुक्तिनी मांय लाल रे ॥ अजर अमर सुख शाश्वता, लेसी सुख संवाय लाल रे ॥ न्या० ॥ १८ ॥ सवत उगणीशें गुणचालीसे, पोष कृष्ण बुधवार लाल रे ॥ त्रीज तिथि दिन रूयडो, दक्षिणदेश विचार लाल रे ॥ न्या० ॥ १९ ॥ शहर सतारो प्रशिद्ध छे, पेठ भवानी वखाण लाल रे ॥ जोड्यो चोढालियो चूंपसूं, सातमा अंग प्रमाण लाल रे ॥ न्या० ॥ २० ॥ अधिको ओछो जोड्यो हुवे, ते मिच्छामि दुक्कड़ मोय लाल रे ॥ तिलोकरिख कहे सुणि धारसी, तस शिव संपत होय लाल रे ॥ न्या ॥ २१ ॥ इति आणंदजी श्रावकनुं चोढालीयुं समाप्त ॥

॥ अथ कामदेवजीश्रावकनुं चोढालीयुं प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अरिहंत सिद्ध आचार्यजी, उवज्झाया मुनिराज ॥ प्रणमुं सतगुरु देवजी, पूरे वंछितकाज ॥ १ ॥ सातमे अंगे जाणीयें, दूजा अध्ययन मझार ॥ कामदेव श्रावक तणो, दाख्यो छे अधिकार ॥ २ ॥ तस अनुसारें वर्णवुं, किंचित ताम्र समास ॥ सुणो श्रोता शुद्धभावशुं, समकित रत्न उजास ॥ ३ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ चोड़ा देश कसोदना ॥ ए देशी ॥ तिण कालें तिण अवसरें, चंपानगरी मझारो जी ॥ जितशत्रु तिहां राजवी, प्रजा भणी सुखकारो जी ॥ १ ॥ धन्य श्रावक जे शुभमति, कामदेव गाथापति जाणो जी ॥ छक्रोड़ी द्रव्य धरणी खिपे, छक्रोड़ी व्याज वखाणो जी ॥ ध० ॥ २ ॥ छक्रोड़ी घर वखरी अछे, छ गोकुल वर्ग छे नामो जी ॥

भद्रा घरणी जाणीयें, भोगवे भोग उल्लासो जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ अवररिद्धि आणंद परें, दाखी छे सूत्रके मांइ जी ॥ तिण काले तिण अवसरें, जगगुरु जगसुखदाय जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ ग्राम नगर पुर विचरता, चंपानगरी मझारो जी ॥ वीरजिणंद समोसरया, करवा परउपगारो जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ राजादिक गया वंदवा, कामदेव पाय विहारो जी ॥ वंदी बैठा प्रभु आगलें, मनमें हर्ष अपारो जी ॥ ॥ ध० ॥ ६ ॥ प्रभु दीनी उपदेशना, धर्म सदा सुखकारो जी ॥ जो आराधे भावशुं, उतरे भवजलपारो जी ॥ ध० ॥ ७ ॥ कामदेव सुणि हरखीया, कहे सत्य वेण छ थारो जी ॥ संयमनी शक्ति नहिं, धरावो व्रत वारो जी ॥ ध० ॥ ८ ॥ आणंदनी पेरें जाणीयें, धन उपरंत पच्चक्खाणो जी ॥ त्याग करया शुद्ध भावशुं, वारा व्रत परिमाणो जी॥ध०॥९॥ सेवानंदा तिम भद्रायें, धारया व्रत रसालो जी ॥ तिलोकरिख कहे सुणो आगलें, ए थइ प्रथम ढालो जी ॥ ध० ॥१०॥

॥ दोहा ॥

॥ कामदेव श्रावक भला, टाले व्रत अतिचार ॥ चउद वर्ष इम वीतिया, पन्नरमा वर्ष मझार ॥ १ ॥ जागरणा आणंद जिम, ज्येष्ट पुत्र घरभार ॥ देईने धारी तदा, पडिमा शुद्ध इग्यार ॥ २ ॥ एक दिन पोषधशालमें, पोषध लीनो भाव ॥ धर्मध्यान ध्याई रह्या, तिण अवसर प्रस्ताव ॥ ३ ॥ शक्रेंद्र सौधर्मपति, वैठा सभा मझार ॥ अवधिज्ञान करी जोइयो, कामदेव गुणधार ॥ ४ ॥ मुख जयणा करी वोलीयो, भरतक्षेत्रनी मांय ॥ धर्मिपुरुष निश्चलमति, कामदेव अधिकाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल वीजी ॥

॥ धिक तेरा जीवड़ा न करता धरमकुं ॥ ए देशी ॥ निश्चल श्रद्धा समकित व्रतमांइ, इण अवसर कामदेव अधिकाइ ॥ नि० ॥ १ ॥ देव दानव असुर सुर जाइ, तिणने कोइ न सके

चलाइ ॥ नि० ॥ २ ॥ समदृष्टि सुर दीयो धनकारो, धन तिण नरनो सफल जसारो ॥ नि० ॥ ३ ॥ माहामिथ्यादृष्टि सुर तिणवारें, सुण कर सो मनमांहिं विचारे ॥ नि० ॥ ४ ॥ अन्नको कीड़ो जीव अन्न खाइ, निगने एक छिनमें देउं चलाइ ॥ नि० ॥ ॥ ५ ॥ ऐसो विचार कियो मनमांइ, शीघ्रपणे तिहां आयो चलाइ ॥ नि० ॥ ६ ॥ महंत पिशाचको रूप वणायो, महा विद्रूप भयंकर कायो ॥ नि० ॥ ७ ॥ टोपला सरखो शीश वनायो, शूकर सरिखा केश जमायो ॥ नि० ॥ ८ ॥ कडायला सरखो कीयो कपालो, तालीकी पूंछ ज्युं भ्रमु विकरालो ॥ नि० ॥ ९ ॥ वाहिर छटक्या नेत्र की डोला, सूपड़ा सारिखा कान कुडाला ॥ नि० ॥ १० ॥ गाडर जिम चपटी तस नासा, फालीया सरखा दंतस त्रासा ॥ नि० ॥ ॥ ११ ॥ लटके उंट सा होठ कुरंगी, जिह्वा कतरणी जम विभंगी ॥ नि० ॥ १२ ॥ खंध करया मृदंग आकारो, पुरपोल किमाड ज्यों हियो भयंकारो ॥ नि० ॥ १३ ॥ भुजा वीभत्स शिल्ला सी हथेली, खल वतासी अंगुलीकुं मेली ॥ नि० ॥ १४ ॥ सीपपुड़सा तस नख विस्तारो, नाइ पेटी समथण भयभारो ॥ नि० ॥ १५ ॥ ढालो छे सर्पी वंध शरीरो, देखतां कायर होत अधीरो ॥ नि० ॥ १६ ॥ कार्कीडा उंदराकी तनमाला, कुंडल नोलका अति विकराला ॥ नि० ॥ १७ ॥ उत्तरासण भुजगको अंग धरंतो, अट्टाट्टहास गर्जारव करंतो ॥ नि० ॥ १८ ॥ अति तीक्षण खांडो कर सायो, पोषधशाला तिहां चल आयो ॥ नि० ॥ १९ ॥ बोले वचन जिम कोपियो कालो. तिलोकरिख कहे दूसरी ढालो ॥ नि० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हंभो कामदेव श्राद्ध तुं, मृत्युनो वंच्छणहार ॥ खोटा लक्षण ताहरां, हिरि सिरि वर्जणहार ॥१॥ धर्म पुण्य स्वर्ग मोक्षनो, तुं अछे वंछणहार ॥ कल्पे नहिं तुझ खंडवां, शीलादिक व्रत चार ॥२॥ पण हुं आज भंजावशुं,

पोषधादिक व्रत जेह ॥ नहिं तो येही खड्गशुं, खंड खंड करुं देह ॥ ३ ॥ आरत रौद्र ध्यानवश, सरसी आज जरूर ॥ एक दोय तीन वार ते, बोले वेण करूर ॥ ४ ॥ वयण सुणी इम तेहनां, डरिया नहीं लगार ॥ धर्म ध्यान ध्यावे हिये, देव तदा तिण वार ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ सूरिजन सांभलजो सव काय ॥ ए देशी ॥ क्रोधातुर मिस मिस थको कांइ, त्रिशूल लिलाडें चडाय ॥ तीक्षण पाछणा धार सो कांइ, खड्गशुं खंडे काय ॥ भविकजन धन धन साहस धीर ॥ १ ॥ उज्जली वेदना ऊपनी कांइ, कहेतां न आवे पार ॥ के तो जाणे आतमा कांइ, के तो जाणे किरतार ॥ भ० ॥ २ ॥ त्रास नहिं एक रोममें कांइ. राख्या सम परिणाम ॥ कामदेव सोचे तदा कांइ, मिथ्यात्वी सुरकाम ॥ भ० ॥ ३ ॥ ए खंडे मुझ कायने कांइ, मुझ समकित व्रतबार ॥ खंडवा समरथ छे नहिं कांइ, जो आवे देव हजार ॥ भ० ॥ ४ ॥ थाक्यो देव तिण अवसरें कांइ, जोर न चाल्युं लगार ॥ पोषधशालाथी नीकली कांइ, पिशाचको रूप निवार ॥ भ० ॥ ५ सम अंग लागे धरणीशुं कांइ, धार्यो तिणे गजरूप ॥ अंजनगिरिनी उपमा कांइ, दीसे महा विद्रूप ॥ भ० ॥ ६ ॥ पोषधशालामें आइने कांइ, तीन वार वली जेह ॥ बोल्यो व[illegible]न पहेली तणा कांइ, रंच डर्या नहिं तेह ॥ भ० ॥ ७ ॥ क्रोधातुर ग्रह्या शुंडसें कांइ, पोषधशालानी बहार ॥ उछाल्या आकाशमें कांइ, तीक्षण दंत मझार ॥ भ० ॥ ८ ॥ झालीने निज पगतलें कांइ, लोलव्या तीनज वार ॥ महावेदना तिणे अनुभवी कांइ, चलिया नहीं लगार ॥ भ० ॥ ९ ॥ हस्तिरूप छोडी, करी कांइ सर्प वण्यो भयंकार ॥ लाल नेत्र मणीपुंज सो कांइ, करतो फुंफुंकार ॥ भ० ॥ १० ॥ पूर्वपरें वचन कह्या कांइ, अणबोल्या रह्या सोय ॥ निश्चलपणुं जाणी करी कांइ. क्रोधातुर अति होय ॥ भ० ॥ ११ ॥

तीन वींटा दिया कंठमें कांइ, विष सहित हिया मांय ॥ डंक कियो अतिजोरसुं कांइ, तो पण चलिया नांय ॥ भ० ॥ १२ ॥ थाको ते वेदनी देवता कांइ, जाण्या दृढ परिणाम ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालमें कांइ, सुर कीधा वेदनी काम ॥ भ० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सर्परूप छोड़ी करी, निजरूप दिव्य ते धार ॥ कानें कुंडल झगमगे, साजि शोला शिणगार ॥ १ ॥ दश दिश प्रभा करतो थको, कटिघूघर घमकार ॥ हाथ जोड़िने वीनवे, लुल लुल वारं वार ॥ २ ॥ धन्य पुण्य कृत लक्षणा, सफल तुझ अवतार ॥ इंद्रें करी प्रशंसना, सौधर्मसभा मझार ॥ ३ ॥ में मिथ्यात्वतणे वशें, सत्य न मानी वाय ॥ धर्म डिगावण कारणें, दीयो परिसह आय ॥ ४ ॥ खमजो मुझ अपराध थें, नहिं करुं दूजी वार ॥ इम लघुता करी देव ते, संचरयो स्वर्ग मझार ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ मोने वालो लागे विंछीयो ॥ ए देशी ॥ हांरे लाला तिणकालें तिण अवसरें, समोसरया वीर जिणंद रे लाला ॥ कामदेव सुणि धारीयो, पारणो करुं प्रभु पेली वंद रे लाला ॥ १ ॥ कामदेव श्रावक सिरें, जिणें पहेरया सहु शिणगार रे लाला ॥ प्रभु प्रणम्या शुद्ध भावशुं, हियडे अति हर्ष अपार रे लाला ॥ का० ॥ २ ॥ प्रभु दीनी उपदेशना, द्वादश परिषदाने मझार रे लाला ॥ कहे कामदेव थकी तदा, आजे आधी रात मझार रे लाला ॥ का० ॥ ३ ॥ तीन उपसर्ग देवें दीया, ने खमीया समपरिणाम रे लाला ॥ एह अर्थ समरथ छे के नहिं, सो दाखे हंता छे स्वाम रे लाला ॥ का० ॥ ४ ॥ गोतमादिक साधु साधवी, आमंत्रिने कहे जिनराय रे लाला ॥ गृहस्थाश्रमें परिसह सह्या, तुमें तो थया मुनिराय रे लाला ॥ का० ॥ ५ ॥ द्वादश अंग भणीया तुमे, परिसह सहवा जोग रे लाला ॥ तहत्ति

वचन करिया सहु, श्रमणादिक राखी उपयोग रे लाला ॥ का० ॥ ६ ॥ प्रश्न उत्तर भगवंतने, पूछी सहु गया निजगेह रे लाला ॥ आणंद जिम पड़िमा वही, अंते ठायो अणसण तेह रे लाला ॥ का० ॥ ७ ॥ एकमास संलेषणा, प्रथम स्वर्ग मझार रे लाला ॥ अरुणाभ विमानें उपना, थिति दाखी पल्योपम चार रे लाला ॥ का० ॥ ८ ॥ चविने विदेहमें जावसी, तिहां लेसी नर अवतार रे लाला ॥ संजम ले करणी करी, ते जावसी मुक्ति मझार रे लाला ॥ का० ॥ ९ ॥ संवत उगणीशें गुणचालीशमें, पोषवदि चौथ तिथि जाण रे लाला ॥ देश दक्षिण कोकन विषे, शहर सातारो वखाण रे लाला ॥ का० ॥१०॥ तिलोकरिख कहे सूत्रन्यायशुं, चोढालीयुं रच्युं सुखकार रे लाला ॥ भणसी गुणसी शुद्ध सरधसी, तस होवसी खेवा पार रे लाला ॥ का० ॥ ११ ॥ इति कामदेवजी श्रावकनुं चोढालीयुं समाप्त ॥

॥ अथ एषणासमितिनुं चोढालीयुं प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धर्म मंगल उत्कृष्ट छे, संयम तपस्या मांय ॥ प्रणमे सुर नर जेहने, सदा धर्म चित्त चहाय ॥ १ ॥ जिम मधुकर कुसुम भणी, दुःख नहिं देवे लगार ॥ रस ले तृप्त करे आतमा, तिम जाणो अणगार ॥ २ ॥ तप संजम प्रतिपालवा, भाड़ो देत शरीर ॥ दोष बइयांलीस टालिने, आहार लहे गुणधीर ॥ ३ ॥ भिन भिन वर्णन तासको, कहुं सूत्र अणुसार ॥ ते सुणजो भवियण तुमें, आलस उंघ निवार ॥४॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ निर्मल सुद्धसमकित जिणे पाइ ॥ ए देशी ॥ त्रीजी समिति एषणा नामें, भांखी श्री जिनराया ॥ पाले मुनिवर शुद्ध रीतिसें शिवसुख गरजी डाह्या ॥ भोला श्रावक दोष लगावे, मुनिवर जाणे तो नट जावे ॥ १ ॥ ए टेक ॥ समुचय साधू कारण कीनो, असणादिक चउ आहारो ॥ आधाकर्मी आहार सो कहीयें, महोटो दोष विचारो

॥ भोला० ॥ २ ॥ एक साधुको नाम थापीने, करे सो उद्देशिक जाणो ॥ सुजतामांही सीन मिले सो, पूईकरम वखाणो ॥ भोला० ॥ ३ ॥ गृहस्थी साधू दोइ अरथें, भेलो करि निपजावे ॥ मिश्रदोष कह्यो जगदीशें, कर्मबंध दरसावे ॥ भोला० ॥ ४ ॥ अवराने अंतराय देइने, थापे मुनिवर काजे ॥ पाहुणा आया पाछाने ते, सरस आहारी रिख लाजे ॥ भोला० ॥ ५ ॥ अंधाराथी करे उजवालो, वली वेचातो लावे ॥ उधारो लांगीने देवे, वदलो कर पलटावे ॥ भोला० ॥ ६ ॥ रिखजी काजें घरथी आणे, छांदो उघाडी देवे ॥ अवके ठामें चढीने आपे, चढ ठाम तले देवे ॥ भोला० ॥ ७ ॥ निवलो पासथी सवलो खोसे, अच्छिज्ज दोष ते कहीयें ॥ सवकी पांतीसें एकज देवे, अणिशिठ दोष ते लहीयें ॥ भोला० ॥ ८ ॥ आंधणमांही अधिको उरे, वहिरावणने कामें ॥ उदगमन ए सोला कहीयें, गृहस्थी को छंदो हे जामें ॥ भोला० ॥ ९ ॥ असुझतो आहार वेगवे जो कोइ, ओछो आउखो पावे ॥ सूत्र भगवती तथा ठाणांगे, श्रीजिनवर दरसावे ॥ भोला० ॥१० ॥ देवावालो जहरको दाता, तिणसुं अधिको जाणो ॥ तिलोकरिख कहे सूझतो देवो, पावो पद निर्वाणो ॥ भोला० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सोला दोष दातारना, रिख टाली ले आहार ॥
भिन्न भिन्न वर्णन करुं, सुणजो सब नर नार ॥१॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥ चाल स्मावे चित्र बतावे, आहार कारण जिम थाय जी ॥ समाचार कहे सगा सयणना, दूतिकर्म सो कहाय जी ॥ १ ॥ सोला दोष गुणीजन टाले, पाले एषणा शुद्ध जी ॥ बुद्धिनिर्मल होय संजम साधो, पावो वास विशुद्ध जी ॥सो०॥२॥ जान जणावे गोत बतावे, आहार लेवणने काजजी॥

विण मिलीयां मुखड़ो कुम्हलावे, जिम राजानो गयो राजजी ॥ सो० ॥३॥ दीन दयामणो होय हियासें, बोले भिखारी जेम जी ॥ विणिमग दोष कह्यो जगदीशें, आहार मिल्या चितक्षेम जी ॥ सो० ॥४॥ ओषध भेषज केरें पड़िगणो, आहार खुशामत काज जी ॥ तिगिच्छा दोष कह्यो जगदीशें, निपजे महोटा अकाज जी सो० ॥ ॥ ५ ॥ क्रोधें भरयो कहे रे रे कृपण, जो नहिं देवे हम आहार जी ॥ होशे हाणी तन धन जननी, माया नहिं आसी तुझ लार जी ॥ सो० ॥ ६ ॥ तुम दातार उदार भलेरा, और नहिं तुम तोल जी ॥ थें नहिं देशो तो कुण देशे, मान चढ़ावे इम बोल जी ॥ सो० ॥ ७ ॥ दूध दहीदिक वंछना मनसें, मुखसुं मांगे छाछ जी ॥ दाखे सीरादिक पातरासांही, भाषा बदल कहे वाच जी ॥ सो० ॥ ८ ॥ आहार सरस अधिको ते वहोरे, लोभ जणावे दातार जी ॥ दान दियासुं अधिको मिलशे, लोभ दोष ए जहार जी ॥ सो० ॥ ९ ॥ वहोरतां पहेली अथवा पाछो, बड़ाइ दोष दातार जी ॥ अथवा दोष लगावे कोइक, इणविध वहोरे आहार जी ॥ सो० ॥ १० ॥ विद्या शिखावे आहार खुशामत, मंत्र जंत्र करि लेह जी ॥ चूर्ण वशीकरण जड़ी बुटी, आहारकाजें करे जेह जी ॥ सो० ॥ ११ ॥ ज्योतिष शुकन शास्त्र प्रयुंजी, दाखे सुख दुःख जोग जी ॥ सुपनादिक फल आहारलोभथी, मोहे इणविध लोक जी ॥ सो० ॥ १२ ॥ विधवा कारण गर्भ गलावे, मूलकरम गृह दोष जी ॥ आहार लोलुपी करम करे इम. पाप तणो करे पोष जी ॥ सो० ॥ १३ ॥ ए सोला दोषमो लागे साधुथी, संजमनो होय नाश जी ॥ तिलोकरिख कहे दोष निवारयां. लहोवें अविचल वास जी ॥ सो० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सोला उत्पातन तणा, दोष कह्या जगदीश ॥ जे शिवसाधन उदिया, टाले विशवा वीश ॥ १ ॥ गृहस्थघरे गोचरी गया, दश वली

टाले संत ॥ ते सुणजो आलस तजी, भांख्यो श्रीभगवंत ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ भावपूजा नित कीजीयें ॥ ए देशी ॥ शोला दोष उद्गमन ना, एताही उतपातो जी ॥ और कोइ दूषण तणी, शंका पडे कोइ वातो जी ॥ १ ॥ तो मुनिवर वेहरे नहीं ॥ ए टेक ॥ जे अवसरका जाणो जी ॥ आप तथा दातारने, शंका अभिप्राय पिछाणो जी ॥ तो० ॥ २ ॥ हाथरेखा आली होवे, अंगुठादिक ठामो जी ॥ चोटी पटा डाढी मूछमें, आलो रहे कोइ जामो जी ॥ तो० ॥ ३ ॥ सचित्त द्रव्य नीचें धरयो, उपर द्रव्य अचेतो जी ॥ अचेत उपर सचित्त धरयो, गृहस्थी सो द्रव्य देतो जी ॥ तो० ॥४॥ लुण खडी जल सचित्तशुं, ठाम जो खरडियो होवे जी ॥ तिणमें सो लावे आहारने, एहवो भाजन जोवे जी ॥ तो० ॥ ५ ॥ दातार अंधो ने पांगुलो, अथवा कंपण वाधी जी ॥ चालणकी शक्ति नही, अथवा कंपण उपाधी जी ॥ तो० ॥ ६ ॥ पूरो शस्त्र नहिं परगम्यो, अधकाचो रह्यो जेहो जी ॥ होलाउंबी पुंखडा आद दे, गृहस्थि वेहरावे तेहो जी ॥ तो० ॥ ७ ॥ तुरतको लीप्यो आंगणो, टपका पाडतो लावे जी ॥ एषणाना दश दोष ए, श्रीजिनवर फरमावे जी ॥ तो० ॥ ८ ॥ ए दश दूषण न जेहमें, वेहरावे दातारो जी ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालमें, दोषण तणो विचारो जी ॥९॥

॥ दोहा ॥

॥ दोष बइयांलीस टालीने, आहार लावे अणगार ॥ पंच मांडला उपरें, दोष करे परिहार ॥ १ ॥ ते सुणजो सुगुणा रखी, रसना वश करि राख ॥ तो सुख लहिशो शाश्वता, सर्व सिद्धांतकी साख ॥२॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ पास जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ गृह रिख मारग रे मांइ, स्वाद करण करे आहार उमाही ॥ राजी गमतो रे आया,

अणगमतो करे सोच सवाया ॥ ए० ॥ १ ॥ ताकी ताकी रे जावे, ताजा ताजा माळज लावे ॥ नीरसने वहोरे रे नांइ, वण रह्या कुंदो लाल सदाइ ॥ ए० ॥ २ ॥ जीमण देखीरे धावे, रसलंपटने लाज न आवे ॥ मिलियाशुं शोभा रे करतो, अणमिळीया पर निंदा उच्चरतो ॥ ए० ॥ ३ ॥ भांड ज्युं कहीयें रे तेहने, परभव खटको रंच न जेहने ॥ दूधज आयो रे फीको, सक्कर आयां लागसी नीको ॥ ए० ॥ ४ ॥ दाल अलूणी रे आइ, लूण विनाते स्वाद न कांइ ॥ चटणी पापड़ रे लावे, नानाविध संजोग मिलावे ॥ ए० ॥ ५ ॥ गमतो आहारज रे आवे, दावी चांपीने अधिको खावे ॥ जिनजी की आज्ञा रे भंगे, वली आशाता अति उपजत अंगे ॥ ए० ॥ ६ ॥ भोजन आयो रे भातो, देखी मनमें अति हरखातो ॥ सबड़का लेइने रे खावे, चटपट चटपट मुंढो वजावे ॥ ए० ॥ ७ ॥ गरम मसालो रे भारी, वघारी धुंगारी रूड़ी तरकारी ॥ चतुरणी नारीरे दीसे, उण घरे जावणो विशवाविशें ॥ ए० ॥ ८ ॥ खाता प्रशंसा रे करतो, दिन उग्यांथी सांज लगे चरतो ॥ चारित्रने दाहज रे लागे, अंगारा सम ओपमा सागे ॥ ए० ॥ ९ ॥ आहारज नीरसो रे देखी, चित्तमें आरत आणे विशेषी ॥ मिरचां लूणज रे नांइ, वडनारी ए नहिं छमकाइ ॥ ए० ॥ १० ॥ बोले मुखशुं रे खोटो, पाड़े संजम धनको टोटो ॥ कारणविना आहारज रे खावे, पंचमो दोष ए स्वामि सुणावे ॥ ए० ॥ ११ ॥ मंडलदूषण रे पांची, तिलोकरिख कहे सुणजो साची ॥ उगणीसें छत्तिस रे सालें, ग्राम सोनइ दक्षिण सुविशालें ॥ ए० ॥ १२ ॥ आहारनां दूषण रे जाणो, चोथी ढाल रसाल वखाणो ॥ जे मुनि दूषण रे सेवे, ते तो भवजल मांहीज रेवे ॥ ए० ॥ १३ ॥ छन्नुं दूषण रे सारा, टाले सो धनधन अणगार॥ इण भव शोभा रे भारी, आगे अजर अमर सुख त्यारी ॥ ए० ॥ १४ ॥ इति एषणासमितिनुं चोढालीयुं संपूर्ण ॥

॥ अथ विनयआराधनानुं चोढालीयुं प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजिनराज प्ररूपीयो, विनयमूल जिनधर्म ॥ इम जाणी भवि आदरो, तूटे आठूं कर्म ॥ १ ॥ विनय विना शोभा नहिं, नाक विना जिम नूर ॥ जीवविना जिम देहडी, शस्त्र विना जिम शूर ॥ २ ॥ नमसी सो सुख आपने, इणमें शंक न कोय ॥ घालि तराजु तोलीयें, नमे सो भारी होय ॥ ३ ॥ आंब आंवली जंबुदिक, उत्तम वृक्ष नमंत ॥ तिम सुगुणी जन जाणीयें, मध्यम तरु अकडंत ॥ ४ ॥ मात पिताथी अधिकता, गुरु उपगार अपार ॥ टालो अशातना सर्वथें, जो तरणो संसार ॥ ५ ॥ धर्मगुरु मत वीसरो. पल पल गुण करो याद ॥ सुगुणा जन सुणजो तुमे, गुरु गुण अगम अनाद ॥ ६ ॥

॥ ढाल पेहली ॥

॥ पास जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ गुरुगुण समरो रे भावें, मोक्षमार्ग गुरु विना नहिं पावे ॥ गुरु गुण सागर रे दरिया, चरण करण रत्नागर भरिया ॥ गु० ॥ १ ॥ सांति जेमा मेला रे कहीयें, सक्कर सरिखा खारा सनइयें ॥ सुसेरु ज्युं समजो रे न्हाना, अणगमता निज प्राण समाना ॥ गु० ॥ २ ॥ अधीरज कुंजर रे जेहवा, केसरीसिंह जेम कायर केहवा ॥ गुणधर जेहवा रे विराधि. भारंड-पंखी जिम परमादी ॥ गु० ॥ ३ ॥ सुरगुरु जेहवा रे अभणीया, वेश्रमण जेहवा भूंजि सो थुणीया ॥ क्रोधी पण रे दोस. टल नहिं जे कर्म शत्रु अरिसे ॥ गु० ॥ ४ ॥ शशिसम उष्णता रे जाणो, अप्रतापी जिम दिनकर मानो ॥ सुरतरु जेहवा रे अदाना, श्रीजिन जेहवा लोभी विख्याना ॥ गु० ॥ ५ ॥ शम दम उपशम रे करणी, करे गुरुदेव सदा भवतरणी ॥ भवजल तारक रे वाणी, दे उपदेश

सदा सुखदाणी ॥ गु० ॥ ६ ॥ मोहनी कर्में रे अंधो, करतो नीच अकारज धंधो ॥ दुर्गति पड़तो रे राखे, निरवद्य वेण मधुर सत्य भांखे ॥ गु० ॥ ७ ॥ सतगुरु करुणा रे कीनी, बोधबीज समकित घट दीनी ॥ भर्म मिटायो रे भारी, सतगुरु सम नहिं कोइ उपगारी ॥ गु० ॥ ८ ॥ महिपति संजती रे नामें, पहुंतो वन मृग मारण कामे ॥ गर्दभाली मुनिवर रे तार्यो, संजम लेइ निजकारज सार्यो ॥ गु० ॥ ९ ॥ परदेशी हत्या रे करतो, पाप करण सो रंच न डरतो ॥ केशी गुरु तार्यो रे सोइ, गुणचालीश दिनमें सुर होइ ॥ गु० ॥ १० ॥ दृढप्रहारी रे नामें, चार हत्या करी जातो परगामें ॥ सतगुरु बोधज रे दीनो, संजम देइ शिववासी सो कीनो ॥ गु० ॥ ११ ॥ एम अनंता रे प्राणी, तरिया सतगुरुकी सुणि वाणी ॥ सेवा करसी रे भावें, सो नर भव भव में सुख पावे ॥ गु० ॥ १२ ॥ जिणें गुरु आज्ञा रे धारी, सो जिन आज्ञासें नर नारी ॥ गुरुकी तो महिमा रे भारी, तिलोकरिख कहे नित बलिहारी ॥ गु० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुरु कारीगर सारिखा, टांकी वचन उच्चार ॥ पत्थरकी प्रतिमा करे, जिम सतगुरु उपगार ॥ १ ॥ मूल तेतीस आशातना, उत्तर अनेक प्रकार ॥ गुरुनी टालो आशातना, जो तरणो संसार ॥ २ ॥ राग द्वेष पक्ष छोड़जो, मत करजो मन रीस ॥ टाल्यांथी सुख पावसो, भाख्यो श्रीजगदीश ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ निर्मल शुद्ध समकित जिण पाइ ॥ ए देशी ॥ अड़तो आगें पाछे बरोबर, उठ बेठे चाले ॥ एक एकमें तीन गणीजें, ए नवभेद दीखाले ॥ १ ॥ जाणी करे आसातना प्राणी ॥ जिणने आगें नरक निसाणी ॥ ए आंकणी ॥ गुरुसंगाते थंडिल पहुंता, शुचि करे पहेली चेलो ॥ कोइक वंदवा आवे तेहने, बतलावे गुरु पहेलो

॥ जा० ॥ २ ॥ गुरु शिष्य आवे साथें उपाश्रय, पहेली ईर्या ठावे ॥ अवराने आगल आलोवे. आहार पाणी जे लावे ॥ जा० ॥ ३ ॥ गुरु पहेली बतावे परने. देवणकी मनवारो ॥ गुरुने विण पूछ्या पर सोंपे, सोलमी ये अवधारो ॥ जा० ॥ ४ ॥ लूखो सूखो निरसो विरसो, गुरुने दीनो चहावे ॥ सरस आहार मनगमतो देखी, आप लेइ हरखावे ॥ जा० ॥ ५ ॥ रात्रे सूतां गुरुजी पूछे, कुण सुतो कुण जागे ॥ सुण कर उत्तर दे नहिं जाणी, कामज करणो लागे ॥ जा० ॥ ६ ॥ गुरु बतलावे कारण पडिया, उत्तर दे आसण बेठो ॥ उठण करो आलस अंगें, काम करणमे धिठो ॥ जा० ॥ ७ ॥ गुरु बतलायो कोइक कारण, सुणीयो करे अणसुणीयो ॥ जाणे कोइक काम बतासी, राखे मन अणमणियो ॥ जा० ॥ ८ ॥ गुरु बतलायो बेठो बेठो, शुं कहो शुं कहो बोले ॥ तहत्त वाणी मथेण वंदामि, सो तो कहे न भोले ॥ जा० ॥ ९ ॥ गुरु गरढा तपसीनी वेयावच्च, करना निर्जरा भारी ॥ एम सुणी सो कहे अपुठो, तुमने शुं नहि प्यारी ॥ जा० ॥ १० ॥ गुरु देवे हित शिक्षा आणी, ज्ञान दीपक उजवालो ॥ कहे अपुठो गुरुशुं मूरख. पोतें क्यों नहिं चालो ॥ जा० ॥ ११ ॥ तुं तुंकारो देवे गुरुने, एसो मूरख प्राणी ॥ गुरु उपदेश देवे भविजनने, आणे चित्त अकुलाणी ॥ जा० ॥ १२ ॥ गोचरी वेला हुइ आझेरी. दिन चढियो नहिं दीसे ॥ वखाण थोभे नहिं भूखज लागी, बोले भरियो रीसे ॥ जा० ॥ १३ ॥ गुरुजी अर्थ कहे भविजनने, विचाविचमांही बोले ॥ कहे थाने शुद्ध अर्थ न आवे, वर्ष निकाल्या भोले ॥ जा० ॥ १४ ॥ गुरुजी कहेतां शिष्य पयंपे, याद पूरी नहिं थाने ॥ में कहुं सावन वात वणाइ, गुरु कथा छेदी वखाण ॥ जा० ॥ १५ ॥ गुरु वखाण करे तिणमांही, कोइक काम वताइ ॥ पर्षदामांही भेदज पाडे. मूरख समझे नांइ ॥ जा० ॥ १६ ॥ गुरु वखाण करीने उठे, तिणहीज सभा मझारो ॥

॥ सोहीज शास्त्र सोहीज गाथा, करे अरथ विस्तारो ॥ जा० ॥ ॥ १७ ॥ हीणता जणावे निजगुरु केरी, पंडितपणो बतावे ॥ लोकसरावण सुण कर मूरख, मनमें अति अकडावे ॥ जा० ॥ १८ ॥ गुरुनां आसण ओघो पुंजणी, पगसुं ठोकर देवे ॥ गुरुने आसणे सुवे बेसे, उंचो आसण ठेवे ॥ जा० ॥ १९ ॥ गुरुनी प्रशंसा करे न पोतें, सुण कर अति मुरझावे ॥ तत्तिस आशातना मूल कही सो, जडामूलसुं ढावे ॥ जा० ॥ २० ॥ गुरुने आगें वस्तर केरी, पालठी वाली बेसे ॥ कर बांधे किरसाण जु भोलो, टेके बेठे विशेषें ॥ जा० ॥ २१ ॥ पाय पसारी आलस मोड़े, पग पर पग चड़ावे ॥ विकथा मांडे कड़का मोड़, गुरुने नहिं मनावे ॥ जा० ॥ २२ ॥ हड़हड़ हसे शरम नहिं राखे, जिम तिम बोले वाणी ॥ काम करे गुरुने विण पूछयां, विच विच वात ले ताणी ॥जा०॥ ॥ २३ ॥ गुरुजी कांइक जिनस मंगावे, जावणको मन नांही ॥ उत्तर टाले चोज लगाइ, ते सुणजो चित्त लाइ ॥ जा० ॥ २४ ॥ हाल वखत नही गोचरी केरी, अथवा नर नहि घरमें ॥ दीया होसी कीवाड़ बारणें, मिले न इण अवसरमें ॥ जा० ॥२५॥ वेहरा-वणरा भाव न दीसे, अथवा जिणरे नांई ॥ असुजता के सूता होसी, वस्तु न मिलसी ठाइ ॥ जा० ॥ २६ ॥ अवार तो हुं आखर सीखुं, लिखसुं पानो पूरो ॥ पलेवणो तथा थंडिल जाणो, अथवा घर छे दूरो ॥ जा० ॥ २७ ॥ सो तो कंजूस तथा मिथ्यात्वी, मुझने नहिं पीछाणे ॥ शरम आवे मुझ भीख मांगता, जाउं केम अजाणे ॥ जा० ॥ २८ ॥ मुझने थंड वाय नहीं सोसे, तड़को चडीयां जासुं ॥ कहे उन्हालो पांव बले मुझ, दिन ढलीयाथी सिधासुं ॥ जा० ॥ २९ ॥ चोमासे कहे कीचड़ बहुलो, पग लपसे छे महारा ॥ भूख लागी थकेलो चड़ियो, पग अकड्या छे सारा ॥ जा० ॥ ३० ॥ महारा शरीरमें अड़चण दीसे, चालण शक्ति नांई ॥

एक वार में आणी दीधो, अब भेजो परनाइं ॥ जा० ॥ ३१ ॥ एक काम करावे तिणमें, जाणी ढील लगावे ॥ जाणे जलदी करसुं कारज, फेर मुझ ओर बतावे ॥ जा० ॥ ३२ ॥ विनयवंदणा करे न पहेली, कहे मुझ ज्ञान सीखावो ॥ पाछे करजो काम तुह्मारो, पहेला बोल बतावो ॥ जा० ॥ ३३ ॥ संयम लीधो में तुम पासे, एता दिनके मांइ ॥ काम काममें काल वितावो, ज्ञान सीखावो नांइ ॥ जा० ॥ ३४ ॥ अवगुण आपणा देखे नांइ, वात करण को तसियो ॥ पेट भरीने नींदज लेवे, विकथा सुणवा रसियो ॥ जा० ॥ ३५ ॥ समीसांजथी पाय पसारे, भणियो सो न चितारे ॥ टेके बेठा अक्षर शीखे, भली शीख नही धारे ॥ जा० ॥ ३६ ॥ गुरुकी कहेणी करे बेठ जु, अवगुण ताके परका ॥ सुअर भ्रष्टा खावे खीर तज, ए लक्षण तिण नरका ॥ जा० ॥ ३७ ॥ अभिमानी अरु क्रोध घणेरो, चाले आपणे छंदे ॥ आप करे गुरुछानो कारज, परना अवगुण निंदे ॥ जा० ॥ ३८ ॥ गुरु देखीने अक्षर घोके, दीसे घणो सियाणो ॥ पीठ फेरीयां छांदे चाले, जाणे जग को राणो ॥ जा० ॥ ३९ ॥ आपणे हाथे कामज विगडे, परने माथे नाखे ॥ गुरु पूछ्यां घुर्रावे श्वान ज्युं, रंच न साचु भाखे ॥ जा० ॥ ४० ॥ ओर आशातना भेद घणेरा, पूरा कह्या न जावे ॥ निलोकरिख कहे ढाल दूसरी, भविक सुणी हरखावे ॥ जा० ॥ ४१॥

॥ दोहा ॥

॥ जे अविनयथी डरे नही, करे आशातना कोय ॥ ते दुःख किण परें भोगवे, सांभलजो भविलोय ॥ १ ॥ सडुया कानकी कूतरी, जिणघर जावे चाल ॥ नीकाले दुर दुर करे, इणविध हाय हवाल ॥ २ ॥ परभव किल्विश देवमें, उपजे सो अविनीत ॥ तिहांथी मरी चउगतिमें, होवे पूरी फजीत ॥ ३ ॥ गुरु

बालक वृद्ध अणभण्या, ते पण अविनय टाल ॥ अग्नि जेम सेवन किया, शाता लहे विशाल ॥ ४ ॥ सुतो सिंह जगावणो, खर अंगारे पाय ॥ गिरि खणवो जेम नखथकी, पोतें अशाता थाय ॥ ५॥ करतल मारे शक्तिपर, विष हलाहल खाय ॥ मिरचां आंजे आंखमे, पोतें अशाता थाय ॥ ६ ॥ एतो देवप्रभावथी, विघन करे नहिं कांय, आशातना फल नां टले, करतां कोइ उपाय ॥ ७ ॥ एक वचन ज्ञानीतणुं; जो धारे नर नार ॥ तास अविनय तजवो कह्यो, दशवैकालिक मांय ॥ ८ ॥ जिणपासे धारणाकियो, संजम शिवदातार ॥ तेहनी करे आशातना, सो मूरख शिरदार ॥ ९ ॥ नीतिशास्त्रे पुण दाखीयो, सात वार होय श्वान ॥ सौ भव लहे चांडालना, आगें लहे दुखःखान ॥ १० ॥ गुरुनी निंदा जे करे, महापापी केहवाय ॥ सर्वशास्त्रें दरसावियो, मुक्ति कदहीं न जाय ॥ ११ ॥ के वेहेरो के बोबड़ो, के दुर्बल के दीण ॥ जिनमारग पावे नहीं, जो करे गुरुकी हीण ॥ १२ ॥ इम जाणी भवि प्राणिया, करो विनय गुरुदेव ॥ ते सुणजो सुगुणा तमें, किणविध करीयें सेव ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ सोइ सयाणो अवसर साधे, अवसर साधे ने स्वामी अराधे ॥ ए देशी ॥ विनय करीजें भाइ विनय करीजें, विनय करीने शिवरमणी वरीजें ॥ ए टेक ॥ श्रीगुरुसेव करो मन रंगे ॥ मोह कलष कुमति सब संगे ॥ संजम किरिया गुरुमुख धारो, ढुल ढुल नमन करी गुरु ठावो ॥ वि० ॥ १ ॥ गुरु बतलाया तहत्त उच्चारो, क्रोध मान सब दूर निवारो ॥ कठिण सुणी श्रीगुरुजीकी वाणी, रीश करो मत हेत पिछाणी ॥ वि० ॥ २ ॥ फरमावे गुरु काम जो कोइ, जेज न करणी अवसर जोइ ॥ गुरु मुझ उपर कृपा कीनी, निर्जरारूप प्रसादी दीनी ॥ वि० ॥ ३ ॥ अंगचेष्टा

श्रीगुरुकी देखी. सो कारज करणो सुविसेखी ॥ वैय्यावच्च करतां आलस छोडो. भक्ति क्रिया पहेली मत पोडो, ॥ वि० ॥ ४ ॥ प्रश्न पूछतां हाथज जोडो, शीश नमावो मानज मोडो ॥ मधुर वचन प्रशंसा करके, ज्ञान शीखो अति आणंद धरके ॥ वि० ॥ ५ ॥ छोटा मोटासुं हिलमिल रहीजें, अधिक भण्याको गर्व न कीजें ॥ खार इसको किणसुं राखणो नाइ, म्हारो थारो करो मत कांइ ॥ वि० ॥ ६ ॥ वाद विवाद झोड मत मांडो, विकथा वात तणो रस छांडो ॥ वचन कहो मति कोइ मर्मनो, मनमें सदा डर राखो कर्मनो ॥ वि० ॥ ७ ॥ रीशवसें पातरा मत पटको, झजको खाइ दुजापर तटको ॥ जेम तेम बड बड पण नहिं करीयें, लोक व्यवहारसुं अधिको डरीयें ॥ वि० ॥ ८ ॥ उंचे शब्दे करो मत हेला, सुण कर लोक होजावे ज्युं भेला ॥ जैनमार्गकी लघुता आवे, सांसारिक सगा सुणी दुःख पावे ॥ वि० ॥ ९ ॥ प्रियधर्मीकी आस्ता छूटे, क्रोधारिपु संजमधन लूंटे ॥ ऐसो काम करो मत शाणा, इणभव निंदा आगे दुःख पाणा ॥ वि० ॥ १० ॥ रिद्धि छोडी जिणरो गर्व न कीजें, अधिकगुणी पर नजर जो दीजें ॥ आगलका अवगुण मत देखो, अपणा अवगुणको करो लेखो ॥ वि० ॥ ११ ॥ बाल तरुण वृद्ध जो जो नर नारी, सवथी जीकार बोलो विचारी ॥ तुं तुं तुंकारो ओछी बोली, करीयें नहीं कठु थट्टा रोली ॥ वि० ॥ १२ ॥ नीचे देखी धीरे पग मेलो, न्याय प्रमाण सुणी मत ठेलो ॥ संजम काममें निर्जरा जाणो, उज्ज्वलभावे शंका मन आणो ॥ वि० ॥ १३ ॥ पंच व्यवहार प्रमाण करीजें, निश्चे व्यवहारकी नय समजीजें ॥ उत्सर्ग अरु अपवाद पीछाणो, सतगुरु वचण करो परमाणो ॥ वि० ॥ १४ ॥ इणविध करणी भवजल तरणी, दुःख दुर्गति आपद भयहरणी ॥ त्रीजी ढाले विनयगीत वरणी, तिलोकरिख कहे शिवसुख वरणी ॥ वि० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मान वडाइ ईरष्या, क्रोध कपट दे टाल ॥ महारो थारो छोड़के, चाले रूडी चाल ॥ १ ॥ विनय करे गुरुदेवको, करे आज्ञा परिमाण ॥ तिणने महागुण नीपजे, ते सुणजो भवियाण ॥ २ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ रे भाइ सेवो साध सयाणा ॥ ए देशी ॥ रे विनयतणां फल मीठा, हलुकर्मी सुणकर हरखावे ॥ मुरझावे नर धिठा रे भाई विनय तणा फल मीठा ॥ ए टेक ॥ प्रगमे भलो ज्ञान विनीत शिष्यने, ज्ञान थकी भ्रम भाजे ॥ भर्म गयासुं समकित पुष्टि, समकीतसुं व्रत छाजे रे ॥ भा० ॥ १ ॥ व्रत पाल्यासुं धन धन वाजे, आदर अधिको थावे ॥ खमा खमा करे नर नारी, मनगमती वित्तपावे रे ॥ भा० ॥ २ ॥ विनयवंत शिष्यने सीख चोखी, होवे सुशाताकारी ॥ इण भव मांही रिद्ध सिद्ध संपत, परभवमें सुख त्यारी रे ॥ भा० ॥ ३ ॥ होय आराधक सुरपद पावे, महेल मनोहर भारी ॥ रतनजडीत पचरंग मनोहर, वासकुसुम छवि प्यारी रे ॥ भा० ॥ ४ ॥ कंकर, कंटक पंक रजादिक, नीच, अपावन नांइ ॥ जाली झरोखा झगमग दीपे, सुगंध रही महकाइ रे ॥ भा० ॥ ५ ॥ बत्तिस नाटक पडे निस दिन जठे, राग छत्रिशें आलापे ॥ धप मप धप मप वाजे मृदंगा, सुणतां श्रवण नहिं धापे रे ॥ भा० ॥ ६ ॥ नाना प्रकार हार ज्यां लटके, तोरण छे पंच प्रकारें ॥ आथडतां होय नाद मनोहर, जाणे कोइ देवी उच्चारे रे ॥ भा० ॥ ७ ॥ दोय सहस्त्र वर्ष छोटा नाटकमें, मोटामें दश हजारो ॥ एक महूरतको काल ज्युं वीते, विनयकरणी फल भारो रे ॥ ॥ भा० ॥ ८ ॥ पल सागराथिति एम निकाली, तिहांथी च्वी नर थावे ॥ संजमधारी करम निवारी, ज्ञान केवल सोहि पावे रे ॥

भा० ॥ ९ ॥ होय अयोगी मुक्ति सिधावे, शाश्वता सुख जाणो ॥ विनय करण फल पार न पावे, शास्त्रका भेद पहिचाणो रे ॥ भा० ॥ १० ॥ सुणतां तो आणंद वढावे, गुणतां बुद्धि प्रकाशो ॥ पालतां तो शिवनां फल लहीयें, राखो चित्त विश्वासो रे ॥ भा० ॥ ११ ॥ संवत उगणीसें छत्तिश सालें, तेरशवदि वैशाखें ॥ विनय फल ढाल कही वर चोथी, सर्व सिद्धांतकी साखें रे ॥ भा० ॥ १२ ॥ देश दाक्षिण विचरंतां आया, खांनरा हिवड़ा मझारो ॥ तिलोकरिख कहे मूल धरमको, करवो पर उपगारो रे ॥ भा० ॥ १३ ॥ सुण कर राग द्वेष मत करजो, समुच्चय दियो उपदेशो ॥ नही मानो तो मरजी तुम्हारी, निजकरणी फल लहेशो रे ॥ भा० ॥ १४ ॥ दान शीयल तप भावना भावो, ए जगमें तंत सारो ॥ पालो अराधो विनय यथारथ, उतरया चाहो भव पारो रे ॥ भा० ॥ १५ ॥ कलश ॥ विनय करणी, दुःखहरणी, सुख निसरणी, जाणीयें ॥ इणलोक सोभा, आगें शुभगति, सिद्धांत न्याय वखाणीयें, ॥ धरम मूलसो, विनय दाख्यो, सींचे तो फल पाइयें ॥ कहे रिख. तिलोक भविका, आराध्यां शिव जाइयें ॥ १ ॥ सर्व गाथा ॥ १११ ॥ इति विनयआराधनानुं चोढालीयुं संपूर्णम् ॥

॥ ॐ अर्हं ॥

॥ अथ श्री गजसुकुमारकी लावणी प्रारंभः ॥

परम पति परमेश्वर समरो नेम जिनेश्वर उपकारी ॥ दे उपदेश भला हितकारक धार तिरे नर और नारी ॥ टेर ॥ खंड खंड तेलेकी तपस्या समरा वेसमण भंडारी ॥ कंचनके गढ़ कोट बनाए देव पुरीसी छब प्यारी ॥ जरासंधकूं मार चक्रसे तीन खंडका राज्य लिया ॥ परजाको फरजंदसी पाले वैरीका सब नाश किया ॥ अजर अमर खुशचक्रवर्ती शहरमें राज्य करत है मुरारी ॥ प० ॥ १ ॥ एक राजका

जिक्र सुनो सब नेम प्रभूजी जहां आए ॥ छे साधूजी आज्ञा लेकर नगरी के अंदर आए ॥ दो आए देवकीके घरमें मोदक लेकर सिधाए ॥ दो आए फिर उसी दममे आहार देके फिर पहुंचाए ॥ दो आए फिर उनको वेराकर भरम भयो दिल विचारी ॥ प० ॥ २ ॥ कहे देवकी सुनो साधुजी स्वर्गपुरीके अनुहारे ॥ वडे वडे धनवंत वसे यहां श्रावक हैगा दातारे ॥ कहो जी क्या नहीं मिले आहार वहां फिर फिर उस घरमें जाना ॥ कल्पे नहीं हम सुनी श्रवणसे नेम प्रभूका फरमाना ॥ हाथ जोडकर करे यों अरजी साधुक्रिया जाननहारी ॥ प० ॥ ३ ॥ देवकीका सवाल सुना यह समझ लिया मुद्दा सारा ॥ कहे साधुजी सुनरे देवकी भद्दलपुर रहने हारा ॥ नाग गाथापति पिता हमारे सुलसाके अंगज प्यारे ॥ छहों भाइ हम एक सरीखे रंग रूप वय उणिहारे ॥ मात पिताके वहुत लाडके वहोत्र कलामें हुसियारी ॥ प० ॥ ४ ॥ जवान उमर में जब हम आये मात पिता खुशवख्तीसे ॥ सुंदर लडकी इभपतियोंकी शादी किवी संग वत्तीसे ॥ वत्तीस क्रोड रुपैये आये अशरफी इतनी जानो ॥ एकसो बानव वोल दायजा अलग अलग छहुंके मानो ॥ और साहेवी थी वहुतेरी नहीं थे जन्मके भिखारी ॥ प० ॥ ५ ॥ वहोत रोज यों गुजरे भोगमें पडे नाटकके धुंकारे ॥ एक रोज हम भाग्य उदयसे नेम जिनेश्वर पधारे ॥ वहोत थाठसे गये वंदवा दिया उपदेश भला हमकू ॥ दुनियादारी जान अथिर हम जाग लिया हे उस दमकू ॥ उसी रोज आज्ञा ले प्रभुकी छठ छठ तपस्या हम धारी ॥ प० ॥ ६ ॥ जनम मरणका डर हम रखके करें तपस्या सुन वाई ॥ तनको भाडा देन काज यहां चल आये मंदिर माई ॥ पेट भरणके काम फकीरी हमने नहीं लीनी स्यानी ॥ पहले आये सो और जान तू हम दूजे यों ले मानी ॥ इतना जवाव देकरके सो फिर आये ठिकाने अनगारी ॥ प० ॥ ७ ॥

सुन जवाव देवकी सोचे जव में फिरती लडक पनमें ॥ कहा एवंतारिखजी मुझसे आठ पुत्र सुंदर तनमें ॥ जन्मेगा तू सुनरे देवकी और न जनेगी भरतखंडमें ॥ सो कहेनी तो झूठ भई सव आज देख छहों परचंडमें ॥ नेम प्रभूके पास जायकर वहम मेरा में दूं टारी ॥ प० ॥ ८ ॥ उसी वक्त रथमांहे वैट गई भ्रमभंजन पासे चलके ॥ जाते पहले हाल सुनाया ये थे धारक केवलके ॥ भद्दलपुरमें नाग गाथापति सुलसा उसकी थी नारी ॥ मृतवंध्या यों कही नैमित्तिक जव वो फिरती कौंवारी ॥ उसने सुन एक हिरनगवेषी मूरत कर पूजन धारी ॥ प० ॥ ९ ॥ किसी रोज पर प्रसन्न भया वह गर्भयोग समतोल करे ॥ जन्म समयकी वक्त वरोवर करके करमें लेके धरे ॥ तेरे फरजंद उसके पास रख पास रख उसके तेरे ॥ छे लडके इस माफिक समझ ले विन तकदीर कैसे टहरे ॥ छहों फरजंद ये तेरे मान तू तू है छहुंकी महतारी ॥ प० ॥ १० ॥ सुनके सो गइ छहुंके पास चल खडे खडे निरखन लागी ॥ हरख भराना वहुत वदनसे सोहदगा मनसें जागी ॥ अंगियाकी कस तूट गइ और दूध भराना है स्तनमें ॥ करके कंकण तंग भए हैं खुशीके आंसु भरे नैननसें ॥ वंदना करके आइ महलमें दिलमें सोच करे भारी ॥ प० ॥ ११ ॥ तेरे फरजंद सात हुये पन नहीं खिलाया एकही में ॥ नहीं न्हलाया जीमाया में काजल पन आंजा नहीं में ॥ चटा पटा चुलनी कुचरा नहीं वसाइ अंमर में ॥ नहीं पहिराया गहना कपडा थर्दा न कराइ उमर में ॥ डुव रही हैं फिकर समंदर नहीं सेरमें दुखियारी ॥ प० ॥ १२ ॥ गादगली पाद हलाया नहीं में झगा टोपी सनवाया ॥ धापू कहकर नहीं डराया पकड हाथ नहीं चलाया ॥ काजल दामना दिया न गालपर चांद सूरज मांडया नहीं में ॥ कथा चावके दिया

न मुँहमें जनवेकी दिक्कत सही मैं ॥ उस सायतमें पैर पडनकू चल आये वहां मुरारि ॥ प० ॥ १३ ॥ कहे कन्हैया सुनोजी मैया क्यों दिलगिरी हैं तुझकू ॥ फिक्र छोड कहो जिक्र सभी सच तब दिलगीरी मिटे मुझकू ॥ सो कहे सात जाये तुझ सरिखे खूबसूरत और श्यामवरन ॥ छह तो परघर वधे चैनमें जोग लिया उन भर जोवन ॥ आये थे घर आहार लेनेकू देखे नैननसे जहारी ॥ प० ॥ १४ ॥ सातवाँ सोला वर्ष गोकुलमें नाम अहिर थे धराया ॥ भाग्य उदयसे पाया राज्य अब सब दुश्मनकू हटाया ॥ छे छे महिने पैर पडनकू तू पन आता है चलके ॥ इसी वासते मैं दिलगिरी नैनन बुंद पडे जलके ॥ कहे मुरारि सुन महेतारी मेटूं मैं तुझ बिमारी ॥ प० ॥ १५ ॥ करूं इलाज जु होवे मुझ भैया खूब धीरप दीवी मैया ॥ आये पौषधशाला अंदर तप तेला कर जहां रैया ॥ याद किया दिल हिरनगवेषी चल आया वह उस दमसे ॥ हाथ जोडकर कहे देव यों क्यों बुलवाया कहो हमसे ॥ हाल कहा सब अपने दिलका सो सुनके यों उच्चारी ॥ प० ॥ १६ ॥ होगा भैया सही तुम्हारे आवेगा भर जोवनमें ॥ सो तो संजम जरूर लेगा खुशी रखो अपने मनमें ॥ ऐसा कहकर गया देव फिर हाल सुनाया जननीसे ॥ कोई कालमें चवके स्वर्गसे गर्भ रहा शुभ करनीसे ॥ नेक सायतसें जन्म भया है हर्ष भया घर घर भारी ॥ प० ॥ १७ ॥ सुरख रंग और नल कुवेरसा गज तालव कोमल काया ॥ माता पिता फरजंद नाम तब गजसुकुमार यों ठहराया ॥ दर हमेशा बडे मौजसे बहोत्र कलासे राक भया ॥ बावीसमा जिनराज पधारे वंदनकू केइ शख्स गया ॥ माधव छोटे भाइ संग ले चले खुशी सज असवारी ॥ प० ॥ १८ ॥ सोमल ब्राह्मणकी एक लडकी खेल रही थी रस्ते अंदर ॥ रूप रंग भर जोवन देखी भये अचंभे हरि

मन दर ॥ शादी लायक छोटे भैयाकी ऐसा दिलमें मान लिया ॥ कौंवारा जनानखानामें रक्खो यों चाकरसे किया ॥ आप गये जहां थे जगनायक धर्मकथा सुनने सारी ॥ प० ॥ १९ ॥ नाथ कहे तन धन अरु जोबन कबहुं नहीं यह रहनेका ॥ मतलबकी यह सारी दुनिया पाप किया दिक्कत पावे ॥ अपनी करणी पार उतरणी और संग कछु नहिं आवे ॥ ऐसी समझ दिल धर्म धारना उतरोगे भवजल पारी ॥ प० ॥ २० ॥ वडे भ्राता निज महल पधारे गज-सुकुमार करे अरजी ॥ तुम फरमाइ सच दिल जानी मेरी दीक्षाकी है मरजी ॥ हुकम ले आउं मातपिताका नाथ कहे मत देर करो ॥ चल आया सो अम्मा पासे दो आज्ञा मत देर धरो ॥ मैं लहुं जोग प्रभूके पासे मोहजाल है दुःखकारी ॥ प० ॥ २१ ॥ सुन सवाल यों फरजंदका तब मूर्च्छा खाय पडी धरनी ॥ क्षणमात्रमें भइ सचेतन आंखें बुंदनसे झरनी ॥ रे जाया तू मत ले फकीरी तेरे किस कामका नहीं टोटा ॥ कृष्ण सरीखा बंधव तेरा तीन खंडमें है मोटा ॥ हाल चैन कर रह दुनियामें पिछे संजम ले धारी ॥ प० ॥ २२ ॥ जन्म मरण दिक्कत सटनकी ताकत नहीं मेरे भैयाकी ॥ भोग हालाहल जहरसे जियादा खबर नहीं पलैयाकी ॥ काल जोरावर लगा संग मेरे कौन सायत ले जावेगा ॥ धन दौलत अरु माल खजाना यहांका यहां रह जावेगा ॥ इस वास्ते मैं लेउं फकीरी आज्ञा दे माता म्हारी ॥ प० ॥ २३ ॥ वडे भाई दीक्षाकी सुनकर खोलेमें बैठाय कहे ॥ द्वारामतीका राज्य करो तुम अभीसे मत तू जोग लहे ॥ राज्य किया मैं वार अनंती मेरेको नहीं कुछ परवा ॥ मैं तो चाहता प्रभुका शरणा भव सागरसे उद्धरवा ॥ हट करो मत मुझसे कोइ खोटी है दुनियादारी ॥ प० ॥ २४ ॥ एक रोजका राज्य मनाकर दीक्षा महोत्सव मंडवाया ॥ पंच मुष्टि कर लोंच सोच तज जगत जाल सब छिटकाया ॥ कहे देवकी सुनरे

भैया मुझको तूने रुलवाइ ॥ और भैयाको मत रुलाना यह मेरी कहनी भाइ ॥ आज्ञा प्रभुसे दे गइ मंदिर गज मुनिवर दीक्षा धारी ॥ प० ॥ २५ ॥ हस्त जोडकर कहे साहेबसे मुक्तिपुरी सीधा रस्ता ॥ महाकाल मरघटमें धारुं भिक्खु पडिमा दिल बस्ता ॥ नाथ कहे तुम सुख होय ज्यों लेके हुकुम गए उस ठामे ॥ पलक खोलकर खडे ध्यान धर सिद्ध निरंजन शिरनामें ॥ सराजाम यज्ञका लेनेको गया था सोमल वनवारी ॥ प० ॥ २६ ॥ दिन थोडा यों दिलमें सोचकर मरघट रस्ते चल आया ॥ पहेचाने मुनिराज चश्मसे वहोत वहोत गुस्से आया ॥ बिन तकसीरी शादी छोडकर बिन चेताये जोग लिया ॥ वैरबदला मैं लेऊं इसीसे वहोत बुरा यह काम किया ॥ शिरपर पाल बांधी मट्टीकी खैर अंगारे दिये डारी ॥ प० ॥ २७ ॥ तड तड तूटे नसाजाल सिर चरड चरड चमडी जलती ॥ खदबद खीच ज्यों भेजी करती आंख छटक कर निकलती ॥ के वह दिक्कत मुनिवर जाने के जाने जगनाथ पति ॥ अटल खडे सुमेरु पहाड ज्यों गुस्सा नहीं दिल एक रति ॥ क्षमासागर ज्ञान उजागर चित्त शरणा धारे चारी ॥ प० ॥ २८ ॥ अनंत बेर यह देह जली है नर्क बीच दु:ख अनंता ॥ सहना पडा तेरे तइं परवश फरमाया श्री भगवंता ॥ जो तेरा शिर हले जराभर घात होवे छह कायनकी ॥ लहनायत लेवनकू आया तैयारी रख देवनकी ॥ ससुरे दिया सिरपाव मुक्तिका राख जतन कर हुसियारी ॥ प० ॥ २९ ॥ तेरा चेतन अजर अमर है नहीं कटे हाथियारनसे ॥ जले नहीं कुछ आतससे और बहे नहीं जलधारन से ॥ उडे नहीं यह हवासे कबही सडे नहीं कोइ खारनसे ॥ पुद्गल पिंड सो नहीं है मेरा गरज नहीं इस कारनसे ॥ ऐसा भाव चढे मुनिवरका चरण शरण की बलिहारी ॥ प० ॥ ३० ॥ पनिहारीकी नजर घडेपे नट ज्यों नृत्यपर रखे सुरता ॥ कामीके

दिल काम वमन है धर्मध्यान त्यों आतुरता ॥ शुक्लध्यानपर चढे मुनीश्वर कर्म शत्रुको मार लिया ॥ पाये केवलज्ञान उसीदम मुक्तिनगरसें डंका दिया ॥ पहले पहुंचे सिद्ध क्षेत्रमें पीछे देह पडी जडारी ॥ प० ॥ ३१ ॥ आसपासके देवी देवता गगन माहे जयकार करे ॥ फूल पानीकी करे जहां वर्षा गायन गीत उछाह धरे ॥ दिन उगसे भैया वंदनकु गज असवारी चल आने ॥ एक बुड्ढा नानाकन बदनले देखा ईटको उठाने ॥ रहीम दिलमें आई हरिके एक मेली घर मझारी ॥ प० ॥ ३२ ॥ सालकन्ने जब ईट उठाइ रखने देखी उस घरमें ॥ जवान सेकडा मिलके उस दम सबही मेली मंदिरमें ॥ प्रभुको वंदना करी हरखसे मन वचन तन भाव भले ॥ और सकल मुनिवरको वंदे निजबंधव वंदनकू चले ॥ देखे नहीं तब पूछे भैया कहां प्रभु पासे तब गिरधारी ॥ प० ॥ ३३ ॥ करुणा सागर कहे उजागर जिस कारण उन जोग लिया ॥ काम भया उसका सब सिद्धि एक शक्सने सहाय दिया ॥ मतलब सुनके गुस्से भराने कौन वो दुष्टी हत्यारा ॥ नाम पता उसका बतलावो जो भैया मारनहारा ॥ स्वामी कहे दिल गुस्सा छोडो वह तो हेगा उपकारी ॥ प० ॥ ३४ ॥ जैसे तुमने ईट उठाइ दया आन दीनी माना ॥ ऐसे तुम समझो दिल अंदर क्यों होना उनपर राना ॥ पहिचानूं में कौन राहसे प्रभु कहे तुम घर जाना ॥ रस्ते अंदर तुमको देखकर वर जावेगा थरराना ॥ वे तो चले सोमल कहे दिलसें नेमिनाथ जाने सारी ॥ प० ॥ ३५ ॥ डरके निकला घरके बाहिर मिले सामने हरि उसके ॥ थर थर धूजके पडा जमीन पर छूटे प्राण तब एक धसके ॥ घीसके काया पुरीके बाहिर जल छिटकाया रस्तेमें ॥ क्रूर कामका बुरा हाल है पापी नरककुंड धस्नेमें ॥ ऐसी समझ दिल करो धर्मको जो चाहते

भवजलपारी ॥ प० ॥ ३६ ॥ वसुदेव सरिखे जो पिता थे माता देवकीसी जिनके ॥ गरुडध्वज हलधरसा भैया कर्म न छूटे देखो उनके ॥ हसकर प्राणी कर्म बांधते रोतेही छूटे मुष्कल ॥ ऐसा समझ करम बांधो मत तबही चैन मिलेगा अचल ॥ शास्त्रमें देखा सो हम कहते मानो नसीहत नरनारी ॥ प० ॥ ३७ ॥ जय जय बोलो गजमुनिवर हद क्षमा कर सिद्ध भये ॥ ऐसी क्षमा करे जो बंदे उनकी जगमें सदा जये ॥ संवत् उगनीसे साल छत्तीसमें किवी निशानी यह चंगी ॥ तिलोकरिख कहे धन जिनमारग जय जय साहेब सरवंगी ॥ भव भव सरना हो जो मेरे तंइ वंदू मे वारंवारी ॥ प० ॥ ३८ ॥ इति श्रीगजसुकुमार की लावणी संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीसमकित छत्तिसी प्रारंभः ॥

॥ रे भाई सेवो साध सयाणा ॥ एदेशी ॥ समकित विण भमियो चउगतमें, दुःख पायो महाभारी ॥ अपूर्वकरण आया विण भविका, समकित रहे सदा न्यारी ॥ रे भाई समकित रतन है भारी, राखो जतन सुविचारी रे ॥ भा० ॥ स० ॥ १ ॥ आउखो वर्जी सात कर्मकी, थिति गणलियो नर नारी ॥ एक कोड़ा कोड़ी सागर वाकी, अंतर मुहूरत हिण तारी रे ॥ भा० ॥ स० ॥ २ ॥ अनंतानुबंधी की चोकडी जाणो ॥ मिथ्यात मोहनी जहारी ॥ समकित मोहनी मिश्र मोहनी, उपशमे सातु ज वारी रे ॥ भा० ॥ स० ॥ ॥ ३ ॥ उपशम समकित आवे जेवारें, खपायाथी क्षायिक धारी ॥ कांइक उपशमे कांइक क्षय थावे ॥ क्षयोपशम नाम विचारी रे ॥ भा० ॥ स० ॥ ४ ॥ पड़ति सास्वादन वेदे सो वेदक ॥ पांचु ए नाम विचारी ॥ उपशम सास्वादन उत्कृष्टी, फरसे जीव पंचवारी रे ॥ भा० ॥ ५ ॥ क्षयोपशम असंख्या तिवारज आवे, वेदक एकही वारी ॥ क्षायिक आइ न जावे कदा फिर, सदा

काल रहे लारी रे ॥ भा० ॥ ६ ॥ पाछली चारमेंकी एक फरसे, अर्ध पुद्गलके मझारी ॥ पावे अजर अमर सुखनिश्चल, समकित की बलिहारी रे ॥ भा० ॥ ७ ॥ निश्चेमें समकित केवली जाणे, छद्मस्थ तो व्यवहारी ॥ सड़सठबोल अमोल आराधो, ते ते सुण जो विस्तारी रे ॥ भा० ॥ ८ ॥ प्रथम चार सद्दहणा सरधो ॥ मोक्षमारग तंतसारी ॥ एहनो परचो करो निशिवासर, भवभवमें सुखकारी रे ॥ भा० ॥ ९ ॥ दुजीसद्दहणा मोक्ष साधनकी ॥ सेव करो हित धारी ॥ समकित भ्रष्टनी संगति वरजो, कुतीर्थी परिहारी रे ॥ भा० ॥ १० ॥ तीन लिंग वली समकित केरा, सुणजो आलस वारी ॥ तरुण पुरुष जिम भोगमें राचे, तिम प्रभु वाणी विचारी रे ॥ भा० ॥ ११ ॥ भूख्यो क्षीरभोजन करे आदर, तिम जिनवाणी सुप्यारी ॥ भणवाकी इच्छा मिले तस दाता, हरखे जिनवचन संभारी रे ॥ भा० ॥ १२ ॥ दशको विनय करे मनरंगे, अरिहंत सिद्ध भगवानो ॥ आचारिज उवज्झाय थिवरनो, गण संघ सातमो जाणो रे ॥ भा० ॥ १३ ॥ साधर्मी शुद्ध क्रिया धारक नो, बहुमान भक्ति करीजे ॥ तीन शुद्धताकरो भवि प्राणी, भवसागरसुं तरीजे रे ॥ भा० ॥ १४ ॥ मन शुद्धता श्रीजिन ध्यावो, वचन थकी गुण गावो ॥ नमस्कार सो करो कायासुं, अवर देव मत चावो रे ॥ भा० ॥ १५ ॥ पंच लक्षणथी ओलख थावे, शत्रु मित्र सम भावे ॥ संसारसुं उदास रहे मन, धाय ज्युं बाल रमावे रे ॥ भा० ॥ १६ ॥ आरंभ परिग्रह त्यागणो वंछे, अनुकंपा चित्त मांई ॥ सूक्ष्मभाव सुणी नहिं मुरझे, दिढताई आण सवाई रे ॥ भा० ॥ ॥ १७ ॥ पंच अतिचार टाले समकितना, प्रभु दाख्यो सत माने ॥ पाखंडीकी महिमादिख विशेषी, वंछे नहीं कछु जाने रे ॥ भा० ॥ १८ ॥ करणी फल संदेह न आणे, परपाखंडी नहीं परशंसे ॥

॥जावे नही तिण पासे चलाइ, भंगे सुगुण सो विध्वंसे रे ॥भा० ॥ १९ ॥ पंच भूषण पहलो धीरजवंतो, दीपावे सासण भारी ॥ भक्ति करे वलि चतुर विचक्षण, श्रीसंघ सेवे हुसियारी रे ॥ भा० ॥ २० ॥ आठ प्रभाविकना गुण तासे, सर्वसिद्धांत सो जाणे ॥ धर्मकथा केहवे विस्तारी, न्यायसुं वाद सो ठाणे रे ॥ भा० ॥ २१ ॥ तीन काल सर अवसर जाणे, तप करे दुःकरकारी ॥ अनेक विद्याना जाण सो होवे, कवितासें बुध भारी रे ॥ भा० ॥ २२ ॥ छे आगार विचारसुं राखे, दान अन्यतीर्थी ने देवे ॥ राजा बलवंत जातिना भयथी, सावित्र स्वयंमुख केहवे रे ॥ भा० ॥ २३ ॥ देवता अटवी काल दुकालें, देवे पण धर्म न माने ॥ जयणा षट करे धरमीसुं, बोले पहली प्रेम आने रे ॥ भा० ॥ २४ ॥ अधिक मिठाससुं प्रीति जणावे, प्रतिलाभे बहुमानो ॥ नमस्कार सो करे यथातथ, करता बडाई सयानो रे ॥ भा० ॥ २५ ॥ षट थानक वली धारो हियामें, धर्मरूपी तरु केरो ॥ समकित मूल कह्यो जगदीशें, संवर वृक्ष रहे गहेरो रे ॥ भा० ॥ २६ ॥ धर्म सो नगर समकित गढ सम, धर्म आभूषण जाणो ॥ सम दरिसण पेटी जिम कहिये, राखे अवेरीय नाणो रे ॥ भा० ॥ २७ ॥ धर्म सो मंदिर नियम सो समकित, इण विण ठोर नांई ॥ धर्म पदारथ समकित हाटमें, जतनसुं रहे तिणमांई रे ॥ भा० ॥ २८ ॥ धर्म सो भोजन थाली ज्युं समकित, राखो सुघड सदाई ॥ भावना खट वली छे समकितनी, भाव भव छे सुखदाई रे ॥ भा० ॥ २९ ॥ चेतना लक्षण जीवको परथम, सासतो एहिज युक्ते ॥ कर्मको कर्ता एहीज जाणो, पुण्य पाप एहि भुक्ते रे ॥ भा० ॥ ३० ॥ भवि जीव कर्म खपावे तो मुक्ति, नही तो भमे गति चारी ॥ ज्ञान दरिसण चारित्र करणी, एही उपाय विचारो रे ॥ भा० ॥ ३१ ॥ सडसठ बोल व्यवहार समकितना, धारो हियामें तोली ॥ भव घटे सो समकित मेल्यो,

आगममें इम खोली रे ॥ भा० ॥ ३२ ॥ अंक विना जिम शून्यज वरथा, जेसो लिंपण छारो ॥ तप जप किरिया लेखे न आवे, पराल कूटे जिम भारो रे ॥ भा० ॥ ३३ ॥ जिम सुई दोरा सहितज होवे, सो न खोवावे पावे ॥ तिम समकित फरसे एक विरियां, निश्चइ मोक्ष सीधावे रे ॥ भा० ॥ ३४ ॥ देव अदोषी गुरु निर्लोभी, धर्मदयामें सदांई ॥ ए शुद्ध सरधा परम पदारथ, राख्यो चित्त दृढताइ रे ॥ भा० ॥ ३५ ॥ समकित विण कोई मुक्ति न पहोंचा, वर्त्तमान नहीं जावे ॥ नहीं जावे वली आवते कालें, आगममें दरसावे रे ॥ भा० ॥ ३६ ॥ संवत उगणीसें छत्तिस सालें, कीनी एह छत्तीसी ॥ तिलोकरिख कहे समकित धारो, चढति रहे धर्म विसी रे ॥ भा० ॥ ३७ ॥ इति समकित उत्पत्तिफर्सण संख्या नाम व्यवहार समकितका ६७ बोलाधिकार सहित समकित छत्तिसी संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रावक छत्तिशी प्रारंभः ॥

॥ सिद्ध चक्रजीने पूजोरे भविका ॥ ए देशी ॥ देव निरंजन केवल धारी, वर्जित दोष अठारा ॥ चोत्तिश अतिशय पेंतिश वाणी, भवजल तारण हारा रे ॥ भविका श्रीजिन आज्ञा आराधो, शिवपुर मारग साधो रे ॥ भविका श्रीजिन० ॥ १ ॥ गुरु गुण सागर परम उजागर, सत्यावीश गुण छाजे ॥ धर्म देवकी सेवन करतां, सकल भरम भय भाजे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २ ॥ धर्मजिन आज्ञा निरवद्य करणी, तरणी भवजल पारी ॥ इणसम अवर नहीं सुखदाता, नारिया अनंत संसारी रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ देव गुरु धर्म ए तिहुं तत्त्व, निश्चल भावे सेवीजें ॥ अवर मत परचित्त न दीजें, नरभव सफल करीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ दशेरा दिवाली राखी ने होली, मिथ्या पर्व न कीजें ॥ धर्म पर्व सो सर्व मनावो, सुकृत लाहो लीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ देव गुरु धर्म शास्त्र ए चारु,

रत्न परख करो भाई ॥ यत्न करीने राखो हियामें, भव भवमें सुखदाई रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ निज आतम सम जीव जगतका, जाणी दया घट आणो ॥ सचेत माटीसूं अंग नही धोजें, निरर्थक पाप घटाणो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ अणछाण्या जलमें नहीं न्हाणो, पीणो पण वर्जीजें ॥ मांसको भांगो घात पचेंद्रिय, निरर्थक नहीं ढालीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ घृतसुं मोंघो जल ने थें लखो, पूंज सो आग न दीजें ॥ उघाडो दीपक मति मेलो, जयणासें जतन करीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ पाणीसुं लकड़ी न वूझाणी, झटक फटक नहीं करियें ॥ छते मारग हरिकाय न चांपो, निरर्थक रंच न फरियें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १० ॥ रात्रि स्नान अरु भोजन वर्जो, रात्रे लीपणो टालो ॥ सलियो धान तावड़े नहीं दीजें, सालियो लक्कड़ मत वालो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ आटो वेसण दाल अरू भाजी, मत रांधो विण जोई ॥ महोटो फल अथवा बहु बीजो, छेदो मत जन कोई रे ॥ भ० ॥ ॥ श्री० ॥ १२ ॥ दूध दही घी तेलका वासण, उघाड़ो मत मेलो ॥ जूं माकड़ तावड़े मत नाखो, चोपड़ जूवा मत खेलो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १३ ॥ निर्दयी पणे गाढे प्रहारें, मत मारो पर प्राणी ॥ गाढो बंधण वजन घणेरो, लादो मति दया आणी रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १४ ॥ आंधो काणो बहेरो पांगुलो, घेलो गुंगो नर जेहने ॥ कठिण वचन वलि हांसी न करियें, दुःख लागे जिम तेहने रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १५ ॥ होय कलेश तो उपति खमावो, पक्खी पाडिक्कमणा मांही ॥ हद चोमासी जावा न दीजें, श्रावक मत कीजो चाही रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १६ ॥ राज दंडे वलि लोकमें भंडे ॥ तेहवो झूट निवारो ॥ विना विचारे वात न कीजें, मर्म मोसो मत उच्चारो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १७ ॥ विश्वास घात करो मत किणसूं, थापण मन राखो पराई ॥

लांच लेई झूठी साख न भरिये. परनिंदा दुःखदाई रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १८ ॥ रागद्वेष वश आल न दीजें, पर अवगुण मत गावो ॥ पापको कारज होय कदापि. मनमें मनि पोसावो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १९ ॥ खोटो लेख लिखो मत कोई, मोटकी चोरी न कीजें ॥ कूडा तोला मापा ते वर्जो, चोरकूं साज न दीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २० ॥ कुंवारी विधवा परनारी, वेश्या गमन तज दीजें ॥ तीव्र अभिलाषा न किजें भोगकी. शीयलव्रत रस पीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २१ ॥ परधनकी अभिलाषा न करियें, निजधन ममता राखो ॥ अधिक द्रव्य जो वधे त्यागम्नूं, पाप मांहि मत नाखो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २२ ॥ दिशि मर्याद करी तिण उपर, अधिक मत जावो आगे ॥ पंच आश्रवको त्यागन करियें, जावतां त्याग न भागे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २३ ॥ अभक्ष आहार छोडो तुच्छ भोजन. कर्मादान तज दीजें ॥ अनर्थदंड कुचेष्टा कामकी, हिंसा उपदेश न दीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २४ ॥ घट्टी उखल मुशल सरोता, पावडा और कांदाली ॥ छुरा कटारी खड्गादिक शस्त्र. संग्रह करण दो टाली रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २५ ॥ गइ वस्तुको सोच न कीजें. दुःख उपजे कोई आई ॥ निज कर्मोंको दोष बतावो. धीरज धरो मनमांई रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २६ ॥ धर्मकाममें होजो अगवानी. पापमें मौन करीजे ॥ भोजन वस्त्र हाट हवेली. शोभाकूं शोभा न कहिजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २७ ॥ तृशने अनुप्यर्का उपमा दीनी. सूत्र आचारंग मांई ॥ महादूषण इणमांहि जाणकें. लाड् कटावणी नांई रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २८ ॥ तीन वचन समभाव राखीने, सामायिक नित्य कीजें ॥ विकथा त्याग करो मन सुगुणा. दूषण दूर करीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २९ ॥ दोष अटारा टालो पोसामें, मुनि जिम साव धरीजें ॥ निर्दूषण प्रासुक आहार सो, श्रावशूं

साधु पड़िलाभीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३० ॥ चउदा नेम नित प्रतें चितारो, तीन मनोरथ कीजें ॥ दुःखीयो देख दया दिल लावो, शक्ति जिस सहाज सो दीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३१ ॥ ज्ञान ध्यान तप जपको उद्यम, सदा करो भाव धरीने ॥ क्रोध कपट छल छेद न कीजे, वरीजें मुक्ति स्त्रीने रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३२ ॥ नव तत्त्वकी पाहिछाण करीजें, विनय भक्ति शुद्ध साधो, चिंतामणि सम नरभव दुर्लभ, समकित रत्न आराधो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३३ ॥ तन धन जोवन सर्व अथिर है, सज्जन स्नेही परिवारो ॥ पुण्य उदय सब जोग जो पायो, पाप उदय नहिं थारो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३४ ॥ दुःख आया शरणागत नांइ, भटके जीव संसारो ॥ तारक छे जैन धर्म जगतमें, इस जाणी उर धारो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३५ ॥ अनंत जीव तरिया और तरसी, वरसी शिवसुख प्राणी ॥ तिलोकरिख कहे समजो भविका, साची श्रीजिन वाणी रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३६ ॥ संवत उगणीशें साल सेंतीशें, महाशुद्ध दशमी जाणी ॥ वारभोम करमालापटमें, श्रावक छत्तिशी वखाणी रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३७ ॥ इति श्रावक छत्तीसी संपूर्ण ॥

॥ अथ भोलप छत्तिशी प्रारंभ ॥

॥ संतो देखो दुनिया भोरी ॥ ए देशी ॥ भविका देखो न्याय विचारी ॥ सुगुणा देखो० ॥ भोली दुनिया भूलि भर्ममें, जाय जमारो हारी ॥ सु० ॥ ए टेक ॥ वीतरागको मारग तारक, जीवदया अगवानी ॥ हिंसा धरममें अधिकाराचे, करे जीवांकी हानी ॥ भ० ॥ १ ॥ दया दान विनय मूल धर्मसो, तीनुंही वात उठावे ॥ भगवंत चूका कहे अजानी, भव भव में दुःख पावे ॥ भ० ॥ २ ॥ सामायिक पोसाके मांही, विकथा मांडे कुडी ॥ धर्म कथामें चित्त न राखे, रह्यो पापने बुडी ॥ भ० ॥ ३ ॥ ज्ञानसीखतां गलोज दुखे, लडतां चुवडी पाडे ॥ स्तवन सझाय कहतां शरमावे,

ख्याल गावे अति गाढ़ ॥ भ० ॥ ४ ॥ धर्म दलाली पगलां दुःखे, पाप दलाली दोडे ॥ धर्मीने तो दूर बेठावे, पापीने राखे गोड़ ॥ भ० ॥ ५ ॥ ताव तेजारी आवे तनमें, सात दिवस नहिं खावे ॥ धर्मनिमित्ते एक उपवासके, करतां मन मुकड़ावे ॥ भ० ॥ ६ ॥ व्याह मोहोत्सवमें खरचे सेंकडा, धनमें आग लगावे ॥ जीव दयामें खरचण काजें, दमडीमें नट जावे ॥ भ० ॥ ७ ॥ धर्म काममें कायर अधिको, पाप करणने शूरो ॥ ले लोटो ने खावण दोडे, पर उपगारथी दूरो ॥ भ० ॥ ८ ॥ सज्जन कुटुंबी मिलिया हरखे, संत देख टल जावे ॥ मुनिवर वंदतां शरमज आवे, नीचने शीश नमावे ॥ भ० ॥ ९ ॥ पर्व पजूसण धर्मध्यान दिन, खेले चोपड़ पासा ॥ पापीकी तो करे बड़ाइ, धर्मीका करे हासा ॥ भ० ॥ १० ॥ रांड भांड नट ख्याल करे जठे, सगली रात जगावे ॥ ज्ञान ध्यान की होय जहां चर्चा, झुक झुक झोला खावे ॥ भ० ॥ ११ ॥ होय लडाइ चर्चा विकथा, विण तेड्यो चल जावे ॥ धर्मकाज बोलावे कोई, मुखसें पट नट जावे ॥ भ० ॥ १२ ॥ पोतें तो अवगुण को सागर, परनिंदामें राजी ॥ लोक बुराइसुं नहीं डरपे, आल देत पर गाजी ॥ भ० ॥ १३ ॥ अक्रोधी अमानी अमायी, अलोभी जिनराया ॥ जिनको समरण करेन घेहला, भेरु भवानी भाया ॥ भ० ॥ १४ ॥ लोक चढावे फूल फलादिक, देव देवे गग्वाड़ी ॥ तो पण विवेक अंध नहिं समझे, फिर फिर जावे दोडी ॥ भ० ॥ १५ ॥ वाजे जैनी ब्राह्मण वाण्या, मानता करे फकीरी ॥ वे विन पाणी परवश मरगया, सो कांइ देगा अमीरी ॥ भ० ॥ १६ ॥ भेरु भवानी कालिका चंडी, बोकड़ा भेंसा चड़ावे ॥ आप मारिने आपही खावे, देवी नाम बनावे ॥ भ० ॥ १७ ॥ बेटा बेटी काजे पापी, बकरा भेंसा मारे ॥ परकूं दुःख देकरके मूरख, अपनो शाता विचारे ॥ भ० ॥ १८ ॥ करे गणगोर पहेरावे गहेणां, गोरड़ी मंगल गावे ॥

पूजा कर पाणीमें पटकी, वेटा वेटी चावे ॥ भ० ॥ १९ ॥ देवकी गई हरि निरखण काजें, वस्थपूजन मिश करकें ॥ सो तेहेवार मनावे भोली, बालकवंछा धरकें ॥ भ० ॥ २० ॥ घणा मनुष्य अरु रावण मारियो, वाज्यो नाम दशेरो ॥ सो दिन हर्ष मनावे अधिको, वांधे पाप घणेरो ॥ भ० ॥ २१ ॥ वीर जिनेश्वर मुक्ति विराज्या, दिवस दिवाली जाणो ॥ दया धर्मतो पाले नहीं और, करे जीवकी हाणो ॥ भ० ॥ २२ ॥ व्यभिचारिणी हुई होलिका, भांड हुई जगमांही ॥ कू मौत तें मारी गई पापिणी, सो तेहेवार थपाई ॥ भ० ॥ २३ ॥ धूल उडावे कीच मचावे, बणे होलीका पंडा ॥ वोले खोटा निर्लज हुईने, सजे नरक का झंडा ॥ भ० ॥ २४ ॥ पांचसें साधुको होमज करतो, ब्राह्मणनाम नमुची ॥ विष्णुकुमर वामन रूप धरकें, दियो पगा तलें कुची ॥ भ० ॥ २५ ॥ हेमाचल नृप आई तेहने, मारताके दियो राखी ॥ मंगत तेहेवार थाप कर भोला, हाथमें वांधे राखी ॥ भ० ॥ २६ ॥ घरको मनुष्य मरे जिणदिवसें, सोग कहे मुखसेंती ॥ श्राद्ध ठेराई माल जेखावे, उलटी रीत ए चेती ॥ भ० ॥ २७ ॥ मच्छ अवतार धर्यो कहे प्रभुजी, मच्छ खावण नहीं छोडे ॥ वराह अवतार कहे वली धार्यो, वराहा मारण दोडे ॥ भ० ॥ २८ ॥ गउ माताके लाठी मारे, तुलशी माता तोडे ॥ जवार माता कही पीसिने खावे, मनकी वातां जोडे ॥ भ० ॥ २९ ॥ पृथ्वी पाणी तेउ वायु, दिश वड पिंपल पूजे ॥ गाय गधेडा कन्या पूजे, अंतरज्ञान न सूजे ॥ भ० ॥ ३० ॥ इत्यादिकको पूजन थापे, कर न न्यायपरीक्षा ॥ घणा तुष्ट जो तुज पर एता, करशे आप सरीखा ॥ भ० ॥ ३१ ॥ देह अपावन परतक्ष सारी, उपर खाल पखाले ॥ न्हाया धोया धर्म होवे तो, मछलां जलमें चाले ॥ भ० ॥ ३२ ॥ श्रीजिन मारग उज्वल परतक्ष, तिणने मेलो बतावे ॥ हिंसाधर्म मलीन सदाही, जिणने

अधिक सरावे ॥ भ० ॥ ३३ ॥ गावे बजावे तानज तोडे, जेहनी महीमा सखरी ॥ होय उदासी जगमावासुं, तिणकी करे मस्करी ॥ भ० ॥ ३४ ॥ मोह करमके उदय करीने, भोलप कर दुःख पावे ॥ भोलप छत्तीसी सुण कर शाणा, श्रीजिनमारग आवे ॥ भ० ॥ ३५॥ इत्यादिक भोलपता तजके, धर्म ध्यान करो खासा ॥ तिलोक-रिख कहे सुकृतकीधां, होय मुक्तिमें वासा ॥ भ० ॥ ३६ ॥ संवत् उगणीसें छत्तिस फागण, वदि दशमी शनीवारे ॥ सांईखेडा में एह निपाई, करवा पर उपगारे ॥ भ० ॥ ३७ ॥ इति भोलपछत्तिसी संपूर्ण ॥

॥ अथ पांच प्रकारना वैराग्यभाव उपर सवैया ॥

॥ आवत है तहेवार, तब करत स्नान, लोक करे अलंकार, केश समारे नर नारी हे ॥ पहेरत भूषण निज, वित्तके मुजब सब, खावत सरस माल, फिरत हुशियारी हे ॥ बीतत तेहवार तब, फिरत निज रूपहीसें, आवत महोत्सव तब फिर वोही त्यारी हे ॥ कहत तिलोकरिख, मटक वैरागी रीत, आंबेल परब धर्म, करे नर नारी हे ॥ १ ॥ डंस मसक मच्छर जूं, माकड अरु दुष्ट जीव, तनपे चटको देत, दूभ्यत ते भारी हे ॥ हाथसें खुजाल कर, माने समाधान सुख, घडी पल वीत्या बाद, दुःख न लगारी हे ॥ तेसी रीत चटक, वैरागी नर जाणीयत, परत संकट माने, संसार दुःखी-यारी हे ॥ मिटत हे कष्ट सब, फुलत हे धरम ध्यान, कहत तिलोकरिख, मोहीयो असारी हे ॥ २ ॥ लागत भूख बेग, मिलत न अन्न नित, मनमें विचारे मुनी, दीसे अणगारी हे ॥ परखदामें कर जोड, कहे मुनिराज सेती, दीजीये संजम मोय, संसार असारी हे ॥ मात कहे नंदनसें, आशा है मेरी तुझ, भोजन जिमीने फिर, होजो दिक्षा धारी हे ॥ खीचडा घृत खूब, जीमतही भूल्यो धर्म, खिचड्यो वैरागी रिख तिलोक उच्चारी हे ॥ ३ ॥ तरुण

उमरमांही, मर जावे कोई जन, होवत उदास मन, झूरे नर नारी है ॥ संसार असार सब, सपनाकी माया सम, एक दिन सबहीकुं, जाणो निरधारी है ॥ छोडीयें संसार फंद, करत विचार जन, बाळके स्नान करी, आवे घरबारी है ॥ मोह मदिरामें अंध, करे फिर घर धंध, मसाण्यो वैरागी रिख, तिलोक उच्चारी है ॥४॥, चटक मटक तीजो, खिचडयो वैरागी जाण, मसाण्यो वैरागी चोथो, कह्यो सुविचारी है ॥ एसे जो वैरागी सोतो, कायरके मांही जाण, छोडे न संसार चारी, मुखके लवारी है ॥ करत वडाइ खाली, ढफोल संखकी रीत, आतमापें जोर सोतो, देत न लगारी है ॥ कहत तिलोकरिख, चारीकुं न लागे शीख, सूका चूना उपर जो, टीपनीणी सारी है ॥ ५ ॥ कीरमची रंग जैसे, धोवे कोइ खोम देवे, तार तार होवे रंग, उडे न लिगारी है ॥ तैसे भव जीव हीये, धर्मरूपी लागे रंग, जाणत असार जग, नागणीसी नारी है ॥ धन सब धूल सम, परिवार फांस रूप, जानत अनीत वित्त, होय व्रत धारी है ॥ करणी तो करे शुद्ध, मन वच काय करी, कहत तिलोकरिख, वंदना हमारी है ॥ ६ ॥ इति पांच प्रकारना वैराग्यभाव उपर सवैया समाप्त ॥

॥ अथ उपदेशिक तथा ३२ असज्झाय उपर सवैया ॥

॥ सचित्त पृथवी खंड, पारेवासो करे तन्न, जंबुद्वीपमें न मावे, जीव एता जाणीयें ॥ जलबिंदु मधुकर, तेउ सरसव सम, वाउ एक झबुकडे, खस खस ठाणीयें ॥ प्रत्येक वनसपती, असंख्यात गुणाकार, साधारण सुई अग्र, अनंत प्रमाणीयें ॥ त्रस देह भिन्न भिन्न, कहत हे तिलोक चिन, निज प्राण सम जाण, अणुकंपा आणीयें ॥१॥ बारे सहस्र आटशें, चोत्रीस एक मुहूर्तमें, जनम

मरण पृथ्वी, पाणी तेउ वायमें ॥ साडी पेंसठ सहेंस, छत्तिस करे निगोदीया, बतिस हजार सो, प्रत्येक हरिकायमें ॥ बेंद्रीमांही असी साठ, तेंद्रिमांहि मरण होय; चौंद्रीमें चालीस संख्या, कही सूत्र रायमें ॥ असन्नी चोवीश सन्नी, एक भव होवे हद्द, कहत तिलोकरिख, धर्मी सो न जायमें ॥ २ ॥ आषाढ भाद्रव मास; कार्तिक पूनम चैत्र, असज्झायी चार एह, उरमें विचारियें ॥ श्रावण आसोज विद, अगण वेशाख धुर, पडवा चारुही इम, आठ ए उतारीयें ॥ प्रातःकाल मध्यदिन, संझा और मध्यरात, असज्झाय चार नित, दो दो घडी टारीयें ॥ एवं वारे असज्झाय, कही चोथा ठाणामांही, ज्ञान आराधक जन, सूत्रपाठ वारीयें ॥ ३ ॥ आकाश की दश असज्झाइ, फरमाइ प्रभु, उलकापात दिशिदाह, गाज बिज जागीयें ॥ कडके गगन याला, बीज चंद्र जखु चेन, धुंवर [illegible] रज, घात पहिचाणीयें ॥ दश ओदारिक फुनि, हाड मांस [illegible], [illegible] स्मशाण चंद्र, रवि ग्रहण ठाणीयें ॥ राजमृत्यु [illegible] लखि, मिळके बत्तीस एह, कहत तिलोकरिख, प्रभु वेण [illegible] ॥ ४ ॥ दोहा ॥ अशुभ कर्मके हरणकुं, मंत्र बडो नवकार [illegible] दाद्श अंगमें, शोध लियो तंतसार ॥ १ ॥ सवैया [illegible] ॥ श्रीअरिहंत भगवंत बार गुणवंत, सिद्ध [illegible] [illegible] हैं ॥ आचारज सो तो, गुण छत्तिस [illegible] [illegible] भंडारी है ॥ साधु साधे आतमा [illegible] गुण युक्त, [illegible], आठ [illegible] है [illegible] तिलोकरिख, तन वच काय करी, [illegible], वंदना हमारी है ॥ १ ॥ ज्ञान वंध ज्ञानी जोग, अनुभो प्रयोग भोग, समकित घट एक, निश्चलता धारतें ॥ संजम वदन सो तो,

आश्रव तजत जेतो, तपस्या वधत तन, ममत निवारेतें ॥ क्लेश वढत टेक, करत न खावे गम, अहंकार वढे परहीणताके भारेतें ॥ आपके औगण पर, गुण ढांके छल वढे, कहत तिलोक लोभ, त्रसना वधारेतें ॥ २ ॥ क्रोध घटजाय एक, क्षमाके खडग ग्रहे, मान घट जात भाव, विनय गुण धारेतें ॥ कपट घटत सो तो सरल स्वभाव किये, लोभ घट जात एक, त्रसना निवारेतें ॥ हास घट जात सुख, मून कर लेत तदा, भय घट जात एक, धीरजता धारेतें ॥ कहत तिलोकरिख, ज्ञान सों प्रमाद किये, किमत घटत एक, हिमतते हारेतें ॥ ३ ॥ दोहा ॥ जब लग मेरु अडग है, जब लग शशि अरु सूर ॥ तब लग आ पुस्तक सदा, रहेजो गुण भरपुर ॥ १ ॥

इति श्री [illegible] [illegible] ग्रंथः

॥ समाप्त ॥

शुद्धिपत्र.

पान	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध
१	२६	उंदगलं	उदंगलं
५	४	वैक्रियमा	वैक्रियर्का
७	२०	नित्य	नित्यमेव
१६	९	नद्दं	वंद्
२०	२	कष्ठ	कष्ट
२१	१७	नमीश्वर	नेमीश्वर
२४	२१	दोयेशे	दोयेशे
२६	३	देवाड्रि	देवाड्रि
२६	१६	तर्जन	तर्जन
३४	६	वसुधर	विशुद्ध विशुद्ध
३४	१६	सुवर्ण नो	सुवणनो
३५	१७	सहस्र	सहस्र
३८	८	पूरमें	पुरमें
३८	१४	कथा वखत	वखत कथा
३८	२१	तीर्थकरें	तीर्थंकरें
३९	७	चक्रराज १७	चक्र १७ राजपुर १८
...	...	पुरठाई १८॥	ठाई ॥
४०	२०	१७, तेम अनुक्रमे	नीज अनुक्रमे
		बिणारां १८,॥	बिणागे १७
४०	२०	१९	१८
४०	२१	२०, २१	१९, २०
४०	२२	जमारो ॥	जमारो २१
४२	५	है	है
५४	१५	मुनिवर	मुनिवर
५७	१७	मामशें	मामणें
७०	२	म० ॥२॥	म० ॥२॥
८६	१	[illegible]	[illegible]
८६	२२	[illegible]	[illegible]
[illegible]	९	[illegible]	[illegible]
१०८	२६	[illegible]	[illegible]
१०७	७	[illegible]	[illegible]
१०८	२१	[illegible]	[illegible]

पान	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध
११४	२४	ध्यान	ध्यान
११५	७	मैनें	मैने
११५	१५	मदन	मर्दन
११९	....	१०१	११९
११९	१२	सुण	सुणे
११९	१४	अनुरागें	अनुरागें
१२७	४	छिन	छिन
१३०	५	अमृता	अमृत
१३४	१	`	रे
१३७	१७	जावसा	जावलों
१३८	२२	आंतरज्यामी	अंतरज्यामी
१३८	२५	नुजयत	नुजात
१३९	२	मुज	मुज
१४३	२	साल	सोल
१४३	१७	श्रणिक	श्रेणिक
१५२	१२	खरि	खरि
१५२	२२	मुश्क म्योव	मुश्के म्यों
१८४	२	वेल	वेल
१८४	२६	ठ मुठा दाँ	ठहा मुठा दोठ
१९५	१	धनवत	धनवंत
१९८	३	मुक्ति	मुक्ति
१९८	१८	[illegible]	[illegible]
१९९	७	[illegible]	[illegible]
१९९	२५	[illegible]	[illegible]
२००	२५	[illegible]	[illegible]
२२७	६	[illegible]	[illegible]
२४३	१२	[illegible]	[illegible]
२५८	१०	[illegible]	[illegible]
२६०	३	[illegible]	[illegible]
२६२	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	२	[illegible]	[illegible]
[illegible]	१२	[illegible]	[illegible]

